इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे " डी० फिल० "

की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

द्विभाषीय अशोकीय अभिलेख

(एक पुरालेखीय - पुरालिपीय एव अन्त सास्कृतिक अध्ययन विशेषकर अरामी पाठ के सबध मे)

THE BILINGUAL INSCRIPTIONS OF ASHOKA

(An Epigraphic - Palaeographic and Transcultural Study, with special reference to the Aramaic Version)

शोधकर्ता : शिलानन्द हेमराज

निर्देशक : प्रोफेसर जे० एस० नेगी , भूतपूर्व प्राचीन इतिहास विभागाध्यक्ष

इलाहाबाद 2000 सामान्य सवत्

सामान्य विषय - सूची GENERAL TABLE OF CONTENTS

O विषय - प्रवेशक अध्याय
Introductory chapter

1 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का परिचायक संदर्भीकरण
Informative contextualization of the bilingual Ashokan inscriptions

2 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालेखीय अध्ययन
Epigraphic study of the bilingual Ashokan inscriptions

3 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालिपीय अध्ययन
Palaeographic study of the bilingual Ashokan inscriptions

4 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का तुलनात्मक-व्याख्यात्मक पाठ-निर्णय
Comparative and interpretative reading of the bilingual Ashokan inscriptions

5 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का अन्तःसांस्कृतिक अध्ययन
Transcultural study of the bilingual Ashokan inscriptions

+ ग्रन्थसूची
Bibliography

द्वितीय खण्ड

VOLUME II

2 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालेखीय अध्ययन
Epigraphic study of the bilingual Ashokan inscriptions

3 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालिपीय अध्ययन
Palaeographic study of the bilingual Ashokan inscriptions

4 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का तुलनात्मक-व्याख्यात्मक पाठ-निर्णय
Comparative and interpretative reading of the bilingual Ashokan inscriptions

विषय - सूची (द्वितीय खण्ड) TABLE OF CONTENTS (VOLUME II)

2 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालेखीय अध्ययन
Epigraphic study of the bilingual Ashokan inscriptions पृष्ठ 197

20 द्वितीय भाग का आरम्भ Beginning the second part 197

21 प्राचीन अभिलेखन का अध्ययन The study of ancient inscriptional activity 197

211 उद्देश्यपूर्ण अभिलेखन Purposeful inscriptional activity 198
212 पुरालेखीय विविधता-विमिश्रता Epigraphic multiplicity and diversity 200

22 अशोकीय अभिलेखन के अभिलक्षण Features of Ashokan epigraphy 202

221 स्तम्भ-अभिलेखन Pillar inscription 203
222 अशोकीय लिपिकार Ashokan scribes 206

23 अरामी अभिलेखन का कालक्रमिक सर्वेक्षण Chronological survey of Aramaic inscriptions 208

231 राजकीय प्रस्तर-लेख Royal stone inscriptions 210
232 न्यायिक-व्यावसायिक अभिलेख Juridical business inscriptions 224
233-क पत्रात्मक अभिलेखन की बहुवृद्धि Abundance of epistolary inscriptions 229
233-ख मुख्यत सस्मरण-समर्पण अभिलेख Mainly funerary and dedicatory inscriptions 239
233-ग श्रेण्य साम्राज्यिक अरामी के साहित्यिक लेख Literary documents in classical imperial Aramaic 248

24 अशोकीय अरामी अभिलेखन और उसका पुरालेखीय सदर्भ
Ashokan Aramaic inscription and its epigraphic context 258

241 मध्यक्षेत्र मे विलम्बित एव परिवर्तित अरामी अभिलेखन
Protracted and transmuted Aramaic inscription in the middle area 258
242 पश्चिमी सीमान्त-क्षेत्र मे सजीवित "पश्चिमी अरामी" अभिलेखन
Revivified "Western Aramaic" inscriptions in the Western fringe area 264
243 पूर्वी सीमान्त-क्षेत्र मे अल्पकालिक वरन् अपूर्व-अर्थपूर्ण अशोकीय अरामी अभिलेखन
Momentary but momentous Ashokan Aramaic inscriptions in the Eastern fringe area 270

25 यूनानी अभिलेखन का परिभ्रामी परिशीलन Perambulatory perusal of Greek inscriptions 273

251 यूनान के तीर्थ देल्फॉय् के सूत्र Maxims from the Greek pilgrim city Delphi 274
252 मिस्र के कुछ रुचिकर यूनानी पाठ Some interesting Greek texts from Egypt 276

253 यूनानवादी इस्राएलियो का अभिलेखन Inscriptions by Hellenistic Israelites पृष्ठ 278
254 पश्चिम-एशिया के कुछ अन्य यूनानी लेख Some other Greek inscriptions of West-Asia 280
255 यूनानवाद के पूर्वी क्षेत्र मे उदाहरण Examples in the Eastern area of Hellenism 281

26 अशोकीय यूनानी अभिलेखन के लिए निर्धारक परिणाम
Determinative results for the Asokan Greek inscriptions 284

---

3 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखों का पुरालिपीय अध्ययन
Palaeographic study of the bilingual Ashokan inscriptions 288

---

30 तृतीय भाग का आरम्भ Beginning the third part 288

31 पुरालिपीय उपागम Palaeographic approach 288

32 अरामी लिपि के बदलते स्वरूप और उसका अशोकीय आकार
Changing shapes of Aramaic script and its Ashokan form 292

321 अरामी लिपि का प्रादुर्भाव The emergence of the Aramaic script 292
322 अश्मोत्कीर्ण शैली मे आकार-बद्ध प्रवाही शैली के अक्षर-रूपो का प्रवेश
Letter-shapes of formal cursive style entering the lapidary style 295
323 लेख-आधार के अनुसार प्रवाही शैली का लेख-आकार
The form of cursive style depending on the writing material 297
324 अशोक के होशियार-समझदार अरामी लिपिकार
Ashoka's capable and judicious Aramaic scribes 302

33 अरामी लिपि से "भारतीय लिपियो" खरोष्ठी व ब्राह्मी का क्या संबध ?
Are the " Indian scripts " Kharoshthi and Brahmi related to Aramaic ? 307

331 परिचर्चा का विषय Topic of discussion 310
332 अशोकीय अरामी और खरोष्ठी Ashokan Aramaic and Kharoshthi 312
333 अशोकीय अरामी और ब्राह्मी Ashokan Aramaic and Brahmi 316

34 यूनानी पुरालिपि सबधी विवेचन Reflections on Greek palaeography 320

341 स्थायी रूप धारण करने तक यूनानी लिपि का द्रुत विकास
Quick development of Greek script till acquiring permanent form 320
342 अशोकीय यूनानी लिपि के निर्धारण मे अभेद मे लघु भेद का महत्व
Minor dissimilarities within similarity count in assessing Ashokan Greek 324

4 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो का तुलनात्मक-व्याख्यात्मक पाठ-निर्णय

Comparative - interpretative reading of the bilingual Ashokan inscriptions

पृष्ठ 328

40 चतुर्थ भाग का आरम्भ — Beginning the fourth part — 328

41 यूनानी कन्दहार - अभिलेख का द्वितीय अश (क० यू० 11ख 22)
Second part of the Greek Kandahar inscription (Line 11b - 22) — 331

42 शर-इ-कुन अभिलेख का यूनानी पाठ (श० यू० 1- 14)
Greek text of the Shar-i Kun inscription (Line 1 14) — 337

43 शर-इ-कुन अभिलेख का अरामी पाठ (श० अ० 1 - 8)
Aramaic text of the Shar i-Kun inscription (Line 1 8) — 340

44 अरामी तक्षशिला - अभिलेख (त० 1 - 12)
The Aramaic Taxila - inscription (Line 1 12) — 345

45 यूनानी कन्दहार - अभिलेख का प्रथम अश (क० यू० 1 - 11क)
First part of the Greek Kandahar - inscription (Line 1 - 11a) — 353

46 प्रथम अरामी लघमान - अभिलेख (ल० प्र० 1 - 6)
The first Aramaic Laghman inscription (Line 1 - 6) — 357

47 द्वितीय अरामी लघमान - अभिलेख (ल० द्वि० 1 - 10)
The second Aramaic Laghman inscription (Line 1 10) — 361

48 अरामी पुल-द-दरुन्त अभिलेख (पु० 1 - 8)
The Aramaic Pul i Darunta inscription (Line 1 - 8) — 363

49 अरामी कन्दहार - अभिलेख (क० अ० 1 - 7)
The Aramaic Kandahar inscription (Line 1 7) — 368

(पृ० 370 से द्वितीय खण्ड का अन्त ,
तृतीय खण्ड पृ० 371 से आरम्भ)

2 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो का पुरालेखीय अध्ययन

EPIGRAPHIC STUDY OF THE BILINGUAL ASHOKAN INSCRIPTIONS

20 द्वितीय भाग का आरम्भ BEGINNING THE SECOND PART

प्रथम भाग मे द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो को व्यापक सदर्भ मे सस्थित कर उनका मानो बाहर से सामान्य परिचय दिया गया है। अब उन्हे आमने-सामने स्थापित कर निकट से देखे तो मालूम हो जाता कि वे विशेष अक्षरो द्वारा प्रतिष्ठित किये गये अ-क्षर लेख है। देवानाप्रिय राजा ने ही उनमे अपनी धर्मनीति आज्ञापित-विज्ञापित की है। अभिलेखन के सप्रयोजन कार्य के द्वारा उन्हे एक निश्चित दीप्यमान रूप दिया गया है। अत अपने अध्ययन के इस द्वितीय चरण मे हम मानो **दिव्य चक्षु** से अभिलिखित सामग्री का अवलोकन करे। लेकिन इस समय अक्षर को जानने अथवा पढने का प्रयास नही करेगे , केवल जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है उसी तथ्य पर दृष्टि डालेगे । तत्व का अन्वेषण बाद मे करेगे । इसलिए हमारा उपागम यहा प्रकार्यक (functional) रहेगा। फिर भी पुरालेखन-विद्या के कुछ सामान्य सिद्धातो पर विचार कर उन्हे प्रस्तुत विषय के लिए अपनाना होगा ताकि उस उत्कीर्णन पर लागू करे जो अशोक के काल मे प्रदर्शित हुआ । तब द्विभाषीय अभिलेखो के पुरालेखीय स्वरूप पर ध्यान देने के पहले हमे अरामी तथा यूनानी अभिलेखन-परम्पराओ का सिहावलोकन करना होगा और उनमे ऐसे उदाहरण चिह्नित करने होगे जो द्विभाषीय अभिलेखो की पुरालेखीय समस्याओ के समाधान हेतु सहायक हो सकते है।

21 प्राचीन अभिलेखन का अध्ययन THE STUDY OF ANCIENT INSCRIPTIONAL ACTIVITY

जब से मानव अपने विचारो एव भावनाओ को लिखित रूप से अभिव्यक्त करने लगा तब से अभिलेखन की प्रक्रिया चलती रही । कालान्तर-स्थानान्तर मे अभिलेखन का स्वरूप और माध्यम बदलता रहा। बहुत-

सी अभिलिखित सामग्री नष्ट हुई अथवा अस्पष्ट अपठनीय पड़ी रही। परन्तु पुरालेखन-विद्या (ऍपिग्रफी) बची हुई सामग्री सुरक्षित रखती है और सम्पूर्ण मानवता के लिए उपलब्ध कराती है। पुराभिलेखीय अध्ययन के कारण हम हजारो वर्ष पूर्व के मानव से सम्पर्क कर सकते है । यूनानी शब्द ऍपि-ग्रफे को केवल उसके शाब्दिक अर्थ मे नही समझना चाहिए कि वहा किसी वस्तु पर कोई लेखन है , वरन मनस-पट पर अभिलिखित होनेवाला सम्प्रेषण है। अशोकीय अभिलेखो का महत्व उनका सम्प्रेषित सदेश ही है।

211 उद्देश्यपूर्ण अभिलेखन Purposeful inscriptional activity

महान यूनानी विचारक सोक्रतैस केवल उस जीवित ओर प्रेरणाप्रद वचन को अभिलेखन के योग्य मान लेता था जो बुद्धि के साथ पढनेवाले की अन्तरात्मा (यू० प्सुखे) मे लिखा जाए। अपने कथन के समर्थन मे उसने मिस्र देश की जनश्रुति का वर्णन किया [1] लेखन के आविष्कारक देवता थ्यैथ ने राजा थमौस् के समक्ष अपने आविष्कार को स्मृति एव प्रज्ञा का साधन बताया । लेकिन राजा ने उलटा तर्क लगाया अभिलेखन का परिणाम विस्मरण होगा । बाह्य अभिलेख पर अवलम्बित होने से हमारे अन्दर की स्मरण-शक्ति कम होती जाएगी। इस प्रकार प्रज्ञा का आभास-मात्र प्राप्त होगा पूर्ण सत्य नही। शिष्यो को केवल पुस्तकीय ज्ञान मिलेगा और वे वास्तविक शिक्षा (यू० दिदखै) से वचित रहेगे। वे दिखावटी ज्ञानी (दोक्सो-सोफोय्) बन जाएगे। इसलिए सुक्रात ने लिखने से इनकार किया।

इब्रानी-अरामी तनख के व्यवस्था-विवरण-ग्रथ 30 40 के अनुसार शिलापट्ट पर अकित होने से कोई लाभ नही है जब तक वचन हृदय पर लिखित न हो ताकि उसे ठीक से कार्यान्वित किया जाए। इस्राएल की धर्म-परम्परा मे अभिलिखित (खारूथ) व्यवस्था के बदले मे स्वतन्त्र (खेरूथ्) व्यवस्था अधिक महत्वपूर्ण है [2]।

---

(1) प्लतोन फयद्रोस् 274 279 । (2) शास्त्राधारित धर्मशिक्षाओं के विशाल सकलन तल्मूद् के पिर्के अभोथ् (पिताओ के सुभाषित) नामक खण्ड 6 2 से। इब्रानी-अरामी शब्द खारूथ् (अभिलिखित) की क्रिया-धातु खरत् का अर्थ है उत्कीर्ण करना। सम्भवत उसी धातु के आधार पर पश्चिमोत्तर भारत की लिपि खरोष्ठी का नाम बना ।

अपने अभिलेखन-कार्य के आरम्भ से ही अशोक ने स्पष्ट किया कि लेख लिखवाने का मुख्य उद्देश्य है कि लोग उनका अभिप्राय जाने[1] और वह अभिप्राय एक ही है धर्म का श्रावण और धर्म का धारण अर्थात धर्माचरण बढाने हेतु जो सुनाया गया है उसे लोग सुने और पालन करे। प्रो० श्रीराम गोयल याद दिलाते है कि कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र मे राजकीय अभिलेखो के आठ प्रकार और सोलह उद्देश्य निर्धारित किये थे । लेकिन अशोक के धर्म-लेखो का अपना एक विशिष्ट-मिश्रित स्वरूप है । वे अन्य अभिलेखो के प्रकार-भेदो और उनके सभी उद्देश्यो की न्यूनाधिक पूर्ति करते है [2]।

विभिन्न प्रकार के अभिलेखो की अपनी-अपनी विशिष्ट शैली और अपना-अपना प्रस्तुति-क्रम भी है। डा० राजबली पाण्डेय दिखाते है कि अशोकीय धर्म-लेख अन्य अधिकारपूर्ण प्रशासनिक अभिलेखो से भिन्न है

> अशोक के अनुशासनो का जिनमे अशोक की धर्म-विजय का वर्णन है एक अलग ही वर्ग है । उनमे प्रशस्ति के आवश्यक उद्देश्य उसकी शैली और ओजस्विता का उनमे अभाव है । इनका उद्देश्य आत्मप्रशसा नही अपितु धर्म का उपदेश और उसकी व्याख्या थी जिन्हे लोग समझे और पालन करे। शैली प्राय गद्यात्मक और यदाकदा बोझिल है , इनकी प्रकृति की शान्तिप्रियता ओज को नही आने देती जो बाद की युद्धशील राजाओ की प्रशस्तियो का विशिष्ट गुण है। [3]

धर्म-लेख' कहना भी उपयुक्त नही है , उदाहरणार्थ लघमान के दोनो अरामी अभिलेख राज-पथ' के सबध मे आदेशित है धर्म-पथ के सबध मे नही। अशोकीय अभिलेखो मे सब कुछ तो प्रबोधात्मक आचरणात्मक शैली मे प्रस्तुत नही किया जा रहा है। कठिन शब्दो के अर्थ-निर्धारण मे उस मिश्रित स्वरूप की अवहेलना नही की जानी चाहिए कही अतिशयोक्तिपूर्ण घोषणा की जा रही है कहीं वास्तविक घटना को स्मरण दिलाया जा रहा है । द्विभाषीय अभिलेखो के विश्लेषण मे एक-एक पाठ के विशिष्ट प्रस्तुति-करण पर ध्यान देना होगा । परन्तु यहा सामान्य अभिलेखन प्रकरण की चर्चा आगे बढाए ।

---

(1) दे० भाब्रु शिलाफलक लेख (राधाकुमुद मुखर्जी के अनुवाद मे) भिक्षु और भिक्षुणिया बार-बार श्रवण करे और धारण करे और इसी प्रकार उपासक और उपासिकाए भी (सुने और धारण करे) मै यह लेख लिखवाता हू कि लोग मेरा अभिप्राय जाने"। (2) *श्रीराम गोयल* **प्रियदर्शी-अशोक** मेरठ 1988 पृ० 11 दे० *राजबली पाण्डेय* **भारतीय पुरालिपि** इलाहाबाद 1978 अध्य08 अभिलेखो के प्रकार *वासुदेव उपाध्याय* **प्राचीन भारतीय अभिलेख** , पटना , 1970 (द्वि०) पृ० 21 । (3) *राजबली पाण्डेय* **तत्रैव** पृ० 121 ।

आधुनिक प्रयोग मे ऍपिग्रफी को प्राय पुरालेखन के उत्कीर्ण अभिलेखन के सीमित अर्थ मे समझते है। पुरातत्व परिभाषा कोश मे ऍपिग्राफ़् का यह अर्थ दिया गया है धातु, प्रस्तर आदि से बनी टिकाऊ वस्तु पर सतह खोदकर लिखा गया लेख '[1]। लेकिन मूल यूनानी के अर्थ मे वह किसी भी वस्तु पर लिखित लेख होता है । प्रस्तर-स्तम्भ पर उत्कीर्ण अभिलेख के लिए एक अलग शब्द स्तैलो-ग्रफिअ भी प्रयुक्त होता है (स्तैलै अथवा स्तूलोस् का अर्थ है खम्भा)[2]। क्या सीमित परिभाषा के अनुसार अ-टिकाऊ वस्तु पर उद० पटेरपत्र (पपाइरस्) पर अभिलिखित सामग्री को पुरालेखीय अध्ययन से बाहर रखा जाए ? क्या पैपिरॉलजी (papyrology) नामक विद्या को अलग स्थापित करना होगा ? परन्तु महान पुरालेख-वेत्ता जे० नावे व्यापकतर सामग्री को पुरालेख-विद्या का विषय बनाते है और पटेरपत्र-लेखो को ही प्रमुख स्थान पर रखते है[3]। अशोकीय अभिलेखो के यूनानी एव अरामी सस्करणो के इस अध्ययन मे हमे तुलनात्मक सामग्री को उसी व्यापक अर्थ मे समझना चाहिए।

फारसी साम्राज्य मे प्रशासनिक आदेशपत्रो को विशेष लेखागार मे रखा जाता था। यूनानी इतिहासकार दिओदोरोस् ऐसे कुण्डलित राजपत्रो (यू० दिफ्थेरय् [4]) का उल्लेख करता है जिनमे साम्राज्यिक कार्यकलापो का विवरण मिलता है। इस्राएली धर्मशास्त्र तनख के एज्रा-ग्रथ 6 1 2 का यह अरामी पाठ है

---

(1) Definitional Dictionary of Archaeology **पुरातत्व परिभाषा कोश** नई दिल्ली 1994 (सशो०) पृ० 136 ।

(2) प्राचीन यूनानी बाइबिल-अनुवाद मे भजन 57 58 का शीर्षक स्तैलो-ग्रफिअ इब्रानी शब्द मिख्ताम् अर्थात अभिलेख के लिए प्रयुक्त हुआ। प्रवक्ता-ग्रथ 36 29 मे धर्मपत्नी अपने पति का स्तूलोस (pillar of support) कही गयी है। लेकिन इब्रानी पाठ यहा अम्मूध है और यही शब्द पुल-इ-दरुन्त के अरामी पाठ मे अशोकीय स्तम्भ के लिए ही प्रयुक्त हुआ ।

(3) J NAVEH The Development of the Aramaic Script Jerusalem 1970 e g p 15 (on Aramaic inscriptions of 7th 6th centuries B C E) The epigraphic material consists of inscriptions divided into three groups according to the writing materials used (a) those written in ink **on papyrus** or sherd (b) those inscribed on soft clay (c) those incised on harder materials ' दे० D C SIRCAR Select Inscriptions Delhi 1993 ed p 83 Though the characters are not actually inscribed on coins many numismatics refer to the coin legends as inscription which would then mean **any writing**

(4) DIODORUS 3 32 शब्दश चर्मपत्र कुण्डलपत्र (scroll) के लिए महीन ससाधित चमड़े (parchment) का प्रयोग केवल सा०स०पू० 200 से एशिया माइनर के पैरॅगमोस् नगर से आरम्भ हुआ।

बेबीलोन के पुरालेखागार (बेथ सिफ्रय्या) मे खोजबीन की गई जहा प्राचीन दस्तावेज (गिनजय्या) सुरक्षित रखे गये थे। मादय प्रदेश की राजधानी एकबतना मे एक कुण्डलपत्र (मंघिल्ला) मिला जिसपर लिखा था एक स्मारक-अभिलेख (दिख्रोना) । सम्राट दारा के प्रसिद्ध त्रिभाषीय अभिलेख को जो उद्भृत चित्रो के साथ बेहिस्तून की चट्टानी पट्टी पर अकित है ईरानी मे निपिश्त- कहा गया है जब कि अेलेफनतिने से प्राप्त अरामी अनुवाद मे उसे स्‌प्‌र्‌त्‌अ्‌ (सिफ्रा का बहुवचन क्योकि त्रिभाषीय बहु-लेख ही है) कहा गया है। अराम देश के प्राचीनतम सतम्भलेखो के लिए भी उसी शब्द का प्रयोग हुआ[1]। कालातर मे लेखन-पद्धति के विस्तार के साथ सिफ्रा किसी पत्र का सामान्य अर्थ धारण करने लगा[2]। लिखनेवाले लिपिक इब्रानी-अरामी मे सोफेर् कहलाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है अक्षर गिननेवाला क्योकि टाकी से अक्षर उत्कीर्ण करनेवाला एक-एक अक्षर गिनकर खोदता था।

औपचारिक आदेश-पत्र को अरामी मे "निश्तंवान् कहते है जो मूल ईरानी शब्द है। तक्षशिला के अरामी अभिलेख (त० 8) मे उसका समुचित प्रयोग लेखो द्वारा आदेशित सु-व्यवस्था के अर्थ मे हुआ। परन्तु शहबाजगढी के सस्करण मे छह बार प्राकृत 'लिखित ' के स्थान पर निपिस्त मिलता है और वह भी शुद्ध ईरानी शब्द के प्रभाव से। इस प्रकार यद्यपि सभी द्विभाषीय अशोकीय अभिलेख पत्थर पर ही अभिलिखित हुए और उनके प्राकृत प्रारूप भी केवल प्रस्तर-लेख के रूप मे उपलब्ध है तौभी वे व्यापकतर अभिलेखीय परम्परा के सदर्भ मे अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करते है। हमारे वैयाकरण पाणिनि, जो महा-लिपिक से भी अधिक ज्ञानी थे ईरानी-अरामी (तथा खरोष्ठी ?) लिपिको से अवश्य परिचित थे। श्रीराम गोयल के शब्दो मे अशोक ने अपने लेखो मे लिपि (ब्राह्मी लेखो मे) अथवा दिपि (खरोष्टी लेखो मे) शब्द का प्रयोग किया। यह भी मूलत ईरानी शब्द था। पाणिनि इस शब्द से परिचित थे। [3]

---

(1) उद० Sefire 1 C 17 इस अभिलेख (स्‌प्‌र्‌अ्‌) के वचन जो स्तम्भ (न्‌स्‌ब्‌अ्‌) पर है ।

(2) दे० P E DION Aramaic words for letter' " Semeia 22 1981 pp 77-88 (3) *श्रीराम गोयल* त्रयैव पृ० 199

यदि —जैसे प्रो० गोयल मानते है— ब्राह्मी लिपि अशोकीय प्रस्तर-लेख लिखने के लिए ही आविष्कृत हुई तोभी उस नवीनता को भी व्यापकतर अभिलेखन के सदर्भ मे समझना चाहिए अशोक को मैसूर जैसे दूरस्थ प्रदेशो के लिए भी पश्चिमोत्तर प्रदेश के लिपिकार और लेखक भेजने पड़े थे। उस समय तक मैसूर आदि प्रदेशो मे स्थानीय लिपिकार उपलब्ध नही थे। फिर भी सम्भव है कि पहले से ही मौर्य क्षेत्र मे लिपिकार मौजूद थे जो किसी आदि-लिपि (पूर्व-ब्राह्मी खरोष्ठी-जैसी लिपि ?) का प्रयोग करते आ रहे थे [पुरालिपि-सबधी तृतीय भाग मे इसपर विचार-विमर्श करेगे]। यह तर्कसगत नही लगता है कि पश्चिम एशिया (और पूर्व एशिया भी !) अभिलेखन-कार्य मे बहुत आगे निकल चुका हो जब कि भारत —जो पश्चिम-एशिया के सम्पर्क मे ही था— अभिलेखन के कला-कौशल से [1] बिलकुल वचित रहा हो।

22 अशोकीय अभिलेखन के अभिलक्षण FEATURES OF ASHOKAN EPIGRAPHY

कई इतिहासकार मानते है कि भूतपूर्व पड़ोसी फारसी साम्राज्य के अनुकर्णीय उदाहरण से प्रभावित होकर मौर्य राज्यशासन ने उसकी अभिलेखन-पद्धति को अपनाया। राजमार्गों के समागम स्थलो पर प्रज्ञापन-स्तम्भ खड़ा कर दिये गये। यूनानी राजदूत मेगस्थॅनैस् की साक्षी विश्वसनीय लगती है कि विश्राम-गृहो की दूरी दर्शानेवाले पत्थर भी लगाये गये। निस्सदेह सम्राट अशोक ने अपने बहुभाषीय-बहुलिपीय प्रस्तर-अभिलेख लिखवाये। परन्तु पुरालेख-वेत्ता अब तक निर्णायक प्रमाण नही दे पा रहे है कि अशोक-पूर्व अभिलेख अकित हुए थे। वर्तमान उत्तर-प्रदेश के बस्ती जिले मे स्थित पिप्रहवा के बौद्ध अस्थि-कलश-अभिलेख की दो पक्तिया हो गोरखपुर जिले के सोहगौरा ताम्र-पत्र-अभिलेख की चार पक्तिया हो अथवा

---

(1) अभिलेखन की विविधता-विभिन्नता के कुछ चित्रमय उदाहरणो के लिए देखें British Museum Room of writing Wall case No 4 item No 88339 ' This [Assyrian] relief shows two scribes one writes in cuneiform with a stylus (शलाका)on a clay tablet the other writes in **Aramaic** with a pen on a leather scroll M BURROW What mean these stones ? London 1957 p 184 The writing desk of a scribe of the Persian period was found in Egypt There is a little cup to hold ink there is also a groove for the reeds used as pens A few **Aramaic** characters are legible showing the language used by the scribe and indicating that he tried out his pens on the desk itself ! " स्याही और कलम के लिए जो यूनानी शब्द हैं ये संस्कृत में ही प्रविष्ट हुए यू० मॅलन // सं० मेला यू० कॅलमॅास् // सं० कलम ।

वर्तमान बगलादेश के महास्थान की खण्डित प्रस्तर-पटि्टका की छह पक्तिया हो उन सब के सबध मे मतैक्य नही है कि वे सा०स०पू० तीसरी सदी मे ही लिखी गई है । कुछ अन्य अभिलेख जैसे अजमेर के निकट का बड़ली-अभिलेख, अशोक-पूर्व होने के इतने गभीर उम्मीदवार नही है। जहा तक हमारे अध्ययन के द्विभाषीय अभिलेखो के कालनिर्धारण का प्रश्न है यद्यपि देवानाप्रिय प्रियदर्शी कोई और हो सकता है, उन अभिलेखो के अशोकीय होने या न होने की गभीर समस्या नही है ।

अभिलेखन-सामग्री भी स्पष्ट है अशोक के सभी उपलब्ध अभिलेख प्रस्तर-लेख ही है। प्रस्तर-लेखन टिकाऊपन का सूचक है [1]। अशोक ने अपने धर्म-लेख चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से यही माध्यम चुना। ऐसे अभिलेखन मे अधिक सूझ-बूझ एव परिश्रम की आवश्यकता है । उपयुक्त शिलाखण्ड खोजने के बाद उसे छीलकर-घिसकर चिकना करते थे। पहले पत्थर पर सीधी रेखाए खीची जाती थी फिर सुलेखक उनपर स्याही या रग से लिखता था और अन्त मे खोदनेवाला वर्णों को खोदकर अकित कर देता था । कलात्मक प्रतीति होने के लिए पार्श्व शीर्ष एव अधोभाग मे स्थान रिक्त छोड़ दिया जाता था । [2]

221 स्तम्भ-अभिलेखन PILLAR INSCRIPTION

अभिलेखन हेतु स्तम्भ तैयार करने मे अत्यधिक उद्यम करना पड़ता था। सम्राट अशोक ने स्तम्भ का इतना कष्टमय प्रयोग क्यो किया ? डॉ० वासुदेव उपाध्याय [3] कहते है स्तम्भो पर लेख खुदवाने का कारण यह था कि जहा शिलाखण्ड उपलब्ध नही थे उस स्थान पर राजाज्ञा की घोषणा स्तम्भलेख द्वारा की जाती थी । यह उत्तर सतोषजनक नही है , व्यावहारिक सुविधा की बात नही है। स्तम्भ-प्रयोग का मुख्य कारण प्रतीकात्मक धर्मदृष्टि है। इसके सबध मे जॉन् अर्विन् [4] के सुझाव विचारणीय है। उनका

---

(1) दे० इब्रानी-अरामी र्तनख़ा का अय्यूब-ग्रथ 19 23 24 काश । मेरे ये शब्द लिखे जाते। काश । मेरी ये बाते अभिलेख मे उत्कीर्ण की जाती। काश । लोहे की कलम और सीसे से ये सदा के लिए चट्टान पर अकित की जाती।

(2) *राजबली पाण्डेय* **भारतीय पुरालिपि** पृ० 70 । (3) **प्राचीन भारतीय अभिलेख** पृ० 36 ।

(4) JOHN IRWIN Ashokan pillars the mystery of foundation and collapse G POLLET ed India and the Ancient World Leuven 1987 pp 87 93

मानना है कि अशोक के राज्यकाल के पहले भी कुछ तथाकथित अशोकीय स्तम्भ खड़े थे परन्तु उनपर कोई लेख नही था [1]। स्तम्भ खड़ा करने का अतिप्राचीन आनुष्ठानिक अर्थ है । विश्व-स्तम्भ किसी स्तम्भाधार पर खड़ा नही होता था , वह मानो सीधे धरती से निकल आता था। विश्वोत्पत्ति असत् पर सत् की विजय का यह प्रतीक है । इसका एक उदाहरण कौशाम्बी का पीठ-रहित कीर्तिस्तम्भ है जिसे राम की छड़ी कहते है। जब सन 1837 मे प्रयाग-कोसम स्तम्भ फिर खड़ा कर दिया गया तो उसमे स्तम्भाधार जोड़ा गया। आरम्भ मे उसके स्तम्भ-दंड पर भी कोई अभिलेख नही था [2]। प्रो० गोयल कहते है कि अशोक के सत्म्भ उन स्तम्भो के उत्तराधिकारी है जो [वैदिक] यज्ञस्थल पर यूपो के रूप मे स्थापित किये जाते थे । पौराणिक युग से मन्दिरो के सामने ध्वज-स्तम्भ या दीप-स्तम्भ खड़े किये जाते है। स्तम्भ-शीर्ष एव चक्र धारण करने पर स्तम्भ मे बुद्धदेव की सम्बोधि या धर्म-प्रवर्त्तन का अर्थ भी जुड़ जाता है ।

अशोक के स्तम्भ-लेखो के अकन के सबध मे के०आर्० नॉरमन् [3] ने भी ठोस सिद्धातो पर प्रकाश डाला, जो खण्डित द्विभाषीय अभिलेखो के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है । प्रयाग-कोसम को छोड़ मुख्य स्तम्भ-लेखो के अन्य सस्करणो को दक्षिण-पूर्व समूह (रामपुरवा लौरिया-अरराज लौरिया-नन्दनगढ़) और उत्तर-पश्चिम समूह (देहली-टोपरा देहली-मेरठ) मे बाट सकते है। प्रथम समूह मे मु०स्त० न० 1-4 और 5-6 दो विपरीत दिशाओ मे एक-एक स्तम्भ-मुख पर अकित किये गये जब कि द्वितीय समूह मे मु०स्त० न० 1-3 उत्तर न० 4 पश्चिम न० 5 दक्षिण और न० 6 पूर्व दिशा के स्तम्भ-मुख पर अकित किये गये । पृथक्

---

(1) श्रीराम गोयल का यही विचार है हो सकता है इन [स्तम्भो] मे कुछ प्राक-अशोकीय हो और अशोक ने पहले से स्थापित स्तम्भो पर लेख खुदवा दिये हो (**प्रियदर्शी अशोक** पृ० 142 पृ० 146 पर भी देखो) ।

(2) दे०JOHN IRWIN, The Prayāga Bull Pillar another pre Aśokan monument Fifth Int Conf of S Asian Archaeologists Berlin 1979 The Lāt Bhairo of Benares another pre Aśokan monument ? B ALLCHIN ed South Asian Archaeology 1981 Cambridge 1984 pp 225 230 H DE LUBAC Aspects of Buddhism 1953 ch 2 Two cosmic trees the cosmic pillar at Sānchi लेखक ऋग्वेद 1 59 1 का उल्लेख करते हे परम अग्नि-पूजा जो सभी मनुष्यो की नाभि मे जठराग्नि रूप से स्थित है पृथ्वी मे गड़े हुए खम्भे (स्थूना) के समान मनुष्यो को धारण करता है ।

(3) K.R NORMAN "The inscribing of Aśoka s Pillar Edicts India and the Ancient World 1987 pp 131 139

दिशाओ मे इस लेखाकन का तात्पर्य कलात्मक और अनुष्ठानिक भी हो सकता है। यदि स्तम्भ जमीन पर लेटा हुआ था तो एक स्तम्भ-मुख पर लिखने के बाद स्तम्भ को लुढकना पड़ा ताकि दूसरे मुख पर लिखा जा सके। देहरी-टोपरा स्तम्भ को खड़ा करने के पश्चात् ही सातवे मु०स्त० की कुछ पक्तिया छठे मु०स्त० के नीचे उत्कीर्ण की गई और शेष पक्तिया स्तम्भ के चारो ओर[1]। इसके लिए आरम्भ मे केवल एक ऊची सीढी की सुविधा थी, बाद मे स्तम्भ के चारो ओर कोई पाड़ बाधा गया। लगता है कि मु०स्त० न० 1-3 एक ही समय विज्ञापित हुए और थोड़े दिनो बाद न० 4, 5, 6 अलग-अलग प्रसारित हुए, लेकिन लिखने के पहले जब तक स्तम्भ लेटा हुआ था उन सभी छह लेखो के प्रारूप लिपिकार के पास पहुच चुके थे जिससे वह उन्हे कलात्मक क्रम से उतारना आरम्भ कर सके। शायद छठे लेख के साथ प्रावरण-पत्र (covering letter) भी आया कि स्तम्भ को खड़ा करे। स्तम्भ खड़ा करने के बाद जब सातवा लेख भी प्रसारित हुआ तब केवल देहरी-टोपरा के लिपिकार ने उसे उसी स्तम्भ पर उत्कीर्ण करने का दु साध्य कार्य किया। लेकिन असावधानी से उसने उसके प्रावरण-पत्र की यह सूचना भी अकित किया कि जहा स्तम्भ और शिलाए [तैयार] हो वहा यह धर्म-लेख खुदवाया जाए। अन्य सस्करण-स्थलो के लिपिकारो ने सातवे लेख को कही और उतारा होगा। इस अनुमान के समर्थन मे कन्दहार का अरामी शिलाखण्डलेख उपलब्ध हुआ जिसमे उसी मु०स्त०न० 7 के कुछ प्राकृत अश अरामी लिप्यन्तरण मे अरामी टीका-अनुवाद के साथ अकित हुए। इस प्रकार कन्दहार मे भी अशोक के प्रावरण-पत्र का अनुपालन हुआ[2]।

एक विशेष प्रकार का शिलाखण्डलेख कर्नाटक के गुलबर्ग जिले के सन्नथी नामक स्थान से प्राप्त हुआ। जैसे पहले ध्यान दिलाया गया इस शिलाखण्ड पर दोनो ओर लिखा गया। अत वह एक सूचना-स्तम्भ[3]

---

(1) care was taken by the scribe to vary the width of the line (and therefore the number of *aksaras* it contained) on each face so that the total number of lines on each face was very neatly identical (K.R NORMAN ibid p 137)
(2) If it was possible to take a copy of the edict to the far North West of Aśoka s empire translate it into Aramaic and then inscribe it the inscribing could certainly have been done at sites nearer Aśoka s capital (idem p 139) इसलिए नोरमन् ने प्रो० ऍगरमोन्त् के इस सुझाव को नही स्वीकारा कि सातवा मु०स्त० प्रसारित करते ही अशोक की मृत्यु हुई।
(3) I K SARMA & J V RAO op cit p 7 " inscribed stele like the *śilāphalakāni* cited in the Delhi Topra Edict VII

के सदृश था। सम्भवत उसे किसी ढाचे मे सभा-स्थल के बीच मे खड़ा कर दिया गया। हर तीसरे महीने जनता को इसका धर्म-लेख सुनाया जाता था। द्विभाषीय अभिलेखो मे शिलाखण्ड-लेख और शिलाफलक-लेख भी मिलते है , लेकिन सब-से अद्भुत है तक्षशिला का स्तम्भलेख । सामान्यत अशोक के स्तम्भ चुनार के बलुए पत्थर से बनते थे और उनपर सुप्रसिद्ध मौर्य पॉलिश् करवाई जाती थी जिससे वे अति चमकदार और चिकने हो जाते थे[1]। पर तक्षशिला का अरामी अभिलेख सगमरमर के अष्टभुजाकार स्तम्भ पर अकित हुआ। जी० फुसमन [2] जैसे विद्वान अशोकीय स्तम्भ कहने से भी हिचकिचाते है क्योकि वे ईरानी प्रभाव पर अधिक बल देते है। विदेशी कारीगरी की अच्छाइया अपनाने मे कोई बुराई नही है परन्तु श्रीराम गोयल की बात माने कि अशोकीय शिल्पकारो ने उन्हे परिपक्व भारतीय रूप तक विकसित किया।

222 अशोकीय लिपिकार ASHOKAN SCRIBES

अशोक के स्वदेशी शिल्पकारो ने शिलाओ को चमकाया परन्तु विभाषा मे द्विभाषिक लेख लिखवाने के लिए राजा उन विदेशी लिपिकारो के सहयोग पर निर्भर थे जो सीमान्त क्षेत्र की प्रजा मे सम्मिलित हो कर स्वदेशी बन चुके थे। उस काल का कोई भी अरामी अथवा यूनानी लिपिक पश्चिम एशिया की प्राचीन लिपिकीय परम्परा से अलग नही हो सकता था । प्रस्तुतिकरण की शैली मे और शब्दावली के चयन मे उसे जैसा-तैसा करके परम्परा का पालन करना था। फिर भी अशोक के प्रशासनिक प्रबध के अधीन होने के कारण उसे बहुत-कुछ पाटलिपुत्र की दफ्तरशाही पद्धति का भी आदर करना था ।

के०अल्० यार्नर्त् ने [3]अशोकीय लिपिको के सबध मे कुछ नये सुझाव दिये • पाटलिपुत्र के दरबारी लिपिक सम्राट के आदेशानुसार प्रथम मानक प्रारूप (मास्टर् कॉपी) तैयार करते थे। तब राजधानी से

---

(1) दे० *श्रीराम गोयल* **प्रियदर्शी अशोक** पृ० 143 ।

(2) G FUSSMAN Asoka and Iran Encyclopaedia Iranica II 2 1987 p 780 (दे० शोध के प्रथम भाग मे पृ० 105)

(3) KLAUS LUDWIG JANERT About the scribes and their achievements in Aśoka s India German Scholars on India 1973 vol I pp 141 145 दे० G FUSSMAN 'Central and provincial administration in ancient India the problem of the Mauryan empire The Indian Historical Review 14 nrs 1 2 1987 88 pp 43 72

निकलकर दूत कुमारो प्रान्ताधिकारियो के पास जाते थे और उन्हे चाहे मौखिक रूप से अथवा लिखित रूप से अभिलेख के विषय की अभिसूचना देते थे । इसी के आधार पर स्थानीय लिपिक अपने-अपने सस्करण का स्थानीय प्रारूप लिपिबद्ध करते थे जिसकी वे एक-एक प्रतिलिपि उपयुक्त स्थल पर उत्कीर्ण करते अथवा कराते थे । कभी उच्चाधिकारी सम्राट के शासनादेश को फिर आगे अपने किसी अधीनस्थ अधिकारी के पास पहुचाता था। इस प्रक्रिया मे मूल प्रारूप का कुछ अनुकूलन हो जाता था । अशोक का अनुभव ही था कि प्रसारित प्रारूप का ज्यो का त्यो प्रतिरूप नही बनता था क्योकि 14वे मुख्य शिलालेख मे उन्होने स्वीकार किया जो कुछ अपूर्ण लिखा गया हो उसका कारण स्थानाभाव सक्षेपीकरण अथवा लिपिको का दोष ही समझना चाहिए।

अशोक ने यहा अनुवाद के सबध मे कुछ नही बताया । जी०फुस्मन् के अनुसार सीमान्त क्षेत्र के शासक ने ही अनुवाद कराने मे पहल किया (took the initiative)। उतना ही नही उसने स्वतन्त्र रूप से शार-इ-कुन के यूनानी-अरामी अभिलेख का प्रारूप बनाया (composing directly) और अपनी ओर से लघमान के दोनो पथचिह्न-रूपी शिलालेख लिखवाये [1] । लेकिन प्रो० बी०अॅन् मुखर्जी मानते है कि इस प्रकार का स्थानीय अनुकूलन और पुनर्लेखन केन्द्रीय शासन के सम्पर्क मे ही किया जाता था [2]।

अभिलेख के मूल प्राकृत प्रारूप के आधार पर जब अशोकीय लिपिकार स्थानीय सस्करण लिखते थे तब व्याकरणिक अर्थ के अनुसार शब्दो के बीच अनिवार्य अन्तरण (space) छोड़ते थे , अन्यथा वे बिना रुके लगातार लिखते जाते थे। परन्तु यार्नर्त् ने ध्यान दिया कि कुछ अतिरिक्त अन्तरण भी मिलते है जो मौखिक पठन के कारण बीच-बीच मे आ गए । इस प्रकार अर्थ-रहित शब्द-समूह भी बन सकते थे [3]।

---

(1) G FUSSMAN op cit p 62 (2) B.N MUKHERJEE Commentary on H RAYCHAUDHURI Political History of Ancient India p 607 ' such adaptations were made under official supervision But the administration of the locality enjoyed some independence from the central authority in drafting the edicts to be issued within its jurisdiction
(3) K.L JANERT op cit p 142f ' peculiar distribution of spaces within the otherwise continuous lines of the inscription The individual master scribe must have taken down the edicts from direct recitation'

क्या यही कारण है कि अशोक के अरामी अभिलेखो मे जब प्राकृत प्रारूप का (लिप्यन्तरित) उल्लेख किया जाता है तब कुछ ऐसे शब्द-समूह चुने जाते है जो इतने सार्थक ओर इतने विशिष्ट नही कहे जा सकते है ? दूसरी ओर पश्चिमोत्तरी क्षेत्र के अरामी-यूनानी लिपिक शब्दो के बीच अन्तराल छोड़ने के आदी नहीं थे क्योकि जैसे ऊपर कहा गया है वे विस्तृत लिपिकीय परम्परा से जुड़े हुए थे और फारसी तथा किसी हद तक यूनानी दफ्तरशाही तन्त्र के उत्तराधिकारी थे [1]। बिना अन्तरण की लिखाई से पाठक को पढ़ने मे अवश्य असुविधा होती है , लेकिन प्रति पक्ति अक्षरो की सख्या प्राय एक-ही रहती है। अक्षर-सख्या की माप (stichometry) किसी खण्डित पाठ को पुनर्स्थापित करने के लिए सहायक सिद्ध होती है क्योकि लुप्त अक्षर का अनुमानित स्थान प्राय निश्चित है ।

23 अरामी अभिलेखन का कालक्रमिक सर्वेक्षण

CHRONOLOGICAL SURVEY OF ARAMAIC INSCRIPTIONS

प्रथम भाग मे अरामी भाषा की विकास-सारिणी प्रस्तुत की गई है (दे० पृ० 93 पर) । इसमे प्राचीन अरामी की कालावधि सा०स०पू० 11वी सदी से 2री सदी सा०स० तक निर्धारित की गई है। सा०स०पू० 3री सदी की अरामी भाषा के स्वरूप को अन्त्य साम्राज्यिक अरामी कहा गया है और अशोकीय अरामी को भूतपूर्व अखमेनी साम्राज्य के पूर्वी क्षेत्र का एक स्थानीय परिवेश माना गया है [2]। अशोक के अरामी अभिलेखो के अध्ययन मे समकालीन अरामी अभिलेखो से तुलना करना अनिवार्य है लेकिन पर्याप्त नही है। हमे व्यापक पृष्ठभूमि मे उनके विशिष्ट स्वरूप को पहचानना होगा। अत अरामी अभिलेखन का विस्तृत सर्वेक्षण इस विशेष उद्देश्य से करेगे कि उस अरामी शब्दावली का निर्माण कर सके जो लिपिकीय

---

(1) दे० G FUSSMAN op cit p 60 Aśoka allowed the survival at Kandahar and Laghman of a bureaucracy writing his acts in Aramaic which he probably inherited from the Persian empire and at Kandahar of a Greek bureaucracy which he inherited from the Seleucids So in north western India none of the Mauryan rulers had interfered with local habits

(2) उद० S SEGERT Altaramaische Grammatik Leipzig 1975 मे अशोकीय अरामी अभिलेखो को प्राचीन अरामी के सर्वेक्षण मे सम्मिलित किया गया है कन्दहार का अरामी पाठ न० 59 मे दिया गया है।

परम्परा के प्रभाव के कारण अशोकीय अरामी मे भी प्रयुक्त हुई[1]। अरामी अभिलेखो के आरम्भिक पुरालेख-वेता केवल पश्चिमी क्षेत्र के अभिलेखो पर ध्यान देते थे । बीसवी सदी के आरम्भ मे जी०ए० कूक ने यह विचार व्यक्त किया था कि फारसी क्षत्रप-शासक केवल पश्चिमी साम्राज्य की अधीनस्थ जातियो से अरामी भाषा मे सम्पर्क रखते थे [2]। लेकिन धीरें-धीरें अधिक-से-अधिक अरामी अभिलेख प्रकाश मे आए जिससे स्पष्ट होता गया कि साम्राज्यिक अरामी ने वास्तव मे एक व्यापक सम्पर्क-भाषा[3] का रूप धारण किया था। तक्षशिला-अभिलेख की प्राप्ति से उज्ज्वल प्रमाण मिला कि दूर पूर्व क्षेत्र मे भी अरामी का प्रसार हुआ था।

सा०स०पू० 11वी सदी से"प्रारम्भिक शासकीय अरामी"प्राचीन-अराम देश के राज्यो मे प्रयुक्त होती थी परन्तु विशेषकर दमिश्क नगर-राज्य की मानक राजकीय भाषा'प्रभावी बनी। दमिश्क के पतन के बाद वह अस्सीरियाई साम्राज्य मे फैलती गई और"आद्य साम्राज्यिक अरामी"का रूप धारण किया। तब नव-बेबीलोनी साम्राज्य मे उसका प्रभाव बढ़ता गया और फारसी साम्राज्य मे उसका शासकीय प्रयोग मिस्र से अफगानि-स्तान तक के विस्तृत क्षेत्र मे प्रबल हुआ । यूनानी साम्राज्य मे भी उसका प्रयोग तुरन्त नही रोका गया । इसलिए अशोक के समय तक साम्राज्यिक अरामी अवश्य जीवित रही। अरामी अभिलेखन के निम्न सर्वेक्षन का मुख्य आधार है एक ही वर्ष सन् 1962 मे प्रकाशित दो सग्रह - जे० कोपमन्स् के दो खण्ड और एच्० दोन्नर् एव डबल्यू० रैव्लिख् के तीन खण्ड[4]। इन दोनो मे अरामी अभिलेख भौगोलिक क्षेत्र के क्रम से प्रस्तुत किये गए । सन् 1967 मे अरामी वैयाकरण ॲफ्० रोजन्थल् ने एक उपयोगी लघु सकलन

---

(1) दे० J GREENFIELD Notes on the Early Aramaic Lexicon Orientalia Suecana 33 35 1984 86 p 149 Every new publication of Aramaic inscriptions provides material for those interested in the lexical resources of Aramaic

(2) G A.COOKE A Textbook of North Semitic inscriptions [Moabite Hebrew Phoenician Aramaic Nabatean Palmyrene Jedish] Oxford 1903 इसमे बहुत कम अरामी पाठ (न० 61 77) मिलते है जो CORPUS INSCRIPTIONUM SEMITICARUM (=CIS vol 2 Paris 1881) और M LIDZBARSKI Handbuch der nordsemitischen Epigraphik Weimar 1898 पर आधारित है।

(3) सम्पर्क-भाषा (lingua franca) का यह अर्थ नही कि यह केन्द्रीय प्रशासनिक भाषा बनी ईरानी प्रथम official language बनी रही जब कि अरामी दूर-दूर के प्रदेशो के आपसी सबध और व्यापारिक आदान-प्रदान के लिए काम आती थी - दे० G MESSINA, Nota Aramaica Biblica 17 1936 p 103 lingua di commercio

(4) J KOOPMANS Aramäische Chrestomathie 2 vols Leiden 1962 (= K) H DONNER & W ROLLIG Kanaanaische und Aramaische Inschriften 3 vols Wiesbaden 1962 (rev 1973) (= D इसमे कुल मिलाकर 718 पक्तियो के 279 पाठ है)

सम्पादित किया [1]। फिर सन 1975 मे जे० गिब्सन ने सभी महत्वपूर्ण अरामी अभिलेखो को कालक्रम से प्रस्तुत किया [2]। लेकिन हमारे उद्देश्य के लिए पुरालेखीय विकास की दृष्टि से जे० नार्वे का पस्तुतिक्रम अधिक उपयोगी साबित हुआ [3]। विशेष अभिलेखो के विवरण एव विवेचन के लिए ई० लिपिन्स्की की व्याख्याओ से सहायता मिली [4]।

प्राचीन अरामी अभिलेखो के कालक्रम मे मोटे तौर पर विषयवस्तु मे परिवर्तन का एक क्रम भी दिखाई देता है आरम्भ मे मुख्यत राजकीय प्रस्तर-लेख मिलते है, इसके बाद अधिकतर न्यायिक अभिलेख और, तीसरे विशाल वर्ग के रूप मे, एक-साथ बहुत-से पत्रात्मक एव स्मारक लेख ।

231 राजकीय प्रस्तर-लेख ROYAL STONE INSCRIPTIONS

प्राचीन अरामी भाषा के लगभग सभी प्रारभिक अभिलेख अराम देश और उसके पड़ोसी प्रदेशो के स्थानीय शासको द्वारा अभिलिखित वास्तुस्थापन-सबधी अश्मोत्कीर्ण लेख (monumental lapidary inscriptions) होते है । अरामी अभिलेखन के इस प्रथम चरण की कालावधि सा०स०पू० 9वीं सदी के आरम्भ से 8वी सदी के अन्त तक चलती है ।

231 ~ (1) सिहावलोकन का आरम्भ तेल खलाफ अभिलेख

हमारी दृष्टि पहले अरामीय लोगो की मातृभूमि अराम (सीरिया) देश की ओर जाती है। वस्तुत सा०स० पू० 11वी सदी मे वहा अनेक नगर-राज्य उदित हुए और उनके नरेश सिहनाद के साथ फरात महानदी के पार तक कूच पड़े। पश्चिमोत्तर मेसोपोतामिया के गोजान नगर (आधुनिक तेल-खलाफ) मे अरामी राजा कपारा के राजमहल से सिह की उद्भृत-आकृति मिली । इस सिह के अवलोकन से ही अरामी पुरालेखन-सामग्री का अपना सिंहावलोकन आरम्भ करे

---

(1) FRANSZ ROSENTHAL An Aramaic Handbook Part I & II Wiesbaden 1967 (= R)

(2) JOHN GIBSON Textbook of Syrian Semitic Inscriptions 3 vols (vol 2 = Aramaic inscriptions) Oxford 1975 (= G)

(3) JOSEPH NAVEH The Development of the Aramaic Script Jerusalem 1970 (=N)

(4) EDWARD LIPIŃSKI Studies in Aramaic Inscriptions and Onomastics Louvain 1975 (vol I) & 1994 (vol 2) (= L)

तेल-ख़लाफ का सिहाभिलेख[1] सा०स०पू० 9वी सदी का है, लेकिन इससे भी पुराना तेल-खलाफ से

सन 1931 मे प्राप्त यह अभिलेख है जो किसी मूर्ति के पादाग पर तीनो ओर अकित था[2]

अब तक ज्ञात सब-से पुराने अरामी अभिलेख का यह लिप्यन्तरण है (ई० लिपिन्स्की के अनुसार)
ज़् द्मत् प्अम्[य] ज़्य् क्ल्ख्य् [ह्व] अर्थात्
यह प्रतिमा पिअमी की है जो किली(?)किअ का है

---

(1) Louvre Museum Paric Lion inscription from Kapara s palace at Tell Hallaf

(2) (Berlin Museum परन्तु द्वितीय महायुद्ध मे नष्ट।) Tell Hallaf Plinth inscription earliest specimen of Aramaic script "
E.LIPINSKI vol 2 p 15 Drawing of the inscription on the pedestal from Tell Halaf

एक ओर सिह-घोष के साथ युद्ध-पराक्रम करनेवाले अरामी राजाओ ने अपनी नई भाषा-लिपि का प्रयोग किया , दूसरी ओर सात सदियो के बाद सिह-शीर्ष-स्तम्भ खड़ा करनेवाले प्रियदर्शी राजा ने उसी भाषा-लिपि को अपने धर्म-घोष का माध्यम बनाया ।

231 ~ (2) तेल फखरिया का द्विभाषीय अक्कादी अरामी अभिलेख

तेल-खलाफ से दो किल० पूर्व दिशा मे तेल-फखरिया मे सब-से पुराना विस्तृत अरामी अभिलेख[1] सन 1979 मे मिला राज-मूर्ति के अग्रभाग पर अस्सीरियाई अक्कादी के कीलाक्षरो मे 38 पक्तिया अकित है और उसकी पीठ पर अरामी व्यजन-अक्षरो मे 23 पक्तिया (लगभग 200 शब्द) । इसका यह नमूना[2] है

अकन-काल लगभग सा०स०पू० 880 है[3]। अरामी लेख अशत अक्कादी पाठ का अनुवाद है लेकिन अन्त मे कुछ अतिरिक्त शाप-वचन मिलते है। तेल-फखरिया के अरामी लेख की ये आरभिक पक्तिया है

[1] प्रतिमा (**द्म्यूत्अ्**) जो हदद-यि्सअी की है जिसे उसने सिक्कान के देवता हदद के सम्मुख स्थापित किया (**श्म्**) [5] वह करुणामय ईश्वर (**अ्ल्ह् र्ख्म्न्**) है जिससे प्रार्थना करना अच्छा (**ट्ब्ह्**) है [6] वह महान स्वामी (**म्र्अ् र्ब्**) है गोजान के राजा (**म्ल्क्**) हदद-यि्सअी का ही स्वामी [7] उसने प्रतिमा स्थापित की अपनी प्राणात्मा के जीवन (**ख्य्य्**) के लिए अपने दिनो की बढ़ोतरी (**म्अ्र्क्**) के लिए [8] अपने वर्षों की वृद्धि के लिए अपने घर की सुख-शान्ति (**श्ल्म्**) के लिए अपनी सतान की सुख-शान्ति के लिए और अपने लोगो (**अ्न्श्य्ह्**) की सुख-शान्ति के लिए [9] ताकि रोग उससे दूर रहे और उसकी प्रार्थना सुनी जाए [12] उसकी यह मूर्ति (**स्ल्म्**) [15] उसने यह प्रतिमा बनायी , जो प्रतिमा उसने पहले बनायी थी उसे उसने बढ़ाया/सुधारा (**ह्य्त्र्**)।

प्रतिमा-स्थापना की शुभकामनाओ की प्रस्तुति मे एक अभ्यस्त सुशिक्षित लिपिकार का हाथ दीखता है।

---

(1) the oldest eytant Aramaic composition A MILLARD & P BORDREUIL A statue from Syria with Assyrian and Aramaic inscriptions Biblical Archaeologist 45 1982 pp 135 141

(2)P DANIELS & W BRIGHT The World s Writing Systems 1996 p 103

(3)S KAUFMAN Reflections on the Assyrian Aramaic bilingual from Tell Fakhariyeh Maarav 3 1982 pp 137 175

इस प्रकार अरामी लिपिको की गौरवमय परम्परा आरम्भ हुई। यदि छह सौ वर्ष कूदते है तो अशोक के अरामी अभिलेखो मे तेल-फ़खरिया-अभिलेख के दसो शब्द वापस पाएगे। शब्दावली के स्थायित्व के पोषक वे गुरु-लिपिक थे जो पीढी-दर-पीढी अपने शिष्यो को जाने-माने अभिलेखो के नमूने सिखाकर अभिलेखन की निपुणता मे दीक्षित करते रहे। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है

1 तेल-फखरिया-अभिलेख मे प्रतिमा स्थापित करने और प्रतिमा बनाने की बात कही गई है। ये दोनो अरामी क्रियाए (शयम और अबद) अशोकीय अरामी मे प्रयुक्त हुए। इस सदर्भ मे ध्यान दे कि प्राचीन अरामी लिपिक ने पर्यायवाची शब्दो प्रतिमा (दॅमूथ) और मूर्ति (सॅलॅम्) मे जटिल अन्तर दिखाया प्रथम शब्द मे प्रतिमान के सादृश्य का प्रमुख अर्थ है और द्वितीय शब्द मे मूर्त दृश्यता पर अधिक बल दिया जाता है यहा तक कि वह उत्कीर्ण शिलापटट की बाह्य अभिव्यक्ति का अर्थ धारण कर सकता है। तॅनख्-बाइबिल के उत्पत्ति-ग्रथ 1 26 के अरामी अनुवाद मे भी दोनो शब्द प्रयुक्त हुए, जब पुरोहिती प्रस्तुति मे सृष्टिकर्ता का यह सकल्प बताया गया है हम मनुष्य को अपने मूर्त स्वरूप मे (बॅ-सॅलमना) , अपने प्रतिमान के सदृश (कि-धमूथना) बनाए [1]।

2 छठी पक्ति मे महाप्रभु हदद को स्वामी (म्रअ्) कहा गया है और उसके भक्त हदद-यि-सअी को राजा (म्लक्)। अशोकीय अरामी मे दोनो उपाधिया अशोक के लिए ही प्रयुक्त हुई। परन्तु ध्यान दे कि तेल-फखरिया-अभिलेख के अक्कादी पाठ मे हदद-यि-सअी को केवल उच्चाधिकारी राज्यपाल (šaknu) की उपाधि दी गई है। अत स्वजातीय अरामी लोगो की दृष्टि मे हदद-यि-सअी अवश्य उनका राजा था जब कि वास्तव मे अस्सीरियाई सम्राट का अधीनस्थ प्रशासक था। पर जब तक्ष-शिला के अरामी पाठ मे अशोक को स्वामी कहा गया है तब उन्हे केवल राज्यपाल न माना जाए।

3 पन्द्रहवी पक्ति मे अरामी क्रिया के प्रेरणार्थक (hafel, causative) प्रयोग ह्वत्र् का अनुवाद बढ़ाया/सुधारा किया गया है। अपने इस अनुवाद के समर्थन मे ई० लिपिन्स्की ने अशोकीय पाठ का उल्लेख किया और भारतीय विद्वान बी०अेन्० मुखर्जी को सराहा [2]। क्या बड़े आश्चर्य की बात नही कि अशोकीय अरामी की सहायता से छह सौ वर्ष पूर्व के पाठ का अर्थनिरूपण किया गया हो ?

तेल-फखरिया की अरामी भाषा मे एक विकसित भाषा होने के पर्याप्त सकेत है। भाषाविद् उसे अरामी की पूर्वी शाखा का आरम्भिक रूप मानते है [3] जो बाद मे अकुरित होकर अशोकीय अभिलेखो मे पहचाना

---

(1) दे० P COLELLA. Immagine e somiglianza nell iscrizione di Tell Fekheriyeh e nella Genesi Lateranum 55 1988 34 57

(2) E.LIPINSKI vol 2 p 84 ' The hafel of *ytr* is attested in the Aramaic Aśoka inscriptions from Kandahar I 8 (=श०अ० 8) and II 4 (= क०अ० 4) where it apparently means to provide a surplus Dupont Sommer s reflexive translation [to increase by itself'] does not suit a hafel form Much better is the translation to benefit adopted by B N MUKHERJEE

(3) दे० T MURAOKA. The Tell Fekherye bilingual inscription and Early Aramaic Abr Nahrain 22 1983-84 p 108 One may legitamately speak of Eastern Old Aramaic" A ABOU ASSAF P BODREUIL & A MILLARD La Statue de Tell Fekherye et son Inscription bilingue Assyro Araméenne Paris 1982 This Early Aramaic shows features of later Imperial Aramaic

जा सकता है। तेल-फखरिया-अभिलेख मे अरामी भाषा की वर्तनी स्थिर हो गई [1] व्यजनात्मक लिपि के तीन व्यजन अब दीर्घ अन्त्य स्वरो के लिए स्वराधार के रूप मे भी प्रयुक्त होने लगे अर्थात् हे (अथवा कभी आलिफ) आ के लिए वाव् ऊ के लिए और योध् ई के लिए। साधारण शब्द का मध्यस्थ स्वर अब तक अलिखित रहता है परन्तु कठिन या विदेशी शब्द का मध्यस्थ दीर्घ (या बलाघातित लघु) ऊ/ई स्वर अपने स्वराधार-रूपी व्यजन द्वारा दिखाया जाता है । शब्द-विभेदक के रूप मे खड़ी पाई । अथवा द्विबिन्दु भी प्रयुक्त होने लगा। फिर भी इस व्यजनात्मक लिपि का सही उच्चारण करना टेढ़ी खीर से कम नही है।

231 ~ (3) **राजा हज़ाएल के अभिलेख**

सा०स०पू० 842 मे सिह-विक्रात हजाएल ने दमिश्क का नया राजवश स्थापित किया। अस्सीरिया के सम्राट शलमनएसर-तृतीय ने उसे दबाने की कोशिश की पर वह सफल नही हुआ —यद्यपि उसने अपने काले विजयस्तम्भ' (Black Obelisk) के अक्कादी अभिलेख मे एक कालाशोक की तरह क्रूरतम विजय पाने का दावा किया [2]। वीर हजाएल ने सिर ऊचा रखा और शक्तिवान बनता गया। वह पड़ोसी राज्य इस्राएल पर भी दबोच पड़ा (इब्रानी-अरामी तॅनख् द्वि०राजा-ग्रथ 10 32) । तब एक राजभक्त अरामी लिपिक ने राजा की प्रशसा मे हस्तिदन्त-फलक पर यह समर्पण-लेख अकित किया जो खण्डित रूप मे अर्सलन-तश से प्राप्त हुआ [3]
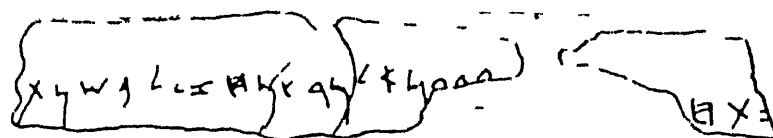
इसका अर्थ सदिग्ध है यह उत्कीर्ण किया (**ख्र्श्**) हमारे स्वामी (**म्र्अ्न्**) हजाएल के लिए ।
इस लेख से स्पष्ट है कि परम्परागत लिपिकीय शैली मे हमारे स्वामी (मारॅन्) का तात्पर्य समकालीन सिहासनारूढ राजा ही है। यही रूप तक्षशिला के अरामी स्तम्भलेख मे मिलता है (जिसका पूर्ण उच्चारण

---

(1) तेल-फखरिया-लेख के वर्ण-विन्यास के सबध में दे० F ANDERSEN & D FREEDMAN The orthography of the Aramaic portion of the Tell Fekherye bilingual Text and Context Jo for the Study of the OT Suppl 48 Sheffield 1988 pp 9 49
(2) दे० N S PRESCOTT Dual Heritage theBible and the British Museum Luton 1986 p 53
(3) G fig No 6 Arslan-Tash ivory plaque inscription

मारेना किया गया है [1])। हजाएल को अर्पित अन्य अरामी अभिलेखो मे [2]यही सबोधन मिलता रहता है उद० उसके दीर्घ शासनकाल के अन्तिम वर्ष 805 मे जिस वर्ष मे (**ब्** **श्नत्**) हमारे स्वामी ने नदी (**न्हर्**) को पार किया (**अद्ह्**) । यह पाठ नदी-तट पर स्थित लघमान के अशोकीय अभिलेखो के पाठ-निर्धारण मे सहायक हो सकता है।

उत्तर-इस्राएल के तेल-दान से प्राप्त कटोरे की तह पर अकित अरामी लेख[3] दिखाता है कि उस क्षेत्र पर हजाएल का अधिकार था (दे० द्वि० राजा-ग्रथ 13 22)। भोजन-सबधी इसका एक शब्द पुल-इ-दरुन्त के अशोकीय अभिलेख पर प्रकाश डाल सकता है अर्थात् **ल्** **ट्ब्ख्य्अ्** = रसोइए (अथवा कसाई ?) के प्रयोग के लिए।

231 ~ (4) **बर-हदद का पट्टस्तम्भ अभिलेख**

सन् 1939 मे अलेप्पो नगर से 7 किल० उत्तर दिशा मे एक सकल्प-अर्पित पटटस्तम्भ (votive stele) पाया गया। उपरले खण्ड पर नगर-देवता की उद्भृत-आकृति है और निचले खण्ड पर पाच पक्तियो का अरामी लेख । प्रत्येक पक्ति मे 15 अक्षर है — शब्दो को बीच मे काटना क्यो न पड़े। इसके फलस्वरूप अन्तिम पक्ति मे केवल एक ही अक्षर (अन्तिम शब्द का शेष अक्षर) मिलता है। पाठ का यह अनुवाद है

> पट्टस्तम्भ (**न्सब्अ्**) जिसे (**ज्य्**) बर-हदद ने स्थापित किया (**श्म्**) । वह अराम-देश के राजा के पिता इज्री-शमश का पुत्र है। उसने यह स्तम्भ अपने स्वामी (**म्र्अ्ह्**) मेल्क़र्थ् के लिए ही स्थापित किया क्योकि (**ज्र्य्**) उसने स्वामी के लिए व्रत धारण किया (**न्ज्र्**) और स्वामी ने उसकी वाणी सुन ली (**श्म्अ्**) ।

यदि बर-हदद को हजाएल का भाई माने तो उसके लेख का अकन लगभग सा०स०पू० 810 मे हुआ [4]।

---

(1) The shorter form[मार्न्] is general in Egyptian Aramaic and the longer [मारेना] in Biblical and the later Western dialects (J GIBSON Textbook of Syrian Semitic Inscriptions vol 2 Oxford 1975 p 5) इस अभिलेख के अन्य पुनर्स्थापित पाठ के लिए दे० E.PUECH L Ivoire inscrit d Arslan Tash et les rois de Damas Revue Biblique 88 1981 pp544 562
(2) F BRON & A.LEMAIRE Les inscriptions araméennes de Hazael Revue d Assyriologie et d'Archéologie 83 1989 35-44
(3) Tell Dan bowl inscription (J GIBSON op cit p 6) (4) अन्य पाठ-निर्धारण के लिए दे० G REINHOLD "The Bir Hadad stele and the Biblical kings of Aram Andrews University Seminary Studies 24 1986 pp 115 126

बर-हदद अभिलेख का प्रथम शब्द हमारे अध्ययन के लिए उपयोगी है क्योकि अभिलिखित स्तम्भ को अरामी मे नॅसीभा' कहा गया है। इब्रानी मे समान धातु के शब्द मस्सेभा' का अर्थ पूजास्तम्भ है। बर-हदद ने सकल्प-अर्पण के कारण यह स्तम्भ अपने आराध्य स्वामी के आदर मे स्थापित किया । अत उसे उपासना-वस्तु मान सकते है । अशोकीय स्तम्भो के सबध मे हमने इस प्रश्न पर विचार किया है कि क्या वे मूलत उपासना-स्तम्भ (cult pillars) तो नही थे ? (ऊपर देखिए पृ० 204 पर)

231 ~ (5) जक्कूर का पट्टस्तम्भ-अभिलेख

सन् 1903 मे अलेप्पो से 45 किल० दक्षिण-पश्चिम दिशा मे एक अन्य अभिलिखित पट्टस्तम्भ पाया गया। उपरले खण्ड पर देवता की उद्भृत-आकृति पूर्णत क्षतिग्रस्त है , परन्तु अरामी अभिलेख पूर्णत सुरक्षित है अग्रभाग पर 17 पक्तिया दाए पार्श्व पर 28 और बाए पार्श्व पर शेष 2 पक्तिया । अभिलेखन-काल सा०स०पू० 785 माना जाता है जब जक्कूर नामक राज्यापहरणकर्ता ने हमात-लुआश मे अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। आरम्भ मे अभिलेखनकर्ता विनम्र भक्ति के साथ कहता है

मै जक्कूर हू हमात तथा लुआश का राजा। मै पददलित (**अनूह्**)[1] मनुष्य था लेकिन स्वर्गिक प्रभु (**बअल् शमी'न्**) ने मुझे छुडाया। वह मेरे पास खडा रहा। स्वर्गिक प्रभु ने मुझे हजरक नगर मे राजा बनाया। तब अराम के राजा ने मेरे विरुद्ध सत्रह राजाओ की युद्धसधि बनायी किन्तु मैने स्वर्गिक प्रभु की ओर हाथ उठाये और स्वर्गिक प्रभु ने मेरी सुनी। द्रष्टाओ (**खाजयी'न्**) के द्वारा और सदेशवाहक (**आ॓र्थी'न्**) भेजकर स्वर्गिक प्रभु ने मुझसे बात की मत डर मैने ही तुझे राजा बनाया। मै तेरे पास खडा रहूगा। मै तुझे उन सब राजाओ से मुक्त करूगा जिन्होने तेरे विरुद्ध घेराबदी की है। तब स्वर्गिक प्रभु ने उन सब राजाओ को खदेड दिया।

दाए पार्श्व की पक्तियो मे राजा की उपलब्धियो का वर्णन है[49] मैने हजरक नगर का पुनर्निर्माण किया मैने उसे उपनगरो की महानगरी बनाया। मैने समस्त प्रदेश मे मजबूत गढ निर्मित किये और सर्वत्र देवालय बनाये।

(4)
(5)
(6)
(7)
(8)
(9)

इसके पश्चात् राजा उस व्यक्ति को शाप देता है जो पट्टस्तम्भ हटाने का दुस्साहस करे। अन्त मे बाए पार्श्व की 2 पक्तियो मे यह शुभकामना व्यक्त करता है कि जक्कूर का नाम चिरस्थायी हो ।

---

(1) J GIBSON No 5 Stele of Zakir a pious man literally humble afflicted or oppressed

यदि जक्कूर की राजनीतिक धर्मभक्ति की तुलना अशोक की धर्मनीति से करे तो अरामी राजा अधिक आत्मकेन्द्रित व्यक्ति लगता है जो अपनी प्रतिष्ठा की चिन्ता करता है जब कि प्रियदर्शी राजा अपनी प्रजा का वास्तविक हित चाहते है। अगले अभिलेखो के पाठ से और स्पष्ट होगा कि सच्चे धर्मराज कौन है ।

231 ~ (6) सेफीरे से प्राप्त तीन महा अभिलेख

अलेप्पो से 25 किल० दक्षिण-पश्चिम दिशा मे तीन विशाल पटटस्तम्भ मिले जिनपर लगभग सा०स० पू० 770 मे विस्तृत अरामी लेख उत्कीर्ण हुए प्रथम स्तम्भ पर तीनो ओर 112 पक्तिया है , द्वितीय स्तम्भ पर तीनो ओर 52 और तृतीय स्तम्भ के अग्रभाग पर 29 पक्तिया । इन तीनो लेखो का पारस्परिक सबध निर्धारित करना एक जटिल समस्या है[1]। ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान के लिए इनका अत्यधिक महत्व है[2]।

प्रथम सेफीरे लेख मे सधि-स्थापना के अनुबन्ध (**अदृय्**) निश्चित किये गये। अग्रभाग 1-7क मे सधि मे सम्मिलित दोनो पक्षो का विवरण है परन्तु यह सधि न केवल वर्तमान राजा पर लागू होगी वरन् उस के पुत्रो (**ब्नृव्ह्**) पर भी जो उसके स्थान पर (**ब् अ्श्र्ह्**) नियुक्त होगे। 7ख-12 मे देवलोक के सातो महादेवो को सधि-स्थापना के साक्षी ठहराया गया । इसके बाद 13-42 मे अभिशाप-वचनो की लम्बी सूची है सधि का अनुपालन न करने से सात-सात प्रकार की विपत्तिया आए। ठीक जैसे यह धनुष (**क़्श्त्अ्**) और ये तीर तोड़े जाते है वैसे ही देव दोषी पक्ष का धनुष तथा उसके प्रिष्ठित व्यक्तियो (**र्ब्व्ह्**) के धनुष तोड़ दे । इन पक्तियो का मूल रूप [3] देखे

---
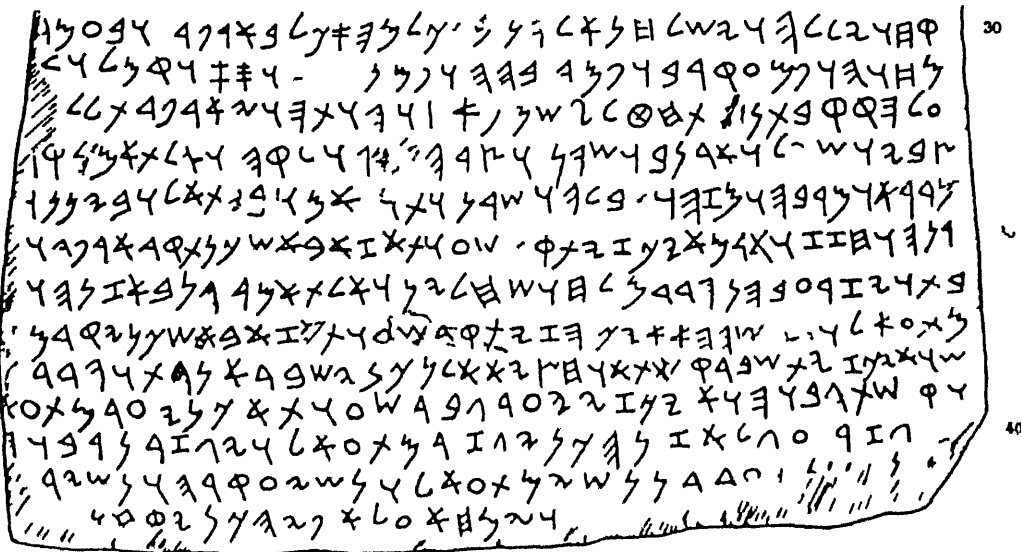
(1) दे० J FITZMYER The Aramaic Inscriptions of Sefire Rome 1967 p 2

(2) J GIBSON No 7 The three stelae together comprise the most substantial stretch of text in Syrian Semitic epigraphy

(3) Sefire Stele I Face A last lines (D vol 3 Table XVI No 222A)

दाए पार्श्व 1-14 मे नव-सस्थापित सधि को दृढ और अटल घोषित किया गया क्योकि उसे दिव्य सरक्षण प्राप्त है धन्य वह राजा (**दूबय् मूलूक्**)[1] जिसका सिहासन महान राजा की विश्वसनीयता (**अ्मन्** // ईमान !) पर आधारित है। यह सधि तो आकाश के मेहराब मे स्थिर की गई है और देवता इसकी रक्षा करेगे। इस अभिलेख (**स्प्रूअ्**) के शब्दो मे से एक भी निष्क्रिय नही होगा। इसलिए सधि-अनुबधो का अनुपालन करना परमावश्यक है (15-28क) । सधि के परिणामस्वरूप अनेक कर्त्तब्य भी है (28ख-45) जैसे युद्ध मे अधिराज की सहायता करना अकाल की स्थिति मे अन्न का प्रबध करना । अन्त मे लिखा है तथास्तु ! (**अ्मन्** // आमीन !) ।

बाए पार्श्व 1-25 मे सधि के अनुस्मरण हेतु (**ल् ज्क्रन्**) लिखित पाठ को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। अनूपालन न करनेवाले को गभीर चेतावनी दी जाती है।

द्वितीय सेफीरे-अभिलेख मे कुछ भिन्न शब्दो मे प्राय एक ही सधि की रूपरेखा मिलती है। पर अभिशाप के वचन अग्रभाग 1-14 मे सुनाये गये , तब दाए पार्श्व 1-21 मे सधि के सारे अनुबध ठहराये गये है। बाए पार्श्व 1-17मे समापन के वचन अकित हुए और चेतावनिया उद० यदि कोई व्यक्ति इन अभि- लिखित वचनो को पवित्र-स्तम्भो (**ब्त्य् अ्लूह्य्अ्** शब्दश देवालयो [2]) से हटाने का विचार भी करे तो घोर यातनाओ से वह स्वय मिटाया जाए !

तृतीय सेफीरे लेख मे भी सधि-स्थापना का विषय है , लेकिन उपरला अश अप्राप्य है । इस सधि मे एक पक्ष का सबध अस्सीरियाई सेनापति से है जो स्पष्ट रूप से अपना प्रभुत्व कायम रखता है। सधि मे सन्निहित कुछ कर्त्तब्य है विद्रोहियो को सौप देना नही तो तुम देवताओ के प्रति झूठे ठहर जाओगे (1-4) , भागनेवालो को शरण न देना (5-7 19ख-20) , आवागमन का प्रबध करना मेरे लिए मार्ग (**अ्रख्अ्**) खुला हो (**प्त्ख्ह्**) ! (8-9) । अगली पक्तिया (10-19क 21-23क) राजहत्या के सबध मे है यदि मेरे भाइयो मे से अथवा मेरे पुत्रो मे से अथवा मेरे अधिकारियो (**न्ग्द्य् / न्ग्र्य्** [3] = officers) मे से या मेरे कर्मचारियो (**प्क्य्द्** = officials) मे से या मेरे अधीन मेरी प्रजा मे से कोई मेरे प्राण हर लेनेवाला बने तो । शेष पक्तिया (23ख-29) राज्य-सीमा के सबध मे है ।

---

(1) अर्थात दूबे मॅलॅख उच्चारित करे -- Happy is the king whose throne यहा सधि-पक्ष के अधीनस्थ राजा की ओर सकेत है और निश्चित अर्थ मे सज्ञा का निश्चायक रूप मल्का (the king) होना चाहिए था। परन्तु अगले सबधवाचक वाक्याश (whose throne) के कारण उसका सकुचित रूप मॅलॅख प्रयुक्त हुआ - दे० E LIPIŃSKI vol 1 p 33 Since *mlk* seems to be in Sefire I B 6 in the construct state it is most likely followed by an asyndetic relative sen tence अशोकीय अरामी मे उसी तरह की शब्द-रचना (construct state followed by relative clause) का असामान्य उदाहरण देखोगे। (2) स्तम्भ को ही ईश-निवास माना गया है दे० तॅनख का उत्पत्ति-ग्रथ 28 22 इस्राएल के कुलपति याकूब ने मन्नत मानी यह पत्थर जिसे मैने स्तम्भ के रूप मे खड़ा किया है परमेश्वर का भवन (**बयत अ्लहयम**) बनेगा । दे० J GIBSON op cit p 45 The Greeks later saw these standing stones in Phoenicia and Syria and called them βαιτύλια (= बयतुलिअ), a word that recalls the Semitic name EUSEBIUS Praeparatio Evange lica I 10 23 animate stones (3) अरामी अक्षर रेश र् और दालॅथ द् एक-समान दीखते है चुनना कठिन है लेकिन सयोग की बात है कि दोनो शब्द नाघॅरय (KOOPMANS DUPONT SOMMER) और नॅघीधॅय (FITZMYER GIBSON) प्राय समानार्थी है पहला शब्द अक्कादी nâgiru = prefect से सबध रखता है दूसरा शब्द इब्रानी nâgîd = officer chief से । दिलचस्प बात है कि तक्षशिला के अरामी अभिलेख (त० 3-4) मे उसी तरह दालॅथ् और रेश् में चुनना पड़ता है विद्वान चाहे नाघरूथा पढते है अथवा नॅघीधूथा ।

इस प्रकार सेफीरे के शासकीय महा-अभिलेखो मे प्राचीन अरामी भाषा के साम्राज्यिक प्रयोग की तैयारी हुई [1]। इसे भाषा का परिष्कृत रूप मान सकते है जो अस्सीरियाई सीमा मे प्रवेश कर पूर्व की ओर फैल रही थी। इसी बीच पश्चिमोत्तर अराम के प्राचीन समअल क्षेत्र के जेनजिर्ली स्थान मे अरामी भाषा का एक अन्य स्वरूप उभड़ आया जो पड़ोसी फेनीकी भाषा के प्रभाव मे विकसित हुआ।

231 ~ (7) **जेनजिर्ली से प्राप्त विविध अभिलेख**

लगभग सा०स०पू० 775 मे राजा पनम्मू-प्रथम ने हदद देव की 4 मीटर ऊची मूर्ति की आधार- पीठिका पर स्थानीय समअली उपभाषा मे 34 पक्तिया खुदवाई । भाषाविद मानते है कि इस हदद-लेख मे आदि अरामी की कुछ विशेषताए विद्यमान है और उसकी कुछ जटिलताए उत्तरकाल की अरामी मे सुरक्षित है[2]।

पक्ति 12-13 मे राजा कहता है जिस दिन मै सिहासन का उत्तराधिकारी बना मैने देश को सभी देवी-देवताओ को अर्पित किया (**यूहब्**) ताकि वे देश को मेरे हाथ से ग्रहण करे। जो कुछ मै देश के उन देवी-देवताओ (**अ्ल्ह्य् मृत्**) से मागता था उसे मुझे प्रदान करते थे और मुझपर अनुग्रह करते थे। अन्त मे मूर्ति को अपवित्र करनेवाले के विरुद्ध यह भयावनी प्रार्थना है तू उस अपराधी को मारने के लिए (**ल् ह्र्ग्**) आदेश दे या किसी बाह्य व्यक्ति को प्रेरित कर।

सा०स०पू० 732 मे राजा बर-रक्कब ने अपने पिता पनम्मू-द्वितीय और दादा पनम्मू-प्रथम के आदर मे 23 पक्तियो का लेख लिखवाया , साथ-ही-साथ उसने अपने स्वामी अस्सीरियाई सम्राट तिगलत-पिलेसर के प्रति धार्मिकता (**सिध्का'**) अर्थात् राजभक्ति (loyalty) व्यक्त की मेरे पिता ने अपनी बुद्धि और धार्मिकता मे अपने स्वामी,अस्सीरिया के राजा (**म्र्अ्ह् म्ल्क् अ्श्व्र्**) का पल्ला पकड़ा। लगभग सा०स०पू० 710 मे बर-रक्कब ने जेनजिर्ली के राजमहल की उद्भृत-आकृतियो के बीच और लेख लिखवाये। उनकी अभिलिखित भाषा को शुद्ध मानक अरामी कह सकते है। जे० गिब्सन् ने [3] उन्हे आद्य

---

(1) दे० J GIBSON op cit p 23 the most likely candidate for ancestor of the late imperial dialect

(2) दे०P E.DION "The language spoken in ancient Sam'al Journal of Near Eastern Studies 37 1978 pp 115 118 J TROPPER Die Inschriften von Zincirli [with comparative grammar of Phoenician Sam'alian and Aramaic] Munster 1993

(3) The Barrakkab inscriptions are the earliest to employ the language commonly called official or imperial Aramaic one to commend itself to Assyrian administrators and traders (p 99)

साम्राज्यिक अरामी के अभिलेखो के अन्तर्गत प्रथम स्थान दिया ।

नौ पक्तियो-वाले लेख मे राजा कहता है मै बर-रक्कब उस तिगलत-पिलेसर का सेवक (**अ्ब्द्**) जो पृथ्वी की चारो दिशाओ का स्वामी (**म्रअ्**) और मेरा स्वामी भी है मै उसके प्रति धार्मिक/निष्ठावान (**स्द्क्**) रहा हू। उस राजभक्ति के कारण राजा को सरक्षण प्राप्त हुआ जिससे वह अपना भव्य राजमहल बना सका।
बीस पक्तियो-वाले लेख मे यह स्पष्टवादिता है मेरे बधु राजा ईर्ष्यालु हो गए मेरे घर के सब सौभाग्य के कारण (**ल् कल् मह् टबत् ब्यत्य्**)[1]।
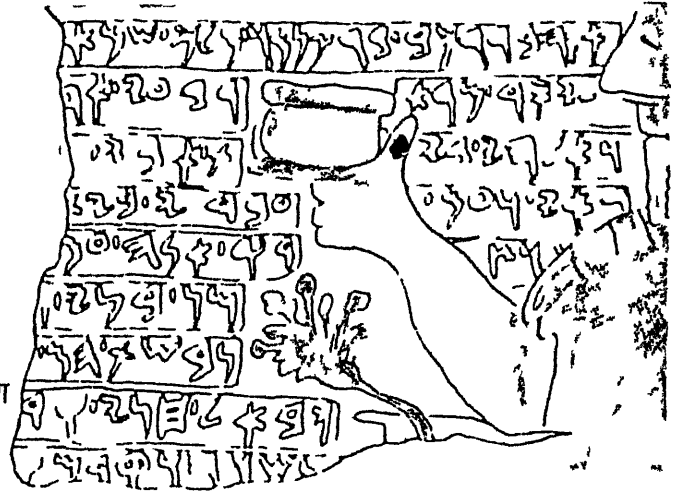
बर-रक्कब की धर्म-भक्ति यथार्थवादी राज-भक्ति का स्वार्थ है जब कि हमारे स्वामी अशोक अपनी प्रजा के हितार्थ उससे सच्ची धर्म-भक्ति की माग कर रहे है। वह चाहते है कि सत्यधर्म केवल अभिलेखन का उच्च विषय न रहे वरन् सदाचरण मे उसका यथार्थ कार्यान्वयन हो जाए।

231 ~ (8) तेल देइर-अल्ला का पलस्तर लेख

ऐसे आरम्भिक अरामी लेख पर भी दृष्टि डाले जो राजाभिलेखो की श्रृखला मे एक अपवाद है, परन्तु अनारामी क्षेत्र मे अरामी के प्रभाव का ज्वलत और दिलचस्प नमूना है। यर्दन नदी की पूर्वी घाटी मे तेल-देइर-अल्ला के खण्डहरो की किसी पोती हुई दीवाल पर दिव्य दर्शन का लेख प्राप्त हुआ, जो काली एव लाल स्याही से लिखा गया। छोटे-छोटे टुकड़ो को मिलाकर पाठ को पुनर्स्थापित करना पड़ा अब प्रथम पुनर्स्थापित सचय मे 16 पक्तिया है और द्वितीय सचय मे 18 पक्तिया। लेख लगभग सा०स०पू० 780 का है जब अम्मोन प्रदेश का यह क्षेत्र अराम देश के प्रभाव मे आया था। इसे अरामी प्रवाही लेखन का प्रथम उदाहरण मानते है, लेकिन कई विद्वान इसकी भाषा को अम्मानी-मिश्रित समझते है[2]।

---

(1) शब्दश सब के लिए जो-कुछ घर की अच्छाई हो - इस वाक्य-रचना मे अरामी प्रश्नवाचक सर्वनाम मह् के सबधवाचक प्रयोग पर ध्यान दे क्योकि अशोकीय अरामी के सदिग्ध पाठ के समाधान मे काम आएगा।

(2) JO ANN HACKETT The Balaam Text from Deir ʿAlla Chicago 1984 BARUCH A LEVINE, The Balaam inscription from Deir ʿAlla historical aspects J AMITAI ed Biblical Archaeology Today Jerusalem 1984 pp 326 339 ANDRE LEMAIRE, L' inscription de Balaam trouvée à Deir ʿAlla épigraphie ibid pp 313 325 परन्तु ई०लिपिन्स्की दृढ़तापूर्वक कहते है "The plaster inscription is typologically Aramaic with no peculiar features that might be termed Ammonite "(vol 2 p 100)

देइर-अल्ला-लेख का रचयिता, बओर का पुत्र बिलआम , निस्सदेह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था । वह अपने समय का प्रसिद्ध अम्मोनी द्रष्टा-नबी था[1]। उसके दर्शन के निम्न विवरण की कुछ पक्तिया पढे

प्रथम सचय मे लिखा है [1]बओर के पुत्र बिलआम के लेख का उदबोधन (य्स्र्) यह वही मनुष्य था जिसने देवताओ का एक दर्शन (**ख्ज़्ह्**) देखा । रात को देवता उसके पास आए और उन्होने उसपर [2] ईश्वर (**अेल्**) की गभीर चेतावनी (**क्-म्श्अ्**[2]) प्रकट की [सदेश लाल स्याही मे है] *इसका भविष्य* (**अ्ख्र्अ्ह्**[3]) *प्रकटित हुआ - शोक के लिए ! उसकी पर्णकुटी के भस्मीकरण हेतु अग्नि दीख पड़ी !* ' [3] तब बिलआम सबेरे उठा वह अपने कमरे मे उपवास करता रहा , वह अशात था और [4]रो रहा था। उसके लोग उसके पास आए। वे बओर के पुत्र बिल्आम से बोले आप क्यो उपवास कर रहे है और क्यो रो रहे है ? '[5] उसने उन्हे उत्तर दिया बैठो मै तुम्हे बताऊगा कि मातृका-देवो (**शाद्दयीन्**[4]) ने क्या शपथ खाई [6] उन्होने सूर्य-देवी[5] से कहा तुम्हारे भीतर अधेरा हो ! [अर्थात् सूर्य-ग्रहण हो - इसके बाद अधकार की विपत्ति से सम्पूर्ण विश्व अस्त-व्यस्त हो जाता है पशु-पक्षी भी असाधारण व्यवहार करने लगते है]''

दूसरे सचय का पाठ सदिग्ध है ऊर्जा एव ऊर्वरता की मा-सूर्य यदि पूर्णत ढक जाए तो महाविपत्ति छा जाएगी। इसे टालने के लिए तपस्या करनी होगी। पूजा-स्थल की स्थापना कर प्रायश्चित के महा-यज्ञ का आयोजन करना होगा। सम्भवत इन रहस्यमय शब्दो के द्वारा शिशु-बलि[6] की ओर सकेत है मृत राजा की जवान स्त्री (**अ्ल्म्ह्**) गर्भ मे एक सतान धारण करती है। बच्चा गर्भ मे विलाप कर रहा है क्योकि भाग्य प्रतिकूल है आराधक धर्मक्रियाओ मे भाग ले, जिससे देवता अनुकम्पा करे।

---

(1) इब्रानी-अरामी तनख़ के गणना-ग्रथ अध्य० 22-24 मे उसे मूसा के प्रसग मे (450 वर्ष पहले !) कैसे प्रस्तुत किया गया है ?और बाइबिल के बओर के पुत्र बिल्आम की गदही कैसे बोल सकती ? यह लोककथा की शैली का स्पष्ट सकेत है। इसलिए इस प्रसग के गभीर व्याख्याता स्वीकार करते है कि मूसा-काल के बहुत बाद जब इस्राएली अपने देश मे बस चुके और उन्हे ऐतिहासिक बिल्आम के सबध मे जानकारी प्राप्त हुई तब उन्होने उसी व्यक्ति को एक नया साहित्यिक रूप दिया। इस तरह धर्मसाहित्य से रगा हुआ बिलआम मूसा के प्रसग मे इस्राएल के पक्ष मे बोलनेवाले द्रष्टा के रूप मे प्रस्तुत किया गया। ई०लिपिन्स्की गणना-ग्रथ 22.5 का पाठ सुधार कर पढते है Balaam son of Beor the seer (= पाथोरा) who was near the River in the country of the sons of Ammon (' अमाव ' का एक अक्षर बदल कर)

(2) क् यहा छोटे निपात (particle) के रूप मे निश्चय दिखाने के लिए प्रयुक्त हुआ the very instruction of El (L.)। इब्रानी मे भी मस्सा भारी वचन गभीर चेतावनी के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ (दे० यिर्मयाह-ग्रथ 23 33 जकर्याह 9 1)।

(3) दे० K.LUKE. The Balaam texts from Transjordan Biblebhashyam 25 1999 p 190 The crucial word in the original is ʾhr h [= अख़ोरा] Caquot and Lemaire render it posterity which is certainly possible but improbable The meaning afterwards hereafter in the future occurs in Old Aramaic and this evidence decides the issue in favour of a hereafter पुल-इ-दरुन्त के अरामी अभिलेख (पृ० 8) मे यही शब्द उसी अर्थ मे प्रयुक्त हुआ !
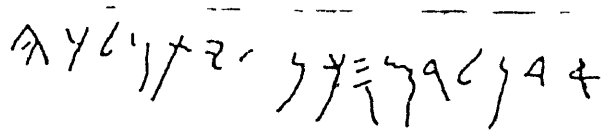
(4)अरामी शद का अर्थ है स्तन और स्तनधात्री मातृका को शद्दय कहते थे प्राचीन इस्राएल-देश मे अपनी-अपनी शक्ति-देवी के सग विराजमान कनानी देवता शेदीम कहलाते थे दे०H LUTZKY Shadday as a goddess epithet Vetus Testamentum 48 1998 pp 15 38 The *šedîm* Canaanite deities are Shadday gods

(5) दे० E.LIPIŃSKI op cit p 127 The Sun remains a feminine entity in the West Semitic world as late as the second half of the first millenium B C Besides the further context refers to a sun eclipse " (6) दे० K.LUKE.op cit p 195

देइर-अुल्ला-लेख के आशय के विपरीत अशोक ने अपने धर्मलेखो मे दर्शन के दृश्यो और बलि-विधियो के सबध मे जनता को सावधान किया, क्योकि धर्म सत्याचरण की बात है। पर उस द्विरगी अरामी लेख से मालूम हुआ कि अम्मोन देश के अन-अरामी लोगो ने अरामी को अपना कर उसे अपनी भाषा के अनुकूल बनाया। फिर भी वह अरामी भाषा बनी रही ।[1] उसी प्रकार अशोकीय अरामी की कुछ स्थानीय विशेषताए उसके अरामी स्वरूप को विकृत नही कर सकती ।

231 ~ (9) **हमात के ईंट लेख**

उत्तर-सीरिया के प्राचीन हमात नगर से ईंटो पर छोटे-छोटे अरामी लेख प्राप्त हुए जो सा०स०पू० 9वी व 8वी सदी मे अभिरेखित हुए उदाहरणार्थ[2]

एक अभिरेखन-लेख पर अदन-लू-राम का नाम मिलता है, अर्थात् प्रभु (**अ्द्न्**) अवश्य (**ल्**) उन्नत है (**र्म्**) '' । उसका पदनाम राजगृह-प्रबधक बताया गया है , शब्दश राजा के घर का अधिकारी (**स्क्न्**) । अरामी अभिलेखो मे सामान्यत उच्चाधिकारी के लिए स्ग्न् लिखा जाता है परन्तु यहा मध्य-व्यजन के निर्बल रूप की वर्त्तनी स्क्न् मिलती है । सामान्य वर्त्तनी की परवाह न करके प्रो० बी०अेन० मुखर्जी ने अशोक के द्वितीय लघमान अभिलेख मे अरामी ' श्क्न् को भी 'सग्न् का (दुगुना !) असामान्य रूप समझा[3]। क्या लिपिकीय परम्परा इतनी कमजोर थी कि बहुप्रयुक्त प्रशासनिक शब्द के तीन अक्षरो मे से दो असामान्य बन गए ?

इतने मे व्यापार की जगत् मे लेखा-कर्म हेतु अरामी लिपि का अधिक प्रयोग होने लगा। अत तराजू के पत्थर कास्य बाट बरतन मृद-पट्ट, मुहरे, राजदण्ड-सिर,आदि अरामी मे नामपत्रित (labelled) हुए[4]।

---

(1) borrowing some words from a pre Islamic North Arabian dialect (E.LIPINSKI p 170)

(2) J GIBSON vol 2 Hamath graffiti illustration No 7 (3)B.N MUKHERJEE.Com on Political History of Ancient India p 608 a governor (*skn*) called Whšu (4) उद० J KOOPMANS No 13 lion weights from Nimrud and Ninive some bronze weight s having bilingual Assyrian Aramaic inscriptions

उन छोटे अभिलेखो मे बड़ी कठिनाइया आ सकती है उद० पश्चिम ईरान के लुरिस्तान से प्राप्त कटोरे[1] का आरम्भिक अरामी अक्षर लामॅध् ल-कमर्अ्लह् — क्या वह लामॅध् यहा स्वामित्व-अधिकार का बोधक है (अर्थात यह कटोरा कमरअ्लह् का है) अथवा समर्पण का (अर्थात यह कटोरा कम्रअ्लह् को समर्पित है) ?

231 ~ (10) तेल दान का विजयस्तम्भ अभिलेख

हाल ही मे [2] उत्तर-इस्राएल के तेल-दान के उत्खनन मे अभिलिखित विजयस्तम्भ का यह खण्ड प्राप्त हुआ। तक्षशिला के अरामी अभिलेख के स्तम्भखण्ड की तरह उसका बहुत पहले द्वितीय प्रयोग हुआ था, क्योकि उसे दीवाल मे लगाया गया था। इस स्मारक-लेख की 13 पक्तिया सुरक्षित है (तक्षशिला मे 12!)।
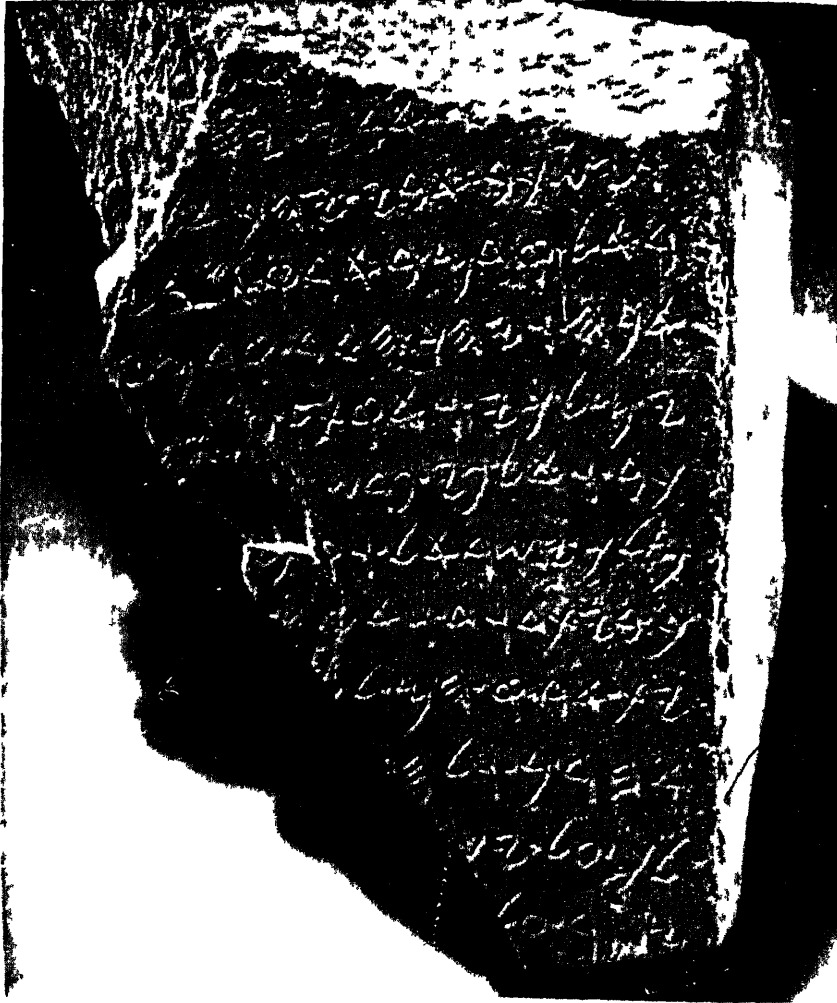
(1) G vol 2 illustration No 8 (2) News from Israel 41 1994 No4 p 19 New dicovery - victory stele from Tel Dan

तेल-दान-अभिलेख की 9वी पक्ति ने पश्चिम-एशिया के इतिहास के इतिहासज्ञो को आश्चर्य मे डाला[1], क्योकि पहली बार किसी अभिलेख मे इस्राएल के प्रथम राजा दाऊद का नाम मिला[2] ।यदि ई० लिपिन्स्की का अनुमान सही है तो यह अभिलेख दाऊद-वशज यहोशाफट के राज्यकाल (सा०स०पू० 870-848) के आरम्भ का है जब अराम और उत्तरी इस्राएल के बीच सघर्ष जोरो पर था[3] । अनुमानित पाठ इस प्रकार है

पहले नैराश्य की स्थिति (प० 1-3) [इस्राएल के] राजा ओम्री मेरे पिता से युद्ध करने आया था मेरे पिता लेट गए और [परलोक] चले गए (**यृहृक्**) । तब दिव्य सारथी ने महायुद्ध मे सहायता की (प० 4-9) मैने हदद से प्रार्थना की और हदद मेरे सम्मुख (**क्द्मय्**) चला और मैने इस्राएल के राजा को मारा (**अक्र्तल्** // कत्ल किया !), मैने हजारो की सख्या मे उसकी सेना के रथपतियो घुड़-सवारो एव पदाति सैनिको को मारा और दाऊद-वश (**बयृत् दवद्** [4]) के [राजा की सेना के हजारो] को मारा। मैने क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त किया। कलिग-विजय का अनुभव-जैसा हुआ (प० 10-13) इस्राएल मे एक अन्य राजा (**मलक् अखरन्**) सिहासन पर बैठा परन्तु वह [मेरे साथ शान्ति] करना नही चाहता था [तब हदद ने मुझसे कहा] जा, इस्राएल की ओर/के विरुद्ध/के विषय (**अल्**) ।

232 न्यायिक-व्यावसायिक अभिलेख JURIDICAL BUSINESS INSCRIPTIONS

यद्यपि आरम्भिक अरामी राजाभिलेखो मे अशोक के उच्चादर्श की अभिव्यक्ति नही हुई उनमे लिपिकीय परम्परा सुस्थिर दिखाई देने लगी । सा०स०पू० 7वी और 6ठी सदियो की अभिलेखीय सामग्री मे मुख्यत न्यायिक एव व्यावसायिक विषय मिलते है। अस्सीरिया व बेबीलोन की सरकार ने खुल्लम-खुल्ला तो नही

---

(1) A.BIRAN& J NAVEH The Tel Dan inscription a new fragment Israel Exploration Journal 44 1994 pp 1 18 और T MURAOKA.pp 19 21 & G RENDSBURG pp 22 25 B.HALPERN The stela of Dan Epigraphic and historical considera tions Bulletin of the American Schools of Oriental Research 296 1994 pp 63 80 V SASSON The Old Aramaic inscrip tion from Tell Dan Journal of Semitic Studies 40 1995 pp 11 30 और अन्य । लेकिन कुछ आलोचक राजा दाऊद के बदले मे वैकल्पिक नाम का सुझाव देते है H BARSTADT & O BECKING Does the stele from Tel Dan refer to a deity Dod ? Biblischen Notizen 77 1995 pp 5 12 और E.BEN ZUI Journal for the Study of the Old Testament 61 1994 pp 25 32 प्रतिक्रियाओ की बाढ़ से पता चलता है कि पुरातत्व-विज्ञान की सभी शाखाए तथा सहायक विधाए इस अरामी अभिलेख मे अभिरुचि दिखा रही हैं । शोधकर्ता को खेद है कि किसी अशोकीय अभिलेख की प्राप्ति पर पश्चिमी विद्वान प्राय चुप रहते है (2) मोआब के राजा मेशा के स्तम्भलेख प० 31 मे इब्रानी मोआबी पाठ को पुनर्स्थापित कर बत [द्]वद् अर्थात House of David पढ सकते है। (3) E.LIPIŃSKI vol 2 p 83 "The king of the House of David *mentioned on the stele may be Jehoshaphat However contrary to 1 Kings 20 13ff the king of Aram Damascus was* successful in the war he waged against Israel (4) बेथ्-दाविध पढे लेकिन दाऊद के मूल अर्थ के अनुसार उसका उच्चारण दोद भी कर सकते है अर्थात प्रिय(दर्शी) - दे० H P MÜLLER Die aramaische Inschrift von Tel Dan Zeitschrift fur Alt hebraistik 8 1995 pp 121 139। दाऊद-वश के राजा दक्षिण-इस्राएल के यहूदा-प्रदेश मे राज्य करते थे। ध्यान दे कि मूल मे बयृत्दवद बिना शब्द-अतरण (word-divider) लिखा गया है " The scribe considered this name like a single word viz the name of the country (L vol 2 p 97)। अत दाऊद-देश यहूदा-राज्य भी समझ सकते।

स्वीकारा , परन्तु व्यावहारिक रूप से दरबार व बाजार मे अरामी भाषा का बोलबाला रहा । अब से वह आद्य साम्राज्यिक अरामी कहला सकती है[1]। लिपि मे अश्मोत्कीर्णन की शैली जारी है , परन्तु मृत्तिका-फलको पर प्रवाही लेखन के अक्षर-रूप भी मिलने लगते है। औपचारिक अक्कादी प्रलेखो के अन्त मे भी अनुमोदन (endorsement) का पृष्ठाकन अरामी मे किया जाता था उद० विक्रय-विलेख के सत्यापन मे

इस मृत्तिका-फलक[2] पर बेबीलोन के राजा नबूकदनेसर का 34वा राज्यवर्ष (सा०स०पू० 571-570) अकित है और साक्षियो के सब नाम क्रमबद्ध लिखे हुए है। यह अधिकारपूर्ण मुहर और सक्षेपाकन (docket) के उद्देश्य के लिए भी काम आता था।
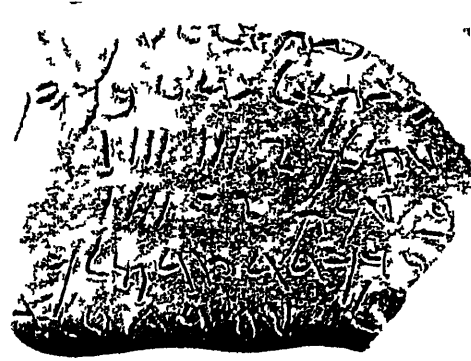
232 ~ (1) **अश्शूर के मृत्तिकाफलक-अभिलेख**

सा०स०पू० 650 मे अश्शूर नगर के किसी सेठ ने अपने लेखागार मे अनेक त्रिकोणी मृत्तिका-फलक रखे थे जो न्यायिक होते हुए भी साहूकारी के अन्याय की गवाही दे रहे है। निम्न उदाहरण प्रस्तुत है

<u>अश्शूर-लेख 1</u> के अनुसार कर्जदार को ऋण के रूप मे (अगली फसल के समय, 20 से 50 प्रतिशत तक ब्याज-सहित) जौ लौटाना है ' जौ जो (**ज़्य्**) अश्शूर-शल्लीम-अखे का है और नन्ना के पुत्र तकूनी के खर्चे मे (**अ़्ल्**) लिखा गया [3]। इसके बाद माप की सख्या और चार साक्षियो के नाम है। <u>अश्शूर-लेख 4</u> के अन्त मे लिपिक ने अपना नाम जोड़ दिया लिपिक[4] (**स्प्र्अ्**) कनूनाय । इस लेख मे,ऋण न लौटाने के कारण यह मृत्तिकाफलक-रूपी दस्तावेज महल-प्रमुख (**ख़्ज़्न् अ्ग्ल्ह्**[5]) के यहा दर्ज किया गया। इसमे डेढ गुना बढती (**र्ब्य्ह्**) जोड़ी गई और समय-सीमा भी निर्धारित की गई वजीर[6] का नामधारी वर्ष (=सा०स०पू० 659) और अ़ेलूल्[7] महीना (=आगस्त-सितबर)।

---

(1) कुछ विद्वान विशेषण साम्राज्यिक को फारसी साम्राज्य के लिए सुरक्षित रखते है उद० VOLKER HUG <u>Altaramaische Grammatik der Texte des 7 und 6 Jh v Chr</u> Heidelberg 1993 आजकल इस अवधि के लघुतम अभिलेख भी data base के रूप मे Comprehensive Aramaic Lexicon मे सकलित किये जा रहे है दे० M FALES <u>Aramaic Epigraphs on Clay Tablets of the Neo Assyrian Period</u> Rome 1986 (2) Louvre Museum Paris A.CHOURAQUI vol 6 p 148
(3) सम्बन्धवाचक/सकेतवाचक सर्वनाम ज़्य और पूर्वसर्ग अ़्ल् के विशिष्ट प्रयोग मे अरामी लिपिकीय परम्परा का हाथ है दे० E.LIPINSKI vol 1 p 83 The name of the lender is not introduced by the genuine Aramaic lamed of ownership but by the demonstrative *zy* The name of the borrower is introduced by the preposition *ʿal* of indebtedness
(4) अर्थात स्पफ़रा' एक अन्य शब्द शोटे़र् है -" The scribe in juridical documents is also a notary a law-expert (<u>ibid</u>)
(5) दोनो अक्कादी शब्द है hazannu और ekallu । (6) मूल मे सकल् अक्कादी šukallu , जिसका नाम सिलीम-अश्शूर बताया गया। (7) अस्सीरिया-बेबीलोन के अ़ुल्वुल् महीने का नाम अशोक के द्वितीय लघमान अभिलेख (द्वि०ल० 1) मे भी मिलता है ।

अश्शूर-लेख 6 मे ऋणी व्यक्ति का नाम अ-ससी है, जिसका सुमेरी मे मूल अर्थ उपचारक है ई० लिपिन्स्की उसका अरामी प्रयोग एस्सेनी -पथ के नाम मे पहचानते है (इसके सबध मे प्रथम भाग पृ० 183 पर देखे)[1] ।

232 ~ (2) तेल खलाफ़ के मृत्तिकाफलक-अभिलेख

तेल-ख़लाफ से (दे० पृ० 210) पाच मृत्तिका-फलक मिले जो अस्सीरियाई साम्राज्य के पतन के ठीक पहले सा०स०पू० 612 मे अकित हुए। उनमे भी लिपिकीय परम्परा का विशिष्ट भाषा-प्रयोग झलकता है।

ख़लाफ-लेख 1 मे उधारदाता के नाम के पूर्व 'स्वामित्व का लामॆध् प्रयुक्त हुआ जब कि उधारी के नाम के सामने ऋण-सूचक अल् मिलता है। यहा की शर्त कठोर है   यदि वह नही (**लृह्** [2]) लौटाता तो जौ की दुगुनी राशि लौटानी पड़ेगी।
ख़लाफ-लेख 5 मे प्राप्तकर्ता कोई सरकारी अधिकारी है क्योकि अनाज राजकोष हेतु जमा हुआ शक्तिमान राजा (**सृर्**) के लिए ।

232 ~ (3) अस्सीरियाई विधि प्रवर्तन का शिलाफलक-लेख

अरामी मे उत्कीर्ण अब तक ज्ञात प्राचीनतम अस्सीरियाई विधि-लेख' सन् 1971 मे प्रकाश मे आया। यह अभिलेख सा०स०पू० 7वी सदी मे उन अरामी कर-दाताओ के लिए उत्कीर्ण हुआ जो बेबीलोन से अन्यत्र उत्प्रवासित हुए। इसकी सिर्फ 8 पक्तिया है

आरम्भिक वाक्याश अक्कादी विधि-भाषा की नकल है   और अब यह (**व् कृअ्त् ग्ऱ्अ्**) मनुष्य जो (**अ्य्श् ग्ऱ्य्**) [3] अर्थात् जो भी व्यक्ति अक्काद देश से उत्तर की ओर आया और घर या खेत मे कमाने लगा परन्तु उसने राजा के निरीक्षण-अधिकारी को अपना लाभाश सुपुर्द नही (**लृअ्**) किया और जो घर का मालिक उसके घर मे घुसा (**अ्ल्** — अ्ल्ल् क्रियाधातु से) और जिस नगराध्यक्ष अथवा निरीक्षण-अधिकारी ने उसको देखा परन्तु उन्होने उसको नही पकड़ लिया वे-सब जीवित नही रहेगे ! जितने व्यक्ति घोटाले मे सहभागी हुए वे सभी दोषी है और दड भोगेगे ।

अरामी मे लिखते हुए भी लिपिक ने अस्सीरियाई विधि और प्राधिकरण के पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त किये।

---

(1) E.LIPINSKI vol 1 p 109 Sumerian loanword which means healer physician in Greek transcription ἐσσαῖοι used by Philo Judaeus and Josephus Flavius to designate the Essenes from Palestine who closely resemble the Therapeuts from Egypt and were indeed healers and thaumaturgs

(2) निषेधात्मक उपपद ला (नही) की वर्त्तनी मे अब तक अन्त्य दीर्घ स्वर आ के स्वराधार के लिए व्यजन हे का प्रयोग हुआ 'एक सदी के बाद (और अशोकीय अरामी मे भी) अधिकतर व्यजन आलॆफ प्रयुक्त होगा (= लृअ्)।

(3) अक्कादी भाषा मे awīlum ša = the man who a relative law formulation publicly addressed to every individual दे० P E DION Une inscription arameenne en style *awīlum ša* ' Biblica 1974 pp 399-403

232 ~ (4) नेराब से प्राप्त अन्त्येष्टि पट्टिका लेख

अलेप्पो नगर से 7 किल० दक्षिण-पूर्व दिशा मे दो अन्त्येष्टि-स्मारक मिले जिनपर लगभग सा०स०पू० 610 मे चन्द्रदेव के दो पुजारियो की स्मृति मे अरामी लेख अकित हुए।

प्रथम लेख मे (Paris,Louvre Museum) 14 पक्तिया है

↖ कुछ पक्तिया उदभृत-आकृति के ऊपरी हिस्से पर अकित है । पुरोहित (**कुमृर्**) का नाम शिन-जेर-इबनी बताया गया है ।

↙ वस्त्र के निचले भाग पर शाप के पश्चात् आशिष का यह वचन है यदि आप इस आकृति एव समाधि की रक्षा करते रहेगे तो भविष्य (**अख़्रा**) मे आपकी सतति भी सुरक्षित रहेगी ।

दूसरे लेख मे (D ,XXV, 226) 10 पक्तिया है 4थी प० मे मृत्युशय्या पर वृद्ध पुरोहित सिगब्बारी की विदाई है जिस दिन मै मर रहा था तब भी मेरे मुह के वचन बद नही हुए और अपनी आखो से मै चौथी पीढी के बच्चो को देख रहा था (**मृखृजह्**) । पर वे रो रहे थे और शोक-सतप्त थे । अन्त मे उसकी भावी पीढी (**अ्खृर्तुह्** दे० G ,Nr 19 his posterity) के लिए शुभ वचन है ।

(1)
(2)
(3)
(4)
(5)
(6)
(7)
(8)
(9)
(10)

नेराब-लेख अरामी लिपि की अश्मोत्कीर्ण शैली का उत्कृष्ट रूप दर्शाते है (दे० पुरालिपि-सबधी तृतीय भाग मे) । उस काल के न्यायिक-व्यावसायकि अभिलेखो के मध्य वे शोभा दे रहे है परन्तु भौतिकवादी दृष्टि मे धार्मिक कृत्य भी एक प्रकार का वृत्ति-व्यवसाय है । इस श्रृखला मे अगला उदाहरण युद्धकालीन आर्तनिवेदन का लेख है और वह भी धर्म के नाम से ।

232 ~ (5) सक्कारा से प्राप्त अदोन का पटेरपत्र

अस्सीरियाई साम्राज्य मे अरामी भाषा-लिपि का प्रयोग इतना बढता गया कि सरकारी अधिकारी उसे अपने औपचारिक पत्रव्यवहार मे प्रयुक्त करने लगे। सा०स०पू० 648 के पत्र मे सेनाध्यक्ष ने सम्राट अशूर-बनिपाल को लिखा, जब सम्राट अपने विद्रोही भाई का दमन करने मे सफल हुआ। यह पत्र मृद-पट्ट पर लिखा गया और इसमे सम्राट को मेरे स्वामी राजा (मृर्य् मल्कृअ्) सबोधित किया गया[1]। लेकिन अरामी मे व्यापक पत्रव्यवहार का सब-से महत्वपूर्ण प्रमाण है सक्कारा-पटेरपत्र [2] जो मिस्र की प्राचीन राजधानी मेम्फिस के निकट सक्कारा नामक स्थान से सन् 1942 मे प्राप्त हुआ। उसे इस्राएल के समुद्र-तट पर स्थित छोटे नगर-राज्य एक्रोन के राजा अदोन ने फरओ नेको के पास भेजा था जब सा०स०पू० 604 मे बेबीलोनी सेना किसी भी समय आक्रमण करनेवाली थी। निम्न मुद्रित प्रस्तुति से पता चलता है कि सक्कारा-पटेरपत्र की 9 पक्तियो का सम्पूर्ण बाया अश अप्राप्य है (जैसे तक्षशिला के अरामी स्तम्भलेख के सबध मे अनुमान लगाया जाता है कि उसका बाया खण्ड अनुपलब्ध है) [3]

(1) אל מרא מלכן פרעה עבדך אדן מלך [שלם מרא מלכן פרעה עשתרת(?) בעלת(?)]
(2) שמיא וארקא ובעלשמן אלה[א ישאלו בכל עדן וישמו כרסא מרא מלכן(?)] - - - - - -
(3) פרעה כיומי שמין אמין זי [תילא(?)] - - - - - - - - - - - - - - - - - - -
(4) זי מלך בבל אתו מטאו אפק וש[- -
(5) ----אחוו----|----------ـ-[-- -
(6) כי מרא מלכן פרעה ידע כ עבד[ך- -
(7) למשלח חיל להצלתי אל שבקנ[י -
(8) וטבתה עבדך נצר ונגד/רא זכם[-
(9) פחה במתא וספר שניוי סם[ר(?) -

---

(1) G Nr 20 the Ashur Ostracon - प्रवाही लेखन का एक आरम्भिक नमूना। (2) SIEGFRIED H HORN Where and when was the Aramaic Saqqara Papyrus written ? Andrews University Seminary Studies 7 1969 pp 29 45 J BRIGHT A new letter in Aramaic written to a Pharaoh of Egypt Biblical Archaeology 12 1949 pp 46 52 Adon wrote neither in his own tongue nor that of his [Egyptian] lord but in Aramaic It illustrates the fact that Aramaic was already before the end of the 7th century becoming the international language of state (3) D Nr 266

जे० फित्समायर् के सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर अवशिष्ट पटेरपत्र का यह अर्थ निकाले [1]

सेवा मे (**अल्**) राजाओ के स्वामी (**म्र्अ् म्ल्क्न्**[2]) — आपके सेवक अदोन , अश्कलोन के राजा की ओर से। स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी (-देव) और महान ईश्वर स्वर्गिक बअल-देव सदा मेरे स्वामी फरओ को सुख-समृद्धि दे और फरओ के सिहासन को स्वर्ग के दिनो के सदृश स्थिर रखे। बात यह है कि बेबीलोन के राजा की सेनाए आई और आपके नगर तक पहुची। वे अपने शिविर खड़ा कर चुकी और उन्होने पर अधिकार प्राप्त किया । इसलिए क्योकि राजाओ के सवामी जानते है कि आपका सेवक उनका सामना नही कर सकता । मेरे स्वामी यह अनुग्रह करे कि मुझे बचाने के लिए (**ल् ह्स्ल्त्य्**) एक सैन्यदल भेजे । राजाओ के स्वामी मुझे त्याग न दे । कयोकि आपके सेवक ने अपनी निष्ठा की शपथ तथा अपने अच्छे-से सबध (**ट्ब्त्ह्**[3]) का पालन किया। इस नायक (**न्ग्द्अ् / न्ग्र्अ्**[4]) ने देश मे एक उच्चाधिकारी (**प्ख्ह्**) को नियुक्त किया और उसने अपने किये हुए पुनर्गठन को लिपिबद्ध किया ।

सक्कारा-पटेरपत्र हमे अस्सीरिया-बेबीलोन से मिस्र की ओर ले जाता है जहा मानो अरामी पटेरपत्रो का युग शुरू होगा। किन्तु नवस्थापित विशाल फारसी साम्राज्य के पश्चिमी छोर पर स्थित मिस्र मे अरामी अभिलेखो की प्रचुरता यत्र-तत्र बहु-प्रयुक्त साम्राज्यिक अरामी सम्पर्क भाषा' का मात्र शानदार निशान है।

233-क पत्रात्मक अभिलेखन की बहुवृद्धि ABUNDANCE OF EPISTOLARY INSCRIPTIONS

मुख्यत मिस्र मे प्राप्त अरामी अभिलिखित सामग्री को प्रस्तुत अभिलेखन-सर्वेक्षण के तीसरे चरण मे रख सकते है । इसकी तीव्रतम अवधि सा०स०पू० 5वी सदी के अन्त मे आरम्भ होती है और समस्त 4थी सदी मे जारी रहती है। स्वभावत पत्रात्मक अभिलेखन मे प्रवाही लेखन-शैली है और प्रशासनिक पत्रव्यवहार मे श्रेण्य साम्राज्यिक अरामी का प्रयोग होता है। उसी तीसरे चरण मे सस्मरण एव समर्पण के कुछ अभिलेख भी मिलते है जिनकी लेखन-शैली चाहे नव-अश्मोत्कीर्ण (new lapidary) अथवा आकार-बद्ध प्रवाही

---

(1) J FITZMYER The Aramaic letter of king Adon to the Egyptian Pharaoh Biblica 46 1965 pp 41 55 A.BEA. Epis tula Aramaica saeculo 7 exeunte ad pharaonem scripta Biblica 30 1949 pp 514 516

(2) J FITZMYER ibid Dupont -Sommer rightly stressed that the title *mr' mlkn* is not found in Egyptian documents and that it should not be confused with the Accadian *šar sarrāni* or with the Achaemenid title King of Kings It rather agrees with Phoenician *'dn mlkm* or Accadian *bel šarrāni* and Greek *kyrios basileon*

(3) his good relations friendship literally goodness

(4) दोनो समानार्थी शब्दो मे चुनना कठिन है - दे० ऊपर पृ० 218 टिप्पणी 3 । A BEA का सुझाव भी विचारणीय है न्ग्व्अ् पढ़े अर्थात राज्यक्षेत्र region ।

(formalised cursive) कहलाती है। इस सामग्री को अलग उपखण्ड (233-ख) मे प्रस्तुत करेगे। साथ-ही-साथ अरामी मे साहित्यिक कृतियो का भी प्रादुर्भाव हुआ । उन्हे इस तृतीय चरण के तृतीय उपखण्ड (233-ग) मे रखेगे । इस प्रकार अरामी के श्रेण्य काल का सर्वेक्षण कर हम सा०स०पू० 3री सदी के आरभ तक पहुचेगे जो अशोकीय अभिलेखो के काल के सन्निकट है ।

अरामी पटेरपत्रो का प्रथम निर्णायक सग्रह सन् 1923 मे ए० कॉव्ली के द्वारा प्रकाशित हुआ[1]। तब ई० क्रेलिङ् ने सन् 1953 मे एक अतिरिक्त सकलन तैयार किया[2]। तत्सबधी पटेरपत्र मुख्यत अेलेफन्तिनै के सैन्य-शिविर से प्राप्त हुए थे , परन्तु हेर्मोपोलिस से भी अरामी पटेरपत्र मिलने लगे जो सन 1966 मे ई० ब्रेश्यानी तथा अेम्० कमिल् द्वारा सम्पादित हुए[3]। इन पूर्व-प्रकाशनो के आधार पर बी० पॉर्टॅन् ने अपना ठोस अध्ययन प्रस्तुत किया जो हमारे सर्वेक्षण के लिए अत्यन्त सहायक रहा[4]।

233-क ~ (1) **अेलेफन्तिनै एव सुअेनै के अरामी भाषाभाषियो के पटेरपत्र**

यद्यपि फारसी साम्राज्य मे व्यावहारिक अभिलेखीय सम्पर्क के लिए अरामी का प्रयोग हो रहा था, फिर भी नील नदी के प्रथम जलप्रपात पर एक ऐसा समुदाय मिलता है , जिसके लिए अरामी उसकी अपनी साधारण बोलचाल की भाषा थी। वहा यूनानी नाम से प्रसिद्ध **अेलेफन्तिनै** टापू था (जिसे अरामी मे **येभ्** का गढ कहते थे) और उसके सामने तट पर **सुअेनै** की बस्ती थी । अेलेफन्तिनै के फारसी शिविर मे तैनात अरामी-भाषाभाषी भृतक सैनिको के विषय मे विचार-विमर्श कर चुके है (दे० पृ० 120) । उनसे जो बहुत-से पटेरपत्र प्राप्त हुए, वे व्यक्तिगत लेख हैं , परन्तु वे पेशावर लिपिको के हाथ से लिखे गए। अशोक के अरामी अभिलेखो के अध्ययन हेतु उनकी विशेष समुद्दिष्ट (referential) उपयोगिता है। अेलेफन्तिनै एव

---

(1) A.COWLEY Aramaic Papyri of the Fifth Century B.C Oxford 1923 (=C O W) G DRIVER Aramaic Documents of the Fifth Century B C London 1954 (= D R I) (2) E.KRAELING The Brooklyn Museum Aramaic Papyri New Haven 1953 (=K R A) (3) E.BRESCIANI & M KAMIL Le Lettere Aramaiche di Hermopoli 1966 (= B R E) P GRELOT Documents Arameens d Egypte Paris 1972 (4) B PORTEN (& J GREENFIELD) Jews of Elephantine and Arameans of Syene (Aramaic texts & tr) Jerusalem 1980 (= P O R) B.PORTEN & A.YARDENI Textbook of Aramaic Documents from Egypt 4 vols 1986 T MURAOKA & B PORTEN A Grammar of Egyptian Aramaic 1998

तुअनै के प्रमुख पटेरपत्रो को तीन लेखागारो के अनुसार बाट सकते है

1 गृहस्वामिनी मिब्टख्या के लेखागार से 10 दस्तावेज मिले, जो सा०स०पू० 471- 410 के बीच मे लिखे गए। वे एक ही परिवार की तीन पीढ़ियो से सबधित है । वे दस्तावेज घर पर मिब्टख्या नामक उस नारी के स्वामित्व-अधिकार की सुरक्षा करते है COW 5 (20 प०) के अनुसार अभियोगी को स्वीकार करना पड़ता है कि यह दीवार (**अग्र्अ् ज्क्**) आपकी है और यह आपका अधिकार है कि आप उसमे अपना फाटक (**त्र्अअ्**) खोले । 8 साक्षियो के नामो मे 3 ईरानी है उद० बगदत- (**ब्ग्द्त्**)। लिपिक स्वय अपना नाम (पलट्या) भी लिखता है, तारीख है एलूल महीने का \/ /// /// ⟶ अर्थात् दाए से पढ़कर 10+3+3+2 = 18वा दिन और क्षयर्ष का 15वा राज्यवर्ष = सा०स०पू० 471। COW 6 (22 प०) मे गृहिणी मिब्टख्या के स्वामित्व का फिर अनुमोदन किया गया जब उसकी सम्पत्ति हड़पने के लिए एक झूठे दावेदार ने उच्चाधिकारी दमिदत- (**द्म्य्द्त्**) से शिकायत की। पर न्यायपति (**द्य्न्**) का निर्णय मिब्टख्या के पक्ष मे हुआ, जिससे उसके हृदय को सतोष हुआ (**ह्व्ट्ब्त्**) । COW 8 (36 प०) मे यह प्रमाण मिलता है कि मिब्टख्या के पिता ने जो यहूदा-वासी था और अब हौमदत- (**ह्व्म्द्त्**) के सैन्य-दल मे है सचमुच अपनी पुत्री के लिए यह घर दिलाया था।

COW 9 (22 प०) के लेख मे पिता ने अपने दामाद को भी यही अधिकार दिलवाना चाहा । लेकिन मिब्टख्या के विवाह मे कुछ समस्या आ गई । COW 13 (21 प०) के अनुसार उसके पिता ने दूसरे घर का प्रबध किया, जो यहो/याहु के मन्दिर (**अ्ग्व्र्अ्**) के निकट था। COW 14 (14 प०) से पता चलता है कि तालाक के बाद पूर्व-पति लिखित रूप से मान लेता है कि आरम्भिक वधू-धन पर मिब्टख्या का पूर्ण अधिकार बना रहता है। तब COW 15 (39 प०) मे मिब्टख्या के तीसरे विवाह की सविदा है। फिर भी वह COW 20 (20 प०) मे सम्पत्ति पर अपने दो पुत्रो का अधिकार सुरक्षित रखती है । COW 25 (21 प०) से विदित होता है कि मिब्टख्या के प्रथम विवाह के समय जिस घर मे वह रहती थी , वह घर राजमार्ग (**अ्र्ख् म्ल्क्अ्**[1]) पर स्थित था। अब भी (55 वर्षो के बाद।) वह उस घर की मालकिन है।

COW 28 (17 प०) का विषय अद्वितीय है मिब्टख्या के दो पुत्र अपनी माता के दासो के बटवारे के विषय मे समझौता करते है। ज्येष्ठ पुत्र पेतोसिरी नामक दास चुनता है जिसके दाहिने हाथ पर अरामी मे **ल् म्ब्ट्ख्य्ह** अर्थात् यह मिब्टख्या का है गोदा हुआ है। उस दास पर पूर्ण अधिकार है जिस किसी को (**ल्-म्न् ज्य्**) आप देना चाहते है आप इसे दे सकते है। यह आपका है और आपके बाद यह आपकी सतान का होगा। लेकिन ताबा नामक दासी और उसकी बच्ची लिलू के विषय मे अब तक निर्णय नही हुआ समय आने पर हम इन्हे आपस मे बाट देगे। इतने मे हममे से प्रत्येक का भाग बना रहेगा और कोई मुकदमा (**द्य्न्**) नही होगा।

2 मन्दिर के सेवक अनन्याह के लेखागार से 11 दस्तावेज प्राप्त हुए जो सा०स०पू० 451-402 के बीच मे लिखे गए। प्रथम दस्तावेज KRA 1 (14 प०) मे वह अपने को यहो/याहु का सेवक (**ल्ख्न्**) कहता है। फिर भी सम्पत्ति के किसी मामले मे मानवीय न्यायाधीश (**द्य्न्**) और स्वामी (**म्र्अ्**) का फैसला मानता है। KRA 2 (17 प०) मे ईश-सेवक अनन्याह अपने मित्र की तामूत नामक दासी से विवाह-सबध स्थापित करता है वह मेरी पत्नी है और मै उसका पति (**ब्अ्ल्ह**) हू आज से हमेशा के लिए। यदि कल अथवा किसी दिन अनन्याह सभा मे उठ खड़ा हो और बोले मै अपनी पत्नी तामूत का परित्याग करता हू',

---

(1) अर्थात औरखा मलका यहा राजपथ के लिए अशोक के दो लघमान अभिलेखो मे प्रयुक्त ईरानी शब्द **क्र्प्त्य्** का शुद्ध अरामी रूप मिलता है (दे० पृ० 78) ।

तब उसे तालाक का पूरा दाम देना पड़ेगा और जब अनन्याह मर जाएगा तो समस्त सम्पत्ति पर तामूत का अधिकार होगा। उदारचरित अनन्याह KRA 5 (18 प०) मे दासी एव उसकी बेटी के लिए पूर्ण विमुक्ति का प्रबध करता है दोनो को छाया से सूर्य की ओर अभिमुख कर विमुक्त किया जाता है , वे ईश्वर के लिए ही विमुक्त हुए[1]। लेकिन मा और बेटी प्यार से लिखवाती है हम आपकी सेवा करेगी,ठीक जैसे पुत्र या पुत्री (**ब्र् व् ब्रह्**) अपने पिता को सभालती, वैसे ही हम आपके जीवनकाल मे करेगी।

KRA 7 (45 प०) बेटी के विवाह के लिए वधू-धन (**मोहर्** // उर्दू महर) की लबी सूची है। यदि वधू अपने पति का त्याग करे, तो वह उस सम्पूर्ण धन से वचित होगी , यदि पति निस्सतान मर जाए, तो वह स्वय समस्त सम्पत्ति की स्वामिनी होगी । यदि पति अन्य स्त्री से विवाह-सबध स्थापित करे , तो उसे तालाक की न्यायिक व्यवस्था का पालन करना होगा। KRA 11(15 प०) एक सामान्य ऋण-पत्र है जो अनाज सरकारी अधिकारी को उधार मे दिया गया है, वह राजकोष मे से राशन-वितरण के समय लौटाया जाएगा। नही तो ऋणी दोषी (**अ्ख़्व्ब्**) है और उसे अर्थदण्ड भी देना होगा।

अन्य छह प्रलेख पितृगृह के सबध मे है KRA 3 (25 प०) के अनुसार अनन्याह के द्वारा खरीदा हुआ घर मुख्य बाजार (**शूक़् मल्कां** , शब्दश राजा के सूक/बाजार) पर स्थित है। यदि उस घर के सबध मे कोई मामला हो, तो अनन्याह को उसके समान (**ल् दम्वत्**) कोई दूसरा मकान देना पड़ेगा। साक्षियो मे मित्रदत (**म्त्र्दत्**) का नाम है। KRA 4 (25 प०) मे अनन्याह ने दयापूर्वक (**ब् र्ख़म्न्**) घर का आधा भाग अपनी पत्नी के नाम पर लिखवाया और KRA 6 (19 प०) मे अपनी बेटी को वह हिस्सा दिया जो आगन की सीढ़ी (**द्र्ग्अ्**) के पास है । फिर KRA 9 (27 प०) मे वृद्ध धर्मसेवक ने अपनी प्यारी बेटी के लिए घर का पूरा पूर्वी भाग छोड़ा जहा आगन का प्रवेश-मार्ग (**त्र्अ्**) है क्योकि जब मै बूढ़ा (**य्म्य्न् स्ब्** शब्दश दिनो का उम्रवाला) हो गया तब उसने मुझे सहारा दिया पुत्री का अधिकार सुरक्षित है, चाहे कोई निकट-सबधी कोई सहयोगी, साझेदार अथवा प्रतिभू[2] विरोध करे चाहे कोई स्वय राज्यपाल (**स्ग्न्**) से अथवा सम्राट (**म्र्अ्** = स्वामी) से शिकायत क्यो न करे। चिन्तित होकर अनन्याह KRA 10 (21प०) मे अपनी बेटी के लिए इस प्रबध की पुष्टि करता है यदि कोई अदालती सहायता क्यो न ले वह सफल नही होगा (**ल्अ् य्स्द्क्**) जो भी प्रमाण वह पेश करे, वह झूठा (**क्द्ब्**) ठहरेगा — केवल यह दस्तावेज जिसे मैने अरामी मे लिखा मान्य (**य्स्ब्**) होगा । KRA 12 (35प०) अनन्याह के दामाद द्वारा खरीदे हुए नये मकान के विषय मे है ।

3 समाज के मुखिया यदन्याह के लेखागार से महत्वपूर्ण औपचारिक लेख प्राप्त हुए। सर्वप्रसिद्ध लेख है पास्का-पर्व विषयक पत्र ,COW 21 (11 प०), जिसे सा०स०पू० 419 मे खनन्याह तथा उसके सहकर्मियो (**क्न्व्त्ह्**) ने भेजा था[3] परमेश्वर मेरे बधुओ का कल्याण (**श्ल्म्**) करे । इस पत्र मे सम्राट दारा-तृतीय के द्वारा राजकुमार अरशाम को दिये गये इस आदेश (**द्अ्म्**) का उल्लेख है यहूदी सेना-दल के [धार्मिक] मामलो मे हस्तक्षेप न करे ! "तुम नीसान महीने के प्रथम दिन से 14 दिन गिनो

(1) दे० J THOMPSON The Bible and Archaeology Exeter 1976 ch 12 "The Jews outside Palestine in the fifth century B C This is in agreement with what the Torah prescribes for the generous release of fellow Israelites who had fallen into servitude (Deut 15 12) (2) ये तीनो शब्द ईरानी से गृहीत शब्द है Persian loanwords

(3) P GRELOT Etudes sur le Papyrus Pascal d'Eléphantine" Vetus Testamentum 4 1954 p 349 384 5 1955 p 250 265

और पास्का-पर्व [1] का पालन करो। तुम शुद्ध (**द्क्य्न्**) हो और सयम रखो (**अ्ज्द्ह्र्य्**)। शराब न पिओ और कोई खमीरी रोटी न खाओ। यह परमेश्वर का आदेश है और सम्राट दारा का आदेश भी। लेकिन उन दिनो मे ॲलेफनतिनै के फारसी शिविर मे तैनात अरामी-भाषाभाषी भृतक सैनिको और स्थानीय मिस्रियो के बीच झडपे बढने लगी। तनावपूर्ण स्थिति को यहूदियो के विरुद्ध साम्प्रदायिक रग दिया गया। पत्र COW 37 (17 प०) मे लिखा है जब यहूदी पक्ष ने निरीक्षको से शिकायत की तब मिस्रियो ने उन्हे घूस (**श्ख्द्**) दी यद्यपि प्रान्त का अधिकारी (**प्क्य्द्**) एक मज्दी (Mazdean) है। हममे से अनेक जन मानो राजा की आज्ञा से (**ब् स्प्त् म्ल्क्अ्**) हिरासत मे रखे गए। हम डर रहे है क्योकि हम कम है (**ज्अ्य्र्न्**)। कुछ दगे भी हुए और पीड़ित लोग नुक्सान के लिए क्षतिपूर्ति माग रहे है।

COW 38 (12 प०) मे मुखिया यदन्याह को समाचार दिया जाता है कि किसी पर चोरी करने का झूठा आरोप लगाया गया था,लेकिन हमारे समुदाय के कुछ मित्रो की मध्यस्थता से वह छुड़ाया गया। अत उन मित्रो के लिए (**अ्ल्** सकारात्मक अर्थ मे) कुछ उपकार किया जाए । लेकिन जो हमारे विरुद्ध (**अ्ल्** नकारात्मक अर्थ मे) है उनसे सावधान रहे। COW 56 (34 प०) मे उन स्त्री-पुरुषो के नाम मिलते है जो बदी बनाये गए (**अ्स्य्र्य्**)। एक महिला का नाम रमी (**र्म्य्**) है। सा०स०पू० 410 के पटेरपत्र COW 27 (24 प०) मे यह दु खद समाचार है कि यॅभ् के गढ मे यहो/याहु के मन्दिर को गिराया गया। यह दुष्कृति (**द्व्श्क्र्त्अ्** // ईरानी-सस्कृत !) मिस्री पुजारियो ने कराया। इस विद्रोह मे हमने अपनी चौकिया नही छोड़ी । COW 30 (30 प०) और 31(29 प०) उस महत्वपूर्ण आवेदन-पत्र के कच्चे पूर्वरूप है जो मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु यहूदा-प्रदेश के राज्यपाल हमारे स्वामी (**म्र्अ्न्**) बगोही [2] को भेजा जा रहा था। एक प्रशिक्षित अरामी लिपिक ने औपचारिक पत्राचार के अनुरूप इसकी सरचना प्रस्तुत की [3]

- प्रेषिती को सम्बोधन के पश्चात प्रेषक की शुभकामना अपने प्रभु यहो/याहु का नाम न लिखकर ॲलेफन्तिनै के अरामीय-इस्राएली सैनिक सर्वधर्मपथ के अर्थ मे स्वर्ग के ईश्वर (**अ्ल्ह्अ् श्म्य्ह्**)" की ओर से सहस्र कृपाओ की कामना करते है ' वह आपको दीर्घ जीवन (**ख्य्न् अ्र्य्क्न्**) दे जिससे आप सदा सुखी और स्वस्थ (**श्र्य्र्**) रहे ।
- मुख्य विषय का आरम्भ अब (**क्अ्न्**) आपका सेवक यदन्याह और उसके सहयोगी पुरोहित इस प्रकार (**क्न्**) कहते है । इसके बाद घटनाक्रम का पूरा वर्णन है गढ के प्रमुख (**प्र्त्र्क्**) दुष्ट विद्रग की सम्मति से ख्नूब-देवता के पुजारियो ने हमारे मन्दिर को भूमितल तक नष्ट किया और पत्थर के खम्भो (**अ्म्व्द्य्अ्**) को भी तोड़ा। अनुविषय युक्ति इस प्रकार है मिस्र के राजाओ के दिनो मे हमारे पूर्वजो ने यॅभ् के गढ मे इस मन्दिर को बनाया था । और जब (**व् क्-ज्य्**) सम्राट कम्बुसेस ने मिस्र मे प्रवेश किया उन्होने यह मन्दिर बना हुआ पाया। उन्होने तो मिस्र के सभी देव-मन्दिरो को गिराया किन्तु हमारे मन्दिर का किसी ने नुक्सान नही किया। और जब (**व्-क्-ज्य्**)इस प्रकार [उसका सर्वनाश] किया गया हम अपनी पत्नी एव बच्चो के साथ नित्य बोरा-वस्त्र पहने हुए उपवास करते रहे और स्वर्गिक स्वामी ईश्वर यहो/याहु से प्रार्थना करते रहे । तब ईशभक्तो ने अनुभव किया (हमने देखा) कि दिव्य न्याय ने दुष्ट विद्रग और उसके बुरे साथियो को दण्ड दिया। अतिरिक्त युक्ति भी है इसके अतिरिक्त (**अ्प्**), जिस समय हमारे साथ यह बुराई हुई, हमने अपने

---

(1) अर्थात दासत्य से विमुक्ति की ओर इस्राएल के 'पारगमन' का महापर्व। (2) पी०ग्रलो के अनुसार राज्यपाल के नाम **ब्ग्व्ह्य्** को ईरानी मे Baga vahya // arta vahya,varu vahya पढ़ना चाहिए (P GRELOT Revue Biblique 82 1975 p 288) (3) an example of international correspondence in Aramaic " (J FITZMYER " Aramaic Epistolography Semeia 22 1981 pp 25 57

स्वामी [राज्यपाल] को तथा महापुरोहित यहोखनन और उसके सहयोगी पुरोहितो को जो यरूशलेम मे है और प्रतिष्ठित (**ख्र्र्य्**) व्यक्तियो को इसके सबध मे पत्र भेजा , पर कोई उत्तर नही मिला। तप-उपवास ब्रह्मचर्य-पालन तेल-अगूरी का परहेज जारी है पर ध्वस्त वेदी पर हितकारी बलि बद है।

o निवेदन का आरम्भ अब (**क्अन्**) आपका सेवक यदन्याह और उसके सहयोगी पुरोहित तथा सभी यहूदी यैभ के गृहस्वामी (**ब्अल्य्**), इस प्रकार कहते है यदि हमारे स्वामी को अच्छा लगे, तो इन सज्जनो पर दृष्टि डाले जो यहा मिस्र मे आपके हितैषी (**ट्ब्त्क्**) और आवके दयापात्र है। आपकी ओर से उन्हे यैभ के गढ मे ईश्वर यहो/याहु के मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु पत्र भेजा जाए । निवेदक प्रतिज्ञा करते है कि वे राज्यपाल के लिए प्रार्थना करेगे यदि आप ऐसा करेगे, तो जब तक पुनर्निर्मित मन्दिर अपने स्थान पर (**ब् अत्रह्**) बना रहेगा, आपको स्वर्ग के ईश्वर यहो/याहु के समक्ष उस व्यक्ति से कही अधिक धर्मपुण्य (**स्द्क्अ्**) प्राप्त होगा जो सोने-चादी के हजार किक्कार मूल्य की अग्नि-बलि व पशु-बलि चढाए।

o समापन इसीलिए (**अल् ज़्न्ह**) हमने पत्र भेजा और अपने स्वामी को सूचित किया । इसके अतिरिक्त (**अ्प्**) हमने अपनी ओर से सामरी-प्रदेश के राज्यपाल सनबलट के पुत्रो दलयाह व शलमयाह को एक-समान पत्र मे ये सब वचन भेजे है। अन्त मे तारीख ।

सौभाग्यवश यदन्याह के लेखागार मे पिछले पत्र का उत्तर भी सुरक्षित रहा COW 32 (11प०) राज्यपाल बगोही एव दलयाह का ज्ञापन (**जक्र्न्** memorandum) है। मन्दिर को पूर्व-स्थान पर पुनर्निर्मित करने का आदेश है और अन्न-बलि तथा धूप-बलि चढाने की छूट दी जाती है। ध्यान दे कि पशु-बलि के लिए अनुमति नही दी जाती है — मिस्रियो के विरोध का यही मुख्य कारण था! क्योकि उस मन्दिर मे बलि-पशु का वध किया जाता था। फिर भी COW 33 (14प०) मे यहूदी इसके सबध मे एक स्पष्टीकरण/नये आदेश (**अ्व्द्य्स्** statement) की माग कर रहे है।

उपर्युक्त तीन लेखागारो के बाहर अन्य छिटपुट पटेरपत्र मिले — जैसे नाम-सूचिया ऋण-पत्र न्यायिक दस्तावेज। विषय और शब्दावली को देखते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत है KRA 8 (12 प०) दासमुक्त बच्चे को गोद लेने का प्रमाण-पत्र है। अब से किसी का यह अधिकार नही होगा कि इस बच्चे को दास की तरह दबाए अथवा इसके बदन पर गोदकर कुछ अकित करे। गवाहो मे शैल-पुत्र' (**ब्र्-क्प्अ्** =son of Cephas / Peter) का नाम है। COW 44 (10 प०) पशु-धन सबधी शपथ-पत्र है शपथ पूजास्थान' (**म्स्ग्द्अ्** = दण्डवत करने का स्थल धातु **स्ग्द्** // मस्जिद) मे अनथ्-देवी एव यहो/याहु-देव (**अ्न्त् यह्व्**) के नाम से खाई गई है। COW 7 (10 प०) ईश्वर को पुकारकर (**म्क्र्य्अ्**)" निर्दोषता की शपथ है मैने बल-प्रयोग से (**क्-ख्स्न्**) आपके घर मे प्रवेश नही किया न आपकी पत्नी को मारा न आपके घर का कोई सामान लिया।

यद्यपि अेलेफनतिनै एव सुअैनै से प्राप्त अरामी पटेरपत्र विशिष्ट अरामी-भाषाभाषी समुदाय से प्रेषित हुए, फिर भी वे उस व्यापक लिपिकीय प्रयोग का प्रतिनिधित्व करते है [1], जो अशोकीय अरामी मे भी दिखाई देता है। परन्तु यह जरूरी नही है कि अशोक उसी अरामी-भाषाभाषी समुदाय को सबोधित कर रहे हो [2]।

---

(1) दे० B PORTEN op cit Foreword Aramaic was not only the daily language of Jews and Arameans in Egypt it was the diplomatic **lingua franca** of the Persian empire as well (2) दे० पृष्ठ 123 का निष्कर्ष ।

233-क ~ (2) मिस्र के अन्य स्थानो से प्राप्त पत्रात्मक अरामी लेख

ऐलेफन्तिनै एव सुऐनै के अतिरिक्त मिस्र के अन्य स्थान भी है जहा साम्राज्यिक अरामी मे लिखित पत्र प्राप्त हुए । उन्हे दो समूहो मे बाट सकते है अरामी की पश्चिमी पद्धति में लिखित पत्रो का समूह जो विशेषकर हॅरमोपोलिस् नगर से प्राप्त हुए , और पूर्वी पद्धति के पत्रो का समूह, जो उच्चाधिकारी अरशाम की ओर से भेजे गए। उनके अतिरिक्त यहा-वहा अलग-थलग विषय के और मिस्री पत्र रह जाते है, जिनसे एक तीसरा समूह बन जाता है ।

1 नील नदी के हॅरमोपोलिस् नगर से 8 व्यक्तिगत पारिवारिक पटेरपत्र प्राप्त हुए जो किसी कारण से अब तक मुहरबद ही थे — अत उन्हे कभी नही पहुचा दिया गया[1] । वे सा०स०पू० 5वी सदी के है। पत्र 1-6 और 8 की लिखावट से पता चलता है कि वे एक-ही अनभ्यस्त लिपिक के हाथ के है । सभी पत्रो मे सामान्य बोलचाल की भाषा है। अन्त्य आ-स्वर के लिए स्वराधार के रूप मे व्यजन-अक्षर हे' का प्रयोग हुआ जब कि पूर्वी साम्राज्यिक अरामी मे अधिकतर आलॅफ्' प्रयुक्त होता है। BRE 1 (14 प०) मे प्रेषक अपनी बहन को प्यार भेजता है और उसका हाल-चाल पूछता है। वह खुशी से बताता है कि उसे सरकारी वेतन मिल गया है । इसलिए उधार देने मे उदार बना जितना मै खरूस नामक व्यक्ति के लिए कर रहा हू , उतना ही बनीथ-देवी मेरे लिए भलाई करे। सचमुच क्या खरूस मेरे अपने भाई के समान नही है ? BRE 3 (14 प०) मे वही प्रेषक अपने पिताश्री को मेरे स्वामी' (**म्रअ्य्**) सबोधित करता है और स्वय को आप का सेवक' कहता है। मेरी मा (**अ्म्य्**) को शान्ति (**श्ल्म्**) लिखकर अपने भैया अपनी भाभी और उनके बाल-बच्चो को शुभकामना भेजना नही भूलता । उसी प्रेषक के भाई ने BRE 4 मे अपने अभिवादन मे स्वर्ग की रानी' के घर-मन्दिर का भी उल्लेख किया और अपनी बहन को आश्वासन दिया कि मेरी चिन्ता मत करो । यदि मै किसी विश्वस्त आदमी को पाऊ तो तुम्हे कुछ सामग्री भिजवाऊगा। लेकिन BRE 5 मे उसने शिकायत की कि उसे अब तक न कोई पत्र मिला न कोई अन्य वस्तु। और ऐसा हुआ कि मुझे एक साप ने काटा और मै मरनेवाला (**म्य्त्**) ही था । BRE 7 एक माता को भेजा हुआ पत्र है, जिसमे पारिवारिक जीवन का चिरपरिचित मन्त्र है बच्चो का ध्यान रखना (**ख्ज़्य्त्**) ।

2 अरशाम का पत्राचार फारसी शासन की ओर से जब मिस्र के क्षत्रप के रूप मे अरशाम का सेवाकाल पूर्ण हुआ तब उसे अन्यत्र नियुक्त किया गया । लेकिन अपने सेवाकाल के दौरान अरशाम ने सही या गलत तरीके से विशाल खेत-भूमि पर अपना स्वामित्व-अधिकार स्थापित किया था। अपनी अनुपस्थिति मे (सा०स०पू० 410-407) वह पत्रव्यवहार द्वारा अपने मिस्री व्यवसाय का सचालन करता रहा। इस प्रकार 13 चर्मपत्र और पटेरपत्र के कुछ अश[2] प्राप्त हुए। इस समूह मे प्राय 76 ईरानी नाम-रूप मिलते है और

---

(1) दे० E.BRESCIANI & M KAMIL op cit Eight private letters were found in a vase of a cellar at Toth The letters were never delivered Why ? Either the carrier was not thrustworthy or he died en route BEZALEL PORTEN & JONAS GREEN FIELD The Aramaic Papyri from Hermopolis Zeitschrift fur die Alttestamentliche Wissenschaft 80 1968 pp 216 231
(2) J D WHITEHEAD Some distinctive features of the language of the Aramaic Arsames correspondence Journal of Near Eastern Studies 37 1978 pp 119 140

31 ईरानी आगत शब्द (loan-words) प्रयुक्त हुए जैसे बग् (भूभाग) अ स्प्रन् (सम्पूर्ण) पत्कर् (प्रतीक)[1] और 15 ईरानी आगत अनुवाद (loan-translations) उद० अरामी पूर्वसर्ग कदम् का अर्थ - के सामने है परन्तु ईरानी प्रभाव से - के पास के अर्थ मे प्रयुक्त हुआ। जे० व्हाइटहैड के अनुसार अरशाम के पत्राचार मे पूर्वी अरामी शैली की विशेषताए दिखाई देती है वाक्य-रचना मे कर्त्ता - कर्म - क्रिया का शब्दक्रम , निरपेक्ष स्थिति मे प्रयुक्त पूर्व-वाक्याश आगे के मुख्य वाक्य मे सर्वनाम द्वारा दुहराया जाता है — मानो हिन्दी मे कहे दाखबारी एव खेतो की उपज वह सब (**कुलह्**) नेख्तिहोर ने उसे ले लिया (DRI 12) , सबधकारक के अर्थ मे प्रयुक्त समास के स्थान पर सबधात्मक सर्वनाम का पयोग मानो हिन्दी मे राज-महल के बदले मे कहे महल जो राजा का [है] ।

उन 13 अरामी चर्मपत्रो के विभिन्न विषय है निरीक्षको की नियुक्तिया (DRI 2,8) गुलामो के मामले (3,5), कर-सग्रहण (10,11), प्रतिमा बनाने की माग (9), सकटकालीन व्यवस्था (7), अतिथियो के लिए प्रबध (6), सामान की प्राप्ति (13) और झगड़े (12) अथवा विद्रोह (4) का निपटारा। अरशाम के पत्राचार से सबधित एक और पत्र COW 17 है जो मिस्री अधिकारियो द्वारा अरशाम के नाम भेजा गया[2]। वह अरामी पत्रावली की औपचारिक शैली का उत्कृष्ट नमूना है [3]। इसलिए लिपिक भी उच्च कोटि का है, उसे एक ईरानी शब्द से **अज्दक्रअ्** (अज्दा-कर) अर्थात् अभिसूचक अभिलेखक कहा गया है। इस पत्र मे आदेश (**टअम्**) के बाद पुनरादेश (**नश्तवनअ्**, rescript) प्रसारित हुआ।

3 मिस्र से प्राप्त <u>अतिरिक्त पत्रात्मक सामग्री</u> मे सर्वप्रथम अंबुदोस् के पटेरपत्र की ये 5 पक्तिया देखे[4]

यह पत्र सम्राट दारा-द्वितीय के 7वे राज्यवर्ष (**शनत 3+3+1 दर्यवहवश् मलकअ्**)[5] सा०स०पू० 417 मे लिखा गया। फेनीकि प्रदेश के दो तीर्थ-यात्रियो ने उसे अंबुदोस् के मन्दिर के लिपिकार से लिखवाया जब उन्होने ओसिरिस्-देवता के दर्शन किये। यहा फेनीकी अनुष्ठानिक लेख के अद्भुत अरामी रूपातरण का उल्लेख कर सकते है जो 420 पक्तियो पर मिस्री डीमॉटिक् (Demotic) लिपि मे उतारा गया। लिपि-परिवर्तन की जटिलताए है जो अशोकीय अरामी मे प्राकृत शब्दो के लिप्यन्तरण की समस्या सुलझाने मे सहायक हो सकती है उद० स्वराधार के रूप मे आलॅफ् का अत्यधिक प्रयोग हुआ स़अ्प्अ्नअ्=sapânu[6]।

---

(1) मिस्री अभिलेखों मे ईरानी शब्दो की भरमार है दे० RON ZADOK "On some Iranian names in Aramaic documents from Egypt <u>Indo Iranian Journal</u> 29 1986 pp 41 44 S SAKED in <u>Orientalia</u> 56 1987 pp 407 413

(2) यदन्याह के लेखागार मे अरशाम-सबधी पत्र COW 21 भी दे० ऊपर पृ० 232 ।

(3) BEZALEL PORTEN The address formulae in Aramaic letters a new collation of Cowley 17 <u>Revue Biblique</u> 82 1983 pp 396 415

(4) J GIBSON vol 2 p 191 fig 14 The Abydos Papyrus

(5) तिथि-सहित सब-से पुराना मिस्री पटेरपत्र Meissner Papyrus दारा-प्रथम के 7वे राज्यवर्ष सा०स०पू० 515 का है - दे० J KOOPMANS Nr 19 उसमे लिपिकीय परम्परा की कच्ची अवस्था तिथि मे ही दिखाई देती है क्योकि seventh year of Darius के बदले seven years (शनव्) of Darius लिखा गया है और नाम (दर्वश्) भी अधूरा है ।

(6)- उत्तरी दिशा दे० J KOOPMANS Nr55 अखामेनी काल के अन्त मे।

मिस्र के किसी अभिलिखित मृद्-पट्ट अथवा ठीकरे पर यूनानी शब्द स्तोलै अर्थात चोगा को अरामी व्यजन-अक्षरो मे **अ्स्त्ल्अ्** लिप्यन्तरित किया गया । इस प्रकार के अभिलिखित ठीकरा-पत्र ऐमे-जिरो (Aime-Giron) के नाम से प्रकाशित सकलन मे मिलते है । कुछ अभिलिखित ठीकरे ऍलेफनतिने मे ही प्राप्त हुए थे । इसका एक नमूना यहा देख ले जिसपर व्यजनात्मक अरामी लिपि के मूल अक्षर सही माप मे दिखाई देते है [1]।
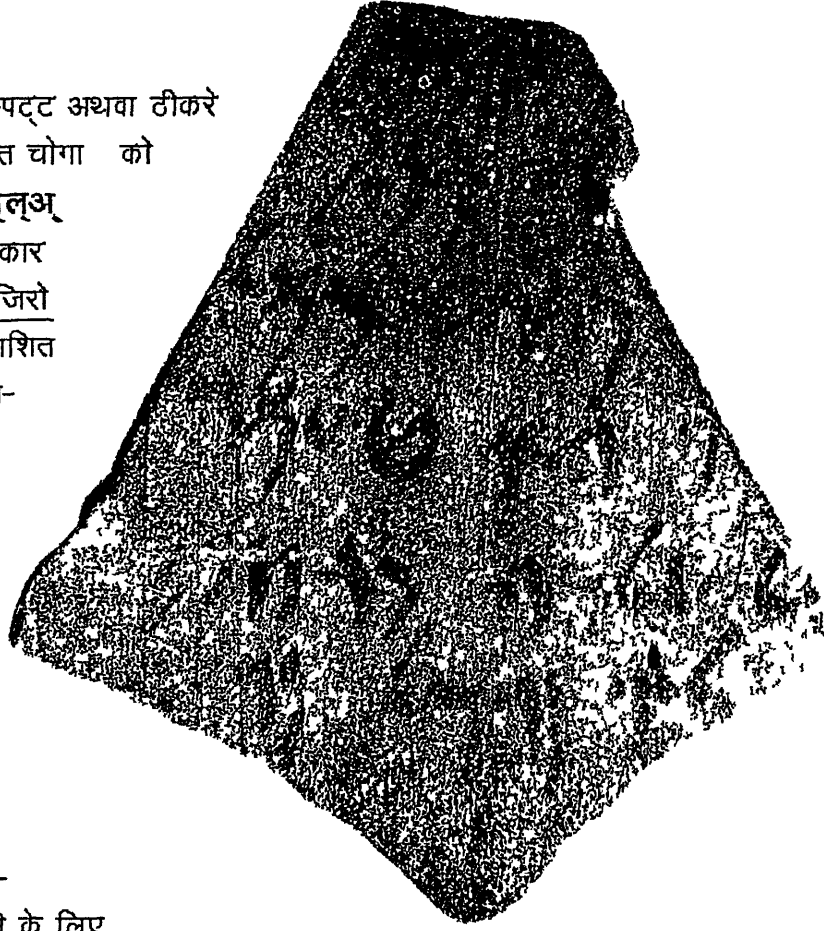
वे ठीकरे पटेरपत्र की तुलना मे अधिक टिकाऊ होते है । वे सस्ते भी है । इसलिए पटेरपत्र पर लिखित लेख को कभी मिटाकर उसे फिर दूसरे लेख लिखने के लिए तैयार रखते थे। ऐसे उपर्यालिखित अरामी पटेरपत्र ब्लकस्यानि न०1 है नीचे का लेख सा०स०पू० 475 मे लिखा गया बन्दरगाह के अधिकारी का चुगी-लेख है [2] । उसे मिटाकर प्राय 45 वर्षो के बाद ॲखीकार् के वचन नामक साहित्यिक कृति उसी पटेरपत्र पर उतारी गई (आगे इसकी चर्चा करेगे) ब्लकस्यानि न०2 सामान्य पटेरपत्र है लेकिन् उसका आजीबोगरीब विषय है होर नामक जादूगर की जादूगरी। फरओ रामसेस-द्वितीय के समय (सा०स०पू० 13वी सदी) का यह काल्पनिक तान्त्रिक है जिस ने मिस्र देश को नूबिया की जादूगरिनी के अभिचारो से बचाया था। अब अभिलेखो की अरामी भाषा इतनी सशक्त हो गई कि गूढ और मूढ बातो को अभिव्यक्त करने मे सक्षम है ।

233-क ~ (3) मिस्र के बाहर की पत्रात्मक सामग्री

विशाल फारसी साम्राज्य मे मिस्र को छोड़ अन्य क्षेत्रो से भी पत्रात्मक अभिलेख प्राप्त हुए। उनमे सब से अधिक अभिलिखित ठीकरे मिलते है विशेषकर प्राचीन इस्राएल और आसपास के उत्खनन-स्थलो मे। उद० तेल-अराद[3] की खुदाई मे प्राय 100 अरामी मृद्-पटट निकल आए जो अनाज अथवा पशुधन जैसे सामान्य जन-जीवन के विषयो से सबधित है। एक आकर्षक छोटा-सा लेख अश्दोद के पास नेबी-यूनिस[4]

---

(1) British Museum Elephantine ostracon (2) A.GIANTO (reviewing P PORTEN & A.YARDENI Textbook of Aramaic Documents from Ancient Egypt vol 3 Jerusalem 1993) Biblica 76 1995 p 92f Two papyri of Blacassiani

(3) Tel Arad ostraca Catalogue of Israel Museum Nr 159ff अन्य स्थल Ashdod Tel el Far'ah Khirbet el Kom Tel Beer Sheba (4) F GROSS, An ostracon from Nebi Yunis " Israel Exploration Journal Reader New York 1981, pp 185 186

से प्राप्त हुआ । लेख सुस्पष्ट है । इसे शुद्ध प्रवाही लेखन का नमूना मान सकते है [1]
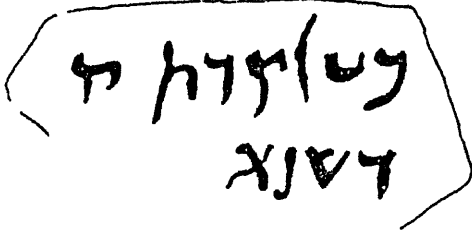
(दाए से पढे)
ब्‌ अ्‌ ल्‌ स्‌ द्‌ त्‌ क्‌ [ल्‌ न्‌] अर्थात
बअल-सीघ (नामक व्यक्ति की ओर से) शेकेल-मूल्य
द्‌ श्‌ न्‌ अ्‌
दान (के रूप मे दिया जा रहा है)

यदि इसके बाद दक्षिण मेसोपोतामिया के निप्पूर से प्राप्त मृद-पट्ट की कुछ पक्तियो का अवलोकन करे

तो इसका प्रवाही लेखन कितना भद्दा लगता है [2] ।

(9 पक्तियो मे से प्रथम 3 देखे) अन्‌वृ्‌शत बल्‌ सअक्रब जवज़्न्‌ ।।
अन्‌वृ्‌शतलय मव्‌बलन ।।
लब्‌श्‌ ब्‌र्‌ बलट्‌य म्‌वब्‌ल्‌ ।
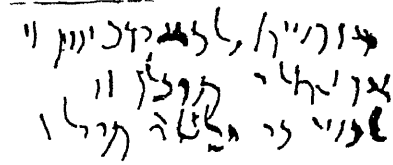
सन 1962 मे एक-साथ 20 अक्षुण्ण और कुछ क्षुण्ण अरामी पटेरपत्र उस वादी दालियेह से प्राप्त हुए जो

यरीहो-नगर से 15 किल० उत्तर दिशा मे यर्दन नदी मे मिल जाती है। उन पत्रो की प्राप्ति का कारण है

वादी दालियेह के सभी पत्र सामरी प्रदेश के सामान्य नागरिको और उनके प्रमुखो के द्वारा लिखवाये गए प्रलेख है। लेखन की तिथिया सा०स०पू० 375 से 335 तक दी गई है। प्रलेखो की विषय-वस्तु से लगता है कि उन सामरियो का मुख्य व्यापार दास-दासियो का क्रय-विक्रय ही था। सिकन्दर महान्‌ के अभियान के बाद जब सा०स०पू० 332 मे सामरी प्रदेश के नव-नियुक्त राज्यपाल अन्द्रोमखोस्‌ की हत्या की गई तब वे भयत्रस्त सामरी लोग दक्षिण की ओर भाग गए । अपनी घरेलू सम्पत्ति मे से उन प्रलेखो के अतिरिक्त वे क्या ले जा सकते थे ? लेकिन भाग्य उनका साथ नही दे रहा था जब वे किसी गुफा मे छिप गए तब पीछा करनेवाले मकिदूनी सैनिको ने गुफा के सामने आग लगा दी जिससे अन्दर छिपनेवाले सब-के-सब दम घुटने से मर गए । केवल प्रलेख बच गए । [3]

इन दालियेह-पत्रो से साबित होता है कि अरामी भाषा बहुतो के लिए न केवल किसी अवसर पर उनकी सम्पर्क-भाषा बन सकती थी वरन उनकी अपनी देशी भाषा बन चुकी थी [4] ।

---

(1) GIBSON vol 2 Nr 32 10 Nebi Yūnis ostracon F CROSS op cit a neat Aramaic cursive of the late Persian empire The script tends to be broad and squat a cursive trend which matures in the early 3rd century (अशोकीय शैली के सदृश)
(2) G DRIVER Semitic Writing 1954 Plate 57 Nr 2 Nippur ostracon vulgar cursive as opposed to formal cursive
(3) F CROSS Papyri of the fourth century B C from Daliyeh D FREEDMAN & J GREENFIELD eds New Directions in Biblical Archaeology New York 1969 pp 41 62 The discovery of the Samaria Papyri The Biblical Archaeologist Reader 3 New York 1970 pp 227 239 Samaria Papyrus I an Aramaic slave conveyance of 335 B C E found in the Wadi ed Dāliyeh Eretz Israel 18 1985 pp 7 17 (4) G MUSSIES Greek as the vehicle of early Christianity New Testament Studies 29 1983 p 358 The Medes and the Persians very practically and wisely took over from the Assyrian and Babylonian kingdoms the Aramaic language as the lingua franca of their huge empire which was also the vernacular of a considerable part of their new subjects The Persian kings however also used Aramaic as their chancellary language in their correspondence between the royal court and the many satrapies with their variety of languages

233-ख मुख्यत सस्मरण एव समर्पण अभिलेख
MAINLY MEMORIAL AND DEDICATORY INSCRIPTIONS

पटेरपत्रो के प्रयोग की बहुतायत से प्रवाही लेखन-शैली का विकास हुआ । स्वाभाविक है कि अभ्यस्त लिपिको के हस्तकौशल का प्रभाव अश्मोत्कीर्णन की शैली मे भी दिखाई देने लगा[1]। जैसे सा०स०पू० 5वी तथा 4थी सदी के पत्रात्मक लेखन का सर्वेक्षण मिस्र से आरम्भ हुआ वैसे ही उसी अवधि के लिए सस्मरण-समर्पण अभिलेखन का सर्वेक्षण मिस्र से आरम्भ करे ।

233-ख ~ (1) **मिस्र देश मे**

1 शेख-फदल अभिलेख मकबरे की दीवालो पर 17 विस्तृत अरामी लेख लेपित किये गए। उनमे फरओ तिरहाका का उल्लेख है जो सा०स०पू० 7वी सदी मे शासन कर रहा था , लेकिन लेपन-काल लगभग सा०स०पू० 450 का है[2]। अत शोधक अतिसावधान रहे किसी नाम अथवा घटना के उल्लेख मात्र से अभिलेखन का सीधा काल-निर्धारण न किया जाए।

2 सक्कारा शिलालेख प्राचीन राजधानी मेम्फिस के शवाधि-स्थल सक्कारा मे कई अरामी अभिलेख प्राप्त हुए जो आकार-बद्ध प्रवाही लेखन-शैली मे उत्कीर्ण हुए । मुख्य शिलापट्ट-लेख (4 प०) सम्राट क्षयर्ष राजाओ के राजा (**म्ल्कअ् ज्य् म्ल्कय्अ्**) के 4थे राज्यवर्ष अर्थात् सा०स०पू० 482 मे मोक्षदाता ओसिरी (=यू० ओसिरिस्) को समर्पित किया गया। उसे द्वि-सत्य स्वामी (Master of Double Truth) कहा जाता था। लेकिन मिस्र के अरामी-भाषाभाषी लोगो का प्रिय देवता नबू था। सक्कारा के किसी शवाधान-लेख (2 प०) मे लिखा है सवान् (यू० सुऐनै[3]) के शरण-स्थल (**त्क्म्अ्**[4]) मे रहनेवाले देवता नबू के पुरोहित शईल का [मकबरा] । मिस्र मे अरामी भृतक-सैनिको की उपस्थिति असीरियाई अभियानो के काल से है लगभग सा०स०पू० 700 के एक बेलनदार मोहर[5]पर अकित है नबू-भक्त लिपिक का ।

3 करपौत्र-सग्रहालय लेख , फ्रास देश मे सुरक्षित 4 प० का यह लेख सा०स०पू०390 के आसपास मिस्र की एक अन्त्येष्टि-पट्टिका पर अकित हुआ[6]। शोकातुर अरामी पिता अपनी मृत बालिका त्ब्अ् को स्थानीय मिस्री देवता ओसिरी की दया पर

---

(1) दे० Harvard Theological Review 72 1979 p 321 Review of J ROSENBAUM A Typology of Aramaic Lapidary Scripts (from the 7th to the 4th cent B C E.) Dissertation at Harvard Divinity School (2) KOOPMANS Nr 15
(3) दे० Assuan inscription GIBSON Nr 22 (4) तकूमा उच्चारित करे (दे० तॅनख् का लेवी-ग्रथ 26 38) - इससे पता चलता है कि सुऐनै मे नबू का मन्दिर था। दे० LIPIŃSKI vol 2 p 246 (5) Royal Museum of Art & History Brussels Nr O 1499 (6) Carpentras funerary stela GIBSON Nr 24 fig Nr 13 DONNER RÖLLIG vol 3 Nr 269

छोड़ देता है। अन्तिम पंक्ति मे वह अपनी बेटी से कहता है हाय [ईश्वर की] भक्तिन (पुलूख़ह् [1]) । तू रो रही है पवित्र जनो (खसुयुह् [2]) के मध्य मे । कर्पौत्र-अभिलेख मे ओसिरी-दवता का नाम चार बार आया , मेम्फिस के अर्पण-लेख मे [3] दो बार — एक बार गलत वर्तनी मे। अत शोधक सावधान रहे लिपिक की असावधानी से मूल पाठ मे कभी भी अशुद्धि मिल सकती है ।

233-ख ~ (2) अरब क्षेत्र मे

1 केदार के अर्पण-लेख तेल-एल-मस्खूटा से प्राप्त चादी के पात्र पर केदार के राजा गेशम ने सा०स०पू० 480 मे अपने सकल्प का अर्पण लिखवाया [4]। लाकीश से एक धूप-वेदिका मिली जिसे केदार के एक दूसरे राजा ने अर्पित की[5]। इसके 3 प० के लेख मे प्राचीन अश्मोत्कीर्ण लिपि की नकल है। अत शोधक सावधान रहे कि अभिलेख की कृत्रिम शैली उसे भ्रमित न करे।

2 हमारे अध्ययन के लिए तेमा के अभिलेखो का अधिक महत्व है (पुरालिपीय भाग मे भी देखे)। तेमा एक सुहावना मरुद्यान-नगर था जहा बेबीलोन के अन्तिम सम्राट नबोनिदस (सा०स०पू० 552-544) ने अपना राजमहल बनाया था । देश-देश के व्यापारियो का प्रिय तीर्थ-केन्द्र था[6]। प्रथम तीन अभिलेख (C I S Nr 113,114,115) सन् 1880 मे प्राप्त हुए और ठीक सौ वर्षो के बाद अन्य अभिलेख [7]।

प्रथम लेख (24 प०) के पट्टस्तम्भको स्वृत्अ् [8] कहा गया है (प० 8 और 13) —जे० कोफ्नन्स के अनुसार सुविथा उच्चारित करे और inscribed stela द्वारा अनूदित करे । एच० दौन्नर् अरबी के suwwat शब्द से तुलना करते है जिसका एक अर्थ "दिग्दर्शक स्तम्भ" है । अभिलिखित शिलापट्ट 1 मीटर ऊचा और 42 सेटीमीटर चौडा है,और अभिलेखन-काल लगभग सा०स०पू० 450 है । इसके विस्तृत लेख मे पुरोहित (कुमरयुअ्) की ओर से नये आराधना-गृह की विधि-व्यवस्था का अनुमोदन किया गया है । एक अक्षय-निधि के प्रबध हेतु अर्पण-उपहार को धर्मकर्म (सुदकृतअ) माना गया है।

द्वितीय तेमा-अभिलेख (4 प०) सल्म-देवता की प्रतिमा के पीठ-आसन पर समर्पण-लेख है। अभिलेखन-काल सा०स०पू० 4थी सदी है । उसके उत्कीर्णन मे आकार-बद्ध लेखन-शैली स्पष्ट दिखाई देती है

---

(1) क्रिया-धातु पलख् से to serve to worship (2) दे० एस्सेनी पथ के सबध मे इस शब्द पर विवेचन (पृ०182)।
(3) D Nr 268 शिलापटट D Nr 272 पर भी किसी उपासक ने ओसिरी के लिए भेट (मिन्ख़ा) का अर्पण-लेख लिखवाया।
(4) G vol 2 Nr 25 (5) L vol 1 pp 143 145 A.LEMAIRE Un nouveau roi Arabe de Qédar dans l inscription de l autel à encens de Lakish " Revue Biblique 81 1974 pp 65 72 (6) GIBSON Nr 30 Such a cosmopolitan religious situation accords with the position of the oasis at the juncture of trade routes (7) दे० P McCARTER What are two Aramaic stelae doing in Saudi Arabia ? Biblical Archaeological Review 21 1995 pp 72 73
(8) प० 8 का पाठ तक्षशिला के खण्डित अरामी अभिलेख के आरम्भ को पुनर्स्थापित करने के लिए सहायक है यह पटटस्तम्भ (स्वृत्अ् ज्अ) जिसे खड़ा किया (ज्य् हक्यम्)

(प्रस्तुत अभिलेख[1] को दाएं से पढ़े)

म्यतब्अ् जय् क्र्
पीठ-आसन जिसे दान-

ब् म्अ्नन् ब्र् अम्
दिया अमरन का पुत्र मअनन

र्न् ल् स्ल्म् अ्ल्ह
ईश्वर सल्म के लिए

अ् ल खय्य् न्फ्श्ह्
अपने प्राण के जीवन हेतु
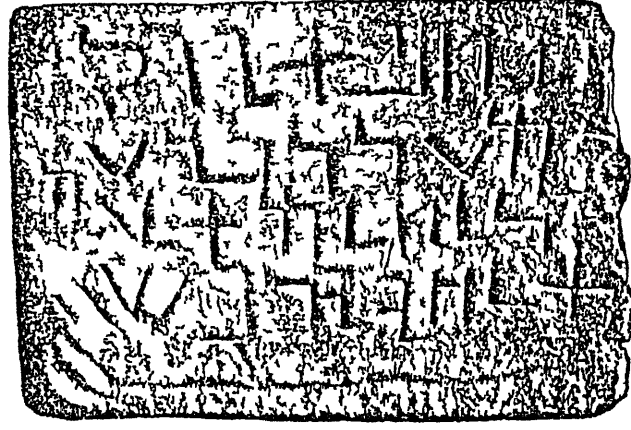
तृतीय अभिलेख मे केवल एक अस्पष्ट पक्ति है। एक सदी के बाद प्राप्त हुए अर्पण-लेख से स्पष्ट हुआ कि अर्पणकर्ता कौन था[2] वह तेमा का शासक (पॅखा) शहरू था जो उत्तर-अरब के राजवश का धनाढ्य व्यक्ति था। उसने लगभग सा०स०पू० 340 मे न केवल स्मारक स्तम्भ (**न्स्ब्अ्**) खडा किया, वरन आराधना-गृह को भी उन्नत किया (**ह्अ्ल्य्** exalted) और प्रतिमा के लिए सिहासन (**क्र्सअ्अ** = कुरसी) बनवाया ।

233-ख ~ (3) यर्दन घाटी मे

इस्राएल देश पहले प्रधानत इब्रानी अभिलेखन का क्षेत्र था , परन्तु फारसी साम्राज्य की स्थापना से सैकड़ो अरामी लेख मिलने लगे[3] और अरामी सामान्य जन-भाषा बनती गई । प्राचीन एदोम देश मे एक-साथ सा०स०पू० 4थी सदी के 218 अरामी मृद-पटट प्राप्त हुए[4]। लेकिन अम्मोन देश के अरामी अभिलेख हमारे अध्ययन के लिए अधिक महत्व के है
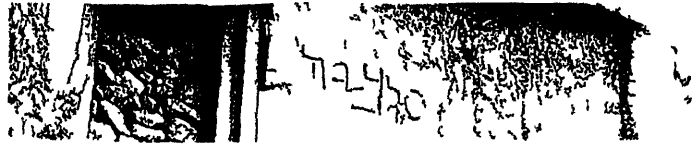
अरक-एल-एमीर मे एक पारिवारिक समाधि-गुहा पाई गई जिसके पुराभाग पर वश-नाम **टोभ् याह्** पुरानी अश्मोत्कीर्ण-शैली की नकल मे अकित हुआ। फारसी काल मे और यूनानी काल मे भी तोबियाह के सामन्त परिवार मे से उच्चाधिकारीनियुक्त होते रहे । एक प्रशासक तोबियाह का उल्लेख इब्रानी-अरामी तॅनख के नहेम्याह-ग्रथ 2 10 मे मिलता है। डेढ़ सदी के बाद मिस्र के यूनानी अधिकारी जैनोन् के यात्रा-वर्णन मे तोबिअस का नाम है जो सा०स०पू० 265 मे अम्मोन का प्रान्त-पति नियुक्त हुआ[5]।

---

(1) M LIDZBARSKI vol 2 Table XXVI Nr 5 2) F M CROSS A new Aramaic stele from Taymā' The Catholic Biblical Quarterly 48 1986 pp 387 394 (3) हाल ही मे 5वी सदी के 6 अरामी लेख प्रकाशित हुए R DEUTSCH & M HELTZER Forty New Ancient West Semitic inscriptions Tel Aviv 1994 (4) A LEMAIRE, Nouvelles Inscriptions araméennes d Idumee au Musee d Israel Paris 1996 (5) Zenon Papyrus प्तॉलेमॅयॉस-द्वितीय के शासनकाल मे; यह अशोक का समकालीन था। इतिहास मे एक और तोबियाह ज्ञात है जो प्तॉलेमॅयॉस-तृतीय के शासनकाल मे शासक था --यह हुर्कनॉस का पिता था (दे० द्वितीय मक्काबी-ग्रथ 3 11) और उसने राजा अन्तिऑखॉस्-चतुर्थ के डर से अपने नव-निर्मित किले मे आत्महत्या की। J NAVEH का विचार है कि उपर्युक्त गुहा-समाधि का वश-नाम उसी तोबियाह के लिए ही अकित हुआ The script may have been frozen a later survival of the Aramaic lapidary style up to the 2nd c B C E

प्राचीन मोआब देश से भी अनेक अरामी अर्पण-अभिलेख प्राप्त हुए उदाहरणार्थ

केरक का वेदी-अभिलेख केरक नगर के किसी प्रतिष्ठित नागरिक ने राष्ट्र-देवता **कॅमोश्** के मन्दिर की वेदी पर 4 प० का यह अर्पण-लेख खुदवाया[1] 15वे वर्ष मे रानी [अर्थात देवी] सररा के शरण-स्थल हेतु कॅमोश के इस सेवक हिलाल-बर-अम्मा ने यह वेदी बनायी और इस पूजागृह के लिए एक आलय (**निश्का**) का प्रबध किया। जे०मिलिक् अभिलेखन-काल फारसी साम्राज्य का अन्त मानते है।

233-ख ~ (4) प्राचीन अराम के क्षेत्र मे

यह तो अरामी अभिलेखन का उद्भव-क्षेत्र ही है। एकाध सस्मरण-समर्पण लेख यूनानी काल के आरम्भ मे मिलते है उदाहरणार्थ

तधमोर् (= पैल्माइर दे० पृ० 79) मे उस विशिष्ट महाभोज का स्मारक-लेख मिला[2] जो नगरप्रमुख की देखरेख मे सम्पन्न हुआ। आशीषित लोगो मे मन्त्रजाप करनेवाले (**मृहर् कर्यन्** = ईरानी शब्द) अथवा रक्षा करनेवाले (यदि अरबी धातु के अनुसार **मृहद्मर्यन्** पढे) है । किसी व्यक्ति का भी उल्लेख है जो स्तम्भ (**अमृवदअ**) की देखभाल करता है , लेकिन पाठ सदिग्ध है[3]।

233-ख ~ (5) एशिया माइनर मे

अरामी अभिलेखन का यह उर्वर क्षेत्र बना , क्योकि जब तक यूनानवाद का विस्तार नही हुआ तब तक फारसी साम्राज्य के अधीन छोटे स्थानीय राज्यो को जोड़ने के लिए अरामी सम्पर्क-भाषा सुविधाजनक थी।

1, केसेशक-कोयु का अन्त्येष्टि-लेख किलिकिया प्रदेश मे सा०स०पू० 4थी सदी का यह लेख (5 प०) चटटान पर उत्कीर्ण हुआ और लाल रग से रगा गया[4]। आरम्भ मे लिखा है नन्श्त ने इस उद्भृत-आकृति (**पत्कर्** = ईर०) को बलूत वृक्ष के सामने खड़ा किया मेरी आत्मा (**नप्शय्** अर्थात् मृतक की कबर) के आगन का आदर कीजिए (**सप्नव्**[5])।

उस अन्त्येष्टि-लेख के समान लमस्थलेस के शिलालेख (6 प०) [6] से मालूम होता है कि लिपिकार कितनी सावधानी से अक्षरो को काटते-छाटते और रगते थे।

𐡋𐡁 𐡔𐡐𐡍𐡔 𐡍𐡐𐡔

---

(1) E.LIPINSKI North Semitic texts from the first millennium B C W BEYERLIN ed Near Eastern Religious Texts relating to the Old Testament Philadelphia 1978 लिपिन्स्की लेखनकाल को 3री सदी का आरम्भ मानते है ।

(2) Palmyra Inventory IX 28 (3) सारी नामक स्थान से 6 प० का समर्पण-लेख प्राप्त हुआ जो सूर्यदेव के पीठ-आसन पर अकित है परन्तु यह सा०स०पू० 3री सदी का है --दे० B AGGOULA Studia Aramaica Semitica 32 1982 p 102

(4) Kesecek Koyu funerary inscription G Nr 33 (5) यद्यपि सप्न् और व् के बीच मे रिक्त स्थान है दोनो को जोड़ना चाहिए दे० LIPIŃSKI vol 1 p 147 There is however a slight fracture in the rock at this point The scribe or painter thus left that space uninscribed It cannot therefore be interpreted as a blank separating two words

(6) L ,Table XXVI Nr 3

2 बाहदिर्ली का सीमास्तम्भ-लेख किलिकिया के दो नगरो के बीच सा०स०पू० 4थी सदी का यह सीमा-लेख (8 प०) प्राप्त हुआ। इस सीमा (**तख्वम्अ** अर्थात सीमा-स्तम्भ) को मिटानेवाले को धमकी दी जाती है। उसी प्रकार का सीमास्तम्भ-लेख (5 प०) गुज्ने से प्राप्त हुआ[1]।

3 सराइदीन का शिलालेख 6 प० का यह सहज लेख[2] किलिकिया के तरसुस नगर के पास राजसी आखेट के सस्मरण मे अकित हुआ मै के पुत्र का पुत्र हू। जब मै यहा शिकार (**स्य्द्अ्**) कर रहा था तब मैने इस स्थान पर पड़ाव / भोजन (**म्श्त्र्ह** - क्रियाधातु श्र्य्=to encamp अथवा शर्ह्=to take breakfast) किया । सिक्को के अरामी लेख से पता चलता है कि ऐसा शिकार खेलनेवाला उस क्षेत्र का अन्तिम क्षत्रप मज्दी (**म्ज्द्य्** Mazdaeus सा०स०पू० 361-333) भी था। दो पीढ़ियो के बाद राजा अशोक ने विहार-यात्राओ मे मृगया को त्याग दिया (अष्टम मुख्य शिला० 1, और श०अ० 6) ।

4 अरेब्सून के तीन शिलालेख कप्पदोकिया प्रदेश के इस तीर्थ-स्थान से 3 अरामी अभिलेख प्राप्त हुए । प्रथम लेख (9 प०) मे [3] देवदासी (?) मज्दा अपने को स्थानीय इष्टदेव बेल की रानी बहन और पत्नी कहती है तू देवो मे अधिक बुद्धिमान (**खकयमअ्**) और शोभायमान (**श्पयरअ्**) है , इसलिए मै तेरे लिए गृह/मन्दिर की पत्नी रखी गई हू ।

5 लिमूरा का द्विभाषीय अभिलेख लुकिअ प्रदेश मे एक समाधि-गुफा के प्रवेश पर लगभग सा०स०पू० 350 की यह अरामी पक्ति मिली[4] इस अस्थि-पात्र (**अ्स्त्व् द्न्ह्** = ईर० अस्तो-दान-) को अर्जपिय के पुत्र अर्तिमस ने बनाया। बाद मे (**अ्खर्**) जो कोई इस गुफा (**म्अ्र्त्अ्**) को (लूटने वाले के लिए शेष अभिशाप वचन अप्राप्य है) । तीन पीढ़ियो के बाद यूनानवाद के प्रभाव से अर्तिमस के प्रपौत्र ने छोटे यूनानी लेख मे यह स्पष्टीकरण जोड़ दिया कि महा-पितामह (यू० प्री-पर्प्पोस्) ने यह कबर (तर्फोस्) अपने लिए एव अपने वशजो के लिए तैयार की ।

6 क्सन्थोस का त्रिभाषीय अभिलेख लुकिअ के तीर्थनगर क्सन्थोस के महामन्दिर मे 1 35 मीटर ऊचे आयताकार पट्टस्तम्भ पर एक-ही समय मे त्रिभाषीय लेख प्रसारित हुआ सामने के छोटे स्तम्भमुख पर अरामी लेख (27 प०) दाए के चौड़े स्तम्भमुख पर यूनानी लेख (35 प०) और बाए के चौड़े स्तम्भमुख पर क्षेत्रीय लुकिआई भाषा एव लिपि मे तीसरा लेख (41 प०) अकित हुआ[5]। सम्राट अर्तक्षत्र के प्रथम वर्ष (= सा०स०पू० 358) मे फारसी क्षत्रप (**ख्श्त्र्प्न्अ्** यू० सत्रपैस्) उपासना-सबधी नये प्रबध को मान्यता देता है । अरामी पाठ इस आदेश-पत्र का औपचारिक प्रारूप था। यूनानी-लुकिआई पाठ के नगर को अरामी मे केवल फारसी गढ बताया गया और इसमे अधीनस्थ लुकिआई अधिकारियो के नाम भी नही है।

---

(1) Bahadirli & Guzneh borderstone inscriptions D Nr 259 (2) Saraidin inscription D Nr 281 G Nr 35
(3) Arebsun 1 D Nr 284 (4) Limyra inscription D Nr 282 L vol 2 pp 182 171 written in an Eastern form of Imperial Aramaic रिमूरा से एक अन्य द्विभाषीय अभिलेख प्राप्त हुआ लेकिन अरामी के स्थान पर लुकिआई भाषा-लिपि का प्रयोग हुआ Lycian-Greek bilingual (5) J TEIXIDOR The Aramaic text in the trilingual stele from Xanthus Journal of Near Eastern Studies 37 1978 pp 181 185 A.MILLARD The king s orders in every language Treasures from Bible Times Tring 1985 pp 146 147 A.LEMAIRE, The Xanthos trilingual revisited Z ZEVIT e a eds Solving Riddles and Untying Knots Biblical epigraphic and Semitic studies in honour of J Greenfield Eisenbrauns 1995 pp 423 432

क्सन्थोस-अभिलेख का मुख्य आशय अरामी मे इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ सामन्तो/मालिको (**बअ्ल्य्**) ने यह उपासना-विधि (**क्र्प्अ्** =ईर०) स्थापित की देव स्वामी (**क्न्द्यस्** = लुकिआई भाषा) की सेवा-आराधना की जाए। यूनानी पाठ के अनुसार सामान्य नागरिक मन्दिर के लिए यह नया प्रबध कर रहे है जब कि फारसी शासन की दृष्टि मे राजस्व हेतु भूपति-सामन्त ही महत्वपूर्ण नागरिक है। यूनानी पाठ मे मूर्त्ति-उपासना की वेदी स्थापित की जा रही है जब कि अरामी पाठ मे फारसी धर्म के अनुकूल एक व्यापक ईरानी शब्द kaıpa- का प्रयोग हुआ । यूनानी पाठ मे स्वामी के बदले मे देव के लिए असाधारण उपाधि राजा (बसिलेंव्स्) प्रयुक्त हुआ[1]।

नवनियुक्त पुरोहित प्रति माह के आरम्भ मे भेड़ की बलि चढाएगा। सारी व्यवस्था के लिए स्थायी-निधि के रूप मे एक जागीर (**ब्ग्** [2]) निश्चित की गई है जिसके लिए सम्पूर्ण क्षेत्र (**म्त्अ्**) के सामन्तो ने भू-दान किया । अब देव स्वामी का उसपर स्वामित्व-अधिकार (**म्ह्ख्स्न्**) है । अभिशाप-वचन मे लुकिआई स्वामी के अतिरिक्त यूनानी देवी लैतों-अंर्तेमिस् और फारसी प्रभु (**ख्श्त्र् प्त्य्** = ईर० hśatra-patı, the Lord of power) की प्रतिरक्षा का सर्वधर्मपन्थीय आश्वासन दिया गया है । लिखित आदेश को **द्त्ह्** (= **द्त्** [3] + निश्चायक पर-उपपद -ह्) घोषित किया गया है —जो अशोकीय अरामी (त० 2) मे धर्म-लेख का ही अर्थ धारण करता है ।

7 <u>सरदिस का द्विभाषीय समाधि-लेख</u> लुदिअ प्रदेश से सा०स०पू० 348 का द्विभाषीय लुदिआई-अरामी अभिलेख प्राप्त हुआ [4]। दोनो पाठो मे 8-8 पक्तिया है और दोनो लिपियो को दाए से पढना चाहिए । अन्त्येष्टि-स्थल के अरामी वर्णन मे मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ स्थूणा-स्तम्भ (**स्त्वन्ह्** = ईर०/स०), गुहा (**म्अ्र्त्अ्** = अर०), वृक्ष (**द्र्ख्त्अ्** = ईर० drahta-), पवित्र-स्थान (**अ्त्र्त्अ्** // इब्र० ॲशेरा पूजा-स्तम्भ), द्वार-मण्डप (**प्र्ब्र्** = ईर०/स० प्रवार दे० पृ० 189), मकबरा (**स्प्र्व्** = लुदिआई भाषा)। लिपिक ने सावधानी से मूल प्रारूप को उतारा , उसने अर्थ के अनुसार पक्तियो के अन्त मे किसी शब्द-इकाई को नही तोडा । जब उसने भूल से एक शब्द को छोड़ दिया था तब इसे अगली पक्ति के अन्त मे जोडा (जैसे लघमान के द्वितीय अरामी अभिलेख मे हुआ !) । अरामी भाषा के पूर्वी रूप का भी प्रयोग हुआ। अत अनुवादक एवं लिपिक अवश्य लुदिअ का कोई प्रवासी अरामी-भाषाभाषी व्यक्ति था [5]।

8 <u>अबुदोस् का बाट-लेख</u> एशिया माइनर के उत्तर-पश्चिमी कोने मे एक सुन्दर सिह-रूपी बाट पर यह एक-पक्तीय अरामी अभिलेख [6] मिला सही (**अ्स्प्र्न्** = ईर० आसफर्ना सम्पूर्ण), द्रव्य के निरीक्षक (**स्त्र्य्अ्** = ईर०) के अनुसार ।

---

(1) The term Lord applied to God has a strong Oriental connotation The use of the title King for a God is practically non existent in Phoenician and Aramaic inscriptions (J TEIXIDOR op cit p 183) (2) baga an old Iranian term to indicate a group of fields belonging to several owners"(ibid) (3) Thus the official Persian deed is proclaimed in the official language of the empire with due attention to local circumstances (A.MILLARD op cit p 147)

(4) Sardis bilingual Lydian Aramaic funerary inscription K. Nr 46 D Nr 260 L vol 1 pp 153 161 स्थान के नाम का अरामी रूप संफारध है । लिपिन्स्की के अनुसार सारदिस मे अरामी-भाषाभाषी इश्राएली थे (दे० तॅनख का नबी-ग्रथ ओबद्याह , 20) । योसैपोंस (Jewish Antiquities 12 3) का भी साक्ष्य है कि यूनानी काल मे अन्तिओखोस्-तृतीय ने लुदिअ के यहूदियो की प्रशसा की I am persuaded that they will be well-disposed guardians of our possessions because of their piety toward God and because I know that my predecessors have borne witness to them that they are faithful

(5) अर्थात अरामी भाषाभाषी इश्राएली दे० W KORNFELD Die Judische Diaspora in Ab [=Obadiah] 20 Melanges Bibliques Paris 1955 pp 180 186 (6) D Nr 263 K Nr 20 LIDZBARSKI Table XXVI, 1

9 प्रोपोन्तिस् / दस्कुलेयोन् का समाधि-लेख   लगभग सा०स०पू० 410 मे फारसी साम्राज्य के अधीन उच्चाधिकारी एलनाफ[1] ने अपना समाधि-स्थल तैयार किया था। उद्भृत आकृतिया (**स्लम्ह्** [2]) लगाकर उसने अरामी लेख (4 प०) मे शपथ खाकर अनुरोध किया कि जो व्यकित उस पथ (**अ्रख्अ्**) से गुजरता हो वह हानि न करे (**अल् यअम्ल्**) , फिर भी सात सदियो के बाद उसी पाषाण-स्थल मे एक अन्य भव्य शव-पेटिका बनायी गई । लेख के उत्कीर्णन मे प्रवाही शैली का प्रयोग हुआ [3]

10 सिनोपे के सिक्का-लेख   काला-सागर के तट पर विशेषकर सिनोपे नगर से अनेक सिक्के प्राप्त हुए, जिन पर स्थानीय क्षत्रपो ने अपना नाम लिखवाया[4]। उत्कीर्णक स्याही से लिखित नमूने को उत्कीर्ण करते थे , इसलिए उन मान्यता-प्राप्त सिक्को पर भी प्रवाही शैली के लेख है । उद० इसे **म्त्र्व्प्स्त्** पढे अर्थात् ईरानी नाम मिथ्र्-उपस्त- (मित्र-देव सहायक है) अन्य उदाहरण । इसे **व्द्र्न्** पढे ईर० विदर्न- यू० रूपातर मे हुदर्नैस् । इस सिक्का-लेख से (र्)(द्) स्पष्ट है कि अरामी दालेथ् (द) और रेश (र्) मे न्यूनतम अन्तर है। दूसरी ओर एक ही अक्षर के रूप मे अन्तर देखे (य्)(य्) = **ल् अ्र्य्य्न्** अर्थात् ईर० अरियायन- अरिय-वशज[5]। अगल-बगल मे अरामी योध् (य्) के दो भिन्न रूप ।

233-ख ~ (6) मेसोपोतामिया से अफ़गानिस्तान की ओर

भाषाविद ई० कुत्शर् ने साम्राज्यिक अरामी के पूर्वी प्रयोग मे इन आठ अभिलक्षणो को पहचान लिया[6]

1 सबधकारक के अर्थ मे **जी / दी** (जो) से आरम्भ होनेवाले सबधवाचक उपवाक्य
2 पूर्वप्रयुक्त अनावश्यक परप्रत्यय उद० **बयथेह् दी अलाहा** (उसका घर जो ईश का)
3 सबधवाचक परप्रत्यय के स्थान वर सबधवाचक उपवाक्य उद० **ॲभूख्** (तेरा पिता) के स्थान पर **अभ् दी लाख्** (पिता जो तेरा)
4/5 कर्ता/कर्म को कभी क्रियारूप के पहले रखा जाता है
6 कर्म को भावार्थक सज्ञा के भी पहले रखा जाता है
7 क्रिया-काल के अर्थ मे कृदन्त उद० **कॅथभ्** (उसने लिखा) के अर्थ मे **कॅथीम् लेह्** (लिखा हुआ उससे)
8 अक्कादी एव ईरानी आगत शब्द अथवा अक्कादी एव ईरानी से प्रभावित शाब्दिक अनुवाद

---

(1) उसके पिता का नाम अश-याहु // यहो-आश (प्रभु-दत्त) एक प्रचलित यहूदी नाम है   The inscribed stele from Daskyleion thus seems to have belonged to the funerary monument of a wealthy Jew who was most likely a high functionary of the Persian administration (LIPIŃSKI vol 1 p 153)   (2) अन्त्य अक्षर है यहा सॅलेम् (inscribed statue) का पूर्वी-अरामी मे बहुवचन रूप है plural ending ē of Eastern Aramaic (ibid)   (3) G figure Nr 12
(4) C HARRISON Persian names on coins of Northern Anatolia" Journal of Near Eastern Studies 41 1982 pp 181 194
(5) L vol 1 p 167 descendant of Ariya = Aryan (p 205) (6) E KUTSCHER e a Hebrew & Aramaic Studies 1977 p 362

1 तेल्लोह का द्विभाषीय नाम-लेख दक्षिण मेसोपोतामिया से यह रुचिकर अरामी-यूनानी अभिलेख मिला[1]
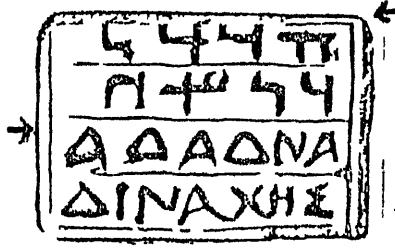
यह अरामी लिपि मे अक्कादी हदद-नदिन-अख का नाम है जिसका अर्थ है हदद-देव ने एक भाई को दिया है । उसका यूनानी लिप्यन्तरण अददनदिनखैस् लिखा गया। यूनानी का प्रयोग केवल सिकन्दर के अभियान के समय से सम्भव है।

2 शाही अभिलेखो के अरामी अश अखुमेनी शासको के ईरानी अभिलेखो से सलग्न कभी अरामी उपाग मिलते है , परन्तु वे प्राय बाद मे जोडे गए उद० नख्श-इ-रुस्तम से प्राप्त सा०स०पू० 312 के लेख ।

3 परसेपोलिस के आनुष्ठानिक लेख परसेपोलिस के राजगढ तथा कोषागार से बहुत-से अरामी प्रलेख प्राप्त हुए । इसके कारण विद्वानो ने अरामी भाषा के अत्यधिक प्रयोग के सबध मे अतिशयोक्तिपूर्ण विचार प्रकट किये मानो फारसी राजधानी मे अरामी-ही-अरामी का वर्चस्व था[2] । वास्तविकता यह है[3] कि फारसी साम्राज्य के केन्द्रीय क्षेत्र मे भी बहुभाषा का प्रयोग रहा , परसेपोलिस से प्राप्त अधिकाश प्रलेख एलामी मे है। उनमे से 80 प्रशासनिक एलामी लेख है जिनके साथ एक अरामी सक्षेपाकन जुडा हुआ है। एकभाषीय अरामी लेख प्राय 700 गिने जा सकते है परन्तु वे मुख्यत रसद व अनाज के विषय मे है । एक-दो नव-बेबीलोनी (अक्कादी) लेख है एक यूनानी लेख और एक फ्रुगिआई लेख।

आर० बाउमन् मानते है कि परसेपोलिस के लघु अरामी लेखो मे ईरानी नामो की अधिकता के कारण उनके विश्लेषण हेतु विशेष योग्यता[4] की आवश्यकता होती है , परन्तु अनुमानत वह उन्हे फारसी अमृत पेय होम- (सोम) के अनुष्ठान से जोडते है। जे० दुशेन-गियमे[5] ने भी आनुष्ठानिक सदर्भ स्थापित करने की कोशिश की निस्सदेह अरामी व्यक्ति-नाम **हुव्‌मृदत्** मे हौम-दात- पहचाना जा सकता है और कूटने के एक हावन-दस्ता पर अरामी अक्षर **हृव्‌न्** अकित हुए जो ईरानी हावन- ही है । यद्यपि बाउमन ने सन 1936-38 के उत्खनन मे से केवल 163 लघु अरामी लेखो का क्रमबद्ध वर्णन किया पी० ग्रलो[6] ने भी इस आरम्भिक विश्लेषण का समर्थन किया । तिथि-सहित लेख सा०स०पू० 479-435 के है। अरामी व्यजनात्मक लिपि मे ईरानी शब्दो का उच्चारण पहचानना जटिल है , विशेषकर हे (ह्) और खेथ (ख्) के प्रयोग मे भ्रम है[7] (अशोकीय प्राकृत का अरामी लिप्यन्तरण करने मे ऐसी ही समस्याए है)। बाउमन के आशिक अध्ययन का परिणाम 99 ईरानी व्यक्ति-नाम उद० **मज़्द्‌दत्** 3 भौगोलिक नाम उद० **हृर्‌खव्‌तय्** (यू० अर्‌खोसिअ), 11 ईरानी आगत शब्द उद० **पृतय्** (पतिय- अर्थात् मूल्य) , 50 अरामी / सामी शब्द उद० **बय्‌र्‌तअ्** (बीर्ता अर्थात् गढ) ।

---

(1) LIDZBARSKI Plate XXVI Nr 4 (2) उद० E.HERZFELD Archaeological History of Iran London 1935 p 48 The use of Aramaic as official script for the Old Persian language R BOWMAN Aramaic Ritual Texts from Persepolis Chicago 1970 p 16 It was under the Persians that Aramaic reached its zenith as a world language As a means of writing Aramaic was carried wherever the influence of Persia went (3) दे० M STOLPER The Neo Babylonian text from the Persepolis fortification Journal of Near Eastern Studies 43 1984 pp 299 310 M WAHRHOFER e a Onomastica Persepolitana Vienna 1973 H KOCH Zur Religion der Achameniden Zeitschrift fur alttestamentlichen Wissenschaft 100 1988 pp 393 405 (4) as an Aramaist it is difficult to enter the field of Iranologists !
(5) J DUCHESNE GUILLEMIN Religion of Ancient Iran Mumbai 1973 (Fr 1962) pp 116 It has been shown on the basis of new new material from Persepolis that army officers had functions connected with haoma
(6) P GRELOT Revue biblique 80 1973 pp 595 598 (7) दे० P O SKJAERVO Aramaic scripts for Iranian languages P DANIELS & W BRIGHT The World s Writing Systems Oxford 1996 p 518

परसेपोलिस के आनुष्ठानिक लेखो की भाषा को अरामी कहने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए[1]। उसे अरामीकृत ईरानी (aramaicised Persian) कहना उचित नही है । उसमे अरामी लिपिकीय परम्परा के हाथ का स्पष्ट सकेत है न केवल सामान्य अरामी शब्दो का प्रयोग हुआ (जैसे **शॅनां** अर्थात् वर्ष और ऐसे आगत इरानी शब्द जो पहले से साम्राज्यिक अरामी मे प्रविष्ट हो चुके जैसे **ग्न्ज़्ब्र्अ्** = ईर० गन्ज-बर- अर्थात खजाची) , वरन् नयी बात अभिव्यक्त करने के लिए ही चाहे अरामी-ईरानी मिश्रित शब्दो का (जैसे **र्अ्य्न् ब्ग्** = अर० अभीष्ट + ईर० भाग = सौभाग्य,और उपर्युक्त उदाहरण के साथ - **अ्प् गनज़्ब्र्अ्** = उप-खजाची) अथवा ईरानी शब्द को अपनाया गया (उद० अरामी मे **र्ब्** = बड़ा एव **ज़्अ्य्र्** = छोटा , लेकिल मध्यम कहने के लिए लिपिक ने ईरानी से **म्द्म्** प्रयुक्त किया) । अत अेम० स्तोल्पर्[2] का विचार है कि परसेपोलिस मे बेबीलोन के अरामीय लिपिक कार्यरत थे और जे० ग्रीन्-फील्ड उन लिपिको की भाषा को मेसोपोतामीय अरामी कहते है। तब पूर्व मे हमारे अध्ययन की अशोकीय अरामी को स्थित करने के लिए ग्रीन्फील्ड् एक महत्वपूर्ण सुझाव देते है कि परसेपोलिस के अभिलेखो मे से बहुत-से लेख अरामीय लिपिको द्वारा अरखोसिअ मे ही लिखे गए[3]। इसका तात्पर्य है कि अरामी-अभिलेखन के सर्वेक्षण के इस तीसरे चरण मे (233-क और 233-ख) हम साम्राज्यिक अरामी के पूर्वी सीमान्त-क्षेत्र मे पहुच ही गए , लेकिन अब तक सिन्धु-घाटी मे सा०स०पू० 4थी सदी के अभिलेख प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध नही हुए — केवल इसके अप्रत्यक्ष सकेत[4] है कि अरामी अभिलेखन के तीसरे चरण के समय से ही उसके पूर्वी सीमान्त-क्षेत्र मे पश्चिमोत्तर भारत-उपमहाद्वीप मे,अभिलेखन-कार्य हो रहा था ।

---

(1) R BOWMAN op cit p 18 Although there are Persian loanwords some evidence of Persian syntax and even a few troublesome verb forms the texts can be read smoothly as Aramaic (2) M STOLPER op cit

(3) J GREENFIELD The dialects of Early Aramaic " Journal of Near Eastern Studies 37 1978 p 94 They were it would seem not written in Persepolis but originated at various sites in Arachosia present day Afghanistan It is worth mentioning that various inscriptions of Asoka (mid third century B C) in Aramaic and other languages were discovered at various sites in Afghanistan one was even discovered at Taxila in Pakistan These attest to the penetration of Official Aramaic into the East in the Achaemenid period" (4) अर्थात जैसे ऊपर कहा गया अरखोसिअ मे अभिलिखित कुछ परसेपोलिसीय लेख , फारसी साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था मे गाधार आदि का सम्मिलित होना खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति के लिए अरामी का सम्भावित प्रभाव पश्चिमोत्तर भारत-उपमहाद्वीप में अरामी-भाषाभाषी उपनिवासियों का निवास ।

परसेपोलिस के लघु अरामी अभिलेखो को धार्मिक-आनुष्ठानिक अर्थ देने मे आर० बाउमन ने निस्सदेह भडार-गृह के कुछ अतिसाधारण लेखो को भी आराधना-गृह से जोड़ने के लिए उनके अर्थ-निर्धारण मे खीच-तान की मानो गोदाम की वस्तु को गो-दान के सदर्भ मे देखा [1]। लघुतम अभिलिखित सामग्री मे ठोस धर्म-साहित्य का अर्थ ढूँढने मे निरूपक-निरूपिका को अधिक सावधानी बरतनी है। इसलिए सर्वेक्षण का चौथा चरण आरम्भ करने के पहले साम्राज्यिक अरामी मे अभिव्यक्त हुई कुछ साहित्यिक सामग्री पर भी ध्यान दे ।

233-ग श्रेण्य साम्राज्यिक अरामी के साहित्यिक प्रलेख

LITERARY DOCUMENTS IN CLASSICAL IMPERIAL ARAMAIC

अरामी अभिलेखन के कालक्रम के उसी तीसरे चरण (सा०स०पू० 5वी - 4थी सदी) मे अरामी भाषा अपनी परिपक्व अवस्था तक पहुच गई। जहा तक उपलब्ध लिखित साहित्यिक अभिव्यक्ति की बात है हम पहले सम्राट दारा के बेहिस्तून अभिलेख का अरामी रूपान्तर देखेगे[2] , इसके पश्चात् अखीकार् का कथा और उसके कथनो की मौलिक अरामी रचना पर अधिक ध्यान देगे — क्योकि यह नैतिक विषयवस्तु का ठोस उदाहरण है जो अशोक के धर्मलेखो की अरामी शब्दावली समझने मे सहायक हो सकता है , अन्त मे तनख् शास्त्र के एज्रा-ग्रथ के अरामी अशो पर दृष्टिपात करेगे [3]।

233-ग ~ (1) अरामी बेहिस्तून

दारा महान के बेहिस्तून त्रिभाषीय अभिलेख पर पहले प्रकाश डाल चुके है (दे० प० 114-118) ।

---

(1) इसलिए J DELAUNAY (Acta Iranica 2 1974 pp 193 217) ने आर० बाउमन के अनुमान को असम्पुष्ट, these in soutenable ,बताया है और ई० लिपिन्स्की ने (vol 1 p 156) और स्पष्ट शब्दो मे कहा " Bowman s explanation of the concerned formulas cannot be admitted (2) दे० J GREENFIELD Iranian vocabulary in Early Aramaic Acta Iranica I 2 Leiden 1974 p 245 We will concentrate on the material preserved in written documents rather than epigraphic remains (3) दे० J GIBSON vol 2 p 118 The chief representatives of the official Aramaic dialect of the Persian empire are on the literary level the biblical book of Ezra and the romance of Ahiqar A. COWLEY Aramaic Papyri of the 5th c B C 1923 Three literary pieces J NAVEH & J GREENFIELD Hebrew and Aramaic in the Persian period Cambridge History of Judaism Cambridge 1984 vol 1 p 117 a literary dialect emerged which may be called Standard Literary Aramaic The fragmentary Aramaic version of Darius Behistun inscription is in Eastern Aramaic the same is true for the framework of the Proverbs of Ahikar , while the proverbs themselves are written in a dialect which may be considered Western Biblical Aramaic is now considered by most scholars a part of official Aramaic

बेहिस्तून के ईरानी-अक्कादी-एलामी अभिलेख का कुछ अश एक चौथी भाषा अर्थात् अरामी मे भी उपलब्ध हुआ जब मिस्र के ॲलिफैटाइन नामक फारसी शिविर से वह 3 मीटर लम्बा अरामी पटेरपत्र मिला जिस की 190 पक्तियो मे से 79 पक्तिया पुनर्स्थापित की जा सकी[1]। बेहिस्तून अभिलेख के उस आशिक अरामी अनुवाद की यह प्रतिलिपि सा०स०पू० 423 मे फारसी दुर्ग-सेना के भृतक सैनिको को इसलिए भेजी गई थी , क्योंकि दारा-प्रथम के राज्याभिषेक के प्राय एक सौ वर्ष पूर्ण हुए और दारा-द्वितीय का अभिषेक-वर्ष मनाया जा रहा था । ॲलिफैटाइन् के सैन्य-शिविर के अरामी-भाषाभाषियो को भी यह राजलेख सुनाया गया ताकि वे राज्यशासन के प्रति अपनी निष्ठा दुहराए । ऐसा प्रतीत होता है कि अरामी अनुवाद औप-चारिक अक्कादी पाठ के आधार पर किया गया था , लेकिन उसकी अपनी कुछ विशेषताए है जो किसी अन्य पाठ मे नही है । उसकी भाषा साम्राज्यिक अरामी की पूर्वी शैली है , जिसमे पर्याप्त ईरानी शब्द अपनाये गये है[2]।

अरामी बेहिस्तून-पटेरपत्र का सुरक्षित पाठाश बेहिस्तून-शिलालेख के ईरानी पाठ के खण्ड ख' प० 16 से आरम्भ होता है। सम्राट दारा ने अनेको विद्रोहियो का दमन किया। अब विद्रोही फ्रवर्तिश की बारी है

[1]वह मादय प्रदेश मे राजा बना। [2] मेरे पास थोड़े (**ज़्अ्य्र्**) सेना-दल (**ख्य्ल्अ्** = इर० पाठ मे कार-) रह गए थे। मेरा सेवक एक फारसी (**प्र्स्य्**) जिसका नाम विदर्न था [3]उनका नेतृत्व कर रहा था। मैने कहा जा मार (**क्ट्ल्**) उन मादी सेनादलो को, जो मेरी बात नही सुनते। [4]अहुरमज्द ने मुझे सभाला। [5]अहुरमज्द की सरक्षा मे (**ब् ट्ल्ह्**) मेरे सेनादलो ने उन विद्रोहियो को मारा। [6]उनमे से 5827 लोगो को मारा और 4329 को जीवित पकड़ा (**ख्य्न्**)। तब विदर्न ने मादय प्रदेश मे कुछ भी नही किया (**अ्ब्य्द्**[3]) [7]जब तक मै मादय को नही आया ।

अन्य स्थानो मे भी विद्रोह को कुचलने का वर्णन है उद० प० 51-63 अरखोसिअ (**ह्र्य्ख्त्य्**[4]) मे। कही-कही अरामी अनुवादक को मूल का वाग्विस्तार (circumlocution) करना पड़ा , उद० मुख्य अनु-यायी' (ईर० मे फ्रतिमा अनुशिया) को अरामी मे उसके साथ के सब प्रतिष्ठित-जन (**ख्र्अ्** nobles)'

---

(1) E.SACHAU Papyrus Nr 70 (2) J GREENFIELD & B PORTEN The Bisitun inscription of Darius the Great Corpus Inscriptionum Iranicarum , Part 1 vol 5 The Aramaic versions of the Achaemenian inscriptions , Text 1 London, 1982 pp 22 68 (3) शब्दश विदर्न से कुछ भी नही किया गया लेकिन पूर्वी अरामी मे भाव-वाच्य का कृदन्त विशेषण ॲबीध् ' कर्तृवाच्य का अर्थ धारण करने लगा। (4) यह असामान्य वर्तनी अक्कादी प्रारूप Aruhatti के अनुरूप है । परसेपोलिस-लेखो मे सही रूप ह्रख्व्त्य् मिलता है । बख्त्रिया (ब्ख्त्र्य्) के क्षत्रप-शासक (प्ख्त्अ्) का भी उल्लेख है ।

किया गया है, क्रूसित किया (ईर० उज्मयापतिय) को उत्थान (**ज़्क़्य्प्अ्** अर्थात् शूली) मे रखा अनूदित किया गया । अपनी प० 63 के बाद अनुवादक ने बाकी युद्धो का वर्णन छोड़कर सीधे धमकी-भरा निष्कर्ष प्रस्तुत किया[1]

[राजा दारा कहते है] [64] तुम जो-भी-हो (**मृन् अ्नृत्**), ओ मेरे बाद (**अ्ख्र्य्**) के राजा ! तुम उस मनुष्य पर दयाभाव मत रखो, जो झूठ बोलता है (**य्क्द्ब्**) । आज्ञा भग करनेवालो से [65] दूर रहो । बड़े-बड़े झूठो से सावधान रहो ।

इसके बाद ऍलिफैंटाइन से पाप्त बेहिस्तून-पटेरपत्र (प० 66-70) मे सम्राट के किसी अन्य वक्तव्य का अरामी रूपान्तर है जो नक्श-इ-रुस्तम के ईरानी शिलालेख ख प० 50-60 के सदृश है[2]

[66] अच्छी तरह समझाओ कि तुम कैसा कार्य करते हो और कैसा है तुम्हारा आचरण (**ह्ल्क्त्क्**)। [67] ऐसा न हो कि तुम्हे वही बात उचित लगने लगे जो कोई व्यक्ति तुम्हारे कान मे बोले, किन्तु उस बात पर ध्यान दो जो कोई व्यक्ति खुलकर (**प्र्त्र्** = ईर० परतर्) बोले। [68] इसके अतिरिक्त ऐसा न हो कि तुम्हे वही कार्य उचित लगने लगे जो कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति करे, किन्तु वह कार्य देखो जो कोई गरीब (**म्स्क्न्**) कर रहा है। तब आमने-सामने (अर्थात् निष्पक्षता से) [69] इस तरह तुम अपनी सुख-शान्ति मे असुरक्षित (**अ्य्म्न्श्** = लिप्यन्तरित ईर० अ-यौमैनिश-) नही होगे। [70] ? पर अकित (**ख्र्य्त्**) [3]।

इस वक्तव्य के बाद प० 71-73 मे नैतिक राजनीति का यह मापदण्ड दिया गया है (जिसे बेहिस्तून-शिलालेख घ प० 45 से मिलाया जा सकता है)

[71] प्रजा (**अ्म्अ्**) से सत्य (**क्श्ट्अ्** [4]) कहो उसको मत छिपाओ । यदि (उस सत्य को) नही छिपाओगे [72] तो अहुरमज्द तुम्हे आशिष देगा (**य्ब्र्क्न्क्** // उर्दू बरकत) और तुम्हारी बहुत सतान होगी ओर तुम्हारे दिन दीर्घ होगे। परन्तु यदि तुम छिपाओगे [73] तो अहुरमज्द तुम्हे शाप देगा और तुम्हारी सतान नही होगी ।

अरामी बेहिस्तून-पटेरपत्र के अन्तिम पाठाश (प० 74-79) मे सम्राट के कृपापात्रो के लिए कृपादानो का वर्णन है जब कि कोपपात्रो के लिए चेतावनी है — जैसे मैने गौमत को मारा उस ज्ञानी (**म्ग्व्श्** magus मजूसी) को जो झूठा दावा किया कि मै बरज़य (कुरुश् का पुत्र उत्तराधिकारी यू० स्मॅर्दिस) हू।

---

(1) ईरानी पाठ से तुलना करे ये ही देश थे जो विद्रोही बन गए थे। झूठ (ईर० द्रौग) ने उन्हे विद्रोही बनाया जिससे उन्होने लोगो को धोखा दिया। इसके बाद अहुरमज्द ने उन्हे मेरे हाथ मे सौपा। जैसे मैने इच्छा की वैसे ही उनके साथ किया। राजा दारा कहते है तुम जो-भी-हो जो भविष्य मे राजा बनोगे झूठ से पूर्णत सावधान रहो। जो व्यक्ति झूठा हो उसे पूर्ण दण्ड से दण्डित करो। तभी तुम सोच सकते हो कि मेरा देश सुरक्षित रहेगा ।

(2) दे० N SIMS WILLIAMS The final paragraph of the tomb inscription of Darius I (DNb 50-60) the Old Persian text in the light of an Aramaic version Bulletin of the School of Oriental and African Studies 44 1981 pp 1 7

(3) यहा शायद बेहिस्तून घ प०41 की तरह यह निर्देश था तुम जो-भी-हो जब भविष्य मे इस अभिलेख (ईर० दिपिम) पर ध्यान दोगे तब यह तुम्हे विश्वास दिलाए कि मैने क्या किया है। तुम इसपर सदेह न करो। यह सत्य (ईर० हशियम) असत्य (नैय दुरुख्तम) नही है। यह सब मैने एक ही वर्ष मे सम्पन्न किया। राजा दारा कहते है अहुरमज्द की इच्छा से मेरे द्वारा और बहुत कुछ किया गया है जो इस अभिलेख मे अलिखित (नैय् निपिश्तम्) है।

(4) यह ग्रीन्फील्ड एध पॉर्टन के सस्करण मे पुनर्स्थापित अरामी शब्द है — और **यही अरामी शब्द अशोकीय अरामी मे "धम्म" के लिए प्रयुक्त हुआ** - लेकिन इस पुनर्स्थापित पाठ मे सदेह नही है क्योकि बेहिस्तून के अक्कादी पाठ मे भी अमत है, जो ईरानी अर्त्थ अर्थात सत्य को प्रतिध्वनित करता है।

233-ग ~ (2) अँख़ीकार् के कथन

फारसी सैन्य-शिविर अेलेफन्तिनै ने हमे साम्राज्यिक अरामी की और एक साहित्यिक रचना भेट की है जिसका मूल शीर्षक मिल्लै अँखीकार् (अँखीकार् के कथन) रखा गया है। शिविर के अरामी-भाषा-भाषी सैनिको और उनके परिवारवालो मे यह रचना अवश्य लोकप्रिय रही । इसे लगभग सा०स०पू० 430 मे उपर्यालिखित (palimpsest दे० पृ० 237) पटेरपत्र के रूप मे उतारा गया [1]। प्राचीन विश्व-साहित्य मे इसके प्रभाव का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि बारह भाषाओ में इसके अनुवाद हुए[2] यहा तक कि इब्रानी-अरामी तँनख्-बाइबिल मे उल्लेख मिलते है। कोई भी प्रशिक्षित अरामी लिपिक इससे अनभिज्ञ नही रह सकता था और सम्राट अशोक के योग्य लिपिकार भी इससे सुपरिचित हुए होगे। अत अँखीक़ार् के कथनो की भाषाई अभिव्यक्ति और उनमे अभिव्यक्त नैतिक मूल्यो की शिक्षा प्रस्तुत अध्ययन के लिए अति उपयोगी है ।

अँख़ीकार्-पटेरपत्र मे 223 पक्तिया है जिन्हे दो भागो मे विभाजित करते है 1) अँख़ीक़ार् की कथा (प० 1-78) और 2) अँखीकार् के नीति-वचन (प० 79-223) । दोनो भागो की भाषा मे कुछ अन्तर है प्रथम भाग मे कथा की विषय-वस्तु के अनुरूप न केवल अस्सीरियाई अक्कादी शब्दो का अधिक प्रयोग हुआ वरन् उसे श्रेण्य अरामी की पूर्वी शैली मे प्रस्तुत किया गया है — उद० अस्सीरिया देश को सामान्य रूप अश्शूर् के बदले मे अत्तूर् (**अतवर**) कहा गया है। द्वितीय भाग पश्चिमी शैली से प्रभावित है उद० क़श्शीटा अर्थात् सत्य को आरम्भिक काफ् (क्) के साथ **कश्यटअ्** लिखा गया है जब कि सामान्य वर्तनी मे (और अशोकीय अरामी लिपि मे भी — दे० श०अ०1) यह शब्द क़ोफ् (क़्) से आरम्भ होता है। सम्पूर्ण रचना ईरानीपन से ओतप्रोत उद० घटनाक्रम की प्रस्तुति मे अरामी सयोजक अँथर्

(1) A.COWLEY Aramaic Papyri of the Fifth Century Oxford 1923 The Words of Ahikar pp 204 248 J KOOPMANS op cit pp 138 145 J LINDENBERGER The Aramaic Proverbs of Ahiqar Baltimore 1974

(2) F CONYBEARE, J HARRIS & A LEWIS The Story of Ahikar (from the Syriac Arabic Armenian Ethiopic Greek and Slavonic versions) London 1898

अर्थात् तब इसके बाद का बहुत अधिक प्रयोग हुआ ठीक जैसे ईरानी कथा-शैली मे सयोजक पसाव बार-बार मिलता रहता है ।

1 <u>अँखीकार् की कथा</u> (प० 1-78)

यदि अँखीक्रार् कोई ऐतिहासिक व्यक्ति है तो वह अस्सीरिया के सम्राट सनहेरीब के शासनकाल (सा० स०पू० 704-681) मे राजसचिव तथा परामर्शदाता (अर० **याओंट्**) नियुक्त हुआ था। वह अराम देश का मूल निवासी था और उसके अरामी नाम का अर्थ है भाई (**अख्**) आदरणीय (**यक़र्**) है''[1]। उसका परिचय तीन शब्दो से दिया गया है वह लिपिक (**साफ़र्**) था बुद्धिमान (**ख़क्कीम्**) और अनुभवी (**मॅहीर्**)। अपने पद पर वह विश्वस्त सेवक रहा और इतना महान् (**रब्**) बन गया कि वह समस्त देश का पिता (**अब्**) कहलाने लगा। लेकिन वह निस्सतान था , उसकी यही चिन्ता थी कि मैं वृद्ध (**सभ्** [2]) हू और मेरे बाद कौन मेरे लिए पुत्र होगा ? तब अँख़ीकार् अपनी बहन के पुत्र नाथिन् को पुत्र के समान पालने और सिखाने लगा। उसने नाथिन् के प्रति भलाई-ही-भलाई (**टाबॅथा**) दिखाई ।

इतने मे सनहेरीब का उत्तराधिकारी एसरहद्दीन नया सम्राट बना। एक दिन जब राजा प्रसन्नवदन था अँखीकार् ने यह वरदान मागा कि मेरा पालक पुत्र मेरे स्थान पर उसी सेवापद (अँभीथॅथा) पर नियुक्त किया जाए। राजा ने बात मान ली और अँखीक्रार् सेवानिवृत्त होकर अपने गृह-उद्यान मे विश्राम करने लगा। लेकिन नाथिन् ने भलाई के बदले मे बुराई की उसने राजा को बताया कि अँखीकार् ने राजद्रोह का षड्-यन्त्र रचा। राजा क्रोधित हुआ और अँखीकार् को मृत्युदण्ड देने के लिए उच्चाधिकारी नबूसुमिस्कून को भेजा। वह गया और अँखीकार् को अगूर-उद्यान मे टहलते हुए (**म्हल्लक्**) पाया। नबूसुमिस्कून बड़ा दु ख हुआ कि ऐसे बुद्धिमान लिपिक/शास्त्री के साथ विश्वासघात किया गया। जिस दत्तक पुत्र को अँखीक्रार् ने राजमहल के फाटक (**तर्अ्**) पर प्रतिष्ठित किया उसी ने यह अपकार किया । जब नबूसुमिस्कून इस प्रकार हिचकिचा रहा था तब अँख़ीक्रार् ने उसे याद दिलाया मैं वही व्यक्ति हू जिसने पहले आपको निर्दोष (**ज़्कय्**) मृत्युदण्ड से बचाया था , क्योकि महाराज सनहेरीब आप पर रुष्ट हुए थे। मैंने आपको महाराज की नजर से छिपाए रखा और उससे कहा कि आपको दण्ड दिया गया है । मैंने आपको अपने भाई की तरह सम्भाला। बहुत दिनों के बाद मैंने आपको महाराज के समक्ष फिर जीवित प्रस्तुत किया और महाराज प्रसन्न ही हुए कि मैंने आपको नहीं मारा था। उसने आपका अपराध क्षमा किया। अब आप मेरे साथ ऐसा ही कीजिए क्योकि सम्राट एसरहद्दीन भी परम दयालु (**र्ख़्म्न्**) हैं ।

---

(1) इज़ाएल के कथा-साहित्य में इस नाम का उल्लेख यूनानी बाइबिल-अनुवाद में उपलब्ध तोबीत-ग्रन्थ 1 22 14 10 पर मिलता है। इस ग्रंथ के आंशिक अरामी पाठ कुमरान के लेखागार से प्राप्त हुए, जो इसका प्रमाण है कि वर्तमान तोबीत-ग्रन्थ सा०स०पू० 4थी-3री सदी की मूल अरामी रचना पर आधारित है । अरामी पाठ में नाम का रूप अँक़ीक्रार् है । दिलचस्प बात है कि मिस्री सिकन्दरिया के धर्माध्यक्ष क्लैमैस् अपनी कृति <u>स्त्रोमत</u> 1 15 69 में, यूनानी दार्शनिक दैमो-क्रितॉस् (सा०स०पू० 460 370) को उद्धृत करते हुए कहता है कि उस दार्शनिक ने अपने नीति-वचन (लॉगॉय् ऑथिकॉय्) नामक सकलन में बेबीलोन से प्राप्त कथनों का भी प्रयोग किया जो अँख़ीक्रार के स्तम्भ (स्तैले अकिकॅरॉव्) पर अकित थे। लगता है, स्तम्भलेखों में नैतिक सिद्धांत जोड़ने में सम्राट अशोक पहले और अकेले व्यक्ति नहीं थे।

(2) इज़ाएली समाज में धर्मवृद्धो को अरामी बहुवचन में साभय्यां कहते थे। अशोकीय अरामी में लुप्त शब्द वृद्ध, गुरु-जन को पुनर्स्थापित करने के लिए यही उपयुक्त अरामी शब्द है।

नबूसुमिस्कून तुरन्त राजी हुआ और अपने साथियो से कहा "हम इस निर्दोष को न मारे। अपना एक दास है। उसी को ॲखीकार् के स्थान पर दो पर्वतो (टूवरयअ्) के मध्य मृत्युदण्ड दिया जाए[1]। जब महाराज मृत ॲखीकार् को देखने के लिए (लृ-मृखृण्ह्) किसी को भेजेगे तब हम इस दास का शव दिखाएगे । परन्तु एक दिन महाराज अवश्य ॲखीकार् को स्मरण करेगे। वह उसका बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श सुनने की इच्छा करेगे । महाराज का हृदय उसके लिए विह्वल हो जाएगा । वह अपने दरबारियो से कहेगे यदि तुम ॲखीकार् को फिर लौटा सको तो मै तुम्हे रेतकणो की सख्या की माप से बहुत धन दूगा । । इतना कहने के बाद नबूसुमिस्कून ने ॲखीकार् को अपने घर मे छिपा दिया और अपने भाई के समान उसकी देखभाल की । राजा को सूचित किया गया कि अपराधी को दण्ड दिलाया गया है।

यहा से पटेरपत्र का वह अश लुप्त है जिसमे ॲखीकार् को जीवन-दान का वर्णन है। जीवन के कटु अनुभव के पश्चात् ॲखीकार् पुन अपने उच्च पद पर आसीन हुआ । तब वह महान् नीतिशास्त्री एव राज-नीतिज्ञ चाणक्य के समान[2] जीवनोपयोगी परामर्श देने लगता है। वस्तुत ॲखीकार् की जीवन-कथा उस बुद्धि-शिक्षा के लिए मात्र साहित्यिक पृष्ठभूमि है ।

2 ॲखीकार् के नीति-वचन (प० 79-223)

ॲखीकार् की कथा के साथ लगभग 115 नीति-वचनो का सकलन जुड़ गया मानो लिपिकार-सूत्रकार उसे अपने पश्चात्तापी दत्तक-पुत्र नाधिन् को सुना रहा हो। वास्तव मे केवल एकाध वचन कथा-प्रसग से मेल खाते हैं उद० प०140 एक क्रूर साक्षी मेरे विरुद्ध उठा , कौन मुझे निर्दोष ठहरा सकता ? मेरे घर से ही क्रोधाग्नि धधक उठी , मै किससे घोर सग्राम करू ? अरामी आचार-कथनो की यह चयनिका पढे

प० 79 कोल्हू मैं से उभड़नेवाली अगूरी से अधिक शक्तिशाली (खस्सीन्) क्या हो सकता है ?

प० 80 जिस पुत्र को प्रशिक्षित एव अनुशासित[3] रखा जाता है और जिसके पैरों में बेड़िया डाली जाती हैं वही महान बनेगा ।

प० 82 मेरे पुत्र यदि मैं तुझे प्रताड़ना देता हू, तो तू नही मरेगा , परन्तु यदि मैं तुझे तेरी अपनी इच्छा पर छोडू तो तू नहीं जीएगा[4]।

प० 83 गुलाम (अलयम्) के लिए थप्पर नौकरानी के लिए डाट-डपट और तेरे सब सेवक (अबद्) के लिए अनुशासन (मुल्पाना) चाहिए ।

प० 86 यदि एक बिच्छू कुछ रोटी पाता है तो वह उसे जीवित रहने के लिए नही खाता , रोटी अच्छी तो है लेकिन बिच्छू के लिए उपयुक्त नही है कि वह उसे चखे (टूअम) ।

प० 92-93 दो बातें आभूषण के सदृश हैं और तीन बातों से सूर्यदेव प्रसन्न होता है अगूरी पीते समय दूसरों को भी देना अपने ज्ञान का घमण्ड न करना और सुनी हुई बात न फैलाना। सूर्य के सम्मुख यही मूल्यवान है।

---

(1) अरामी साहित्य के शिरोमणि ॲखीकार् की कथा का यह अप्रिय प्रसंग है कि उस महापण्डित लिपिकार को बचाने के लिए किसी कु-दलित दास को प्राण से हाथ धोना पड़ता है। इसके विप्रीत प्रियदर्शी अशोक अपने धर्मराज्य मे दास-सेवक के प्रति न्यायोचित व्यवहार की मांग करते हैं और किसी भी प्राण-हानि को मना करते है। उनकी मानवतावादी दृष्टि में समस्त प्रजा-प्रजाति एक-समान है, मनु-जगती की प्रत्येक कलिका-लतिका को सु-दलित, सु-पुष्पित होने का अधिकार है ।

(2) उद० चाणक्य नीति दर्पण का लोकप्रिय सस्करण । सस्कृत वाङ्मय अथवा अन्य भारतीय-भाषा साहित्य में ढूढने पर ऐसी अनेक कथाए मिलेगी, जिनमे आदर्श कथानायक ॲखीकार का कोई स्वदेशी-प्रदेशी सम-रूप प्रस्तुत किया गया हो

(3) शब्दश: आज्ञापालन द्वारा बाधा हुआ , अशोकीय अरामी में अरामी क्रियाधातु असृर् का उसी अर्थ मे प्रयोग हुआ।

(4) इब्रानी-अरामी तॅनख् के नीति-वचन ग्रथ 23 13-14 से तुलना करें , उसी प्रकार नबी-ग्रथ यिर्मयाह 9 23 और ॲखीकार् प० 207 में शाब्दिक समानता है धनवान अपने धन का घमण्ड न करे ।

प० 94 95 देवलोक से ही लोग प्रज्ञा (ख्कम्ह्) प्राप्त करते हैं , देवगण का यह वरदान मूल्यवान है । अनन्त राज्य (म्ल्क्व्त्ञ्) उसी का है , स्वर्ग में उसकी प्रतिष्ठा है क्योंकि पवित्र स्वामी ने उसे सर्वोपरी स्थान दिया ।

प० 96 97 मेरे पुत्र गपशप बकबक मत कर , ऐसा न हो कि तू अपने अन्तर्मन की हर बात प्रकट करने लगे। सभी जगह कोई आख देखती है कोई कान सुनता है , मुह पर लगाम चढा कि वह तेरे नाश का कारण न बने।

प० 98 चौकस रहो लेकिन मुह पर अधिक चौकसी रखो । जो तुम्हारे कान मे कहा गया उसके लिए अपना हृदय को भी बद करो । शब्द तो पक्षी की तरह है , उसे उडाने पर कोई पकडकर उसे वापस नही ला सकता।

प० 100 राजा के कथन की अवहेलना न करो , वह तुम्हारे बन्धु के लिए स्वास्थ्यकर हो सकता है । राजा धीमी आवाज से बोलता है लेकिन उसका शब्द दोधारी तलवार से तेज है ।

प० 107 राजा परमदयालु ईश्वर के समान है , लेकिन जब उसके मुह से बोल फूटता है तब उसके सामने कौन खडा रह सकता ? केवल वही जिसके साथ ईश्वर हो !

प० 109 अच्छा बरतन किसी वस्तु को अपने भीतर ढाप लेता है , फूटा (त्ब्य्र्) बरतन उसे निकलने देता।

प० 116 आकाश में अनगिनत तारे हैं जिनका नाम कोई मनुष्य (अ्य्श्) नही जानता , उसी प्रकार मानव/ मानवत्व (अ्नश्ञ्) को कोई मनुष्य नही जानता ।

प० 118 119 चीता एक बकरी के पास आया जो ठण्ड से ठिठुर रही थी। चीते ने बकरी से कहा आ मैं तुझे अपनी खाल से गरमाऊगा। बकरी ने उत्तर दिया 'स्वामी क्यों मेरी चिन्ता करें ? मेरी चमडी न खीचना।'

प० 126 धार्मिक (स्द्य्क) पर तीर चलाने के लिए धनुष (क्श्त्) न चढाओ नही तो देव उसकी सहायता करने आ धमकेंगे और उस तीर को तुम्हारे विरुद्ध लौटाएगे ।

प० 132 वीर पुरुष (ग्ब्र्) की मनोहरता (खन) उसकी सच्चाई / विश्वसनीयता (ह्य्म्न्व्त्) है , परन्तु उसकी कुरूपता उसके होंठों का झूठ (क्द्ब्श्) है ।

प० 138 जो अपने पिता के नाम में अथवा अपनी माता के नाम मै गर्व नही रखता ऐसे व्यक्ति पर सूर्य प्रकाश न दे , क्योंकि वह एक दुष्ट मनुष्य है ।

प० 142-143 जो तुझसे ऊच (र्म्) है उससे झगडा न कर , जो तुझसे श्रेष्ठ (अ्स्य्ल्) है उससे विवाद न कर । नही तो वह तेरा हिस्सा भी हडप लेगा और उसे अपने हिस्से में जोडेगा ।

प० 157 158 अच्छी आखें नही फूटेंगी अच्छे कान नही फटेंगे और अच्छे होंठ सत्य (क्श्य्ट्श्) को चाहेंगे और अभिव्यक्त करेंगे ।

उपर्युक्त उद्धरणो से स्पष्ट है कि अ‌ॅख़ीकार् के नीति-वचन एक सार्वभौम मानव-धर्म का प्रचारण करते है। चेलो को अरामी लिपि मे दक्ष बनाने के लिए क्या गुरु-लिपिको के हाथ मे अ‌ॅखीकार् के उन वचनो से उत्तम कोई और अभ्यास-पुस्तिका मिल सकती है ? अशोकीय अरामी के हमारे विश्लेषण मे ये वचन-रत्न मूल शब्दो की कोश-रचना हेतु अतुल कोषागार ही हैं ।

233-ग ~ (3) तॅनख्-शास्त्र मे फारसी साम्राज्यकाल के अरामी लेख

याद दिलाए कि सा०स०पू० 586 मे यरूशलेम के पतन से स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप मे इस्राएल का अन्त हुआ था। अन्यजातियो ' के मध्य मे विसर्जित इस्राएली सम्पर्क-भाषा अरामी अपनाने लगे यहा तक कि अपनी धर्मशास्त्रीय इब्रानी भाषा को अरामी लिपि मे लिखने लगे । सम्राट कुरू की उदार नीति से लाभ उठाकर बहुत-से निष्कासित यहूदा-वासी स्वदेश लौटे और तीर्थ-नगरी यरूशलेम के पुनर्निर्माण में जुटे ।

परन्तु अन्यधर्मी लोगो ने उन यहूदा-वासियो पर विद्रोह का आरोप लगाया और इसके सबध मे फारसी अधिकारियो से पत्रव्यवहार किया। तॅनख्-शास्त्र के इब्रानी एज्रा-ग्रथ मे जब इसका वर्णन किया गया तब उन औपचारिक पत्रो का उल्लेख मूल अरामी मे ही किया गया। इस प्रकार एज्रा-ग्रथ के तीन प्रसग (4 8-24, 5 1-6 18 एव 7 12-26) अरामी भाषा मे है , उन्हे साहित्यिक साम्राज्यिक अरामी के प्रथम बाइबिली उदाहरण मानते हैं। बाइबिली अरामी का पाठ सुविधाजनक है, क्योकि मूल तॅनख् के सस्करण मे उस-की व्यजन-लिपि मे स्वर-सकेत लगाये गये है [1]। दूसरी ओर प्राचीन सप्तति अनुवाद मे उसका यूनानी रूप भी उपलब्ध है। अत द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो की अरामी-यूनानी शब्दावली के अर्थ-निर्धारण मे ऐसा ही द्विभाषीय शास्त्र-पाठ अत्यन्त उपयोगी है ।

1 एज्रा-ग्रथ के अरामी अश (किसी भी हिन्दी — अथवा सस्कृत ! — बाइबिल अनुवाद मे देखे [2])

विद्वान उन दो औपचारिक आज्ञापत्रो पर विशेष ध्यान दिलाते है, जो फारसी सम्राट की ओर से प्रेषित मूल प्रतिरूप-जैसे लग रहे है। पहला पत्र (एज्रा 4 17-22) अर्तक्षत्र-प्रथम (सा०स०पू० 465-423) की ओर से है और दूसरा पत्र (7 12-26) अर्तक्षत्र-द्वितीय (सा०स०पू० 404-358) की ओर से। लेकिन निस्सदेह पुरोहिती ' इतिहासकार' ने (जिसने 1-2 इतिहास-ग्रथ तथा एज्रा-नहेम्याह ग्रथ सम्पादित-सवर्द्धित किये) उन पत्रो को लगभग सा०स०पू० 300 मे अपनी ग्रथरचना के प्रयोजन के अनुकूल बनाया। यूनानी अनुवाद एक सदी बाद का है। अरामी-यूनानी पाठ की समानान्तर प्रस्तुति का एक-एक उदाहरण दे जिससे स्पष्ट हो कि अशोकीय अरामी-यूनानी लेखो से तुलनात्मक भाषाई अध्ययन हेतु अनुपम स्रोत-सामग्री उपलब्ध है।

एज्रा 4 18-19	(अरामी)		(यूनानी)
	निशॅत्वाना ,	वह प्रलेख	हॉ फॉरॉ-लॉगॉस् ,
	दी शॅलख्तून्	जो आपलोगों ने भेजा	हॉन् अप्-ऍस्तॅय्लते
	ऑलॅना	हमें ,	प्रॉस् हैमॉस् ,
	मॅफारश्	स्पष्ट कर	[?]
	क़ॅरी क़ाधामाय् ।	पुकारा गया मेरे सामने ।	ऍक्लैथै ऍम्प्रॉस्थॅन् ऍमॉव् ।
	अू-मिन्नी	और मेरी ओर से	कय् पर् ' ऍमॉव्
	सीम् टॅऍम् ।	प्रसारित हुई राजाज्ञा ।	ऍतेथै ग्नोमै ।

(1) निस्सदेह बाइबिली अरामी की व्यजन-लिपि में लगाये गये स्वर-सकेत उस मस्सोरॅथ् (अर्थात परम्परागत) इब्रानी उच्चारण से प्रभावित है जो 5वीं सदी सा०सं० में प्रचलित था — दे० E.QIMRON Biblical Aramaic Jerusalem 1993 W MORROW & E.CLARK, " The *Ketib / Qere* in the Aramaic portions of Ezra and Daniel Vetus Testamentum 36 1986 p 408 "The reading tradition for biblical Aramaic most likely reflects an Aramaic spoken between 200-600 C E. in Palestine'

(2) शोधकर्ता ने स्वय ' पवित्र बाइबिल नामक हिन्दी अनुवाद के नव-सम्पादन , वर्ष 2000 के लिए मूल भाषाओं को आधार मानकर, सहयोग दिया । इसके मुख्य अनुवादक डॉ० जे० आनन्द और डॉ० कामिल बुलके थे ।

एज्रा 7 12

(अरामी)		(यूनानी)
अर्तख्शस्त ,	अर्तक्षत्र ,	अर्थसस्थ ,
मॅलॅख् मलॅखय्या ,	राजाओं का राजा ,	बसिलॅव्स् बसिलेओन् ,
लॅ अॅज्रा ,	एज्रा को ,	तॉं अॅस्द्र ,
खाहॅना ,	पुरोहित ,	हिओरॅयू ,
साफॅर्	लिपिक / शास्त्री	ग्रम्मतॅयू
दाथा	उस धर्मव्यवस्था के	नॉमॉव् लॉगोन् अॅन्तॉलोन्
दी अॅलाह् शॅमय्या	जो स्वर्गलोकों के ईश्वर की	तॉव् थेऑव् तॉव् औव्रनॉव्

(अर्थात् महाराजाधिराज अर्तक्षत्र का पत्र स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था के शास्त्री और पुरोहित एज्रा के नाम)
उन दो छोटे-से उदाहरणो मे ऐसे दो महत्वपूर्ण शब्द मिलते हैं, जो दोनो अशोक के तक्षशिला-अभिलेख मे प्रयुक्त हुए **निश्तॅवाना** // त० 8 **ह्न्-नृशृत्न्** और **दाथा** // त० 2 **दृतृयू** । पहला शब्द यहा किसी औपचारिक ''प्रलेख' का बोध कराता है और दूसरा शब्द इस्राएल की धर्मव्यवस्था का । इसके अतिरिक्त एक अन्य शब्द **टॅओम्** प्रयुक्त हुआ जिसका अर्थ 'राजाज्ञा है (परन्तु प्रथम अर्थ में स्वादिष्ट 'व्यजन भी —दे० अशोकीय अरामी के सदिग्ध पाठ पृ० 3 ।)। अशोकीय <u>धम्म</u> के लिए ईरानी से आगत शब्द **दाथ्** (अथवा निश्चयात्मक पर-उपपद के साथ **दाथा**) सब-से उपयुक्त है जैसे एज्रा 7 26 के पाठ से और स्पष्ट , जहा चाहे धर्म-व्यवस्था अथवा राज्य-कानून के लिए उसी शब्द का प्रयोग हुआ जो व्यकित तुम्हारे परमेश्वर की व्यवस्था (**दाथा**) तथा सम्राट के कानून (**दाथा**) का उल्लघन करेगा उसे कठोर न्याप-दण्ड (**दीना**) दिया जाएगा '। लेकिन यूनानी अनुवाद मे यहा दो बार ' नॉमॉस् ' (नियम) प्रयुक्त हुआ, जिसे अशोक के यूनानी लिपिक ने <u>धम्म</u> के व्यावहारिक धर्माचरण का अर्थ व्यक्त करने के लिए अनुपयुक्त ही समझा ।

2 एज्रा-ग्रथ के अतिरिक्त तॅनख् मे उपलब्ध अन्य अरामी अश

इब्रानी-अरामी तॅनख् ' के 24 ग्रथों की प्रामाणिक ग्रथ-सूची के तीनो ' त् - न् - क् खडो मे ये अन्य अरामी अश इस्राएल के धर्मशास्त्र मे स्वीकृत हुए

(त्) = **तोरा** अर्थात् तौरेत-पचग्रथ' मे <u>केवल दो शब्द</u> साक्षी का ढेर (**यॅगॅर् साहॅदूथा**) नामक सन्धि-स्थल (उत्पत्ति-ग्रथ 31 47) ।

(न्) = **नॅवीआीम्** अर्थात् नबी-ग्रथ अष्टक' मे <u>केवल एक वाक्य</u> , जो आराध्य सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर मन लगाने का उद्‌बोधन है — इसके 8 बहु-प्रयुक्त शब्द अशोकीय अरामी मे मिलते हैं (दे० यिर्मयाह-ग्रथ 10 11) ।

(क्) = **कथूवीम्** अर्थात् "किताबे एकादश" मे (एज्रा-ग्रथ को छोड) <u>केवल छह अध्याय</u>, जो दानिएल-ग्रथ के बारह अध्यायो के मध्य (2 4ख-7 28) मे मिलते है । वास्तव मे , किसी इब्रानी लेखक ने वर्तमान दानिएल-ग्रथ को सा०स०पू० 160 मे प्रस्तुत किया, जब यहूदी भक्तो के उत्पीड़क अन्तिऑखॉस्-चतुर्थ की मृत्यु के बाद धर्मस्वातन्त्र्य-सग्राम जोरो पर था। लेकिन उसने दानिएल की उन अरामी कथाओ का प्रयोग किया, जो फारसी साम्राज्य के पूर्व क्षेत्र मे बसे हुए इस्राएलियो मे प्रचलित थीं। इसलिए अरामी दानिएल' के मौखिक आदि-रूप में साहित्यिक साम्राज्यिक अरामी के ठोस उदाहरण उपलब्ध हैं ।

अरामी दानिएल मे कथाओ के माध्यम से तीन प्रमुख विषय प्रतिपादित हुए

(1) अध्य० 2 और अध्य० 7 मे चार साम्राज्यो के क्रमबद्ध उत्थान और पतन का यह कारण बताया गया है कि ईश्वरीय रहस्य (राज़ा = ईर०) के प्रबध के अनुसार अन्त मे एक दलित-फिर-उत्थित ' मानव-पुत्र (बर् अॅनाश्) के सदृश ईशभक्त-समाज ही राज्य करेगा ।

(2) अध्य० 3 और अध्य० 6 मे दिखाया गया है कि चुने हुए ईशभक्तो पर जब महासकट के बादल छा जाते है तब परमेश्वर उन्हे प्राणप्रयाण से अवश्य छुड़ा लेता है ।

(3) अध्य० 4 और अध्य० 5 मे इस सिद्धात का सजीव चित्रण है कि परमेश्वर विनीत भक्त को ऊचा करता है पर घमण्डी व्यक्ति को नीचा भी कर सकता है । पूर्व मे प्रवास करनेवाले इस्राएलियो के प्रिय कथा-नायक दानिएल बेबीलोन के सम्राट नबूकदनेस्सर को अरामी मे यह धर्मनीति सुनाता है "महाराज मैं आपसे निवेदन करता हू , आप मेरा यह परामर्श (मिलूकी) स्वीकार कीजिए सदाचरण (सिधूका) कर अपने पाप के बन्धनो को तोड़ दीजिए । आप पीड़ितो के प्रति दया कर (मिख़ेन्) अधर्म से मुक्त हो जाइए। तब सभव है कि आपकी सुख-शान्ति (धातु शृलुह्) के ये दिन लम्बे हो जाए "(दान 4 27) । तब सम्राट ने ईश्वर की स्तुति की [1] मै स्वर्ग के राजा का गुणगान करता हू क्योकि उसके सब कार्य सत्य (क्रॅशोट्) हैं और उसके मार्ग न्याय (दीन्) हैं। जो मनुष्य घमण्ड से सिर ऊचा करके चलता है, उस-को वह नीचे कर सकता है (4 37) । इस प्रसग मे फिर नैतिक आचरण के वे बहुमूल्य अरामी शब्द ' सत्यधर्म-न्यायधर्म" मिलते हैं जो अशोकीय अभिलेखो के अरामी रूपान्तर मे भाषित एव भासित होते हैं।

अध्य० 5 मे बेबीलोन के अन्तिम राजा बेलशस्सर [2] का घमण्ड चित्रित किया गया । जब राजभोज के मेहमान नशे मे चूर थे तब एक दिव्य हाथ ने राजमन्दिर की दीवार पर अरामी लिपि में दण्ड-सूचक शब्द लिखे म्न्अ् त्क़्ल् प्र्स् , जो स्वर-सहित पाठ मे मापदण्ड के ही शब्द हैं मॅने तॅक़ेल् पॅरेस् अर्थात् क्रमश प्राय 500 - 10 - 50 ग्राम । लेकिन दानिएल ने दूसरे स्वर लगाकर यह अर्थ निकाला परमेश्वर ने तुम्हारे राज्य का अन्त-काल "गिना (= मॅना) , उसने तुमको कसौटी के तराजू पर "तौला" (= तॅक़ल्) और तुम हल्के सिद्ध हुए। और उसने तुम्हारे बेबीलोनी साम्राज्य को बाटा (= पॅरस्) , एक भाग मादय कौम को दिया तथा दूसरा भाग फारस कौम को । इस दीवारी-अभिलेखन को अरामी भाषाविद् ही समझ पाए।

अरामी अभिलेखन के विस्तृत सर्वेक्षण मे हम अशोक-काल तक पहुच गए। यूनानवादी राज्यो के उदय से व्यापक एकीकृत साम्राज्यिक अरामी का ह्रास होने लगा। सा०स०पू० 300 से "अन्त्य साम्राज्यिक अरामी" क्षेत्रीय रूप धारण करने लगी। अब अशोकीय अरामी अभिलेखन को नये पुरालेखीय सदर्भ मे स्थित करे।

---

(1) वास्तव में सम्राट का नाम नबूकदनस्सर नहीं वरन नबोनिदुस होना चाहिए था । कुमरान से प्राप्त साहित्य-भण्डार मे एक छोटी-सी अरामी रचना नबोनिदुस की प्रार्थना कहलाती है। (2) वास्तव में, नबोनिदुस ही अन्तिम राजा था , बेलशस्सर केवल युवराज बना था - दे० L HARTMANN & A. DI LELLA. Daniel The New Jerome Biblical Commentary 1990 p 415 "According to history Belshazzar was not slain in Babylon Babylon was treacherously handed over to the Persians without a struggle and Nabonidus was taken prisoner as he sought to return from Tema"

24 अशोकीय अरामी अभिलेखन और उसका पुरालेखीय संदर्भ

ASHOKAN ARAMAIC INSCRIPTION AND ITS EPIGRAPHIC CONTEXT

सा०स०पू० 300 से साम्राज्यिक अरामी का अन्त तो नही हुआ परन्तु उसका अन्त्य रूप अवश्य दृष्टि-गोचर होने लगा । जलाशय के मध्य मे जब हिलोर उठती है तो किनारो तक पहुचने मे लहरो को कुछ अधिक समय लगता है। फारसी साम्राज्य जब डॉवाडोल होने लगा तो उसके मध्य क्षेत्र मे प्राचीन अरामी का भव्य साम्राज्यिक रूप जल्दी से घटने लगा जबकि विशेषकर पूर्वी एव पश्चिमी सीमान्त-क्षेत्रो मे घटाव और बढाव का अन्तर तुरन्त स्पष्ट नही हुआ। इसलिए आश्चर्य की बात नहीं है कि साम्राज्यिक अरामी के अन्त्य चरण मे भी पूर्वी सीमान्त-क्षेत्र के अन्तिम छोर पर अशोकीय अभिलेखन के सामर्थी रूप मे अरामी ने फिर एक बार अपना मुह दिखाया। लेकिन कुछ विद्वान अशोकीय अरामी अभिलेखन की भाषा को विरूपित मानते हैं , क्योकि जीवित भाषा से उसका सम्पर्क टूट गया और पिछले प्रशासनिक प्रयोग का मात्र एक स्थानीय लिपीय अवशेष रह गया है। अँफ्० रोज़न्थल् अशोक के अरामी अभिलेखन पर उलझौहॉ होने का आरोप लगाते है और उसका निरूपण करने मे अपनी असमर्थता स्वीकारते है बहुविध-भाषाविद् ही और सास्कृतिक इतिहास के विशेषज्ञ उसकी जटिल अभिलेखीय समस्याओ का समाधान कर पाएगे [1] ।

241 मध्य क्षेत्र में विलम्बित एव परिवर्तित अरामी अभिलेखन

PROTRACTED AND TRANSMUTED ARAMAIC INSCRIPTION IN THE MIDDLE AREA

सक्रामी अरामी (transitional Aramaic) की विरूपित अवस्था केवल सा०स०पू० 200 से गिनी जाए [2] यद्यपि इससे कुछ पहले —मध्य क्षेत्र मे ही— पार्थियाई अर्साकीदी नवराज्य के उत्थान से अरामी भाषा का विशाखन-काल (diversification period) आरम्भ हुआ। अखमेनी काल की एकरूप साम्राज्यिक अरामी मे

---

(1) F ROSENTHAL Aramaic studies during the past thirty years" Journal of Near Eastern Studies 37 1978 p 88 "The way in which Aramaic was handled in the time of Aśoka presents more then one puzzle It provides for Aramaicists a test of skill They cannot do without the help of Iranists and Indologists

(2) दे० J FITZMYER A Wandering Aramean (Collected Aramaic Essays) Ann Arbor 1979 "The phases of the Aramaic language" pp 57-84 " the cut-off date should be 200 B.C rather than 300 B C

भी क्षेत्रीय अभिलक्षण मन्द रूप में विद्यमान थे , लेकिन अलग-अलग भाषाई शाखाए केवल दूसरी सदी सा०सा० के अन्त मे मध्य अरामी मे ही निश्चित हो जाती हैं [1] । अत आरम्भिक विशाखन और पूर्ण विभाजन के बीच मे कम-से-कम चार सदियो का सक्रमण काल है जब स्थानीय बोलिया अरामी भाषा मे घुल जाती है और अरामी लिपि के स्थानीय प्रयोग मे अनुकूल परिवर्तन घुस आते है।

मध्य क्षेत्र की सेल्यूकी-यूनानी और बाद मे अर्साकीदी-ईरानी शासन मे औपचारिक राजभाषा के साथ अरामी का भी प्रयोग करनेवाली द्वैध प्रशासन-प्रणाली (dual chancellery) की आवश्यकता नहीं रही [2] । अधिकारिक एकभाषिक अरामी लेख अब नही मिलते । इने-गिने व्यक्तिगत अभिलेख ही प्राप्त हो सके । यदि केन्द्रीय शासन भी शक्तिहीन हो जाए तो अरामी की एकरूपता मे कमज़ोरी आना ही है । स्थानीय लिपिक आवश्यकतानुसार अथवा अपनी सुविधा के लिए अरामी लिपि का मनमाना प्रयोग करने लगते हैं।
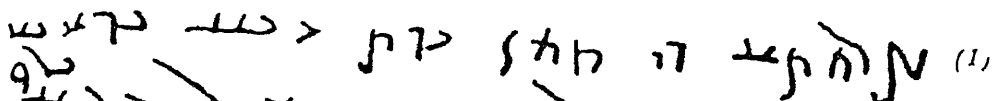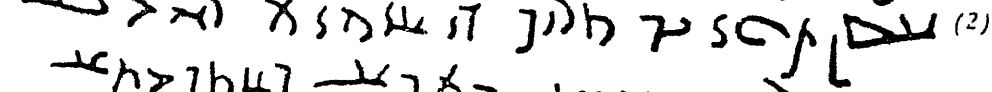
241 ~ (1) मध्य-दक्षिण के उदाहरण

कुवैत के तेल-खज्ने स्थान से सा०स०पू० 3री सदी का अरामी प्रस्तर-अभिलेख प्राप्त हुआ जिसमे **श्लन्य्** नामक व्यकित प्रार्थना करता है कि उसे **बृल्** (अर्थात् यूनानी राष्ट्रदेव ज़ेव्स् जिसने स्थानीय उपाधि 'बेल्' धारण की) के समक्ष स्मरण किया जाए [3] । ईराक के प्राचीन उरुक (वर्का) नगर से मन्त्र-टोटके का अद्भुत अरामी अभलेख मिला , जो कीलाक्षर लिपि मे अकित हुआ — फलत अरामी का स्थानीय स्वरोच्चारण मालूम हो जाता है, जो अन्यथा अरामी व्यजन-लिपि से ज्ञात नही है उद० **माले मिल्लीन्** (अर्थात् शब्दो से भरपूर), जेखीथ् (शुद्ध होकर) [4] ।

दक्षिण ईराक के खिरबेत-गद्दाल स्थान से सा०स०पू० 2री सदी का एक शिलान्यास-अभिलेख प्राप्त हुआ, जिसमे स्थानीय शासक अग्गय राजमहल का निर्माता कहा गया है । उत्तर ईराक के हत्रा नामक व्यापारकेन्द्र से सर्वाधिक परिवर्तित अरामी लेख मिले [5] उद० **सल्यक्** (= यू० सेलेव्कोस् ?) की रूपवती

---

(1) M FOLMER The Aramaic Language in the Achaemenid Period 1995 लेखक अर्साकीदी अरामी को ही नवीन उपभाषा मानते है, लेकिन अन्य लेखो के अनुसार स्पष्ट विशाखन विलम्ब से शुरू हुआ , दे० J RIBERA FLORIT "Caracteristicas y variantes linguisticas del arameo durante el imperio persa de la dinastia aqemenida Anuari 19 1996 pp 21 34 reviewed in Old Testament Abstracts 20 1997 p 1135 (2) RICHARD FRYE The History of Ancient Iran Munchen 1984 p 164 Greek was the official and dominant written language of the Seleucid empire but Aramaic continued in use especially in the outlying provinces or principalities (3) दे० J NAVEH The inscription from Failaka (Tell Khazneh) and the lapidary Aramaic script Bulletin of the American Schools of Oriental Research 297 1995 pp 1-4 अरामी पर यूनानवाद के प्रभाव के लिए दे० J RABINOWITZ Grecisms and Greek terms in the Aramaic papyri Biblica 39 1958 ॥ 77-82 & 41 1960 pp 72 74 (4) J KOOPMANS Nr 56 (5) Hatra inscriptions D Nr 237 257

परपोत्री की सागमरगर की मूर्ति पर उसके पिता ने 4 पंक्तियो का यह लेख खुदवाया[1]

(1)
(2)
(3)
(4)

सब-से विनोदी लेख एक धूप-वेदिका पर अंकित है हमारे स्वामी (मारन्) और हमारी स्वामिनी (मारथन्) और हमारे स्वामियो (मारयन्) के [देव]-पुत्र के सामने — अर्थात् तीन दिव्य रूपो परम-स्वामी हदद् और महा-स्वामिनी अतार्गतिस और अवर-स्वामी समिया को अर्पित [2]। राजा के सु-स्मरण (दकरन् टब्) मे 100 दीनार का दान-लेख भी है[3]। अधिकाश हत्रा-लेख प्रथम सदी सा०स० के हैं। वे अरामी लिपि के परिवर्तित रूप और अभिजात-तन्त्र के विरुद्ध सामाजिक परिवर्तन का भी साक्ष्य देते हैं[4]।

241 ~ (2) मध्य उत्तर के उदाहरण
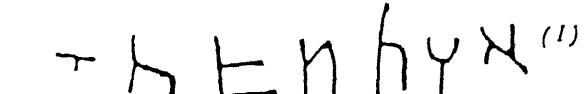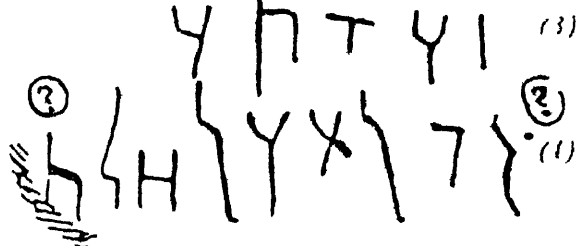
सन् 1900 में पश्चिम अरमीनिया के अगास-काले स्थान से एक रुचिकर द्विभाषीय यूनानी-अरामी अभिलेख प्राप्त हुआ [5]। लगभग सा०स०पू० 250 मे (जिस समय राजा अशोक ने अपना यूनानी-अरामी लेख लिखवाया ।) अर्ध-स्वतन्त्र क्षत्रप अन्दोमोन् ने भूतपूर्व-क्षत्रपो के समाधि-स्थल की रक्षा हेतु चारदीवारी का निर्माण कर इस द्विभाषीय लेख का यह अरामी पाठ लिखवाया

इस प्रागण (गृनृतृअ्) मे अरियौक-[प्रथम] के पुत्र ओरोमान का समाधि-कक्ष खड़ा किया गया ।

पुण्य स्मृति मे उसे निर्मित किया अरियौक-[द्वितीय] ने जो अरमीनिया के क्षत्रप ओरोमान का पुत्र है।' अरामी पाठ मे ओरोमान का नाम केवल तीन व्यजनो से रुमृन् लिखा गया है , यूनानी पाठ ' ओरोमनैस् ' से ही उसका सही उच्चारण मालूम हो सका[6] और मूल ईरानी ' अहुरो-मन(ह)-' का अर्थ प्रभु का मन। अरियौक का नाम आर्य आर्यक से ही सबधित है [7]।

अरमीनिया के सेवन-सागर के तटीय क्षेत्र मे सैल्यूकी सेना के एक सेनापति ने सा०सं०पू० 189 मे स्वय को ' अर्तक्षत्र नाम से राजा घोषित किया । उसने तुरन्त अपने छोटे राज्य मे कृषि-भूमि का सुधार-कार्य आरम्भ किया और गाव-गाव के बीच मे सीमा-स्तम्भ खड़ा किये। यहा 4प० का एक अभिलिखित सीमा-स्तम्भ प्रस्तुत है[8]

(1)
(2)
(3)
(4)

1 अर्तृखश्शय् 2 महाक् बर् ष्राय् 3 ज़र्यतर्
4 गम्नअ् (अथवा रुम्नअ् ?) कन् खलस (खलक़् ?)

---

(1) D vol 3 Table Nr 14 (2) K. Nr 70 (3) D Nr 257 (4) दे० K.DIJKSTRA "State and steppe the socio political implications of Hatra inscription 79" Journal of Semitic Studies 35 1990 pp 81 98

(5) L Vol 1 pp 197 208 (6) "This example shows us how cautiously one should proceed in interpreting non vocalized proper names" (ibid p 204) (7) ibid p 205 और दे० दानिएल-ग्रंथ 2 24 । (8) D Vol 3 Table 18 Nr 274

इस सेवा-लेख का सुस्पष्ट पाठ तुलनात्मक अध्ययन के लिए अनमोल उदाहरण है क्योंकि इसमें अब तक सामाजियक अभिलेखन की लिपिकीय परम्परा का आदर किया गया है । केवल अन्तिम पंक्ति संदिग्ध है जरियतर के पत्र राजा अर्तक्षत्र ने यहा 'मछली (नूना) [नामक सीमा-सकेत] को खींचा (खलस्)", अथवा जे० नार्वे[1] के अनुसार " रवनअ् [नामक स्थान?] को मापा (खलक्) ।

दूर उत्तर-पूर्व की ओर जाकर गेओर्गिअ (जॉर्जिय) के अर्माज़ी स्थान से 2री सदी सा० स० के आरम्भ का अनोखा द्विभाषीय समाधि-लेख मिला। ऊपरी खण्ड पर अतिसुन्दर यूनानी अक्षर अंकित हैं और निचले खण्ड पर अति कुरूप अरामी अक्षर[2]। आखमेनी साम्राज्य के समापन से 450 वर्ष बीत जाने पर भी स्थानीय लोगो के पास उनकी अपनी कोई लिपि नहीं थी और लिखित आत्माभिव्यक्ति के लिए उन्हें चाहे यूनानी अथवा अरामी (या दोनो!) का सहारा लेना पड़ता था । अरामी पाठ मे बहुत-सी भाषाई त्रुटिया हैं[3]। फिर भी अर्थ स्पष्ट है
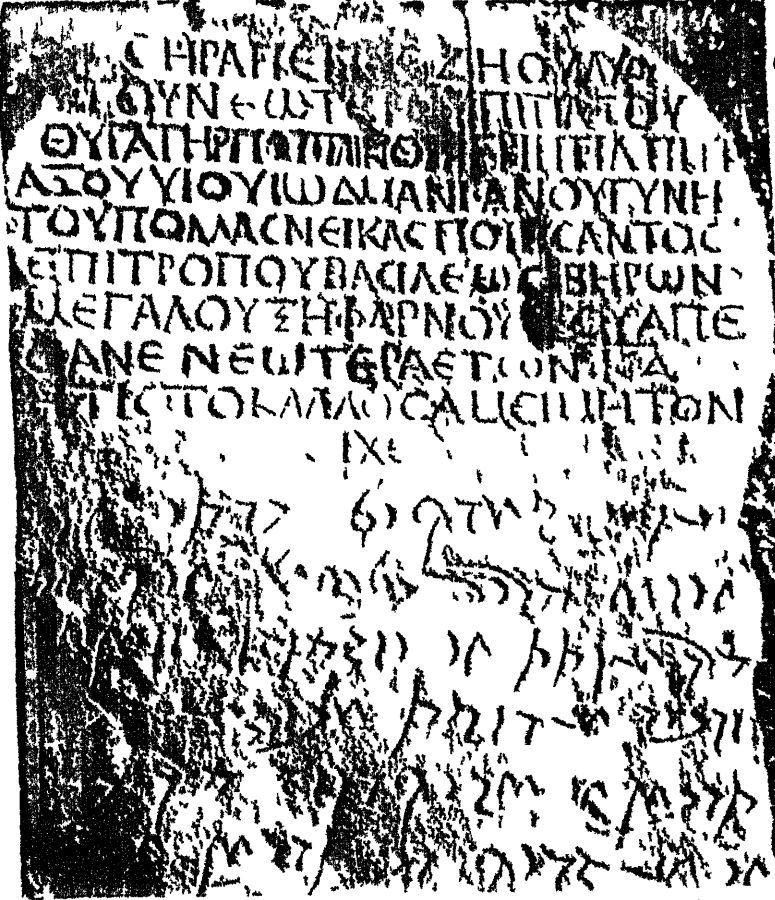
"मै सेरापीट हू राजा पर्समान के अनुज ज़ेवख-नामक अधिकारी (बट्खस्[4]) की पुत्री। मैं योधमगन की पत्नी हूं, जो विजयी होकर युद्ध-कौशल (अरक्सत् = ईर०) में महान् (कृबुयूर्) हैं । मेरे पति तो अग्रिप्पा के पुत्र है जो राजा पर्समान के प्रमुख दरबारी थे और वह भी राजा ख्सिफर्नूग के प्रमुख दरबारी बने। परन्तु शोक-ही-शोक उसकी पत्नी के लिए — वह जो (गृअ् ज़्यू[5]) पूर्ण आयु (प्रनवश = ईर०) तक नही पहुच सकी। इसके अतिरिक्त वह अच्छी एव सुन्दर (शप्यूर्) थी यहां तक कि कोई भी मानव-पुत्री (बर्-अयनश्) उसकी रमणीयता की बराबरी नही कर सकती । और उसका निधन हुआ जब वह 21 वर्ष की थी।

इस परमसुन्दरी की आकस्मिक मृत्यु का अभिलिखित शोक-समाचार इतनी सदियो के बाद भी संवेदनशील हृदय को द्रवित करता है । इससे हम यह सीखते है कि किसी भी पाषाण-अभिलेख को पाषाण हृदय से अपने खोज-अनुसधान का निष्प्राण विषय नही बनाना चाहिए। अर्थ निर्धारित करने में अभिलेखित सम्प्रेषण के मानवीय पक्ष को परमार्थ समझना चाहिए ।

---

(1) J NAVEH Early History of the Alphabet Fig 113 b p 128 (2) Armazi bilingual K.KHAZAI Evolution et Diffusion de l Alphabet fig 49 अन्य प्राप्ति-स्थान Mcheta Bori । (3) P GRELOT Remarques sur le bilingue Grec Araméen d Armazi " Semitica 8 1958 pp 11 20 लेकिन उसकी भाषा को भ्रष्ट अरामी अथवा मध्य-ईरानी न मानें। (4) यू० में पिटिअक्सैस् =मूल ईर० पति-ख्शायथिय अर्थात राजा का प्रतिनिधि । (5) सामान्य संबंध-वाचक सर्वनाम ज़ुग् के साथ यहा 'गृअ् / गृह् संयोजक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त हुआ। ऐसे छोटे अव्यय अथवा निपात पर अशोकीय अरामी के पुनर्स्थापन मे विद्वान विरले ही ध्यान देते है।

241 ~ (3) मध्य पश्चिम के उदाहरण

अरामी लोगो ने अपनी मातृभूमि को छोड़कर मेसोपोतामिया मे अपनी मातृभाषा को स्थापित किया था , जिससे सम्पर्क-भाषा के रूप मे अरामी पश्चिम एशिया की विस्तृत भूमि मे फैलती गई । बेबीलोन महानगर को हम उस विशाल सम्पर्कभाषा-क्षेत्र का मध्य-पश्चिमी केन्द्र मान सकते है । वहा इस्राएली प्रवासियो की बड़ी संख्या थी और अरामी भाषा की बागडोर अब उनके हाथ मे आई । जैसे मिस्री सिकन्दरिया के यूनानी-भाषाभाषी इस्राएलियो ने अपने इब्रानी धर्मसाहित्य का यूनानी सप्तति अनुवाद तैयार किया वैसे ही बेबीलोन के अरामी-भाषाभाषी इस्राएलियो ने उसका अरामी मे अनुवाद किया ।

तनख्-बाइबिल के अरामी अनुवाद को तर्गूम् अर्थात् तरजुमा ही कहते हैं । इसकी भाषा-शैली साहित्यिक साम्राज्यिक अरामी से प्रभावित है[1]। दो मुख्य रूप हैं

1 तर्गूम् आङ्केलास् तोरा-पचग्रथ के लिए , यह अनुवाद शाब्दिक है ।

2 तर्गूम् योनाथन विशेषकर नबी-ग्रथो के लिए प्रयुक्त [2], यह भावानुवाद है ।

जब अशोकीय अरामी शब्दावली की व्याख्या करेगे तब तनख् के अरामी तर्गूम से ही तुलनीय सामग्री मिलेगी ।

व्यापार-केन्द्र दूरा-ऑव्रोपॉस् से प्राप्त यहूदी सभागृह-अभिलेख के सबध मे पृ० 98 पर चर्चा हो चुकी है[3]। दूरा के अतर्गतिस्-हदद् मन्दिर से भी एक द्विभाषीय अरामी-यूनानी अभिलेख मिला जो प्रथम सदी सा०स० का है। वह दान-लेख है , दाता का नाम मल्खियॉन् है, जो देवी-देव के प्रति अपने को 'ऋणी (मृख्यब्अ् क्रिया-धातु ख्व्व्) मानता है —लेकिन अन्य क्रिया-धातु (ख्व्व्) से जोड़ने पर उसे देवाना-प्रिय 'महबूब भी मान सकते हैं । परन्तु द्वितीय सदी के अरामी तान्त्रिक अभिलेखो से [4] हमारे शोध को कोई लाभ नहीं है ।

241 ~ (4) मध्य-पूर्व के उदाहरण

तेहरान के फोरूगी सग्रह मे एक अभिलेख है जो अपने आप में नगण्य है किन्तु प्राप्ति-स्थान और

---

(1) दे० D BEATTIE & M McNAMARA,eds The Aramaic Bible Targums in their Historical Context Sheffield 1994

(2) A.SPERBER The Bible in Aramaic vol 1 The Pentateuch according to Targum Onkelos vol 2 The Former Prophets according to Targum Jonathan vol 3 The Latter Prophets according to Targum Jonathan Leiden 1992(1959 1973) तनख धर्मशास्त्र के शेष ग्रथों का आंशिक अरामी अनुवाद भी उपलब्ध है लेकिन अधिकतर व्याख्यात्मक मिद्राश् के रूप में (आगे देखें) ।इसलिए उपर्युक्त कृति में vol 4a The Hagiographa transition from translation to Midrash दिया गया।

(3) Comte du MESNIL du BUISSON "Sur quelques inscriptions juives de Doura Europos Biblica 18 1937 pp 153 173

(4) J NAVEH & S SHAKED Magic Spells and Formulae Aramaic Incantations of Late Antiquity Jerusalem 1993

निष्कर्ष है — और यह निष्कर्ष अशोकीय अरामी के लिए महत्वपूर्ण है — नीसा-लेखो मे भी अरामी ही प्रमुख आधारभूत भाषा है। एक अन्तिम उदाहरण यद्यपि नीसा न० 2150 के पाठ **दृपृयृरपृतृयृ** मे एक ईरानी उपाधि दिपेर्-पति अर्थात प्रमुख लिपिक प्रयुक्त हुई फिर भी न० 62 मे सामान्य लिपिक के अर्थबोध के लिए एक प्रचलित अरामी शब्द **सिफ्रा** का प्रयोग हुआ। इससे यह अनुमान सही उतरता है कि अशोक के 200 वर्ष बाद भी मध्य-पूर्वी क्षेत्र मे अरामी भाषा लुप्त नही हुई अब तक अरामी लिपि एव अरामी अर्थ मे ही कुछ अरामी शब्दो का प्रयोग जारी है। यदि नीसा-लेखो को मुख्यत अरामी कह सकते, तो 200 वर्ष पहले के अशोकीय अभिलेखो को क्यो ईरानी-मिश्रित या भ्रष्ट अरामी कैसे कह सकते हैं ?

242 पश्चिमी सीमान्त-क्षेत्र में सजीवित "पश्चिमी अरामी" अभिलेखन

REVIVIFIED " WESTERN ARAMAIC" INSCRIPTIONS IN THE WESTERN FRINGE AREA

यद्यपि मिस्र देश की गाढ़ी अरामी लिपिकीय परम्परा यूनानवाद की चपेट मे आकर ठप हो गई, फिर भी प्रथम प्तोलेमी शासको के समय अरामी के प्रलेखीय प्रयोग के कुछ उदाहरण मिलते हैं[1] COW 81 उसी काल का अरामी पटेरपत्र है , वैचित्र्य की बात है कि उसमे बहुत-से यूनानी नाम-रूप हैं। अत भाषा और लिपि के मामले मे अरामी-भाषाभाषियो ने जिद नहीं की; बदलती परिस्थिति में उन्होने सहर्ष समझौता किया यहा तक कि सिकन्दरिया के यहूदियो ने अपनी उपासना-विधि मे भी यूनानी भाषा को अपनाया ।

इस्राएल देश की बात दूसरी है । यूनानी शासन के अधीन होते हुए भी यहूदियो ने अरामी को मरने नहीं दिया। समझौते की भी कोई सीमा होती है और उसका साक्ष्य देते हैं गेजेर स्थान के सीमा-लेख[2] ये अनोखे ढग के द्विभाषिक अभिलेख ही हैं। यह रूप देखिए

दो मीटर ऊचे शिलाखण्ड पर एक ही ओर लगातार आधा लेख यूनानी मे (बाए से पढे) और आधा लेख अरामी मे (दाए से पढे) अकित हुआ। यू० शब्द अल्किओव् का अन्तिम अक्षर Y (ऊ-प्सिलॉन्) अर० शब्द तृखृगृ गृगृर् के उपात्य अक्षर) (जयिन्) से जुड़कर बना ।

---

(1) दे० J HARMATTA. " Irano Aramaica " Acta Antiqua Hungarica 7 1959 pp 337-409 (2) S DRIVER Modern Research as Illustrating the Bible London 1909 Boundary inscriptions of Gazer

इस मिश्रित यूनानी-अरामी सीमा-लेख का अनुवाद है अल्किऑस् (नामक शासक ?) के गेजेर (क्षेत्र) का सीमान्त । वही मिश्र लेख एक निचले शिलाखण्ड पर अंकित हुआ परन्तु इस बार वह ऊपरी सतह पर इस प्रकार उत्कीर्ण हुआ कि एक ओर देखने से आप बाए से यूनानी शब्द अल्किऑव्"पढ सकते हैं और दूसरी ओर खड़ा हो जाने पर आप दाए से शेष अरामी वाक्यांश तृख़्म् गृज़्र् पढ पाएगे । इसे व्यायामिक अभिलेख' कहना चाहिए।
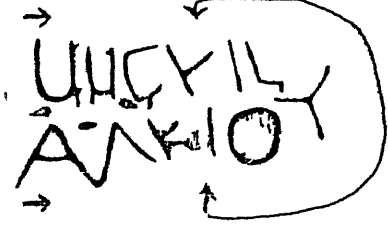
कब का इस्राएली-जनसाधारण की जीवित भाषा अरामी ही बन चुकी थी । अत छोटे-से साधारण-से अरामी अभिलेख अब इस्राएल मे सर्वत्र और बहुतायत से मिलने लगते है जिससे अरामी भाषा की इस पश्चिमी शाखा मे अभिलेखन मानो सजीवित हो उठा । साथ-ही-साथ इस्राएलियो की शास्त्रीय इब्रानी के साथ अरामी का साहित्यिक रूप फिर पनपने लगा । सब-से अधिक साहित्यिक सामग्री मृत-सागर के पश्चिमी तट की उन ग्यारह गुफाओ से उपलब्ध हुई जहा कुमरान मठ के एस्सेनी धर्मपंथियों ने (दे० पृ० 182 और आगे) सन् 68 सा०स० मे रोमन आक्रमण की आशका से भागकर अपना धर्मसाहित्य छिपाया था । जब —बड़े अरसे के बाद ही— सन् 1947 मे प्रथम कुमरानी हस्तलेख प्रकाश मे आए तब उनके अक्षुण्ण रूप एव अपूर्व विषय ने पुरालेख-वेत्ताओ को चकाचौंध कर दिया[1] ।

---

(1) सन 1947 के मार्च महीने मे बाल-चरवाहा मुहम्मद-अद-धीब एकाएक मशहूर पुरालेख-अन्वेषी बना जब उसने सयोग से मृतसागर-तट की किसी गुफा के टूटे कलश में कुछ हस्तलिखित कुण्डलपत्र पाये। बाद में पता चला कि ये अतिप्राचीन इब्रानी अरामी हस्तलेख है (जिनमे नबीग्रंथ यशायाह का पूर्णत सुरक्षित कुण्डलपत्र 1QIsa" सर्वप्रसिद्ध है)। नयी खोजबीन से उस प्रथम गुफा और एक-के-बाद-एक अन्य गुफाओं में से सम्पूर्ण हस्तलेख-भण्डार तभी इकट्ठा हुआ जब सन 1956 में अन्तिम और सब-से लम्बा (8 मीटर का) कुण्डलपत्र मिला। कुल मिलाकर लगभग 800 कुमरानी हस्तलेख है 225 में इब्रानी-अरामी तॅनख़् (अथवा उसके यूनानी अनुवाद) के बड़े-छोटे ग्रंथ उतारे गए — सब-से पुराना हस्तलेख निर्गमन-लेवी ग्रंथ की एक प्रतिलिपि है, जो अशोक-काल में ही सा०सा०पू०250 में चर्मपत्र पर उतारी गई — , 475 हस्तलेखों की सामग्री तॅनख़ के पाठ से अलग है और ये कुमरानी विचारधारा के साक्षी है (उनमे ये इब्रानी रचनाए प्रमुख है सघ नियमावली - Rule of the Community / Manual of Discipline दमिश्क प्रलेख - Damascus Document , युद्ध कुण्डलपत्र - War Scroll यूबिली ग्रंथ - Book of Jubulees , स्तोत्र - Hymns / Hodayoth , मन्दिर कुण्डलपत्र - Temple Scroll , व्याख्याए - Commentaries / Pesharim और बेन-सीराह का प्रवक्ता-ग्रंथ - Sirach , जो तॅनख़्-बाइबिल के अतिरिक्त अन्य-प्रामाणिक ग्रंथसूची में स्वीकृत ग्रंथ है) उन 475 हस्तलेखों में से 73 अरामी हस्तलेख है (जो गुफाओं के अनुसार इस प्रकार उपलब्ध हुए गु० 1 से 6 हस्तलेख गु० 2 से 2 गु० 4 से 59 , गु० 5 से 1 गु० 6 से 3 गु० 11 से 2) कुल सख्या 800 के शेष 100 इब्रानी-अरामी-यूनानी हस्तलेख महत्वहीन है अथवा प्राय अपठनीय होने के कारण अब तक प्रकाशित नहीं हुए । कुमरानी साहित्य के सकलन का सुविधाजनक सस्करण है F MARTINEZ The Dead Sea Scrolls Translated Leiden 1994 और अरामी पाठ के लिए KLAUS BEYER Die aramaischen Texte vom Toten Meer Gottingen 1984 __ प्रकाशनाधीन है The Dead Sea Scrolls Hebrew Aramaic and Greek Texts with English Translation (Princeton Theological Seminary Project) 10 vols. Tübingen 1994

कुमरान के पश्चीय साहित्य मे अनेक अरामी रचनाए मिलती हैं जो न केवल नैतिक आचरण के लिए

पुष्टिकर है वरन् अशोक के नैतिक सदेश की अरामी शब्दावली की भी पुष्टि कर सकती है

1 अरामी तोबीत पहले से ही यूनानी बाइबिल-अनुवाद मे उपलब्ध तोबीत-ग्रथ से तोबीत की कथा ज्ञात थी परन्तु अब कुमरानी हस्तलेखो मे उसके कुछ मूल अरामी अश (और इब्रानी रूपान्तर भी) प्राप्त हुए[1]। इन्हे परिशिष्ट बाइबिली अरामी (दे० पृ० 255) के उदाहरण मान सकते हैं। कथा का प्रसग असीरियाई साम्राज्यकाल है लेकिन कथाकार ने इसे सा०स०पू० 200 के बाद ही पश्चिमी शैली मे प्रस्तुत किया । तोबीत धर्मभक्त,परोपकारी व्यक्ति है जो राजधानी नीनवे मे निष्कासित इस्राएली परिवार का बुजुर्ग है । उसका सबधी अहीकार राजकोषाध्यक्ष नियुक्त हुआ — इससे मालूम है कि कथाकार साम्राज्यिक अरामी की श्रेष्ठ साहित्यिक रचना अँखीकार् के वचन से परिचित और प्रभावित था । मोतियाबिंद के कारण तोबीत अधा हो गया और भविष्य की चिन्ता करने लगा। उसे स्मरण आया कि उसने मादय देश मे अपने किसी अन्य सबधी के पास धन छोड़ा था। इसलिए धन लाने के लिए पुत्र तोबियाह को भेजा जाए। सयोग से एक अच्छा सहयात्री प्रस्तुत हुआ जो कथा के अन्त मे भले सरक्षक-दूत गाब्रिएल का मायामय मानव-रूप ही साबित हुआ। यात्रा के दौरान उसने भूतात्मा अस्मोदेव (दे० पृ० 97) से त्रस्त दु खित युवती का उपचार किया और तोबियाह के साथ उसका विवाह भी कराया। शुभान्त मे न केवल धनराशि लौटायी गई, वरन् अधे पिता के लिए दृष्टिदान का उपाय भी हुआ।

हमारे अध्ययन के लिए तोबीत के ये नीति-कथन उपयोगी हैं जो उसने प्रभु के अनुग्रहीत भक्त के रूप मे अपने पुत्र को सुनाये

यदि तुम सारे हृदय और सारी आत्मा से प्रभु की ओर उन्मुख होगे और उसके सम्मुख सत्याचरण करोगे (शब्दश सत्य को [कार्यान्वित] करोगे act truthfully) तो वह भी तुम्हारी ओर उन्मुख होगा। इसलिए उसके सम्मुख धर्माचरण करो (act justly)। (आगे यूनानी से पुनसर्थापित[2]) जो सन्मार्ग पर चलते है वे अपने सब कार्यों मे सफल होते हैं। अपनी सम्पत्ति मे से भिक्षादान देना और किसी कगाल की उपेक्षा न करना। यदि तुम्हारे पास कम हो तो कम देने मे नहीं हिचकिचाना। अपनी क्षमता के अनुसार ही धर्मकर्म करो। जो भक्त परमेश्वर की ओर अभिमुख होकर उसपर सच्ची श्रद्धा रखेगे वे धर्माचरण करते हुए शाश्वत परमेश्वर की स्तुति करेगे (अथवा दूसरे यूनानी पाठ के अनुसार ' वे सत्य और धार्मिकता से प्रभु परमेश्वर से प्रेम करते हुए सदा आनन्दित होगे ') । '

इस पाठ से अशोक के अरामी लिपिकार की इस धारणा की पुष्टि होती है कि धम्म के अरामी अनुवाद मे सदाचरण या धर्माचरण के अर्थ मे सत्य का बोध करानेवाला शब्द **क्रश्शीटा** ही उपयुक्त है ।

2 अरामी एस्तर वीरागना एस्तर की कथा का प्रसग फारसी साम्राज्यकाल है लेकिन वर्तमान इब्रानी रूप अथवा यूनानी रूपान्तर सा०स०पू० 200 के बाद का है । कुमरानी हस्तलेखो मे कुछ मूल अवशिष्ट अश प्राप्त हुए[3]। इस्राएल की सुन्दरी एस्तर फारसी सम्राट की पटरानी बन जाती है। अपने उच्च पद के कारण (और अपनी धर्मभक्ति के बल पर) वह उस बड़े सकट मे अपने सहजातीय बधुओ की रक्षा कर पाती है जब दुष्ट महामन्त्री हामान उनपर राजद्रोही जाति होने का आरोप लगाकर जातिसहार करने पर

---

(1) 4 Q Tob[c] ar (2) यूनानी तोबीत 4 6 8 14 6 7 (3) 4 Q Proto Esther

तुला बैठा था। अरामी एस्तर के अवशिष्ट अश अपर्याप्त है , फिर भी ये वाक्याश हमारा ध्यान खींच लेते है राजा की अच्छी सेवा करनेवाला उसका नाम नही मिट सकता उसकी राजभक्ति (loyalty) [नही भुलायी जाएगी] उसने धार्मिकता से सेवा की (served with justice) वह सदाचारी है।

3 कुमरानी तर्गूम् आराधको की सभा मे तँनख्-शास्त्र के निर्दिष्ट इब्रानी पाठाश का विधिवत् गायन प्रस्तुत करने के बाद पाठक उसका अरामी भावानुवाद भी सुनाता था। जिस तरह बेबीलोन के इस्राएली प्रवासियो मे एक पूर्वी तर्गूम बनता गया (दे० पृ 262) उसी तरह यरूशलेमी सभाओ मे मौखिक अरामी अनुवादो के आधार पर एक पश्चिमी तर्गूम् तैयार हुआ। कुमरानी कुण्डलपत्रो मे दो उदाहरण प्राप्त हुए[1] लेवी-ग्रथ का तर्गूम् सा०स०पू० प्रथम सदी का है जब कि अय्यूब-ग्रथ का तर्गूम् और पुराना है। यहा भी अरामी शब्दावली का महत्व है इब्रानी अय्यूब 27 17 के अरामी अनुवाद मे धार्मिक/ निर्दोष व्यक्ति को सदाचारी (क़्शय्यट्अ्) बताया गया है। धर्मवीर अय्यूब का सदाचार दु ख की अग्निपरीक्षा मे उसके अन्तिम विनम्र उद्‌गार मे झलकता है जब वह रहस्यमय दिव्य अस्तित्व की अनुग्रहपूर्ण उपस्थिति का अनुभव करता है ' अब मैं जान गया कि तू सब कुछ कर सकता है। मैने केवल दूसरो से तेरी चर्चा सुनी थी। अब मैने तुझे अपनी आखो से देखा (ख्ज़्ताक्)। मुझे अस्तित्वहीन (annihilated) होना ही है !"

4 धर्मशास्त्र-अनुरूपक या अनुपूरक अरामी रचनाओ मे ऐसे ही सत्याचरण की अभिव्यक्तिया चुन-चुनकर बटोर सकते है[2] उद० धार्मिकता के पथ पर चलना चाहिए और सत्य-पथ का ज्ञान होना चाहिए (हनोक का प्रथम ग्रथ), तुम्हारे सभी कार्यो का आरम्भ सत्य हो क्योकि धार्मिकता एव सत्य ही सदा बने रहेगे' (लेवी की वसीयत), विश्वप्रभु के नाम से शपथ खाकर सब कुछ सच्चाई से (ब् क्‌व्शट्अ्) बताओ (छद्म-उत्पत्तिग्रथ) ।

अरामी भाषा की पश्चिमी शाखा का अपना क्षेत्रीय स्वरूप विकसित होता गया । सामान्य सवत् के आरम्भ से एक पलिश्ती अरामी उपभाषा पहचान सकते हैं[3]। उसकी अभिलेखीय सामग्री अशोकीय अरामी के अर्थनिर्धारण मे सहायक हो सकती है बशर्ते अरामी शब्दकोशो[4] का प्रयोग कर काल की देरी व स्थान की दूरी की अनदेखी न करे । पश्चिम एशिया की और कौमो ने शायद यूनानवादी-रोमनवादी सस्कृति का प्रतिरोध करने के लिए स्व-लिपि के अभाव मे अरामी को अपनाया-पनपाया , परन्तु इस प्रकार की पाल्मीरी अथवा नबाती[5] उप-अरामी अभिलेखन को प्रत्यक्ष स्रोत नहीं मान सकते है ।

---

(1) 4 Q t g Lev 11 Q t g Job दे० R LE DÉAUT Introduction à la Litterature Targumique I Rome 1966 pp 64 70 B. JONGELING e a Aramaic Texts from Qumran vol 1 Leiden. 1976 " The Job Targum from Cave 11 "

(2) Qumranic Aramaic para biblical literature Genesis Apocryphon Apocryphons of Noah Jacob Joseph and Judah Testament of Levi Testament of Qahat Apocalypse/ Pseudo Daniel Description of the New Jerusalem Prayer of Nabonidus Words of the Book of which Michael spoke to the Angels Elect of God Visions of Amran Other Visions Four Kingdoms Works mentioning Hur and Miriam Biblical Chronology Books of Enoch (including Giants Words of Michael Astronomical Enoch) बाइबिल-तुल्य रचनाओं के अतिरिक्त मात्रिक और मान्त्रिक कृतिया भी है Accounts Brontologion (calendar) Against Demons (incantations) Horoscope

(3) J FITZMYER & D HARRINGTON A Manual of Palestinian Aramaic Texts Rome 1978 E.KUTSCHER Jewish Palestinian Aramaic F ROSENTHAL An Aramaic Handbook I 1 Wiesbaden 1967 और उसी तरह Christian Palestinian Aramaic तथा Samaritan Aramaic की बात करते है। (4) उद० नवप्रकाशित J HOFTIJZER & K.JONGELING Dictionary of West Semitic Inscriptions Leiden 1994 (5) Palmyrean Aramaic Nabatean Aramaic दे० J STARCKY "The Nabateans The Biblical Archaeologist 18 1955 p 87 " inscriptions are rare until the reign of Aretas IV (9 BC-40 AD)

निस्सदेह कुमरानी लिपिको द्वारा प्रयुक्त साहित्यिक अरामी और समकालीन जनभाषा अरामी के भाषाई प्रयोग मे [1] थोड़ा अन्तर था, परन्तु इस्राएल मे भी औपचारिक अश्मोत्कीर्णन की शैली अधिक परम्परावादी थी। अत प्रस्तर-अभिलेखन मे पुरानी भाषा बनी रही, फिर भी लिपि मे नये परिवेश का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यह उदाहरण प्रथम सदी सा०स० का है " यहूदा के राजा उज्जियाह की हड्डिया इस स्थान पर लाई गई। यह खोलने के लिए नही है।' इस लेख से मालूम होता है कि यरूशलेम के पूर्वी प्रवेश-मार्ग पर स्थित समाधि उस राजा के लिए नवनिर्मित हुई जो सात सदियो के पहले ही राज्य करता था। अरामी अभिलेखन मे अब तक सजीवनी शक्ति है। यरूशलेम के एक अन्य समाधि-लेख मे धर्मवृद्ध (न्सूबअ्) यासोन की कबर (क़ब्‌र्) को 'विश्रामगृह' बताया गया है [2]।

औपचारिक प्रस्तर-अभिलेखो का एक अन्य वर्ग सभागृह-निर्माण के दान-लेख हैं। सयोग की बात है कि यरीहो नगर के निकट अइन-दूक का सभागृह-अभिलेख [3] अशोक के अरामी तक्षशिला अभिलेख के समान आरम्भ होता है **दक्यर्** अर्थात् 'स्मरण किया जाए' और उसी के समान 11-12 अक्षरो की 12 पक्तिया मिलती हैं। कफरनऊम के लेख मे उस व्यक्ति को स्मरण किया गया जिसने सभागृह के सामने इस स्तम्भ (**अम्वद्ह्**) को बनवाया और उसके लिए आशिष (**ब्रक्तह्**) की कामना है [4]।

विडबना की बात है कि सभागृहो के उपदेशको और व्याख्याताओ के मुह मे जनभाषा अरामी फिर एक शास्त्रीय भाष्य-भाषा बन गई क्योकि 'महान' (रब्) कहलानेवाले रब्बी - धर्मपडितो की शिक्षाओ का तल्मूध् (// उर्दू तालीम) नामक विशालतम सकलन किया गया इसमे विशेषकर इब्रानी धर्म-व्यवस्था की मिश्ना अर्थात् पुनरुक्ति [5], मिलती है और उसकी 'गमारा' अर्थात् विस्तृत टीका। पलिश्ती तल्मूध् [6] का सकलन लगभग 370 सा०स० मे हुआ, जो अशोक-काल से बहुत आगे है।

---

(1) J FIZMYER The languages of Palestine in the 1st cent A.D Catholic Biblical Quarterly 32 1970 pp 501-531 G MUSSIES Greek as the vehicle of early Christianity " New Testament Studies 29 1983 pp 356-369 " Aramaic was the spoken language the first and the home language Hebrew the upper language not spoken by the common people अरामी नाम येशू, अर्थात सुमुकुन्द, से प्रख्यात सुगुरु के प्रथम शिष्यों की भाषा तो यही जनभाषा अरामी थी, दे० S SEGERT Altaramäische Grammatik mit Bibliographie Chrestomathie und Glossar Leipzig 1986 p 519 यूनानी नया-विधान में यूनानी लिपि में लिप्यन्तरित अरामी भाषा के अवशिष्ट अश अर्थात 16 नाम 8 अन्य एकल शब्द, और 4 छोटे वाक्य (मक 5 41, 7 34, 15 34 तथा 1 कुर 16 22) W STEVENSON Grammar of Palestinian Jewish Aramaic Oxford 1962 (based on G DALMAN 1894)

(2) E.PUECH " Inscriptions funéraires Palestiniennes tombeau de Jason et ossuaires " Revue Biblique 92 1983 pp 481-533 अन्य विस्तृत अध्ययन P VAN DER HORST Ancient Jewish Epitaphs (An introductory survey of a millenium of Jewish Funerary Epigraphy 300 B.C E. - 700 C E.) Kampen 1991

(3) H.VINCENT Le sanctuaire juif d' Aïn Douq Revue Biblique 16 1919 pp 532-563 अन्य विस्तृत अध्ययन F HUTTENMEISTER & G REEG Die antiken Synagogen in Israel 2 vols Wiesbaden, 1977 B.LIFSHITZ, Donateurs et Fondateurs dans les Synagogues Juives Paris 1967 7वी सदी तक 1,700 ऐसे लेखों की गणना की गई — J FITZ MYER & D HARRINGTON op cit के सकलन की शब्दानुक्रमणिका में कुश्‌ट् (सत्य) शब्द के 21 उद्धरण है।

(4) दे० लूका 7 5 (5) षडागी मिश्ना के छह अध्याय है कृषि त्योहार विवाह दड यज्ञ और शुद्धि। धर्मनियमों का तात्पर्य जाने के लिए मिध्राश्, अर्थात खोजबीन, की पद्धति अपनायी जाती है — चाहे धर्माचरण हेतु सिद्धात के रूप में अथवा दृष्टात के रूप में, दे० F ROSENTHAL.An Aramaic Handbook, I 1 6 pp 59-87 " Selections from Midrash Bereshit Rabba " (6) ibidem 7 pp 67-88 " Selections from the Palestinian Talmud "

अरामी-भाषाभाषी इस्राएलियो के कारण अरामी अभिलेखन के पश्चिमी सीमान्त-क्षेत्र मे सा०स०पू० 300 से 200 सा०स० तक एक पुनरुज्जीवन का काल सम्भव हुआ। लेकिन इतना विपुल भण्डार प्राप्त हुआ कि मगल मे ही जगल आ गया। अशोकीय अरामी के अध्ययन मे उसकी उपयोगिता तभी बन सकती है यदि बाल की खाल खींचे । इसके विपरीत यदि हम पश्चिमोत्तर की ओर चलकर कप्पदोकिअ के फरासा [1] नामक स्थान का एकाकी अभिलेख देखे तो तिनके की ओट पहाड़ जैसी स्थिति आ जाती है क्योकि यह यूनानी-अरामी अभिलेख अपने आप मे द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो के अध्ययन के लिए अति उपयोगी है। अभिलेखन-काल की ऊपरी सीमा सा०स०पू० 255 है जब शासक अरिअंर्थैस्-तृतीय कप्पदोकिअ का स्वतन्त्र राजा बना। सा०स०पू० द्वितीय सदी मे अरिअंर्थैस्-पचम के शासनकाल मे [2] अरामी-भाषाभाषी इस्राएलियो का बड़ा समुदाय कप्पदोकिअ की नई राजधानी 'अंसेंबय' (अर्थात् ''धर्म'-पुरी) मे बस चुका था। फरासा अभिलेख एक दीक्षा-लेख है जो बरसाती नदी जमन्तिसु की खड़ी चट्टान पर अकित हुआ

(यू०प०1-4) सगंरिओंस् मयफ़्रंर्नोव् स्त्रतैगोंस् अरिअरम्नैंयस् (प०5-6) ओमंगोंव्से मिंथ्रैय् ।
(अर०प०1) सग्र् ब्र् मह्यप्रन् रब् खय्लअ् (प०2) मग्यश् ल् मत्रह् ।
(हि०) *माहिफरना का पुत्र सगरि* [+ यू० *अरिअरम्नैंय का*] *सैनिक शासक मिथ्र के लिए मजूसी बना।*

ईरानी नाम माहि-फर्ना (चन्द्र-प्रभा/सौभाग्य) का अन्त्य आ-स्वर अरामी व्यजन-लिपि मे नहीं दिखाया गया है जैसे पूर्वी अरामी अभिलेखो मे प्राय हुआ करता है। 'सगरि' एशिया माइनर मे देशज नाम है । अरामी पाठ मे उसे 'सेना (खय्लां) का अध्यक्ष" बताया गया है लेकिन यूनानी पाठ के शब्द स्त्रतैगोंस् से स्पष्ट हुआ कि वह सैनिक प्रशासक (military governor) था। लिपिन्स्की के अनुसार कप्पदोकिअ का प्रशासक अनुष्ठाता-राजपुरोहित भी था। यूनानी में अनिर्दिष्ट भूतकाल के क्रियारूप ओमंगोंव्से का अर्थ यहा उस साधारण बात के लिए नहीं है कि प्रशासक मजूसी-पुरोहित का आनुष्ठानिक कार्य किया करता था (पुनरावृत्त क्रिया) बल्कि उस असाधारण दीक्षा-समारोह के लिए जब उसने मजूसी का कार्य आरम्भ किया —अर्थात् जब वह मजूसी बन गया [3] । इस बार अरामी भाववाच्य क्रियारूप मग्यश् (वह मजूसी बनाया गया) यूनानी क्रियारूप के सम्भावित अर्थ का समर्थन करता है । बहुभाषीय अभिलेखो मे इस प्रकार का अन्योन्याश्रय समस्याओ के समाधान के लिए सहायक है। इसलिए अशोक के अरामी अभिलेखो का अध्ययन अधूरा होता यदि यूनानी (और प्राकृत) अभिलेखो के अवलबन की उपेक्षा की जाए ।

---

(1) L vol 1 pp 173 184 D Nr 265 The inscription from Farasa (2) दे० प्रथम मक्काबी-ग्रथ 15 22 ।
(3) L "an inceptive significance he became Magus of Mithra The inscription commemorates the initiation of Saganos

243 पूर्वी सीमान्तक्षेत्र में अल्पकालिक वरन् अपूर्व-अर्थपूर्ण अशोकीय अरामी अभिलेखन

MOMENTARY BUT MOMENTOUS ASHOKAN ARAMAIC INSCRIPTIONS IN THE EASTERN FRINGE AREA

अशोकीय अरामी अभिलेखो की प्राप्ति के पहले यह आश्चर्य की बात रही कि सा०स०पू० 3री सदी से लेकर अरामी अभिलेखन के पूर्वी सीमान्तक्षेत्र मे अरामी के विलम्बित प्रयोग की कोई महत्वपूर्ण सामग्री नही मिली।अपवाद के तौर पर एक सिक्के पर ईरानी नाम वख्शु/वख्शुवर का अरामी लेख **वृहशुव्[र्?]** मिला[1]। सन् 1898 मे लित्स्बर्स्की ने अनुमान लगाया कि इस क्षेत्र मे स्थानीय आवश्यकताओ के लिए अरामी लिपि अवश्य प्रयुक्त होती रही [2]। इसलिए प्रत्याशा थी कि कहीं कोई ठोस अरामी अभिलेख प्रकट होगा। पर केवल परिवर्तित अरामी के साक्ष्य प्राप्त हो रहे थे

> उद० उज्बेकिस्तान के खोरेज्म क्षेत्र मे कुछ ठीकरो पर स्थानीय खोरेज्मी भाषा के लेख मिले । उनकी लिपि परिवर्तनशील अरामी है लेकिन तोप्रक-काल से प्राप्त प्रथम सदी सा०स० के लेखो मे परिवर्तित अरामी का स्थानीय वेश स्पष्ट दिखाई देता है। सोग्दिया (समरकन्द) के तुन-हुआग नगर के एक घटा-धर पर अरामी वेश मे सोग्दी भाषा का प्राचीनतम अभिलेख द्वितीय सदी सा०स० मे अकित हुआ[3]।

फारसी साम्राज्य के प्रशासनिक कार्यकलापो को अभिलिखित करनेवाले अरामी लिपिक ईरानी शब्दो को अरामी मे लिखने के आदी हो गए। उन लिपिको के उत्तराधिकारी ईरानीकृत अरामी के समान क्षेत्रीय भाषा को भी अरामी अक्षरो मे उतारने लगे। इस तर्क के अनुसार रोज़न्थल् ने विचार किया कि खरोष्ठी लिपि ऐसी ही देशीकृत अरामी है। लेकिन उस मन्तव्य को स्वीकार करने मे कठिनाई यह है कि सा०स० पू० 3री सदी मे जिस समय अशोकीय खरोष्ठी प्रयुक्त हो रही थी उसी समय परम्परागत तरीके से ऐसी अशोकीय अरामी प्रयुक्त हो रही थी जिसे न ईरानीकृत अरामी न देशीकृत अरामी मान सकते हैं । दूसरी कठिनाई है कि स्थानीय भाषाओ मे परिवर्तित अरामी का प्रादुर्भाव एक-दो सदियो के बाद ही आरम्भ हुआ।

---

(1) R FRYE The History of Ancient Iran Munchen 1984 p 184 "a rare Aramaic legend

(2) M LIDZBARSKI का F ROSENTHAL op cit p 270 में उल्लेख ।

(3) *ईश्वर चन्द्र राही* लेखन कला का इतिहास खण्ड 2 पृ० 473 ।

प्रशिक्षित लिपिक परम्परावादी होते है। अन्य भाषा मे अरामी का अनुकूलन करते समय वे अरामी शब्द-रूप का मूल अक्षर-समूह नही भूल सकते थे। अत प्रचलित शब्द के लिए वे अनायास ईरानी या स्थानीय शब्द के उच्चारण को नहीं वरन् उसी शब्द का भाव प्रकट करनेवाले अरामी शब्द के अक्षर-समूह को लिखते थे[1]। उद० अरामी अक्षर-समूह अब्य् (मेरा पिता) देखकर उसका उच्चारण अरामी मे अभी न करे बल्कि अपनी भाषा का समानार्थक शब्द उच्चरित करे। लेकिन इस प्रतिस्थापी अरामी भावलेख की पद्धति अशोकीय अरामी मे ढूढने का प्रयास एक-दो सदियो का कालातर कूदने से कैसे स्वीकार करे ?

अशोक के द्विभाषीय अभिलेखो का विस्तृत परिचय प्रथम भाग मे (दे० पृ० 54-76) दे चुके है। अरामी अभिलेखन के पुरालेखीय सदर्भ मे अशोकीय अरामी अभिलेखो की विशिष्टताए सुस्पष्ट दिखाई देती हैं

1 प्राप्ति-स्थान पाच एकलिपीय अरामी अभिलेख प्राप्त हुए (त० क०अ० पु० ल०प्र और ल०द्वि०) और एक अरामी-लिपीय अभिलेख जो द्विलिपीय यूनानी-अरामी अभिलेख का निचला खण्ड है (श०अ०)। उनके अलग-अलग छह प्राप्ति-स्थल हैं लेकिन दो-दो सन्निकट हैं लघमान की दो चट्टाने तथा कन्दहार और शर-इ-कुन , पुल-इ-दरुन्त और लघमान को काबूल के पड़ोसी मान सकते हैं जब कि तक्षशिला का अपना अलग स्थान है। केवल तीन मूल स्थानस्थ (in situ) अभिलेख है क्योकि वे चट्टान पर ही अभिलिखित है (श०अ० ल०प्र० और ल०द्वि०) । तक्षशिला का स्तम्भलेख अवश्य स्थानान्तरित है क्योकि उसे दीवाल मे लगाया गया ।

2 प्राप्ति-काल पिछली 20वी सदी मे अर्थात् 1914 (त०) 1932 (पु०), 1957 (श०अ०), 1964 (क०अ०), 1969 (ल०प्र०) और 1973 (ल०द्वि०) मे ।

3 अभिलेखन-काल सन् 1835 के पुरालेखीय आविष्कार (epigraphic discovery) में जेम्स् प्रिन्सेप् ने सुनिश्चित कर दिया कि ब्राह्मी लिपि के अभिलेखो का प्रियदर्शी आदेशक सम्राट अशोक महान् ही है। अब तक उपलब्ध अरामी अभिलेखो मे अशोक का नाम नही है (दे० पृ० 163) , परन्तु उन्हीं को इगित करनेवाली सम्मानसूचक उपाधि देवानाप्रिय एक बार (पु०6) और राजाभिषेकीय नाम प्रियदर्शी पाच बार (त०9,12 श०अ०1 ल०प्र०1 और ल०द्वि०2) मिलता है। उन्हे हमारे स्वामी चार बार (त०9,12 श०अ०1,3) और राजा भी चार बार (श०अ०1,3 ल०प्र०1 और ल०द्वि०2) कहा गया है । एक और उपाधि अभिषित्त-जन/मसीह जो अरामी मे ही सार्थक है पु०6 मे पुनर्स्थापित की जा सकती है। सभी अरामी अभिलेखो को अशोक के राज्याभिषेक के बाद (दे० पृ० 177) इस अनुमानित क्रम से रखे सा०रा०पू० 254 253 (श०अ०), 253-252(त०), 244-243(ल०प्र०+ द्वि०), 239 238(पु०), 238-237(क०अ०)।

---

(1) दे०F ROSENTHAL Die Aramaistische Forschung Leiden 1964 ch 3 "Die aramaischen Ideogramme in den mittel iranischen Dialekten

4 अभिलेखन-सामग्री   वे सभी अश्मोत्कीर्ण प्रस्तर-लेख है (दे० पृ० 203) । तक्षशिला अभिलेख   सफेद सगमरमर के अष्टभुजाकार स्तम्भ पर अकित हुआ — जो रग आकार और सामग्री की दृष्टि से न केवल अशोकीय अभिलेखो मे अपवाद है वरन सम्पूर्ण अरामी अभिलेखन के सर्वेक्षण मे अद्वितीय नमूना है। अशोक के अरामी अभिलेखो मे यही एक ही स्तम्भ-लेख है (त०) , बलुए चूर्ण-प्रस्तर का भी एक ही स्टोन-ब्लॉक शिलाखण्ड-लेख है (क०अ०) और एक स्टोन-स्लैब् शिलाफलक-लेख है (पु०)। शेष तीन शिला-लेख है (श०अ० ल०प्र+द्वि०)।

5 अभिलेखो की अवस्था   यदि हम शर-इ-कुन के निचले खण्ड के अरामी पाठ को उपरले खण्ड के यूनानी पाठ से मिलाते हैं तो लगता है कि वह पूर्णत सुरक्षित अवस्था मे है । लघमान के दोनो लेख मिलाने पर उन्हे मूल रूप मे सुरक्षित मान सकते है परन्तु विशेषकर द्वितीय लेख के निचले अक्षर प्राय मिट जा चुके है । उन दोनो लेखो की विशेषता यह है कि आरम्भ से ही लिपिकार ने अपूर्ण कच्चे लेख उत्कीर्ण किये   प्रथम लेख की 2री प० का एक शब्द नीचे आ गया   जिससे 3री प० मे उस शब्द को कूदकर आगे लिखना पड़ा , और द्वितीय लेख की अन्तिम 10वी प० को दूसरी पक्तियो के बाजू मे ऊपर से नीचे अनुप्रस्थ प० के रूप मे लिखा गया — यह भी सम्पूर्ण अरामी अभिलेखन के सर्वेक्षण मे अद्वितीय है। तक्षशिला अभिलेख बाई ओर थोड़ा-सा क्षतिग्रस्त (म्यूटिलेटिड) है परन्तु बाकी दो लेख (पु० और क०अ०) पूर्णत खण्डित (फ्रैग्मैण्टरी) अवस्था मे है ।

अवशिष्ट पक्ति-सख्या इस प्रकार है		और प्रति पक्ति अधिकतम अक्षर-सख्या	
त०	12	श०अ०	40
ल०द्वि०	10	ल०प्र०	33
श०अ०	8	क०अ०	24
पु०	8	ल०द्वि०	22
क०अ०	7	पु०	21
ल०प्र०	6	त०	13

6 अभिलेखो की भाषा   यद्यपि 'अरामी अभिलेखो को इस अर्थ मे द्विभाषीय / त्रिभाषीय मान सकते है कि उनमे कुछ ईरानी (आगत) शब्द प्रयुक्त हुए अथवा / और प्राकृत शब्द या वाक्याश लिप्यन्तरित हुए फिर भी वे अरामी लिपिकीय परम्परा के अन्तर्गत मुख्यत अरामी अभिलेख ही हैं । चाहे   तो उनकी भाषा को ' अशोकीय अरामी कह सकते है । लेकिन वे विशेष ढगसे प्राकृत प्रारूप से अनूदित एव अनुकूलित किये गये   कहीं •सह्यत्य् का साकेतिक सूत्र लगाकर मूल उक्तियो का उल्लेख किया गया है (दे०पृ० 106)   कहीं अन्य अशोकीय अभिलेखो के आधार पर एकसक्षिप्त रूप या साराश पुनरुक्त हुआ है।

7 अभिलेखो का विषय   अन्य अशोकीय अभिलेखो के समान अरामी अभिलेखो की अपनी विशिष्ट प्रस्तुति है   क्योकि वे एक असाधारण शासक धर्माशोक की ओर से   कम्बोज -क्षेत्र के (अरामी-भाषा-भाषी ?) निवासियो या प्रवासियो के लिए आदेशित-विज्ञापित हुए। वे धर्मलेख हैं जो अशोक की धर्म-नीति को अभिव्यक्त करते है   इनमे प्रधानत मुख्य शिलालेख 4 (त०), मुख्य स्तम्भलेख 7 (क०अ०) तथा मु०शि० 3,4,5,13 और मु०स्त० 3,5,7 (पु०) की विषय-वस्तु प्रस्तुत की गई है। लघमान के दोनो अभि-लेख अभूतपूर्व हैं क्योकि वे एक ही प्रज्ञप्ति के दो सस्करण हैं और उनमे आचार-मार्ग की राजाज्ञा के साथ राज-मार्ग के पथिको हेतु दूरी या दिशा की सूचना भी दी गई है। तदुपरात उनमे स्थानीय राज-अधिकारी भी अपनी ओर से अभिलेखन-कार्य की अभिसूचना   जोड़ देता है।

25 यूनानी अभिलेखन का परिभ्रामी परिशीलन

PERAMBULATORY PERUSAL OF GREEK INSCRIPTIONS

यूनानी भाषा-लिपि के प्राचीन अभिलेखो की सख्या अनगिनत है। अब तक लगभग 5,00,000 यूनानी अभिलेख उपलब्ध हुए। सा०स०पू०300 से लेकर कोर्ने अर्थात् सामान्य सरलीकृत-एकीकृत यूनानी भाषा मे लगभग 50,000 अभिलेख ज्ञात हुए। अशोक के दो (श०यू० और क०यू०,अथवा क०यू० मे 12वा+13वा मुख्य शिलालेखो के प्रतिरूपो को अलग गिनने पर तीन) यूनानी अभिलेखो के अध्ययन हेतु उन कोर्ने - अभिलेखो मे से एक प्रतिशत (अर्थात् 500) का सर्वेक्षण करना भी न तो सम्भव है न आवश्यक है। यूनानी कहावत है मेग बिब्लिऑन् मेग ककॉन् — बड़ा ग्रथ बड़ा मथ , जितनी अधिक सामग्री का ग्रथन करेगे उतना अधिक कष्ट उसका मथन करने मे होगा । इसलिए यूनानी अभिलेखो के सख्याधिक्य के कारण हम केवल 5 प्रासगिक अभिलेखन-क्षेत्रो मे परिभ्रमण कर कुछ-एक का परिशीलन करेगे ।

अरामी व्यजन-लिपि की तुलना मे यूनानी लिपि स्पष्टतर है क्योकि उसमे स्वरोच्चारण के लिए सात मुख्य स्वर-वर्ण भी दिखाये जाते हैं। इस सुविधा के कारण फ्रास के युवा पुरालिपिज्ञ शार्पोल्यो मिस्री चित्र-लिपि का रहस्योद्घाटन करने मे सफल हुआ[1]

सन् 1799 मे नील नदी के रोजेंट नामक मुहाने के पास एक काला शिलाखण्ड प्राप्त हुआ जिसपर हायरोग्लिफिक् डीमॉटिक् एव यूनानी लिपियो मे विस्तृत लेख अकित था। तीनो की अन्तिम पक्ति इस प्रकार जोड़कर दिखा सकते हैं अभिलेखन-काल सा०स०पू० 196

ΣΤΕΡΕΟΥΛΙΘΟΥ ΤΟΙΣ ΤΕ ΙΕΡΟΙΣ ΚΑΙ ΕΓΧΩΡΙΟΙΣ ΚΑΙ ΕΛΛΗΝΙΚΟΙΣ ΓΡΑΜΜΑΣΙΝ

का है जब राजा प्तॉलेमॅयॉस्-पचम के राज्याभिषेक के प्रथम वार्षिकोत्सव पर मॅम्फिस् के पुरोहितों ने मिस्र के मन्दिरो के प्रति उसकी दानशीलता की प्रशसा की । केवल यूनानी लिपि ही ज्ञात थी परन्तु मिस्री चित्रलिपि के सबध मे मालूम था कि राजा के नामो को आदरसूचक कारतूस के ढाचे मे लिखा जाता था। इसलिए अनुमान था कि इस कारतूस मे ΠΤΟΛΕΜΑΙΟΣ (प्तॉलेमॅयॉस्) का नाम ही छिपा हुआ था। इस यूनानी चाबी घुमाने से सन् 1822 मे लिपि की पोल खुली।

---

(1) ईश्वरचन्द्र राही, लेखनकला का इतिहास, खं०2, पृ०567 571–Rosetta stone deciphered by J F Champollion

रोजेट-अभिलेख के एक वर्ष बाद सा०स०पू० 195 मे सेल्यूकी राजा अन्तिओंखोस्-तृतीय ने सीरिया के प्तोलेमॅयोस् नामक राज्यपाल को आदेश दिया कि मेरी इस राजाज्ञा को शिलाखण्डो पर खुदवाओ और तत्सबधित ग्रामो मे खड्ा करो उन ग्रामो मे विदेशी भू-स्वामियो को स्वामित्व-अधिकार से वचित किया जाए। [1]। ऐसे सार्वजनिक उत्कीर्ण-लेखो के द्वारा नागरिको को उनके कर्तव्यो का स्मरण दिलाया जाता था। उद०,खल्किस् नगर के चौक मे सा०स०पू० 446 के निष्ठा-शपथग्रहण का यह प्रस्तर-अभिलेख कभी नही हटाया गया[2]

मै किसी भी प्रकार से न वाचा न कर्मणा अथैनय् महानगर की प्रजा से अलगाव के लिए विद्रोह करूगा मै उचित कर चुका दूगा मै युद्ध-सधि के पालन मे उत्तम और निष्ठतम (दिकयोंतॅतॉस्) सघी रहूगा मै महानगर की प्रजा के प्रति आज्ञाकारी बना रहूगा (पॅय्सॉमय्) ।

लेकिन सुवक्ता दैमॉस्थॅनैस के अदालती भाषणो मे जालसाजी का एक मामला है जिसमे अरिस्तॉगॅय्तोन् पर आरोप है कि वह लोक-ऋण के अभिलेख (अॅङ्-ग्रफॅ) से अपना नाम मिटाने की कोशिश की[3]। जब हम यूनानी पुरालेखो के अजायब-घर मे सैर करते है तब ऐसे ही अजीब मामले देखने को मिलेगे।

251 यूनान के तीर्थ दॅल्फॉय् के सूत्र MAXIMS FROM THE GREEK PILGRIM CITY DELPHI

मध्य-यूनान की तीर्थ-नगरी दॅल्फॉय् मे यात्री इसलिए आते थे कि देव अपॉल्लोन् से कोई शुभ मन्त्रणा प्राप्त करे। दिव्य वाणिया पुथिअ नामक वृद्धा पुजारिन के माध्यम से प्रकट होती थी और उनका गूढ अर्थ कोई सिद्ध प्रवाचक (यू० प्रॉफॅतैस्) ही समझाता था।

सा०स०पू० 700 से लेकर अपॉल्लोन् के मदिर के खम्भो पर ऐसे अनेक परामर्शी सूत्र उत्कीर्ण होते रहे, जैसे *जानो अपने को* (ग्नॉथि सेअव्तॉन् — ज्ञानी सोक्रॅतैस् द्वारा अपनाया गया मन्त्र), *ब्याहने के पहले समय मागो*, *किसी शव पर मत हसो*, *सुअवसर पहचानो*, *भाग्य (तुखै) को मानो*, *परायी वस्तु से परहेज रखो*, *माता-पिता का आदर करो* (अय्दोंव्), *धन का न्यायोचित प्रयोग करो* * ।

---

(1) E CARMON ed Inscriptions Reveal Jerusalem 1973 Israel Museum Cat N 214 Hefsiba stone-slab The publication of royal correspondence was often by means of stone slabs set up in such central places as the local temple or in the market (2) G BETTS & A.HENRY.Ancient Greek Berkshire 1989 p 170 "The normal way of publishing an official document in the Greek world was to cut the text on stone (usually) marble and display it in a prominent place
(3) G MATHIEU Demosthène Plaidoyers Politiques IV Paris 1971 p 141

ल्फॉय् से प्रणीत सूक्तिया जीवनोपयोगी थी और यूनानी परिवारो मे बच्चो को सिखायी जाती थी । भक्तो

दूर-दूर तक उनका प्रसार-प्रचार किया । इस शोध के प्रथम भाग मे हमने देखा कि प्राचीन बख्त्रिया के

य-खनूम उत्खनन मे एक खण्डित पट्ट-स्तम्भ प्राप्त हुआ जिसके अधोभाग की दाईं ओर देल्फॉय की

क उत्कृष्ट नीति-सूक्ति का उल्लेख है (दे० पृ० 154) । उसकी बाईं ओर ये चार पक्तिया अकित हैं

प्राचीनकाल के प्रख्यात व्यक्तियो के वे बुद्धिमत्तापूर्ण वचन (यू० सॉफं रहैमत) पावन तीर्थ देल्फॉय् मे मुखरित हुए। वहा से प्रकाशवान उन वचनो को क्लेअर्खोस् ने सावधानी से अभिलिखित कर (अन-ग्रॅप्सस्) किनेअस् के पुण्यस्थल (तेमेनॉस्) मे प्रतिष्ठित किया ।

सम्भवत यह लेख यूनानी गुरु क्लेअर्खोस् की शिक्षाओ से सबधित है, जिसने अशोक-काल मे ही

श्चिमोत्तर भारत तक भ्रमण किया[1]। पी० बेर्नार् के अनुसार यह लेख सा०स०पू० 3री सदी के आरम्भ

ा है परन्तु ए० के० नारायण तिथि-सीमा को और पचास वर्ष आगे बढ़ाते है। वह किनेअस् के पुण्यस्थल

प्राप्त उन ईंटो पर ध्यान दिलाते हैं जिनपर यूनानी गुम्फाक्षर (Δ) अकित है । यूनानी अक्षर देल्त Δ

हा चाहे राजा दिओदोतॉस्-प्रथम अथवा पुनर्निर्मित नगर दिओनुसो-पॉलिस् के नाम का सकेत है । एक

ट पर प्रो० नाराण्यण ने ब्राह्मी लिपि का अक्षर झ ⊢ भी पहचाना और यह तर्क करते हैं

यह स्पष्ट है कि ग्रीक अरामइक [Aramaic] और खरोष्ठी मे भी इसके जैसा कुछ भी प्राप्त नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि इसकी तिथि अशोक के ब्राह्मी अभिलेखो के पहले की नहीं हो सकती ।[2]

ो० नारायण स्वय पूछते है कि उस ब्राह्मी अक्षर "झ" से क्या बन सकता है। दुर्भाग्य उन्होने अशोकीय

रामी के अक्षर-रूपो की तालिका पर ठीक-से ध्यान नही दिया। तथाकथित ब्राह्मी अक्षर इस शोधकर्ता

ी दृष्टि मे अरामी अक्षर दालॅथ् ही है। अत अय-खनूम का यह द्विलिपीय यूनानी-अरामी ईंट-लेख ही है

'चित्र स० ३ [3] पर आधारित रेखाचित्र)

---
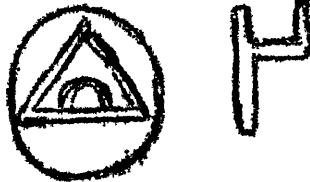
1) दे० पृ० 154 की टिप्पणी । (2) *अवध किशोर नारायण* अफगानिस्तान के आय-खानुम में उत्खनित क ग्रीक-बैक्ट्रियाई नगर उसकी प्रस्थापना और उसका काल-निर्धारण **एशियाई अध्ययन की भारतीय पत्रिका** 1989 पृ० 29 दे० A.K.NARAIN On the foundation and chronology of Ai Khanum a Greek Bactrian city G POLLET d, India and the Ancient World, Leuven 1987 p 124 (3) तत्रैव, पृ० 28 ।

फिर भी प्रो० नारायण इस सभावना से इन्कार नही करते है कि अय-खनूम मे (यद्यपि उनके मतानुसार केवल सा०स०पू० 250 मे) यूनानी परिव्राजक क्लेअरखोस् का उल्लेख हुआ क्योकि वह अशोकीय धम्म से प्रभावित मालूम पड़ता है [1]। सयोग की बात है कि मिस्र के यूनानी अभिलेखो मे दिव्य मा अीसिस् की ऐसी शिक्षाए मिलती है , जिनके सबध मे निर्णय करना कठिन है कि वे देल्फोय् के यूनानी धर्मोकितयो से अथवा अशोकीय धर्मघोषणाओ से अधिक समानता रखती है

मैने ही मनुष्यो के लिए नियम (नोमोस्) निर्धारित किये जिन्हे कोई नही बदल सकता। मैने न्याय-धर्म (तो दिकयोन्) प्रबल बनाया। मैने यह आदेश दिया कि माता-पिता (गोनेय्स्) अपने बच्चो द्वारा प्यार किये जाए (फिलों-स्तोर्गेय्स्थय्)। मैने प्राणियो (शब्दश मनुष्यो) के भक्षण को रोका। मैने देव-प्रतिमाओ का आदर करना सिखाया। मैने ऐसी व्यवस्था की कि नारियो मे पुरुषो से अधिक प्रेम-शक्ति हो। मैने न्याय-धर्म को सोना-चादी से अधिक मूल्यवान ठहराया। मैने यह भी निश्चित किया कि जो सच्चा है वही अच्छा माना जाए । [2]

252 मिस्र के कुछ रुचिकर यूनानी पाठ SOME INTERESTING GREEK TEXTS FROM EGYPT

प्तोलेमी राजाओ के शासन-काल से उपलब्ध यूनानी पत्रावली की मात्रा मे बढ़ती हुई। सब-से पुराना तिथि-सहित मिस्री यूनानी पटेरपत्र सा०स०पू० 310 की एक विवाह-सविदा (सुङ्ग्रफे) है जो अरामी पटेरपत्रो के प्राप्ति-स्थल अलेफन्तिनै से मिली वधू-धन चादी के एक हजार सिक्को का था जो मान-हानि होने पर स्त्री को लौटाया जाए और सविदा सर्वथा (पन्तै पन्तोस्) दोनो पक्षो हेतु मान्य रहेगी[3]। सर्वाधिक यूनानी पत्र मध्य नील-नदीतट के ओक्सोरहुङ्खोय् / ओक्सुरहुङ्खोस् स्थान से प्राप्त हुए [4]।

---

(1) op cit p 122 "One wonders if the Peripatetics of the West were not influenced by Buddhist ideals This is relevant in the context of the Asoka s missionary activities in the West One may also note [L] Robert s comparison of the maxims chosen by Clearchus with the preachings of Aśoka and the similarity between Delphi and Buddhist teachings

(2) दे० A.DEISSMANN Light from the Ancient East London 1910 pp 134 138 दिओदोरोस (Diodorus of Sicily History सा०य०पू० 27) का उल्लेख किया गया है तथा 2री सदी सा०स० के अभिलेख से समर्थन प्राप्त हुआ (Isis inscription from Ios) (3) दे० G MILLIGAN Selections from the Greek Papyri Cambridge 1927 नर-नारी के समान अधिकार है, लेकिन गुलाम (दोव्लोस्) दुगुना दण्ड के योग्य ठहरता है दे० E.MAYSER Grammatik der Griechischen Papyri aus der Ptolemäerzeit 2 vols Berlin Leipzig 1938 Nr 202 गुलाम के लिए पय्स् (शब्दश: बालक दे० Nr 234) अथवा सोम (शब्दश शरीर , दे० A.DEISSMAN p 150) भी प्रयुक्त हुआ। (4) Oxyrhynchus दे० E.GOODSPEED & E.COLWELL, A Greek Papyrus Reader Chicago 1935 A.HUNT & C EDGAR Select Papyri 5 vols London 1959 निजी अथवा सार्वजनिक पत्र, दस्तावेज, साहित्यिक कृतिया, धर्मशास्त्र आदि प्राप्त हुए , ग्रामीण लिपिक (कोमो-ग्रम्मतेय्स्) भी थे ।

भारत से सबधित मिस्री लेख इतने पुराने नही हैं, फिर भी महानगरी सिकन्दरिया के किसी कवि द्वारा रचित यह स्मृति-लेख सा०स०पू० 3री सदी का है — इसकी दो प्रतिया मिली [1]

(1) यह समाधि साक्षी देती है कि तव्रोन् नामक भारतीय (अिन्दोस्) किस्म का एक शिकारी कुत्ता यहा मृत लेटा हुआ है। वह अब तक अप्रशिक्षित जवान कुत्ता था परन्तु उसने अपने मालिक ज़ैनोन् को बडे कष्ट से बचाया [जब भयकर वनैला सूअर उसपर टूट पडनेवाला था]। अत जो इस पटिया के नीचे है वह धन्यवाद का ही पात्र है।
(2) दूसरा लेख और प्रशसात्मक है ' इस [प्रिय कुत्ते] ने उस हत्यारे [जगली सूअर] को अधोलोक मे पहुचाया और स्वय ऐसी [वीरतापूर्ण] मृत्यु को प्राप्त किया जो एक भारतीय का धर्म है (अिन्दोन् होस् नोमोस् as a good Indian should)।

प्रथम-द्वितीय सदी सा०स० के लेखो से मालूम होता है मिस्र मे ऐसे भारतीय व्यापारी रह रहे थे जो यूनानी भाषा मे बातचीत कर सकते थे [2] यहा तक कि वे यूनानी नाट्यशाला का आनन्द उठाने लगे [3]।

सब-से दिलचस्प प्रसग वह पटेरपत्र है [4] जिसमे यूनानी सुन्दरी खरितिओन् समुद्र मे नौ-विप्लव के कारण भारतीय सागर-तट पर फेकी गई। पर बेचारी अब राक्षसी राजा के पजे मे आई जो उसे बलि करने हेतु महोत्सव मनाने लगा। सौभाग्यवश यूनानी युवा-दल समेत ख़रितिओन् का भाई आ पहुचा। वे उस राक्षस को मधु पिलाकर निरस्त्र कर देते है। नशे मे चूर राजा असभ्य कदम (बैमति बर्बरो) से नाच रहा है और गा रहा है हे हिन्द के अगुओ ! दिव्य बोल के मोहक ढोल को लाओ । वह बुदबुदाता है बेरै कोन्ज़ेय् दमुन् पेत्रेकिओ पत्तेय् कोर्तमेस् जेय्साक्कोर्मोसैदे स्कल्मकत-बर्तेय्रगोक्ति । क्या इस बडबडाने मे केवल किसी बर्बर भाषा की अर्थहीन नकल की गई है या सचमुच नाटकीय यूनानी प्रस्तुति मे एक भारतीय बोली को प्रतिध्वनित करने की कोशिश की गई है [5]?

अस्तु हमे अशोक के समकालीन यूनानी अभिलेखन के गभीर विषयो मे नैतिक शब्दावली पर अधिक ध्यान देना चाहिए । सा०स०पू० 3री सदी का यह मिस्री पटेरपत्र देखे जिसमे सरकारी उच्चाधिकारी के सद्गुणो की सूची दी गई है [6]

---

(1) D L PAGE, Select Papyri 5vols London 1962 vol 3 Literary Papyri Poetry pp 461-463 Two epitaphs for a dog
(2) Oxyrynchus Papyrus III 413 " Greek-speaking Indians दे० C WHITTAKER To reach out to India and pursue the dawn Studies in History 14 1998 pp 1 20 sparse evidence of Indian language graffiti in ports R SALOMON, Epigraphic remains of Indian traders in Egypt Journal of the American Oriental Society 111 1991 pp 731 737
(3) दे० दिओन् ख्रुसोस्तोमोस् भाषण 32 (4) D L PAGE, op cit pp 336 349 (5) ibid p 337 There are it seems a few more or less striking coincidences e g κονζει = konca (Dravidian a little) πετρεκεω = pātrakka (Kanarese to a cup) πανουμβρητικα = pānam amṛta (Sanskrit a drink nectar ') In any case the ancient audiences of course would not have understood a syllable of the jargon they merely rejoiced in the exquisite humour of poly-syllabic nonsense " दे० भगवतशरण उपाध्याय बृहत्तर भारत पृ० 63 । (6) ibid pp 466-467

आप-सब उन्ही गुणो की चाह कीजिए (अगपांते) जिनसे वह विभूषित थे वह दयाशील व्यक्ति थे सुजन सीधे-सादे राजभक्त (फिलों-बसिलेंव्स् ,loyal to his king) साहसी अपनी निष्ठा के लिए प्रसिद्ध सयमी यूनानी देशभक्त (फिल्-ऑल्लैन्) विनम्र मिलनसार बुराई से घृणा करनेवाले और सत्य के पुजारी (तैन् द अलेंथेयन् सेंबोन् worshipper of truth) ।

एक बेईमान अधिकारी के सबध मे भी सा०स०पू० 254 का मिस्री पटेरपत्र प्राप्त हुआ [1]

जैंनोन एक राज-भण्डारी के यहा विशेष निरीक्षक को भेजता है यदि आरोप सही है तो भण्डारी को फासी दी जाए। जैंनोन् राजा प्तोलेमैंयॉस्-द्वितीय के गृहमन्त्री अपोंल्लोनिऑस् का अभिकर्ता था। उस-का लेखागार सन् 1915 मे आधुनिक काईरो के पास फय्यूम मरुद्वीप से प्राप्त हुआ । यह पटेरपत्र भी उपलब्ध है जिसे जैंनोन् ने सा०स०पू० 259 मे सीरिया-फेनीके का दौरा करते समय लिखा था [2]।

253 यूनानवादी इस्राएलियो का अभिलेखन INSCRIPTIONS BY HELLENISTIC ISRAELITES

मिस्री सिकन्दरिया मे बसे हुए इस्राएली भी यूनानवाद के मोह मे आए। हमने ऊपर देखा (पृ० 155) कि उन्होने पहले अपने धर्मशास्त्र के तोरां-पचग्रथ को कोंजे यूनानी भाषा मे अनूदित किया[3] और धीरे-धीरे इब्रानी-अरामी तनख और कुछ अतिरिक्त ग्रथो का यूनानी 'सप्तति बाइबिल अनुवाद' पूर्ण किया [4]। अपने धर्मशास्त्र के ही कारण यूनानी जगत् मे विसर्जित इस्राएली अपने अरामी-भाषाभाषी बन्धुओ से जुड़े रहे । भूमध्यसागर के दैलॉस् टापू मे सा०स०पू० 2री सदी के अन्त का यह अभिलेख है

दैलॉस् के इस्राएली जो पवित्र गरिजीम पर्वत को भेट चढाते हैं [5] क्नोसॉस्-वासी ॲिॲसोन् के पुत्र सरंपिओन् को स्वर्णमुकुट से सम्मानित करते हैं क्योकि उसने उनके प्रति उदारता (ॲव्-ॲर्गेसिॲ) दिखायी ।' — अर्थात् प्रार्थना-सभागृह के निर्माण के लिए दान का शुभ कार्य किया ।

---

(1) M DAVID & B. VAN GRONINGEN Papyrological Primer Leiden 1952 nr 61 Letter concerning an unfaithful manager

(2) P PESTMAN ed Greek and Demotic Texts from the Zenon Archive Leiden 1980 Nr 32

(3) N COLLINS 281 B.C E. the year of the translation of the Pentateuch into Greek under Ptolemy II G BROOKE & B LINDARS eds Septuagint Scrolls and Cognate Writings Atlanta 1992 pp 403-503

(4) इस अदभुत अनुवाद-कार्य का वर्णन अरिस्तेंअस् के पत्र में देखें। यूनानवादी यहूदी दार्शनिक फिलोन अनुवादकों की भूरि प्रशसा करते है They became as it were possessed and under inspiration wrote not each several scribe something different but the same word for word as though dictated to each by an invisible prompter They are not translators but prophets and priests of the mysteries whose sincerity and singleness of thought has enabled them to go hand in hand with the purest of spirits the spirit of Moses "(Philo De Vita Mosis 2 26-42)

(5) सामरी-पन्थी इस्राएली अपना धर्म-शुल्क गरिजीम के मन्दिर को भेजते थे , जब कि अन्य यहूदी अपना मन्दिर-कर यरुशलेम को ही चढ़ाते थे — A.KRAABEL New evidence of the Samaritan diaspora has been found on Delos Biblical Archaeologist 47 1984 pp 44-46

यूनानी सभागृह-अभिलेखो मे यरूशलेम का थेओंदोतोस् अभिलेख प्रसिद्ध है[1]। इसे पुरोहित थेओं-दोतोस् की उदारता के स्मरणार्थ प्रथम सदी सा०स० के आरम्भ मे अकित किया गया। सुन्-अगोगै का अर्थ यहा न केवल सभास्थल है वरन् एक पक्का भवन जिसका निर्माण सामूहिक आराधना धर्म-व्यवस्था (नोमोस्) के पठन-पाठन एव धर्म-नियमो (अेन्तोलै) की शिक्षा हेतु हुआ। इसमे अतिथिकक्ष, भोजनालय स्नानगृह और विदेशियो के प्रयोग के लिए विश्रामकक्ष (कतलुम) का प्रबध भी था।

यूनानवादी इस्राएली अपनी धर्म-सहिता पर गर्व करते रहे और उसे यूनानी धर्म-दर्शन से गौन नहीं समझते थे। इतिहासकार योसैपोस् ने अपनी यूनानी रचना कत् अपिओन मे क्लेअरखोस् के साक्ष्य के आधार पर किसी यहूदी व्यक्ति के विषय मे अरिस्तोतेलैस् के उस कथन का उल्लेख किया

यह व्यक्ति यहूदी जाति (गेनोस्) का था और सीरिया प्रान्त का मूल निवासी , वास्तव में वे भारत के दार्शनिकों के वशज (अपोगोनोय् तोन् अेन् अिन्दोय्स् फिलोसोफोन्) है[2]। परन्तु यह व्यक्ति यूनानी था न केवल अपनी बोली में बल्कि आत्मा से भी ।[3]

यूनानवाद की भूमण्डलीय दृष्टि मे यहूदी धर्मपथी भारत-वशी इस्राएल-वासी वे सभी यूनानी-कृत विश्व-जन है। परन्तु योसैपोस् आगे प्राचीन मिस्र से इस्राएलियो के निर्गमन का कारण धर्म-भक्ति (अेव्-सेबेय) और धर्म-दर्शन (थेओ-लोगिअ) मे उनकी भिन्नता व श्रेष्ठता ठहराता है

विधि-पालक विधि-कर्ता का उदाहरण देखते है । एक विधि-निर्माता (नोमो-तेथैस्) का यह गुण होना चाहिए कि वह उत्तम बातों पर समदृष्टि रखे और स्व-निर्धारित नियमों को दूसरों को भी समझा पाए। **हमारे विधि-निर्माता** [अर्थात् हजरत मूसा] प्राचीनतम काल के है। उन्होने अपने आपको जनता के श्रेष्ठ नायक तथा परामर्शदाता के रूप मे प्रस्तुत किया। निरकुश शासक तो जनता मे अधर्म (अ-नोमिअ) की आदत डालते है परन्तु मूसा ने माना कि स्वय धार्मिक होने से (अेव्-सेबेअन्) वह लोगों को अधिक सद्धर्म (अेव्-नोमिअ) दिला सकेगे , क्योंकि सद्‌गुण का उत्तम उदाहरण दिखाकर वह और अच्छी तरह से उन लोगों को विमुक्त कर सकेंगे, जिन्होने उन्हे नेता के रूप में स्वीकारा यद्यपि वह स्वय जानते थे कि ईश्वर ही नायक व परामर्शदाता है।[4]

अच्छा होता यूनानी सदर्भ मे तर्क करनेवाला योसैपोस् **हमारे विधि-निर्माता** धर्माशोक से भी परिचित होता।

---

(1) E. SUSENIK, Ancient Synagogues in Palestine and Greece London 1934 p 70 H C KEE " Defining the 1st cent C E synagogue New Testament Studies 41 1995 pp 481-500 (लेखक स्वीकार नही करते है कि मन्दिर-विनाश के पूर्व -- अर्थात 70 सा०स० के पूर्व -- यरूशलेम मे कोई पक्का सभागृह खड़ा था इसलिए वह थेओंदोतोस-लेख का अभिलेखन-काल 3री सदी सा०स० ही मानते है) ।

(2) दे० ऊपर पृ० 154 पर क्लैमैस् (Stromata 1 15) का साक्ष्य दिओगेनैस् लअेर्तैस् (Prooemium 9) ने उस विचार का उल्लेख किया कि यहूदी शायद ज्ञानी मगूसियों (मगोय्) के वशज है। ध्यान दें कि योसैपोस् 'दार्शनिक शब्द का प्रयोग करता है जब कि अन्यत्र निर्ग्रन्थ (शब्दश निर्वस्त्र) ज्ञानी अथवा ब्राह्मण जैसे शब्द प्रयुक्त हुए ।

(3) T REINACH & L BLUM Flavius Josephe -Contre Apion Paris 1930 p 34 -- Contra Apionem 1 179 180

(4) ibid 2 153 160

सा०स०पू० 4थी – 3री सदी के एशिया-माइनर मे स्थानीय तथा यूनानी अभिलेखन का अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था , साथ-ही-साथ अरामी के माध्यम से ईरानी प्रभाव भी जारी था। द्विभाषीय यूनानी-अरामी लेख के दो मुख्य उदाहरण ऊपर देख चुके है अगास-काले (पृ०260) एव फरासा (पृ०269) अभिलेख। क्सन्थोस् के त्रिभाषीय यूनानी-लुकिआई-अरामी अभिलेख की चर्चा भी कर चुके है (पृ०243) । अब लिमूरा के द्वि-भाषीय लुकिआई-यूनानी अभिलेख का अनोखा रूप देखे 5वी पक्ति के त्रिबिन्दु ⁖ तक लुकिआई पाठ है (जिसकी लिपि के 80 % अक्षर यूनानी नकल ही है) और त्रिबिन्दु के बाद शुद्ध यूनानी पाठ है इस स्मारक (म्नैम) को बना दिया पर्मेनोन् के पुत्र सिदरिआस् ने अपने लिए एव पत्नी (गुनै) और पुत्र पुबिअलै के लिए। [1]

ΠΑΡΤΑΡΑΣ
ΑΟΗΝΑΙΗΙ

इतना ही विचित्र पॅर्गर्मान् का यह द्विभाषीय लुदिआई-यूनानी अभिलेख। दो ऊपरी पक्तियो के लुदिआई पाठ को दाई ओर से पढे (इसकी लिपि के 60 % अक्षर यूनानी पर आधारित है) और इसके नीचे यूनानी लिपि मे दो ही नाम **पर्तरस्** [ने] **अथैनयै** [के लिए] —अर्थात् लुदिआई पाठ के अनुसार— [इस ताच् (=मूर्ति / स्तम्भ ?) को बनाया है] । [2]

राजा अशोक की धर्मनीति की यूनानी अभिव्क्ति से तुलना करने के लिए वह यूनानी राजलेख अधिक महत्वपूर्ण है जो तौरुस पर्वतमाला के निमरूद-दाघ से सन् 1881 मे प्राप्त हुआ[3]। इसे कोम्मगैने राजक्षेत्र के राजा अन्तिओखोस्-प्रथम ने धर्मसमन्वय का राजधर्म घोषित करने के लिए सा०स०पू० 35 मे खुदवाया। धर्मलेख के पास ही ईरानी मिथ्र/मित्र और अन्य मिश्र दिव्य रूपो की उदभृत आकृतिया दिखाई देती हैं।

'महान राजा ईश्वर[4] धार्मिक देवस्वरूप (ऐपिफनैस्) रोमन-प्रिय एव यवन-प्रिय अन्तिओखोस ने यह लेख उत्कीर्ण किया (ॲन्-ॲग्रॅप्सॅन्) मै इस निष्कर्ष पर पहुचा कि मनुष्यों के लिए धर्म-भक्ति (ॲव्सेबॅय = धम्म)

(1) P DANIELS & W BRIGHT The World s Writing Systems p 284 " the only bilinguel with fully parallel texts " ईश्वरचन्द राही लेखनकला का इतिहास खण्ड 1 पृ०348 (2) ibid p 285 (3) A.WIKGREN Hellenistic Greek Texts Chicago 1958 p 137 F GRANT Hellenistic Religions The Age of Syncretism New York, 1953 pp 20 25
(4) सा०सा०पू०24 मे औगुस्तुस को थेओस् अॅक् थेओव् (god of god) की उपाधि दी गई अन्यत्र थेओव् हुयोस् (son of god) औगुस्तुस को बहुप्रयुक्त उपाधि 'कुरिओस' (lord) पसद नही थी - रोमन प्रजा अपने को दास-तुल्य न समझे !

न केवल सभी भली वस्तुओ में सब-से सुरक्षित सप्राप्ति वरन् सब-से मधुर सतुष्टि भी है । मैने धर्म-भक्ति को ही अपना न्याय-विधान (क्रिसिस) और सफल पराक्रम एव सुखद जीवन-निर्वाह का स्रोत मान लिया है। मेरे सम्पूर्ण आचरण से सब को ज्ञात है कि मैंने पवित्रता (हासिओतैस्) को अपने राज्य का सब-से विश्वस्त रक्षक और उसके अतुलनीय हर्ष का कारण ठहराया है । उन गुणो के बल पर मै अप्रत्याशित ढग से महासकटो मे बच निकला और सुगमता से दुस्साध्य कार्यों मे उद्यत रहा जिससे मै आनन्दपूर्वक दीर्घायु बना। अपने पिता से राज्यशासन प्राप्त कर मैने आत्मा की धर्मनिष्ठा से घोषित किया था कि मेरे राज्यसिंहासन के अधीन सम्पूर्ण राष्ट्र सभी देव-देवियो की सत्सगति का निवासस्थान हो। सुव्यवस्थित राज्य हेतु जो विधि-विधान सस्थापित हुए उनका नित्य पालन करना समझदार नागरिको का पुण्य कर्त्तव्य है । इससे वे न केवल मेरा आदर करेगे बल्कि उनके अपने सौभाग्य की हितकामना भी पूरी होगी । इसलिए ईश्वरीय प्रेरणा का अनुपालन कर मैंने आदेश दिया कि समस्त मानवता में पीढ़ी-दस-पीढ़ी पावन विधि के प्रवर्तन हेतु उसे पुनीत एव अक्षय पट्ट-स्तम्भो पर उत्कीर्ण किया जाए। इस विधि की उदघोषणा मेरे मुह से हुई अपितु ईश्वरीय उत्प्रेरणा से ही इसकी प्रामाणिकता सम्पन्न हुई ।

लगता है कोम्मगैनै के राजा के धर्मलेख मे अशोकीय अभिलेखो की गुप्त उत्प्रेरणा भी कार्यशील थी।

255 यूनानवाद के पूर्वी क्षेत्र मे उदाहरण EXAMPLES IN THE EASTERN AREA OF HELLENISM

यूनानवाद के विस्तार से पहले अखमेनी शासनकाल मे ही उसके पूर्वी क्षेत्र मे यूनानी अभिलेखन के छिट-पुट उदाहरण मिलते है। हम देख चुके है (दे० पृ० 246) कि परसेपोलिस से प्राप्त प्रलेखो मे कम-से-कम एक यूनानी लेख है । आसपास की खदानो मे खोदनेवाले मजदूरो ने कुछ यूनानी भित्ति-आरेख भी खीचे । सेल्यूकी शासनकाल मे यूनानी भाषा का आधिकारिक प्रवेश हुआ और इसका प्रयोग इतना प्रभावशाली रहा कि सेल्यूकियो से विद्रोह करनेवाले बख्त्रियो और पार्थियो ने अपने स्वराज्य मे भी इसे नही छोडा। रूसियो द्वारा उत्खनित स्थल नीसा (दे० पृ० 263) से कई शृगी प्याले प्राप्त हुए जिनपर यूनानी देवी-देवताओ के नाम अकित है। वे सा०स०पू० 3री सदी के मध्य के अर्थात पार्थियो के आरम्भिक दिनो के हैं । 4 5 सदियो के बाद भी सस्सानी सम्राट अर्दशीर-प्रथम (दे० पृ० 263) एव शापूर-प्रथम ने अपने त्रिभाषीय राजलेखो मे यूनानी का प्रयोग किया। दक्षिण बख्त्रिअ मे फ्रासीसियो द्वारा उत्खनित स्थल सुर्ख-कोतल से एक शिलाफलक मिला [1] जिसपर कुरूप यूनानी प्रवाही लेखनशैली मे 25 पक्तिया अकित हुईं।

---

(1) O VIENNOT India Pakistan and Afghanistan G CHARLES PICARD ed Larousse Encyclopedia of Archaeology New Jersey 1972 (Fr 1969) p 397 illustration p 374 excavations by D Schlumberger in Surkh Khotal 1953-57

इस लेख की भाषा मध्य-ईरानी / तोखारी है । इसका आरम्भ इस प्रकार है

> इस दुर्ग-टीला (यू० अक्रोपोलिस्) को कनिष्क विजेता (निकतोर्) का धर्म-स्थल कहा जाए क्योकि स्वामी राजा कनिष्क ने उसे अपना नाम दिया है ।

सम्भवत वर्ष 78 सा०स मे कुषाण राजवश का यह अग्निपूजा-स्थल प्रतिष्ठित किया गया।

यूनानी भाषा का प्रयोग सिक्को पर जारी रहा । अर्कासीदी शासको ने अपने सिक्को पर यवन-प्रिय (फिल्-अॅल्लैन्) की उपाधि रखने मे भी कोई आपत्ति नही की। कनिष्क ने धर्मसमन्वयात्मक भाव से किसी सिक्के पर बुद्धदेव का नाम यूनानी अक्षरो मे बोद्दो अकित किया[1]।

वास्तव मे अब तक हमने अपने अभिलेखीय सर्वेक्षण मे सिक्को पर कम ध्यान दिया है —यद्यपि आज यूनानी अभिलेखन के सर्वाधिक[2] एव

मूल्यवान उदाहरण सिक्को पर ही मुद्रित मिलते हैं। डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त के शब्दो मे[3]

> भाषा और लिपि की दृष्टि से इन सिक्को पर अकित द्विभाषिक आलेखो के उन दिनो जो भी मूल्य और महत्व रहे हो आज तो वे भारतीय अभिलेखिकी (epigraphy) और मुद्रातत्व (numismatics) के शोध की दिशा मे वरदान ही कहे जाएगे ।

मुद्राशास्त्र के अध्येता जानते है कि बख्त्रिअ के यूनानवादी शासक (बख्त्री-यवन) केवल एकभाषिक यूनानी सिक्का-लेख जारी करते थे जब कि लगभग सा०स०पू० 180 के बाद भारतीय-यवन अपने द्विभाषिक सिक्को के चित भाग (obverse) पर यूनानी भाषा एव लिपि का प्रयोग करते थे और पट भाग (reverse) पर स्थानीय प्राकृत भाषा और खरोष्ठी लिपि - अथवा कभी ब्राह्मी लिपि[4] का ।

---

(1) J VAN LOHUIZEN DE LEEUW The Scythian Period New Delhi 1995 (1949) p 108 - इस सिक्के के चित भाग मे आहुति देनेवाला शासक दिखाई देता है ।

(2) O GUILLAUME ed Graeco Bactrian and Indian Coins from Afghanistan Oxford 1991 p 3 "The Mir Zakah hoard comprises 13083 coins out of which 2757 are Graeco Bactrian or Indo-Greek

(3) *परमेश्वरीलाल गुप्त* **भारत के पूर्व कालिक सिक्के** , वाराणसी 1996 पृ० 107

(4) D C SIRCAR Studies in Indian Coins Delhi, 1968 p 8f "issuing bilingual and biscriptal coins R AUDOUIN & P BERNARD The Ai Khanoum coins" O GUILLAUME, op cit p 95 It seems therefore that in the first two centuries B.C Kharoshthi and Brahmi coexisted in the geographical area from Taxila to the Sutlej an observation which does not exclude for each of them an area of predominance viz the lands West of the Jhalumfor the former as evidenced by the edicts of Ashoka at Mansehra and Shabazghari. The Indo-Greek coinage of Agathocles is simply a reflection of this dialectical duality since alongside the series with a Brahmi legend it also comprises bronzes with Kharoshthi inscriptions

द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो के अध्ययन के लिए उन सिक्को का विशेष महत्व है क्योकि अशोक के अभिलेखो के प्राकृत प्रारूप का यूनानी रूपान्तर यूनानी-प्राकृत सिक्को से मिलाया जा सकता है । उद० अशोक महान् को यूनानी मे बसिलेंव्स् (राजा) कहा गया है जब कि भारतीय-यवन अंव्क्रतिदेस् को बसिलेंव्स् मेंगस् (प्रा० रज-महतक/मह-रज)[1]। धम्म के लिए अशोकीय यूनानी मे अंव्सेंबेय 'प्रयुक्त हुआ जब कि सिक्को मे प्राकृत ध्रमिक का यूनानी पर्याय दिकयॉस् है[2]। कुछ स्पष्ट छायाचित्र देखे

Βασιλέως
Ἀγαθοκλέους
रजिने अगथुक्लयेस
=राजा अगर्थॉक्लैस् का।[3]

Βασιλέως ἐπιφανους Πλάτωνος
(प्राकृत आलेख नहीं है)
=राजा (बसिलेंव्स्) प्लंतोन् का [सिक्का] जो
प्रकटित (ओपिफ़नैस्) [ईश्वर] है ।[4]
प्रसिद्ध प्रतापी ?

βασιλέως νικάτορος
Αμύντου
महरजस जयधरस अमितस
=राजा अमुंन्तस् का जो जयी (निकंतोर्) है।[5]

उन सिक्को मे यूनानी नामो को प्राकृत मे लिप्यन्तरित करने की पद्धति भी देख सकते है जब कि अशोक के द्विभाषीय अभिलेखो मे उलटा क्रम है प्राकृत शब्दो का यूनानी अथवा अरामी मे लिप्यन्तरण । अशोक की यूनानी लिपि से सबधित प्रश्नो के समाधान हेतु उन सिक्को से भी सहायता मिल सकती है (दे० अगले पुरालिपीय भाग मे)। सिक्को की अपनी भी समस्याए हैं जैसे भारतीय-यवन राजाओ के 40 नाम किस काल-क्रम मे रखे ? अधिक शोध-अनुसधान की आवश्यकता है। उद० भिन्न गुम्फाक्षर/नामचिह्न (monograms) समझाने मे ओ० बॉपेअरच्ची ने अच्छा प्रयास किया। उन्होने गुम्फाक्षरो की भिन्नता मे बड़ी

---

(1) दे० A.K.SRIVASTAVA, Catalogue of Indo-Greek Coins in the State Museum Lucknow 1989 pp 39-40 "Greek titles and Prakrit epithets" परमेश्वरीलाल गुप्त तत्रैव पृ०105 106 यू० "मेंगस् के बिना भी मात्र बसिलेंव्स् को प्राकृत की खरोष्ठी लिपि में मह रज किया गया लेकिन ब्राह्मी में रज । (2) D C SIRCAR op cit Plate XI 10 11 में कुषाणी सिक्का-लेख [सच]-ध्रम-ठिदस' (steadfast in the [True]Faith) का यूनानी पर्याय उपलब्ध नहीं है। कुछ अन्य समानान्तर रूप है सोतैर् // त्रतर निकंतोर् // जयत निकैफॉरॉस् // जयधर अ-निंकैतास् // अपरजित
(3) O GUILLAUME Pl IV A (4) A.SRIVASTAVA Pl II (5) A.K.NARAIN Pl V

कमी की और उन्हे विशिष्ट टकसाल एव भौगोलिक क्षेत्र से जोड़ा। भारत के यवन राजाओ के अन्त के सबध मे उनका मत है कि उसे सन् 10 20 सा०स० मे पूर्व पजाब के शासक स्त्रतोन्-द्वितीय की पदच्युति तक बढा सकते है[1]। लेकिन तब भी पश्चिमोत्तर भारत मे यूनानी सिक्का-लेखो की ढलाई तुरन्त समाप्त नही हुई और व्यापारिक मार्ग से यूनानी लिपि की अभिलिखित सामग्री पूर्व और दक्षिण भारत मे भी पहुच रही थी —उद० पाडिचेरी सग्राहलय मे प्रथम सदी सा०स० के मुद्राकित मृद्भाडो मे अरिकमेदु से प्राप्त बर्तन पर एक सुन्दर यूनानी अक्षर कप्प सुरक्षित है[2]।

26 अशोकीय यूनानी अभिलेखन के लिए निर्धारक परिणाम

DETERMINATIVE RESULTS FOR THE ASHOKAN GREEK INSCRIPTIONS

अरामी अभिलेखन का सर्वेक्षण करने के बाद हमे स्वीकार करना पड़ा कि अभिलेखन-क्षेत्र के पूर्वी सीमान्त पर इतनी दूरी पर और इतनी देरी से अशोकीय अरामी अभिलेखो की प्राप्ति बड़े आश्चर्य की बात है। परन्तु यूनानी अभिलेखन-क्षेत्र मे परिभ्रमण करने के पश्चात् हमे यह कोई अपवाद नहीं लग रहा है कि मौर्य काल मे भारत-उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर कोने मे कोई विस्तृत शुद्ध यूनानी लेख मिल जाए। उस क्षेत्र मे केवल तीन सदियो के बाद ही अपवाद के तौर पर और अशुद्ध विरूपता मे यूनानी भाषा के प्रयोग के कुछ उदाहरण मिलते है। कुषाणो का महाराजा राजाधिराज जनाधिप वीमा-कदफिसेज सम्भवत दूर पूर्व का अन्तिम सम्राट है जिसने यूनानी भाषा का आश्रय लिया अथवा दिया[3]। इसका साक्ष्य है वह एकभाषिक यूनानी सिक्का-लेख बसिलेव्स् बसिलेओन् सोतैर् मेगस् (राजाओ का राजा त्राता महान्)[4]

---

(1) O BOPEARACHCHI A new approach to the history of the Greeks in India Yavanika 1 1991 pp 8 20 लेखक हमे यूनानी सिक्को मे अधिक भारतीयकरण ढूढने मे सावधानी बरतने की शिक्षा देते है दे० idem " On the so-called earliest re presentation of Ganesa Athens Aden Arikamedu 1995 pp 45 74 (2) A.TCHERNIA Rome and India Archaeology alone ? ibid p 150 (3) इसके बाद कनिष्क ने यूनानी भाषा को छोड़ा यद्यपि उसे यूनानी लिपि का सहारा लेना पड़ा — दे० B.N MUKHERJEE Commentary RAYCHAUDHURI Political History of Ancient India p 726 "The fact that Kanishka I replaced Greek and Prakrit by Bactrian [middle Iranian] in his coin legends shows that to the Kushānas the language of Bactria was more important than other forms of speech used in the empire

(4) D C SIRCAR Pl XI 14

और द्विभाषिक यूनानी + प्राकृत सिकका-लेख बसिलेव्स // (खरोष्ठी) महरजस रजधिरजस सर्वलोग-ईश्वरस महीश्वरस त्रदरस [1] और वह त्रिलिपीय यूनानी + खरोष्ठी + ? शिलालेख जो अफगानिस्तान के दश्त-ए-नवूर मे प्राप्त हुआ [2]। अत कन्दहार मे सम्राट अशोक द्वारा प्रसारित एकभाषिक यूनानी और द्विभाषिक यूनानी-अरामी अभिलेखो की प्राप्ति अपने आप मे कोई अद्वितीय घटना नही है ।

सन् 1957 मे प्राप्त 'शर-इ-कुन के यूनानी-अरामी शिलालेख' और सन् 1963 मे प्राप्त कन्दहार के यूनानी शिलाखण्डलेख'' का परिचय ऊपर (पृ० 66 70 पर) दे चुके है । वास्तव मे शर-इ-कुन' और (प्राचीन) कन्दहार' एक ही प्राप्ति-स्थान के दो नाम है जिनका प्रयोग सुविधा के लिए ही किया गया है, ताकि कन्दहार के द्विभाषीय यूनानी-अरामी अभिलेख (= श०यू० + श०अ०) को कन्दहार के एकभाषीय यूनानी (= क०यू०) अथवा कन्दहार के एकभाषीय अरामी (= क०अ०) अभिलेखो से अलग उद्धृत किया जा सके [3]। एक और भ्रामक सयोग है कि कन्दहार के एकभाषीय यूनानी भग्न' शिलाखण्डलेख मे दो अशोकीय अभिलेखो —अर्थात् 12वे और 13वे मुख्य शिलालेखो— का (भग्नावस्था मे ही) यूनानी रूपान्तर उपलब्ध है। इस प्रकार हम <u>तीन अशोकीय यूनानी अभिलेख</u> गिन सकते हैं (काल-निर्धारण दे० पृ० 169)

1	<u>श०यू०</u> =12वैं चालू राज्यवर्ष (सा०स०पू० 254-253) का (सक्षिप्त/लघु) शिलालेख	14 पक्तिया	71 शब्द
2	<u>क०यू०$_{क}$</u>=14वैं वर्ष (सा०स०पू० 251-250)[या कुछ बाद]का (12वा मु०)शिलाखण्डलेख	10 1/2 प०	114 शब्द
3	<u>क०यू०$_{ख}$</u>= " " " (13वा मु०) "	11 1/2 प०	136 शब्द
		36 प०	321 शब्द

(1) D C SIRCAR Pl XI 12 13 महेश्वर को शिव-भक्त का अर्थ दिया गया है ? (2) दे० B.N MUKHERJEE,<u>op cit</u> p 718 The third section of the document written in an undeciphered script [a combination of Aramaic Greek and Kharoshṭi letters] and in an unknown language (?) is apparently datable to the Kushāna age

(3) नरेशप्रसाद रस्तोगी के सस्करण मे (<u>Inscriptions of Asoka</u> Varanasi 1990) तीनो को शर-इ-कुन (कन्दहार) से प्राप्त कहा गया है परन्तु प्राप्ति-स्थान मे भी कुछ अन्तर सुझाया गया 1 (श०यू०+श०अ०) bilingual rock-edict discovered in the vicinity of the ancient city of Alexandria 2 (क०यू०) engraved on a neatly dressed rectangular block of porous limestone discovered in front of a small Muslim shrine (sic !) in the ruins of Old Kandahar appears to have been part of a Buddhist monument " 3 (क०अ०) inscription on a piece of limestone rock found at Shar i kuna the ruined city of ancient Kandahar "

कन्दहार के दोनो लेख अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है क्योकि उनमे प्रति पक्ति औसत 11 शब्द ही है जब कि शार-इ-कुन के लेख की एक-एक पक्ति मे केवल 5 मिलते हैं। फिर भी द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो के इस शोध-अध्ययन के लिए द्विभाषीय शर-इ-कुन अभिलेख का उपरला यूनानी खण्ड अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि क० यू०$_{क+ख}$ (अर्थात मुख्य शिला० 12+13 के यूनानी रूपान्तर) के लिए प्राकृत प्रारूप उपलब्ध है फिर भी श०यू०+ श०अ० मे अन्य अशोकीय अभिलेखो की अभिव्यक्तियो का सारतत्व समाहित है (समान विचारो के लिए लघु शिला० 1 पृ० कलिग शिला० 2 और मुख्य शिला० 1,4,6,7,8,10 11 13 का उल्लेख किया जा सकता है)। इसके अतिरिक्त प्रो० डी०सी० सरकार ने श०यू०+श०अ० का प्राकृत अनुवाद प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया [1]।

कन्दहार मे यूनानी अभिलेखो की प्राप्ति से मौर्यकाल की इतिहास-रचना की पुष्टि होती है कि अरखोसिअ का केन्द्रीय क्षेत्र निस्सदेह अशोक के साम्राज्य मे सम्मिलित था । स्वाभाविक है कि योन-प्रदेश मे प्रज्ञापित होने के कारण यवनो के लिए प्रसारित धर्म-लेख का यूनानी पाठ उपरले खण्ड मे प्रथम स्थान पर ही अभिलिखित हुआ हो। यवनो के लिए क्यो , आज के शोधको के लिए भी स्वर-सहित यूनानी लिपि की प्राथमिकता है , क्योकि वह अरामी व्यजन-लिपि से स्पष्टतर है और यूनानी पाठ की उसी सुगमता से अरामी पाठ का अर्थनिर्धारण निश्चित हो जाता है । यूनानी पाठ मे सदिग्ध अक्षर भी नहीं के बराबर हैं और उन्हे आसानी से पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

विचारणीय है कि साम्राज्यिक अरामी का प्रयोग कर प्रियदर्शी अशोक ने भूतपूर्व अख़मेनी प्रशासन की क्षेत्रीय लिपिकीय परम्परा को ही बनाये रखा , परन्तु कोंज़ै यूनानी लोकभाषा अपनाकर उन्होने न केवल अपनी प्रजा मे सम्मिलित स्थानीय यूनानी-भाषाभाषियो पर प्रिय दृष्टि रखी वरन् पड़ोसी सेल्यूकी साम्राज्य की जनता की ओर भी सद्भाव का हाथ बढ़ाया[2]। और इस पर भी ध्यान दे कि उन्होने अभिलेखो के काल-क्रम के आरम्भ मे ही यह

---

(1) दे० *राधकुमुद मुखर्जी* अशोक , पृ० 234 पर यूनानी एव अरामी पाठ का एक-एक पक्ति समानान्तर प्राकृत अनुवाद।

(2) दे० F ALTHEIM & R STIEHL The Aramaic version of the Kandahar bilingual inscription of Aśoka East & West 9 1958 p 192 It was a surprise to find the language of the Western conquerors among those employed by Aśoka

सार्वभौम प्रेमभाव दिखाया । इससे मालूम होता है कि अशोक ने अपने हृदय-परिवर्तन के आरम्भिक दिनो से धर्मचक्र-प्रवर्तन का बहुजनीय उद्देश्य समझ लिया था। इस शुभ प्रचार-कार्य के लिए उन्होने श्रेष्ठ अनुवादक को लगाया जो यूनानी सस्कृति से सुपरिचित था और उत्तम कलात्मक ढग से अपने अनुवाद को मौलिक[1] साहित्यिक रचना का रूप दे सके । यह कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि उस अनुवाद के अभिलेखीय माध्यम से अशोक ने आरम्भिक यूनानवाद की जगत् मे धर्म-दर्शन की एक नई कड़ी जोड़ दी। अब तक किसी शासक ने सार्वजनिक उत्कीर्ण-लेख मे इतनी विनम्र पश्चात्तापी वाणी से आत्माभियोग नहीं लगाया,न किसी ने यूनानी 'ऑव्सेबॅय' की धर्म-भक्ति की इतनी उदारचित व्यावहारिक परिभाषा प्रस्तुत की

" प्रेर्पय् दे अल्लैलॉव्स् थव्मॅज्य्	*हम एक-दूसरे की अच्छाई ही देखे*
कय् तु अल्लैलोन् दिदॅग्मत परदेॅखॅस्थय् "	*और एक-दूसरे के धर्मानुभव से सीखे ।*

उस काल की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे अशोक शान्ति के अग्रदूत सिद्ध होते है। उन्होने ठीक ही पहचान लिया था कि शान्ति की नीव अध्यात्म और अहिसा पर आधारित धर्म ही हो सकता है। अशोक ने जिन आदर्शों की स्थापना की थी उनकी प्राप्ति के लिए ससार अभी तक सघर्ष कर रहा है [2] ।

(1) B.N MUKHERJEE,op cit p 608 We do not have full literal translations of the relevant portions of the Prakrit edicts The same subject matter is often expressed in one way in a part of the Prakrit text and in another (more abridged expanded direct or involved) manner in the corresponding portion of the Greek inscription"

(2) राधाकुमुद मुखर्जी तत्रैव , पृ० 237 ।

3 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो का पुरालेखीय अध्ययन

PALAEOGRAPHIC STUDY OF THE BILINGUAL ASHOKAN INSCRIPTIONS

30 तृतीय भाग का आरम्भ BEGINNING THE THIRD PART

द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो के प्रस्तुत शोध-प्रबध के प्रथम भाग मे उनके ऐतिहासिक-सास्कृतिक सदर्भ का अवलोकन करने के बाद और द्वितीय भाग मे उनके अभिलेखीय परिवेश मे उनके पुरालेखीय स्वरूप को पहचानने के बाद अब उन अभिलेखो मे प्रयुक्त द्विलिपियो पर पैनी वैश्लेषिक दृष्टि डाले — मानो हम अपनी तीसरी आख अपनी **प्रज्ञा चक्षु** ही खोले ।

अक्षर-ज्ञान के बिना आमने-सामने के लिपि-पट्ट की ओर ध्यानपूर्वक ताकने पर भी अबोध दर्शक सु-बोधी दर्शी नही बन सकती/सकता है क्योकि वह बाह्य सकेत-चिह्नो का प्रदर्शन तो अनुभव करती/करता है पर साकेतिक अर्थ का सदर्शन प्राप्त करने मे असमर्थ है। इसलिए अशोक के द्विभाषीय अभिलेखो मे अभिव्यक्त सदेश को पढ सकने के लिए हमे उनके उत्कीर्णन का पुरालिपीय विवेचन करना होगा । पहले से पुरा-लेखीय अध्ययन करने से अभिलिखित सामग्री तैयार परोसी हुई है जिसका ग्रसन करने मे देरी नही होगी । उस सुविधा का सुविधिपूर्ण लाभ उठाने के लिए पुरालिपि के सिद्धातो को ठीक से जानना और लागू करना चाहिए ।

31 पुरालिपीय उपागम PALAEOGRAPHIC APPROACH

पुरालिपि-शास्त्र अर्थात् प्राचीन लिपि (यू० पलय ग्रफै) का अध्ययन [1] पुरालेख-शास्त्र का अभिन्न अग है। साधारणत केवल उस लेखनाधार पर ध्यान दिया जाता है जो स्याही से अभिलिखित हो [2]। लेकिन

---

(1) पुराकालीन लिपियों का उत्पत्ति, विकास ध्वन्यात्मक मूल्य प्रयोग रग या स्याही तथा लेखनाधार आदि की दृष्टियों से अध्ययन (*भोलानाथ तिवारी* **भाषाविज्ञान कोश**, 1964)। (2) Palaeography = the study of texts inscribed on (usually) flexible surfaces usually with ink" Epigraphy = the study of texts inscribed on hard surfaces usually by in cising (P DANIELS & W BRIGHT eds The World s Writing Systems Oxford 1996)

जाने-माने पुरालिपिज्ञ जे० नार्वे [1] विशेषकर सामी (समिटिक्) लिपियो के विषय मे अपने पुरालिपीय विश्लेषणो मे सभी प्रकार के अभिलेख सम्मिलित कर देते है । इतिहास-लेखन की सहायिका के रूप मे पुरालिपि-विद्या का मुख्य प्रयोजन अतिथिक (undated) अभिलेखो का काल-निर्धारण करना ही है । यदि उनमे अब तक कोई अपाठ्य लेखन है तो तुलनात्मक पुरालिपि की सहायता से अस्पष्ट अक्षर पहचानने का प्रयत्न किया जाता है । अब पुरालिपि-शास्त्र के उन दो प्रमुख उद्देश्यो को द्विभाषीय अशोकीय अभि-लेखो पर लागू करने की आवश्यकता प्राय नही रह गई है। उन अभिलेखो की अन्तर्वस्तु से निश्चित हो चुका है कि वे अशोकीय अभिलेख ही है । फिर कम-से-कम यूनानी पाठ की लिपि अत्यन्त स्पष्ट है तथा अरामी पाठ की समस्या अस्पष्ट लिपि की इतनी नही है जितनी व्यजन-अक्षरो मे अभिव्यक्त शब्दार्थ सन्देश के मूल पाठ को स्थापित करने की है।

फिर भी पुरालिपि-शास्त्र का महत्व यहा कम नही है क्योकि तिथि एव लिपि के निर्धारण के साथ उस सास्कृतिक सदर्भ को अवधारित करना है जिसमे मूल अभिव्यक्ति का अवतारण हुआ [2]। एक-एक अक्षर मे मानवीय वृत्ति-कृति की झलक है जिसके विकास-क्रम की रूपरेखा मे एक-एक चरण का अपना मानवीय रेखा-रूप है। यह मात्र सयोग अथवा भौतिक उपयोकिता की बात नही है कि अशोक ने चार भिन्न लिपयो का प्रयोग किया — सर्वाधिक ब्राह्मी फिर खरोष्ठी और तब जहा तक उपलब्ध सामग्री से आका जा सकता है अरामी और यूनानी लिपि। बोनेवाला एक ही है भूमि एक ही है और जलवायु भी एक ही है , किन्तु यदि बीजाकुर भिन्न है क्या फूल-पौधो के रूप-रंग की महक मे अन्तर नहीं होगा ?

---

(1) J NAVEH Early History of the Alphabet An Introduction to West Semitic Epigraphy and Palaeography Jerusalem 1982 p 6 Palaeography is considered to be the study of ancient scripts which traces the development of letter forms so that documents (both inscriptions and manuscripts) may be read correctly and if necessary dated Epigraphy on the other hand is defined as the study of the written sources which archaeology has revealed If we adopt the latter differentiation it is often difficult to draw a clear line between epigraphy and palaeography

(2) J NAVEH The Development of Aramaic script Jerusalem 1970 p 64 Historians expect palaeographers to establish dates for undated written historical resources But is this the palaeographer s sole obligation to the study of history ? Language and writing are a prime means of cultural expression Ancient inscriptions offer us data on human culture the extraction of which is the task of the palaeographer

पुरालिपि-शास्त्र की अपनी विशिष्ट पद्धति है। भारतीय पुरालिपि मे भी उस विद्या की उपागम-प्रणाली की अवहेलना नही की जा सकती है , लकिन उससे सबधित प्रकाशनो मे [1] लिपि की उत्पत्ति ओर उसके स्पष्टीकरण एव विकास-वर्णन मे अधिक रुचि है । प्राविधिक सिद्धातो व प्रक्रियाओ पर कम प्रकाश डाला गया है । इस शास्त्र को एक अनुपयुक्त विज्ञान समझने लगे जिसमे अनुसधान नही किया जाता है वरन् केवल किसी लेख के सप्राप्तिकर्ता एव उसके पथम प्रकाशक के अनुमान का अनुकरण करने मे परम सतोष लिया जाता है। वास्तव मे यह कष्टमय साधना है जो अध्ययन-कक्ष मे बैठकर सिर्फ पृष्ठ उलटने तक सीमित नही रहती है। प्रो० नॉर्मन् हमे सचेत करते है कि प्रतिछाया के आधार पर निष्कर्ष न निकाले बल्कि यथासम्भव यथास्थान पर मूल लेख का निरीक्षण करे [2]। प्राचीन लिपिकीय परम्पराओ का भी ज्ञान होना चाहिए उद० पी० डैनिअॅल्स ने मिस्र के अरामी पटेरपत्रो मे ढूढ निकाला कि लिपिक अक्षर लिखते समय कहा-कहा कलम उठाता था और किस दिशा मे स्याही की रेखा खीचता था [3]। भाषा और लिपि के अन्तर का भी ध्यान रखना चाहिए उद० यदि कोई लेख लिपि-विकास के किसी काल और स्थान मे अरामी लिपि मे लिखा गया हो तो यह सिद्ध नही होता कि अरामी भाषा का भी प्रयोग किया गया हो [4]।

---

(1) उद० *गौरीशकर हीराचद ओझा* **भारतीय प्राचीन लिपिमाला** नई दिल्ली 1971 (1918 1894) *जार्ज ब्यूलर* (GEORG BUHLER), **भारतीय पुरालिपि-शास्त्र** दिल्ली 1966 (1896) *राजबली पाडे* **भारतीय पुरालिपि** इलाहाबाद 1978 *एस०एन० राय* **भारतीय पुरालिपि एवं अभिलेख** इलाहाबाद 1994 ।

(2) One problem which bedevils inscriptional studies and Aśokan studies no less than any other field is that what is legible on one set of photographs may for various reasons including perhaps the skill of the photographer the lightning the shadow etc be doubtful or even completely illegible on another "(K.R NORMAN quoted in I K.SARMA & J V RAO Early Brahmi Inscriptions from Sannati New Delhi 1993 p 9) दे० अश्व-मुहर के फोटो के आधार पर अनाधारित अनुमान कि सैधव लिपि का स्पष्टीकरण किया गया हो M WITZEL Horseplay in Harappa Frontline 13 Oct 2000 horse seal created from a computer distortion of a broken ' unicorn bull seal Any suggestion that the seal represents a whole animal evaporates as soon as you see the original फिर भी सगणना या कम्प्यूटर के इस युग मे पुरालिपिविद को अध्ययन के नये उपकरण मिलते रहते है -- दे० H K. ANSURYA. " Computers to assist archaeologists decypher scripts', The Times of India Bangalore 5 12 97 While processing data on Maski inscriptions it was possible to isolate some hidden characters which were hitherto unknown (3) P DANIELS A calligraphic approach to Aramaic paleo graphy Journal of Near Eastern Studies 43 1984 p 68 Photographs are no substitute for the study of originals Paleographers must themselves become familiar with the tools and methods of the scribes whose work they study
(4) J NAVEH op cit p 127 The classification of the scripts does not entirely parallel that of the dialects A western dia lect could be written in an eastern Aramaic and vice versa Samaritan Aramaic was not written in Aramaic but in the Samaritan script which is a direct offshoot of the Hebrew script

हाल ही मे लिपि-शास्त्र के व्यापक अर्थ मे विश्व-लिपियो के सबध मे एक ठोस सकलन प्रकाशित हुआ **'विश्व की लेखन पद्धतिया** (The World's Writing Systems[1],1996) जिसमे लिपियो के वर्गीकरण की नवीन पद्धति अपनायी गयी है। इसके फलस्वरूप **अक्षर कथा** (*गुणाकर मुले* 1972) और **लेखनकला का इतिहास** (*ईश्वरचन्द्र राही* 1983) -जैसी सराहनीय रचनाओ को शायद नये सिरे से प्रस्तुत करना होगा। यदि 'लेखन-पद्धति की भिन्नता पर ध्यान दिया जाए तो ऐसे बहुत-से सवेगात्मक प्रश्न अपने-आप महत्वहीन हो जाते है कि किस लिपि-वर्ग को प्राथमिकता दी जाए अमुक लिपि-शाखा की जननी कौन है और कौन-सी लिपि किस लिपि से उत्पन्न हुई ? नई प्रस्तुति इस प्रकार है

विभिन्न लेखन-पद्धतियो मे मेसोपोतामिया की कीलाक्षर पद्धति (क्यूनिइफॉर्म्) का आधार वह शब्दाक्षरिक (लॉगो-सिलैबिक्) लेखन है जो लगभग सा०स०पू० 3200 से सूमेरी भाषा के लिए अपनाया गया। इसे लगभग सा०स०पू० 2500 मे उत्तर एव मध्य मेसोपोतामिया की अक्कादी भाषाओ और सीरिया की कनानी भाषा के लिए अनुकूल कर दिया गया। एक दूसरी पद्धति (जो कीलाक्षर-पद्धति से प्रभावित भी हो सकती है) मिस्री पद्धति है जो हायरोग्लिफिक् (यू० हिऐरो-ग्लुफिकै = पवित्र उत्कीर्णात्मक [लिपि]) कहलाती है। सा०स०पू० 3000 से विकसित वह मूलत शब्द-व्यजनात्मक (लॉगो-कॉन्सनैण्टल्) चित्र-लेखन है। अन्य प्राचीन लेखन-पद्धतिया मध्य-अमेरिका और चीन की है और कुछ लिपिया है जिनका रहस्योद्घाटन अब तक पूर्ण सतोषजनक ढग से नही हुआ। लेकिन हमारे अध्ययन के लिए तीन शेष पद्धतिया महत्वपूर्ण है जो विश्व-स्तर पर भी परम उपयोगी सिद्ध हुई [2]

1 शुद्ध व्यजन पद्धति (**अरामी** लिपि मे प्रयुक्त) ,
2 स्वरमात्रा-सहित व्यजन पद्धति (**खरोष्ठी** एव **ब्राह्मी** लिपियो मे प्रयुक्त) और
3 स्वर-व्यजन पद्धति (**यूनानी** लिपि मे प्रयुक्त) ।

निम्न पुरालिपीय अध्ययन मे हम द्विभाषीय / द्विलिपीय अशोकीय अभिलेखो मे प्रयुक्त दो लिपियो पर विशेष ध्यान देगे प्रधानत अरामी तब यूनानी लिपि , परन्तु उन लिपियो मे लिप्यन्तरित प्राकृत शब्दो के कारण हम बीच मे खरोष्ठी एव ब्राह्मी लिपियो का भी थोड़ा विवेचन करेगे (बहुधा उनकी भारतीय उत्पत्ति का प्रश्न उठाया जाता है।) । इस तृतीय भाग के ये ही तीन मुख्य उपभाग होगे ।

---

(1) PETER T DANIELS & WILLIAM BRIGHT eds Oxford University Press 1996 xlv + 920 pp

(2) पी० डैनिर्अल्स् उन लेखन-पद्धतियों को क्रमश अरबी वर्णमाला के आरम्भिक अक्षरों के अनुसार ABJAD (which denotes only consonants) इथियोपिआई वर्णमाला के आरम्भिक अक्षरों के अनुसार ABUGIDA (whose basic characters denote consonants followed by a particular vowel and in which diacritics denote the other vowels) और यूनानी वर्णमाला के आरम्भिक अक्षरों के अनुसार 'ALPHABET" (which denotes consonants and vowels) नाम देते हैं।

32 अरामी लिपि के बदलते स्वरूप और उसका अशोकीय आकार

CHANGING SHAPES OF ARAMAIC SCRIPT AND ITS ASHOKAN FORM

इस पुरालिपीय अध्ययन मे हमे योन-कम्बोज क्षेत्र के लिए अशोक द्वारा प्रयुक्त अरामी लिपि के विशिष्ट आकार —अथवा आकारो ?— को ठीक-से अवस्थित करना होगा क्योकि कोई भी लिपि कालातर मे अपने स्वरूप बदलते रहने से ही दीर्घकालिक बन सकती है। लेकिन यदि हम किसी विशेष कालावधि मे उसका विशिष्ट आकार ठीक-ठीक पहचानने की कोशिश नही करे तो पाठ के अर्थनिर्धारण की अटकले लगाने मे ही चक्र काटते रहेगे ।

321 अरामी लिपि का प्रादुर्भाव THE EMERGENCE OF THE ARAMAIC SCRIPT

प्राचीन अरामी लिपि स्वर-रहित व्यजनात्मक थी और बनी रही , वह पड़ी रेखा मे दाई ओर से आरम्भ कर बाईं ओर को लिखी जाती है। निश्चित रूप से वह सा०स०पू० 9वी सदी मे अराम देश मे ही प्रयुक्त हो रही थी। इससे पहले अरामी भाषा के लिए फेनीकी लिपि का प्रयोग होता रहा । दोनो फेनीकी और उससे आविर्भूत अरामी लिपियो की जड़ आदि कनानी (प्रोटो-केननाइद्) मानी जाती है [1] जो शुद्ध व्यजनात्मक लेखन-पद्धति का प्रथम चरण (सा०स०पू० 2000-1500) ही है ।

सन् 1904 मे मिस्र देश के सीनय प्रायद्वीप की खानो मे कुछ अभिलेख प्राप्त हुए जिनके कुछ सकेत-चिह्न मिस्री चित्र-लेखन से सन्निकट हैं । वास्तव मे वे चित्र-स्वन (ऐक्रोफनी) के सिद्धात के अनुसार एक-एक चित्रित शब्द के केवल आरम्भिक स्वन के सकेत है अर्थात् केवल व्यजन ही हैं। अत आदि-सीनयी ' (प्रोटो-साइनयिटिक्) कहलानेवाली लिपि के उन चिह्नो मे व्यजन-पद्धति अपनायी गयी है ।

---

(1) यही पुरालिपिविदों की सामान्य प्रस्तुति है , उदा० दे० J NAVEH op cit G R DRIVER Semitic Writing From Pictograph to Alphabet Oxford 1976 (1944 rev by S HOPKINS) D DIRINGER The Story of the Aleph Beth New York, 1960 H JENSEN Die Schrift in Vergangenheit und Gegenwart Berlin 1969 H GRESSMANN Altorientalische Texte und Bilder zum Alten Testamente Tubingen 1909 pp 172 174 Nordsemitische Inschriften S WARNER The alphabet an innovation and its diffusion " Vetus Testamentum 30 1980 pp 81 90 M O CONNOR Epigraphic Semitic Scripts " The World s Writing Systems pp 88 107 etc

क्या आदि-कनानी लिपि उस आदि-सीनयी लिपि से उत्पन्न हुई ? स्पष्ट नही है क्योकि प्राचीन कनान क्षेत्र से नये प्रमाण मिलने लगे जो आदि-सीनयी लेखो से भी आदि है ऐसा लग रहा है कि खान के कनानी मजदूरो ने ही वे लेख लिखे थे[1]। अत सीनयी लेखो को दक्षिणी आदि-कनानी के अन्तर्गत मान सकते है उदाहरणार्थ [2]
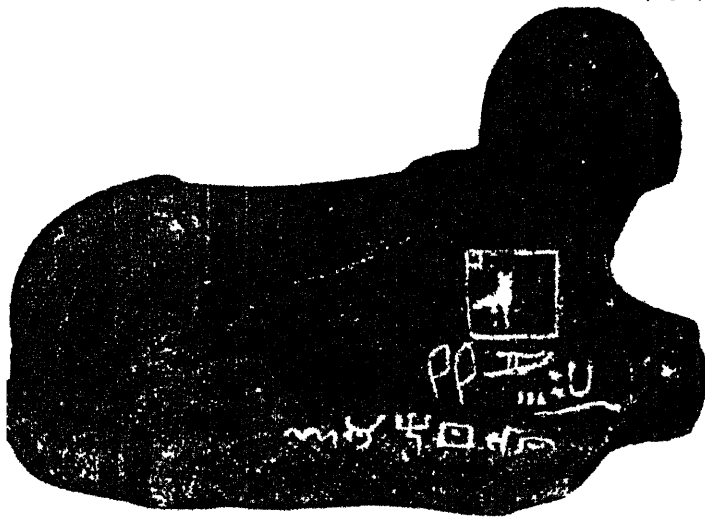
उत्तर-कनान के उगरीत मे कीलाक्षरो द्वारा ही व्यजन-पद्धति को लागू करने का प्रयास किया गया एक मृद्-फलक प्राप्त हुआ जिसमे 14वीं सदी के किसी लिपिक-शिष्य ने बाए से आरम्भ कर क्रमबद्ध 29 अक्षरो की माला बनायी [3] उद० → अ् ब् ग् प् स् क् र् ट्

अन्तत लगभग सा०स०पू० 1100 मे फेनीके के व्यापारी 22 व्यजनो से अपने कारबार का लेखा-कर्म चलाने मे सफल हुए , क्योकि उस फेनीकी नव-लिपि को सरलता से पटेरपत्र पर भी घसीट मे लिख सकते थे । पड़ोसी इस्राएली उसी को अपनी प्राचीन इब्रानी भाषा के लिए काम मे लाए (दे० सा०स०पू० 900 मे अभिलिखित गेजेर का पचाग-लेख) और मोआबियो ने भी उसे अपनाने मे देर नही की (दे० वर्ष 842 मे विजयी राजा मेशा का हर्ष-लेख)[4]
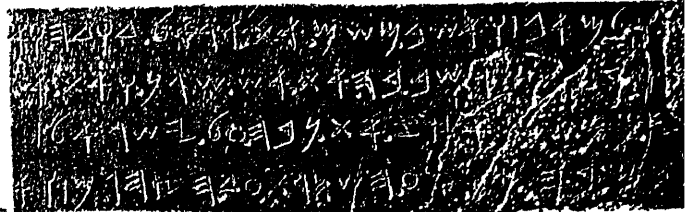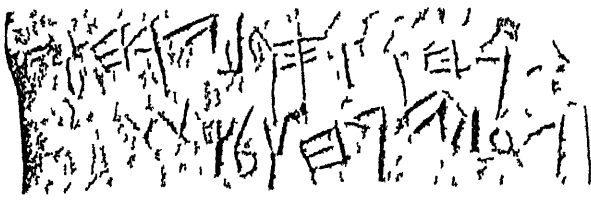
(1) दे० J SEGER " The Gezer jar signs new evidence of the earliest alphabet C MEYERS & M O CONNOR eds The Word of the Lord shall go forth Eisenbrauns 1983 pp 477-481 B COLLES "The proto-alphabetic inscription of Sinai " Abr Nahrain 28 1990 pp 1-52 written by people brought to the Sinai from Canaan as prisoners to work

(2) Louvre Museum Sphynx from Sinai 1700 B C E. PRITCHARD ANEP p 84 Nr 270 on a statue from Serabit el Khadem

(3) R BORDREUIL La Syrie et l alphabet Le Monde de la Bible 20 1981 pp 38-42 abecedarian Ras Shamra 12 63

(4) कुछ पक्तिया ANEP Nr 272 The Gezer calendar in Palaeo Hebrew script Louvre Museum Mesha monolith in Moabite script

आदि-कनानी से आरम्भ होनेवाली व्यजन-पद्धति से यूनानी व्यापारियो ने भी लाभ उठाया परन्तु अपनी यूनानी स्वभाषा के लिए उसे स्वर-सहित पद्धति मे बदलकर (दे० आगे उपभाग 34) उन्होने आधुनिक विश्व की प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय पद्धति की नीव डाली। दूसरी ओर अराम देश के निपुण लिपिकारो ने फेनीकी को वह आदर्श अरामी रूप दिया[1] जो प्राचीन विश्व के एक विस्तृत भूखण्ड की सम्पर्क-लिपि का माध्यम बना । इस प्रकार एक ही आदि-कनानी पृष्ठभूमि से उन दो अभारतीय लिपियो यूनानी एव अरामी का उद्भव हुआ जो भारत-भूमि के प्रियदर्शी राजा द्वारा विश्व-प्रेम-धर्म के बहुभाषीय प्रसार हेतु प्रयुक्त हुई

---
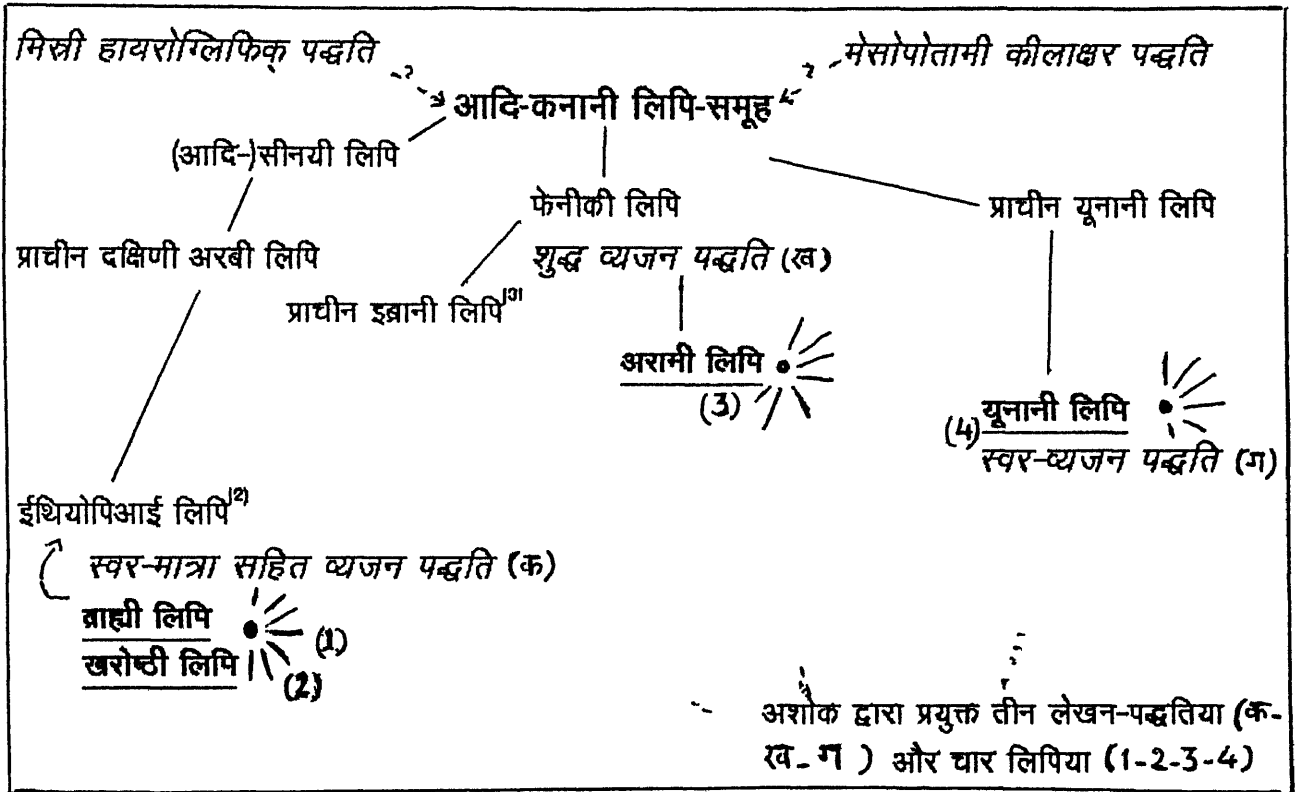
(1) दे० K.LUKE The Arameans their history and culture Christian Orient 6 1985 p 19 "There is one sphere in which the Arameans surpassed all the other peoples of the East namely the art of writing They took over the Phoenician script which from the aesthetic point of view left much to be desired and converted it into an elegant square form of writing Aramaic became a lingua franca and the alphabet was taken up by the different peoples of the East the Syrians the Arabs the Persians and even the Indians

(2) ईथियोपिआई की व्यजनात्मक लिपि मे सम्भवत भारतीय लिपि के प्रभाव से स्वर-मात्रा सहित व्यजन-पद्धति अपनायी गयी — दे० P DANIELS "The first civilizations The world s Writing Systems p 28 In the east marks for the vowels of Prakrit were added to the consonant letters to produce the Indic abugida In Ethiopia over a millennium later a similar device was introduced to vocalize the inherited version of the Semitic abjad' There must have been some contact however ephemeral with the Christian community of western India established in legend by the apostle Thomas himself"

(3) लेकिन बाद मे इब्रानी भाषा लिखने के लिए अरामी लिपि अपनायी गयी — दे० D DIRINGER The royal jar handle stamps of ancient Judah " The Bible Archaeologist 12 1949 p 71 The modern Hebrew script derives from the Square Hebrew writing which was a descendant of the Aramaic alphabet and was into Israel in post-exilic times but in the course of time it replaced the Early Hebrew script, while Aramaic replaced the Hebrew tongue in daily use

यद्यपि सा०स०पू० 8वीं सदी मे अरामी लिपि अराम राज्य मे अपना विशिष्ट रूप धारण कर चुकी वह शीघ्र अपनी सहज रेखा व लेखा के कारण असीरियाई साम्राज्य मे फैलने लगी। लिपि सीखनेवालो के लिए अरामी भाषा का ज्ञानार्जन भी अनिवार्य था जो व्यापक साम्राज्यिक सम्पर्क-भाषा का दरजा प्राप्त करने लगी (दे० पृ० 90) । इस प्रक्रिया मे लिपि मानो अपना व्यक्तिगत चेहरा खोकर भावशून्य हो गई एक ही कालावधि मे किसी भी क्षेत्र मे लिपि की प्राय एकरूपता थी और लेखन-शैली के नये रूप केवल प्रमुख लिपिकीय परम्परा मे स्वीकृत होने पर ही स्थायी बन सकते थे । फिर भी स्वाभाविक है कि अश्मोत्कीर्णन की शैली प्राय अपरिवर्तनीय थी , किन्तु पटेरपत्रो अथवा मृद्पट्टो पर लिखते समय लिपिक अपना कला-कौशल दिखा सकते थे। अत अश्मोत्कीर्णन की लिपि मे क्षेत्रीयता का अभाव और दीर्घ लिपिकीय परम्परा का प्रभाव ये दो सिद्धात है जो अशोक के अरामी अभिलेखो की लिपि का विश्लेषण करने मे सहायक हो सकते है। अभिलेखन-स्थान या अभिलेखन-काल मे विभिन्नता हमे अभिलेखो की तुलना करने से नहीं रोक सकती। उद० जेनजिर्ली से प्राप्त राजा बर-रक्कब के अभिलेख (पृ० 219) मे प्रयुक्त अक्षर और 100 वर्षों के बाद नेराब की अन्त्येष्टि-पट्टिका (पृ० 227) पर अभिलिखित अक्षर क्या वे एक-समान नही दीखते ? ←
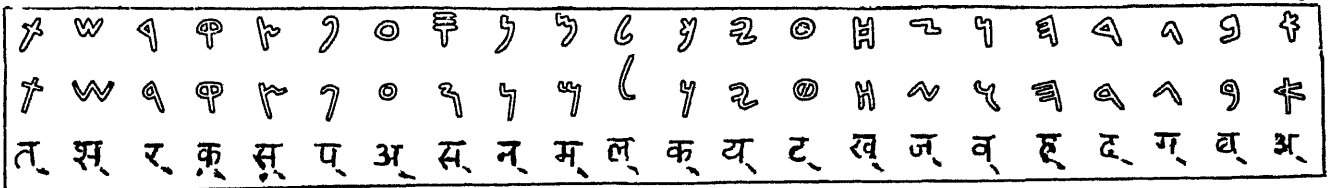
त् श् र् क़् स़् प् अ् स् न् म् ल् क् य् ट् ख् ज् व् ह् द् ग् ब् अ्

322 अश्मोत्कीर्ण शैली मे आकार-बद्ध प्रवाही शैली के अक्षर-रूपो का प्रवेश

LETTER SHAPES OF FORMAL CURSIVE STYLE ENTERING THE LAPIDARY STYLE

अरामी अभिलेखन के पथम चरण (न० 231) से केवल राजकीय प्रस्तर-लेख उपलब्ध हैं , हमात के ईंट लेखो (न० 231 9) को छोड़ वे सब अश्मोत्कीर्ण शैली के उदाहरण है। द्वितीय चरण (न० 232) के मृत्तिक फलको मे घसीट या प्रवाही लेखन के स्पष्ट आसार हैं उद० अश्शूर के मृत्तिकाफलक-लेखो (पृ०225) मे बेथ् (ब्) 9 → 4 दालॆथ् (द्) 4 → 4 और रेश् (र्) 9 → 4 के ऊपरी सिर खुल गए ।

अरामी अभिलेखन के तृतीय चरण मे अर्थात् स०स०पू० 5वी – 4थी सदी मे जब फारसी साम्राज्य की साम्राज्यिक अरामी भाषा का श्रेण्य रूप शोभायमान था पत्रात्मक लेखन की बहुवृद्धि हुई (न० 233 क)। व्यावसायिक लिपिक एक-ही आकार के अक्षर उतारने मे अभ्यस्त थे और विशेषकर सरकारी पत्राचार के लिए औपचारिक घसीट-शैली का प्रयोग करते थे। अलेफन्तिनै के लिपिक सामान्य अदालती अथवा घरेलू आवश्यकताओ के लिए भी स्थायी अक्षर-रूपो को लिखते थे —चाहे किसी स्वप्न के कारण अपनी उलझन का वर्णन करने के अवसर पर क्यो न हो जैसे निम्न ठीकरे के दोनो ओर प्रयुक्त अर्ध-औपचारिक रूप मे[1]
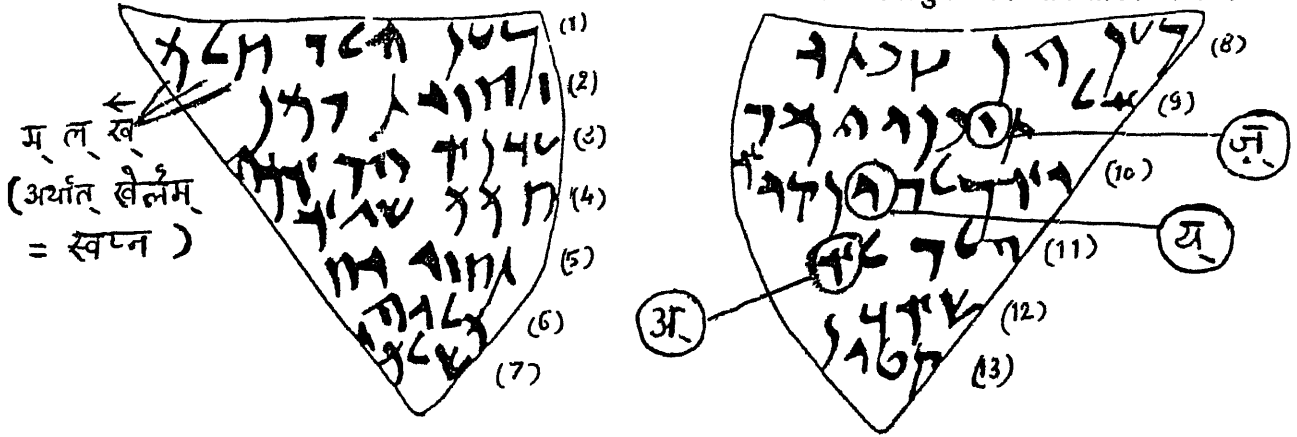
यदि हम विकास के उसी तृतीय चरण मे सस्मरण एव समर्पण लेखो (न० 233 ख) पर दृष्टि डाले तो मानना पड़ेगा कि अश्मोत्कीर्णन मे भी आकार-बद्ध प्रवाही लेखन के कई अक्षर-रूप प्रविष्ट हुए। अरामी पुरालिपिज्ञ जे० नावे उसे नव-अश्मोत्कीर्ण (New Lapidary) शैली का नाम देते है । सब-से स्पष्ट उदाहरण तेमा से प्राप्त तीन अर्पण-लेख (पृ० 240 241) है

त् स् र् क़् स् प् अ् स् न् म् ल् क् य् ट् ख् ज़ व् ह् द् ग् ब् अ्
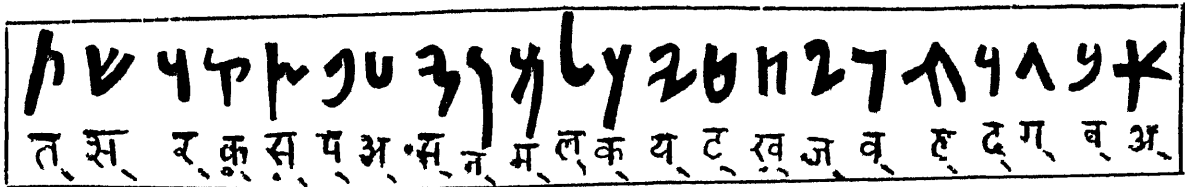
नव-अश्मोत्कीर्ण शैली मे केवल तीन अक्षर है जो पूर्णत प्राचीन अश्मोत्कीर्णन के अनुरूप है अर्थात् आलेफ् (अ्) K जयिन् (ज़) I और योध् (य्) Z । शेष अक्षर-रूप प्रवाही लेखन से मिलते-जुलते हैं। जे० नावे का यह महत्वपूर्ण निष्कर्ष है कि सा०स०पू० 4थी के अन्त मे अश्मोत्कीर्ण शैली

---

(1) semi formal cursive Elephantine ostracon DONNER ROLLIG vol 3 Table 24 Nr 270 A B.

अपने आप लुप्त हो गई[1]। अत सा०स०पू० 300 से लेकर प्रस्तर-लेखो मे प्रवाही शैली से ही उत्कीर्णन होता रहा । यदि हम यह निष्कर्ष अशोक के अरामी लेखन-शैली पर लागू करते है तो उसे भी प्रवाही शैली समझना चाहिए। इस प्रकार हमे एक आरम्भ-बिन्दु (terminus a quo) प्राप्त हुआ जिससे हम दृढता-पूर्वक कह सकते है कि अशोकीय अरामी अभिलेखन मे अश्मोत्कीर्ण / नव-अश्मोत्कीर्ण शैली कदापि प्रयुक्त नही हुई । लेकिन लक्ष्य-बिन्दु (terminus ad quem) निश्चित करने के पहले अन्त-बिन्दु (terminus post quem) के पार की लेखन-शैली देखे ताकि हम अधिक सावधानी से यह तर्क कर सके कि आरम्भ-बिन्दु एव अन्त-बिन्दु के ठीक मध्य मे अशोकीय अरामी के अक्षर-आकारो का क्या अनुमानित सदर्भ है। (देखिए अगले पृष्ट पर लिपि की सारिणी)

323 लेख - आधार के अनुसार प्रवाही शैली का लेख - आकार

THE FORM OF CURSIVE STYLE DEPENDING ON THE WRITING MATERIAL

सा०स०पू० 300 के उपरान्त अरामी भाषा की विकास-सारिणी (पृ० 93) के अनुसार अन्त्य साम्राज्यिक अरामी की अवधि शुरू होती है । आश्चर्य नही कि यूनानवाद के विस्तार के साथ अरामी लिपि मे अभि-लेखन का महत्व कम होता गया । जिन क्षेत्रो मे उसका प्रयोग बना रहा वहा उच्च स्तर की लिपिकीय परम्परा टूटती गई और अनभ्यस्त लिपिक कलम चलाने लगे। उनकी लेखन-शैली मे कही भद्दी प्रवाही (vulgar cursive) की कुरूपता कही तीव्र प्रवाही (extreme cursive) के नये रूप दिखाई देते हैं। उद० पाच अक्षरो मे नीचे उतरनेवाली रेखा की लबाई कम कर देते है और कभी शब्द के भीतर मध्य स्थान मे उसे थोडा बाई ओर को मोड देते है कफ (क) मेम (म्) नून् (न्) , पे (प्) और सांधे (स्) । अन्य तीन अक्षरो को सामनेवाले अक्षर से जोडने की चेष्टा भी करते है लांमेध् (ल्) , सांमेख् (ॱस) और अयिन् (अ) ।(आगे पृ० 299 पर)

---

(1) J NAVEH <u>op cit</u> p 58 In the third century B.C E. *the inscriptions on stone were written in the cursive script* We may assume therefore that the lapidary style went out of use at the end of the fourth century B.C E. shortly after the fall of the Persian Empire एक ही अपवाद है अरका-एल-एमीर का समाधि-लेख (पृ०241)

लेखन-शैली के अनुसार अरामी व्यजन लिपि के बदलते रूपो की क्रमबद्ध सारिणी

(1)		फेनीकी-अरामी साoसoपूo 850	प्राचीन अश्मोत्कीर्ण 750	आरम्भिक प्रवाही 650	आकारबद्ध प्रवाही 550	नव-अश्मोत्कीर्ण 450	सख्त आधार पर प्रवाही 350	तीव्र प्रवाही 250	कुमरानी इब्रानी/अरामी 150
א	अ्								
ב	ब्								
ג	ग								
ד	द								
ה	ह्								
ו	व्								
ז	ज्								
ח	ख								
ט	ट्								
י	य्								
כ	क्								
ל	ल्								
מ	म्								
נ	न्								
ס	स्								
ע	अ्								
פ	प्								
צ	स़्								
ק	क़्								
ר	र्								
ש	श्								
ת	त्								

आरम्भ-बिन्दु से लेकर — अनुमानित लक्ष्य-बिन्दु — अन्त-बिन्दु से पहले

(1) इस सारिणी के अक्षर-रूप मुख्यत इन विद्वानो की प्रस्तुतियों पर आधारित है J NAVEH F M CROSS E.KAUTZSCH S BIRNBAUM J PRITCHARD K BEYER & A.LIVINGSTONE etc

इस प्रकार धीरे-धीरे अधिकाश अरामी व्यजनो का स्वरूप कोणात्मक बनता जा रहा था। जब इस्राएली लिपिक जो बोल-चाल मे अरामी भाषा का ही प्रयोग किया करते थे इब्रानी-अरामी धर्मशास्त्र तॅनख् को लिपिबद्ध करने लगे तब उन्होने अरामी लिपि को अधिक सुविधाजनक माना । वे उसे चौकोनी लिपि ही कहते थे ।

उदा० मृतसागर-तट की गुफाओ मे प्राप्त कुमरान पन्थ के कुण्डलपत्रो का सब-से पुराना टुकड़ा इब्रानी शमूएल-ग्रथ का है (अर्थात् 1 शम 23 9-16) जो लगभग सा०स०पू० 225 मे उसी अरामी लिपि मे उतारा गया ।

हम उमीद नही कर सकते है कि सा०स०पू० 300 के बाद की तीव्र प्रवाही शैली अथवा कुमरानी लेखागार मे प्रयुक्त कोणात्मक शैली अशोक-काल के अरामी लिपिक द्वारा अपनायी जाए । वे शैलिया पटेरपत्र चर्मपत्र अथवा ठीकरे पर स्याही से लिखित लेखो मे दीखती है । जब सा०स०पू० 4थी एव 3री सदी मे लिपिकार सख्त आधार पर अक्षर अकित करता है तब उनकी शैली अश्मोत्कीर्ण तो नही हो सकती है — जैसे ऊपर सकेत दिया गया है कि सा०स०पू० 400 से अश्मोत्कीर्णन की शैली अप्रयुक्त रही — , परन्तु वह <u>*केवल आकार-बद्ध प्रवाही*</u> ही होनी चाहिए[1]। सा०स०पू० 4थी 3री सदी मे,सख्त आधार पर प्रवाही शैली से अभिलिखत लेखो मे अशोकीय अरामी लिपि से तुलना करने के लिए सबसे उपयुक्त सामग्री मिलती है । दुर्भाग्य बहुत कम सामग्री उपलब्ध है एशिया माइनर के कुछ सिक्के-लेख है (दे० पृ० 243 245) , यर्दन-घाटी मे केरक का वेदी-लेख (पृ० 242) तेहरान के फोरूगी-सग्रह का समर्पण लेख (पृ० 262,नीचे) और एशिया माइनर के तीन प्रस्तर-लेख अरेब्सून शिलालेख (पृ० 243), अगास-काले का द्विभाषीय यूनानी-अरामी समाधि-लेख (पृ० 260) तथा सब-से उपयुक्त फरासा का द्विभाषीय दीक्षा-लेख (पृ० 269)। उन्ही सख्त-आधारवाले लेखो मे प्रयुक्त प्रवाही लेखन-शैली के एकीकृत अक्षर-रूप अनुमानत अशोक के अरामी अक्षर-आकारो को पहचानने के लिए उत्तम साधन है। सा०स०पू० 3री सदी के पूर्व 4थी सदी

---

(1) J NAVEH <u>op cit</u> p 48 Of the third century B C E a number of inscriptions on stone are extant These largely display the formal cursive of the period अत हमारे अध्ययन के लिए जे० नावे द्वारा विश्लेषित ये अभिलेख सब से महत्वपूर्ण है "*Inscriptions in Aramaic cursive of the 4th and 3rd centuries B C E on hard materials*" <u>ibid</u> pp 49 51

को भी मिलाना पड़ता है क्योकि पुरालिपिज्ञ जे० नार्वे की अचूक दृष्टि मे विशेषकर पुल-इ-दरुन्त के अशोकीय अभिलेख मे रूढ़िवादी लिपिक ने एक-सदी-पूर्व की पुरातन शैली को ही अपनाया [1]।

ऊपर दिये गये तर्क मे 50 वर्षो को कम गिना गया है , क्योकि अशोकीय अरामी का अभिलेखन-काल वास्तव मे सा०स०पू० 300 नही वरन् 254-237 के बीच है। यह तर्कसगत नही लगता है कि अशोक के लिपिकार अपने लेखन की रूढ़िवादिता मे अटक गए । वे प्राकृत प्रारूप पर आधारित एक नये प्रयोग के लिए ही अरामी लिपि मे अभिलेखन कर रहे थे। अत हमे सा०स०पू० 3री सदी के आरम्भ के कुछ ठोस पटेरपत्रो या ठीकरा-लेखो की लेखन-शैली पर भी सहानुभूतिक दृष्टि डालनी चाहिए[2]। अशोक के लिपिक अपने अभूतपूर्व लेखन की प्रगतिवादिता से प्रेरित होकर कुछ नये रूप अपनाने के लिए क्यो हिचके ?

लक्ष्य-बिन्दु के अभिलेखन-काल मे आक्षरिक आकारो के सबध मे एक और कठिनाई है कि कम-से-कम दो अक्षर-रूप दाॅलेथ् (द्) और रेश् (र्) बिलकुल एक-समान 4/4 दीखते है[3]। ए० कॉव्ली लगभग सा०स०पू० 300 के मिस्री पटेरपत्र (COW 81) के विषय मे उन दो अक्षरो मे भेद करने के लिए अपनी असमर्थता व्यक्त करते है वे अभेद्य (indistinguishable) ही हैं । '' इतना ही नही रेश्-दाॅलेथ् और वाव् (व्) '' ו '' के बीच मे भी न्यूनतम अन्तर है (almost indistinguishable[4]) । उद० यर्दन घाटी से

---

(1) ibid p 51 Palaeographically the Pul i Daruntah inscription could be updated to the fourth century but we should still take into account that it is written in an archaic script Many archaisms albeit alongside developed forms appear in the other two [अर्थात अरामी शार-इ-कुन और तक्षशिला के] inscriptions but the developed forms (especially those in the Kandahar [= शार-इ-कुन] inscription) confirm their third-century dating

(2) उद० M LIDZBARSKI Ephemeris fur semitische Epigraphik III 1915 Plates 2 & 3 two ostraca from Egypt early third century B C E in J NAVEH op cit Fig 9 Nr 4 इनके कुछ अक्षर इस प्रकार है

अ् = [illegible], ब् = [illegible], द् = [illegible], ह् = [illegible], व् = [illegible], ख् = [illegible], क् = [illegible], ल् = [illegible], न् = [illegible], प् = [illegible], र् = [illegible]

(3) सा०स०पू० द्वितीय सदी से इस्राएलियो द्वारा प्रयुक्त अरामी लिपि में दाॅलेथ और रेश का अन्तर स्पष्ट बनता जा रहा था, दे० J SANDERS The Psalms Scroll of Qumran Cave 11 Discoveries in the Judaean Desert of Jordan IV Oxford 1965 p 7 [in the dalet] the downstroke is continuous with the horizontal by the scribe s having turned his pen at the right shoulder in the change of direction from right stroke to downstroke The result is a distinct *keraia* on the right shoulder which is the principal distinction between the dalet and the resh ד ≠ ר

(4) J NAVEH op cit p 60

अरामी लिपि मे प्रयुक्त लेखन-पद्धति की विशेषता है कि उसमे केवल व्यजनो का प्रयोग होता है। किन्तु अरामी भाषा केवल व्यजनात्मक तो नही है , इसलिए अलिखित उच्चरित स्वरो को चार व्यजनो मे देखा गया जो स्वभावत स्वरात्मक होते है अर्थात् दो व्यजनो आलेफ् एव हे मे स्वर आ अथवा ए, व्यजन वाव् मे स्वर ऊ या ओ और व्यजन योध् मे स्वर ई । ये चार व्यजन अपने सबधित स्वरो के आधार ही है । आरम्भ मे अरामी लिपिक उन स्वराधारो को केवल दीर्घ अन्त्य स्वर दिखाने के लिए लगाते थे

उद० **मृलृक्** को यदि हम मेलेख् उच्चारित करे तो उसका अर्थ कोई भी राजा है , परन्तु मल्का उच्चारित करने पर अर्थात् अवधारक पर-उपपद -आ जोड़ने पर उससे एक निश्चित राजा का बोध होता है। प्राचीनतम अभिलेखो मे उस निश्चित अर्थ के दीर्घ अन्त्य स्वर -आ को स्वराधार-रूपी हे के द्वारा दिखाते थे **मृलृकृह्** । सा०स०पू० छठी सदी के अन्त मे उसके लिए अधिकतर स्वराधार-रूपी आलेफ लिखने लगे उद० **मृलृकृअ्** (दे० पृ० 226 टिप्पणी 2) ।

शब्दो के भीतर मध्यस्थ दीर्घ स्वरो के लिए विशेषकर असामान्य विदेशी शब्दो मे वे ही स्वराधार-रूप व्यजन प्रयुक्त होने लगे (पृ० 214)[1]। अत इस मामले मे अशोक के अरामी लिपिक को प्राकृत शब्दो का लिप्यन्तरण करते समय समझदारी से उन स्वराधारो का सहारा लेना पड़ा। सात सदियो के बाद यहूदी लिपिको ने धर्मशास्त्र तॅनख् का परम्परागत शुद्ध उच्चारण बनाए रखने के लिए अरामी-इब्रानी के विशिष्ट स्वर-सकेतो की पद्धति (दे० पृ० 31) का आविष्कार किया। आज भी प्राचीन अरामी अभिलेखो की व्यजन-लिपि का अनुमानित उच्चारण दिखाने हेतु उन्हीं स्वर-सकेतो का मुद्रित प्रयोग किया जाता है ।

324 अशोक के होशियार - समझदार अरामी लिपिकार
ASHOKA ' S CAPABLE AND JUDICIOUS ARAMAIC SCRIBES

अशोक के लिपिको की समझदारी का प्रतिफल चुने हुए अक्षर-आकारो की निम्न *अरामी लिपि-सारिणी* मे ही देखे। ए० दुिपो सोम्मेर तथा बी०अेन० मुखर्जी की प्रस्तुतियो [2] का सधन्यवाद प्रयोग किया गया है

---

(1) दे० E.KUTSCHER Aramaic Z.BEN HAYYIM e a Hebrew and Aramaic studies Jerusalem 1977 p 349 " There are at least three clear-cut instances of medial vowel letters [= matres lectionis] in the new Sefire material E.LIPINSKI • Studies in Aramaic Inscriptions and Onomastics vol 2 Leuven 1994 p 34 " The extensive use of matres lectionis in medial as well as final positions is quite surprising in the 9th century [Tell Fekherye inscription] फिर भी लिपिक सभी स्वरो को नही दिखाते थे Final vowels even the long ones often are not indicated in Aramaic This was the case not only in early Aramaic but also in Imperial Aramaic and even in Aramaic inscriptions of the Hellenistic period (idem vol 1 Leuven 1975 p 60-61) (2) A.DUPONT SOMMER op cit Fig 2 Tableau comparatif de l écriture des quatres inscriptions araméennes d Asoka B N MUKHERJEE op cit Fig 10 Forms of Letters in the Aramaic inscriptions of Asoka

प्रशिक्षित व्यावसायिक लिपिक लेख तैयार करने मे दक्ष क्यो न हो अच्छा परिणाम तभी मिलनेवाला था यदि उसे उत्कीर्ण करनेवाले उत्कीर्णक भी सही अक्षर-रूप खोदने मे सक्षम था । हम मेम्फिस के उस अर्पण-लेख का उदाहरण देख चुके (दे० पृ० 240) जिसमे ओसिरी-देवता का नाम उतारने मे निस्सदेह खोदने--वाले ने कुछ गलती की[1]।इसलिए कुछ अक्षर ऐसा रूप धारण कर सकते है जिसके लिए स्वय लिपिक जिम्मेदार नही है। यद्यपि अशोक के अरामी अभिलेखो की लेखन-शैली मे भिन्नता है[2] हम तुरन्त यह निष्कर्ष नही कर सकते है कि जितनी शैलिया है उतनी ही विभिन्न लिपिक होगे । हो सकता है कि स्थानीय उत्कीर्णक की कला-कुशलता से दाल मे कुछ काला हो ।

अशोकीय अरामी लिपि मे मुख्यत साम्राज्यिक अरामी की लिपिकीय परम्परा का पालन किया गया है। जैसे ऊपर विवेचन किया गया है आकार-बद्ध प्रवाही शैली का प्रयोग हुआ और पुरालिपीय दृष्ठि से अक्षर के रूप उन अक्षरो के अनुरूप ही है जो सा०स०पू० 350 और 150 के बीच के अभिलेखन-काल मे सख्त आधार पर अकित किये जाते थे । कही-कही सा०स०पू० 3री सदी के आरम्भ की तीव्र प्रवाही शैली के हलके सकेत है ।

यदि हम एक-एक करके अशोकीय अरामी के अक्षर-रूप निहारे तो 10 अक्षर सामान्य लगते है — उन्हे पहचानने मे कोई कठिनाई नहीं है , वे व्यापक समकालीन प्रयोग से मेल खाते है अ् ,ग् ,ह् ,व् , ज् ,ख् ,अ् ,प् ,श् और त् । शेष 12 अक्षरो मे कुछ समस्या आ सकती है

1 ब का वह रूप सामान्य है जिसमे ऊपरी सिर है , परन्तु बिना सिर का वर्तुलित रूप सकुचित ल् के समान है।

2 द् का सिर जब कोणात्मक है तब उसे र् अथवा व् से भिन्न माना जा सकता है , लेकिन वह क् के एक रूप के समान है । लहर-वाले द् और र् मे अन्तर नहीं है

3 य् थोड़ा छोटा होना चाहिए और दाई ओर को झुका हुआ अन्यथा वह ग् से भिन्न नही है। एक लम्ब्दा -रूपी य् भी है , लेकिन उसकी ऊर्द्ध्व-रेखा लम्बी होनी चाहिए नहीं तो वह फिर ग् के एक अन्य विकल्पित रूप के समान ही है।

4 क् के रूप मे कुछ रूढिवादिता है क्योकि उसकी खड़ी पाई सीधी रहती है। यदि सिर कोणात्मक है तो वह द् के समान है (दे० न० 2)।

5 ल दूसरे व्यजनवर्णो से ऊचा लिखा जाता है , जब अधोरेखा बाई ओर को मुड़ती है तब यह

---

(1) J NAVEH op cit p 31 It would seem as if the inscription was prepared beforehand in a copy and then transferred by the engraver to the stone this would serve to explain the incorrect ᵓwshry instead of ᵓwsyry the het (H) having mistakenly been copied for yod ( ) (2) S SHAKED op cit palaeographic note by J NAVEH "Whilst the script of the Pul i Daruntah inscription is formal and those of Kandahar I [= Shar i Kuna] and Taxila take an intermediary course the script of Kandahar II is cursive it is a careless somewhat hastily incised inscription

प्रगतिवादिता का निशान है, क्योकि मध्यस्थ अक्षर-रूप केवल 3री सदी से पनपते है। यदि ल ज्यादा नीचे उतरता है और सकुचित लहर-रूप मे लिखा जाता है तो वह ब् के एक विकल्पित रूप के समान है — इसलिए नार्वे एव शाकेद् कन्दहार-अरामी लेख का वह रूप ब्-अक्षर ही मानते है।

6 उसी तरह द् का एक गोल रूप O पुल-इ-दरुन्त अभिलेख की विशिष्टता है।

7 म् प्राय साधारण है लेकिन उसकी दाई अधोरेखा रूढ़िवादी है, क्योकि वह सीधी रहती है जब कि समकालीन म् के मध्यस्थ रूप मे वह बाई ओर को मुड़ती है ।

8 न् का सिर चौड़ा नही होना चाहिए और उसकी अधोरेखा लम्बी हो , इसलिए तक्षशिला का रूप असाधारण है और उसे शायद द् अथवा र् मानना पड़ेगा ।

9 स् का रूप और विशेषकर असामान्य है और प्राय त् और कही ह् के समान दीखता है जब कि प्रचलित समकालीन रूप है ।

10 उसी तरह लघमान का स् एकदम असाधारण है और वह भी त् से अभिन्न लगता है । उस-का रूप होना चाहिए था ।

11 क् की बाई अधोरेखा को और नीचे उतरना चाहिए था और सिर लहरना चाहिए था। साधारण रूप इस प्रकार है ।

12 र् का कधा कोणात्मक नही है नही तो द के समान है । इसे छोटा लिखने से वह व् के समान बनता है और अधोरेखा की लम्बाई बढ़ाने से वह न् के समान बनता है। उसके कधे पर ऊर्ध्व रेखा लगाने पर वह विकल्पित द् से और निकट आता है और सम्भवत द् ही है।

अरामी अभिलेखो के सदिग्ध अथवा अधूरे अक्षरो का सम्भावित अर्थ केवल चतुर्थ भाग मे सम्पूर्ण पाठ का अर्थनिधारण प्रस्तुत करते समय निश्चित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पुल-इ-दरुन्त कन्दहार-अरामी और किसी हद तक तक्षशिला के अभिलेखो की खण्डित अवस्था अक्षरो की सही पहचान के लिए रुकावट है । तक्षशिला-स्तम्भ के अवशिष्ट भाग की वर्तमान 1ली पक्ति मे केवल 5 6 व्यजनवर्ण पक्ति के मध्य मे आशिक रूप से दिखाई देते है — मानो कोई शीर्षक उपशीर्षक लिखा गया हो। 7वी प० की बाई ओर के छोर पर खाली जगह छोड़ दी गई है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रत्येक पक्ति के बाए पर अधिक-से-अधिक एक-दो अक्षर लुप्त हुए होगे। निश्चित रूप से केवल 10वी प० बाए पर क्षति-ग्रस्त है । 8वी व 12वी प० के अक्षर एक-दूसरे से ऐसे सटे हुए है जैसे कोई पक्ति के अन्त मे, अपना वाक्य समाप्त करने के लिए सघनता से लिखने लगे । लघमान की चट्टानो पर अक्षर उत्कीर्ण करना आसान तो नही था, परन्तु उत्कीर्णक ने अवश्य लापरवाही की है (दे० पृ० 73-74) और अपने कार्य के फल मे मुश्किल से उत्तीर्ण माना जाए —जब कि अन्य अभिलेखो के मूल्याकन मे शर-इ-कुन के लिपिकार एव उत्कीर्णक की जोड़ी को पूर्णाक दिये जाए।

अशोक की अरामी-लिपीय अभिलेखो के सबध मे यह विचार व्यक्त किया गया है कि एक-लिपीय होते हुए भी वे एक-भाषीय नही है क्योकि अरामी पाठ मे ईरानी शब्दो और कही प्राकृत उल्लेखो का भी समावेश है । इसलिए एच्० हुम्बख् ने उनकी बहुभाषा को अरामीय-ईरानी तथा अरामीय-प्राकृत माना (दे० पृ० 16 17)। इतना ही नही अशोकीय अरामी लिपि मे उस हैटरोग्रैफि (heterography) अथवा अन्योच्चारण लेखन-पद्धति का पूर्वाभास ढूढने का प्रयत्न भी किया गया है जो मध्य-ईरानी अथवा पहलवी लिखने के लिए लागू की जानेवाली थी (दे० नीसा के मृद्-पट्टो की भाषा-लिपि के सबध मे पृ० 263 264)[1]।

याद दिलाए कि परसेपोलिस के पास नख्श-इ-रुस्तम के शाही अभिलेखो पर जो अरामी अश प्राप्त हुए वे अखमेनी काल के बाद के है (पृ० 246) । सम्राट दारा की कबर पर भी कुछ शब्द अकित है जो वास्तव मे अरामी अक्षरो मे लिप्यन्तरित ईरानी शब्द है उद० **ख्श्अयृत्य् वृज़्रक्** = ईर० ख्शायथिय वजरक सामर्थी राजा । ई० हैर्त्सफैल्त् के अनुसार यही पहलवी लिपि-पद्धति का उद्भव हुआ[2]। तब फारस के स्थानीय शासको ने जो फ्रातदार अर्थात् अग्नि-सरक्षक कहलाते थे उस पद्धति को विकसित किया । लेकिन केवल लिप्यन्तरण की बात नही है। अन्योच्चारण पद्धति उन अरामी लिपिको की उपज है जो किसी सरकारी अधिकारी के (ईरानी मे दिये हुए) आदेश को मन मे अनुवाद करके सीधे अरामी भाषा लिपि मे उतारते थे और अरामी पाठ देखकर ही उस अधिकारी को फिर ईरानी मे सुनाते थे। धीरे-धीरे उन अरामी लिपिको की अरामी ही भ्रष्ट होती गई — वे न केवल अपनी अरामी भाषा मे अधिक ईरानी शब्द अपनाने लगे वरन् ईरानी व्यक्ति-नामो को लिप्यन्तरित कर उनके साथ लगी ईरानी उपाधि को आदतन् अरामी शब्द-रूप मे लिख देते थे — उद० ईरानी मे शाह- बोलते हुए भी उसे अरामी के साकेतिक शब्द-रूप **म्ल्क्अ्** द्वारा लिपिबद्ध किया । इस प्रकार वाक्य मे, अरामी शब्द-रूप के प्रतीक-अर्थ के साथ, ईरानी व्याकरण के अनुसार कारक अथवा क्रिया-रूप का अन्त-प्रत्यय जोडा जाता था —उद० अरामी **यृत्यबृन्** (शब्दश वे बैठते है) एक स्थायी भावार्थक शब्द-रूप बन गया था , अत ईरानी मे वह बैठा"

---

(1) कुछ विद्वान अन्योच्चारण पद्धति का आरम्भिक काल सा०स०पू० 3री सदी मे अर्कासीदी शासनकाल मे ही लगाते है — दे० H HUMBACH "Aramaeo Iranian and Pahlavi Acta Iranica 2 1974 pp 237 243 early Pahlavi ? W SUNDERMANN "Schrift systeme und Alphabete im alten Iran Altorientalische Forschungen 12 1985 pp 101 113 R LEMOSÍN Les ideogrames arameos en irani medio Aula Orientalis 2 1984 pp 105 11 263 276 I J DELAUNAY (Acta Iranica 1974 p 230) दृढतापूर्वक कहते है कि अशोकीय अरामी में उस पद्धति का प्रश्न नही उठता We should not at all be concerned here about ideograms I

(2) E.HERZFELD Archaeological History of Iran London 1935 p 48 दे० F ROSENTHAL Die Aramaistische Forschung Leiden 1934, pp 78 82

के उच्चारण निशस्त ' का अन्त-प्रत्यय -स्त अरामी शब्द-रूप के साथ जोड़कर **यत्यवनस्त** लिखना पड़ा । अन्योच्चारण लेखन-पद्धति का यह विचित्र परिणाम है[1]। लेकिन अशोक के अभिलेखो मे अरामी लिपि इस तरह के अन्योच्चारण के लिए सिर्फ मुखौटा नही हो सकती है क्योकि उनकी लिपि अब तक जीवित अरामी भाषा के उच्चारण के लिए उसका अपना मुख है । यथार्थ अन्योच्चारण लेखन-पद्धति सा०स०पू० प्रथम सदी के अन्त मे प्रयुक्त होने लगी जब मध्य-ईरानी भाषाओ [2] के क्षेत्र मे वही अरामी लिपि एक मृत भाषा की ककाल-रूपी लिपि बन चुकी थी ।

33 अरामी लिपि से ''भारतीय लिपियो'' खरोष्ठी व ब्राह्मी का क्या संबंध ?

ARE THE "INDIAN SCRIPTS KHAROSHTHI AND BRAHMI RELATED TO ARAMAIC ?

अरामी के महान् पुरालिपिज्ञ जे० नार्वे ने अन्त्य साम्राज्यिक अरामी की लेखन-शैली को अरामी लिपि के भावी विकास एव विभाजन के लिए बीज रूप ठहराया

1 मिस्र देश मे प्रयुक्त सा०स०पू० 3री सदी का पत्रात्मक तीव्र प्रवाही लेखन पश्चिम के लिए एक आदि नमूना बना । पश्चिमी अरामी लिपियो मे इस्राएल की शास्त्रीय इब्रानी-अरामी का विशेष महत्त्व है और उसके साथ यर्दन-घाटी के दक्षिण मे नब्बाती लिपि ने भी अपना स्थान बनाया । उनसे अलग प्राचीन सीरी/सूरी (सिरिऐक्) *लिपि* को गिने जो पूर्वी अरामी *भाषा* के अन्तर्गत गिनी जानेवाली सीरी भाषा के लिए प्रयुक्त हुई। इसके तीन रूप है शास्त्रीय अॅस्ट्रैंजल (Estrangela), जो प्रधानत सीरिया मे सुगुरु-पन्थ का नया-विधान इजील' लिखने के लिए प्रयुक्त हुआ , पूर्वी रूप जो नेस्टॉरियन् (Nestorian) नामक सीरियाई सम्प्रदाय द्वारा विकसित हुआ , और पश्चिमी रूप जो जैकोबाइट् (Jacobite) नामक सीरियाई सम्प्रदाय की लेखन-शैली बना [3]।

2 अशोक के अभिलेखो मे प्रयुक्त आकार-बद्ध प्रवाही लेखन पूर्व के लिए आदि नमूना बना। पूर्वी अरामी लिपियो की दो प्रमुख शाखाए है उत्तर-मेसोपोतामी शाखा (विशेषकर हत्रा के लेखो मे दे० पृ० 259),

---

(1) These Semitic masks were until recently called ideograms but today heterogram or Arameogram is the more common term In Parthian or Middle Persian heterograms may receive phonetic complements to identify the specific grammatical form of the underlyng Iranian word (P O SKJARVØ Aramaic scripts for Iranian languages The World s Writing Systems p 517) V G LUKONIN Persia II Archaeologia Mundi Geneva 1967 p 13 .

(2) इससे पहले क्षेत्रीय लोग अवेस्ती अथवा पूर्वी ईरानी भाषा का प्रयोग करते थे जो पवित्र अवेस्ता-शास्त्र की आरम्भिक भाषा है । अल्तहाइम-श्तील का विचार है कि सम्भवत अवेस्ता का सब-से पुराने अश कभी अरामी लिपि में लिपिबद्ध हुआ। अशोकीय अरामी मे ये अवेस्ती शब्दो की ओर सकेत करते है क्योंकि पश्चिमोत्तर भारत-उपमहाद्वीप मे अवेस्ती-भाषाभाषी लोग भी रह रहे थे (F ALTHEIM & R STIEHL Die aramäische Sprache unter den Achaimeniden 1963 p 32) । जेद-अवेस्ती प्राचीन अवेस्ता की टीकाओ की मध्य-ईरानी भाषा का नाम है ।

(3) T ARAYATHINAL Aramaic [-Syriac] Grammar Mannanam 1957 vol 1 p 1 Estrangela meaning Bible character – a compound of two Arabic words Sitrun–character and Ingil–Gospel The Chaldean or East Syrian script is a modified form of the Estrangela also known as the Nestorian script The Peshittha or Western script is a further modification of the Estrangela also called Jacobite or Maronite script

और दक्षिण-मेसोपोतामी शाखा (उद० मैण्डीअन ज्ञानवादी सम्प्रदाय की मैण्डेइक् लेखो मे)[1] । उनसे अलग ईरानी भाषाओ के लिए विरूपित अन्योच्चारित अरामी पार्थी मध्य-ईरानी पहलवी सोग्दी लिपिया । दूर पूर्व की कुछ लिपिया अरामी प्रभाव से ही ऐल्टेइक भाषाओ के लिए सरचित हुई मगोली और मचू [2] ।

	आदि नमूना	पश्चिमी अरामी लिपियो का विकास		अलग विस्तार			आदि नमूना	पूर्वी अरामी लिपियो का विकास		अलग विस्तार
	सा०सा०पू० 3री सदी की मिस्री अरामी	1ली सदी सा०सा० की इस्रानी-अरामी	नबाती लिपि	सीरी / सिरिऐक् के तीन रूप 1 ऐंस्ट्रैंगल 2 पूर्वी रूप 3 पश्चिमी रूप (1)	(2)	(3)	सा०सा०पू० 3री सदी की अशोकीय अरामी	उत्तर-मेसोपोतामी शाखा मे हत्रा-लेखो की लिपि	दक्षिण-मेसोपोतामी शाखा मे मैण्डेइक् लिपि	किताबी पहलवी
अ्										
ब्										
ग्										
द्										
ह्										
व										
ज										
ख्										
ट्										
य्										
क्										
ल										
म्										
न्										
स्										
अ्										
प्										
स़्										
क्										
र्										
श्										
त										

(1) J NAVEH Early History of the Alphabet Jerusalem 1982 p 156 The North and South Mesopotamian Aramaic scripts evolved from the formal style of the standard Aramaic that was used mainly for engraving on stone Apparently both branches developed from a common formal prototype used for writing on stone The scripts of the third century B C Aramaic inscriptions of Asoka can perhaps be regarded as an early ancestor of this script type

(2) G KARA. Aramaic scripts for Altaic languages The World s Writing Systems p 550 The Manchualphabet (1599)– "the easternmost descendant of the Aramaic script

अशोक के लिपिकार ने ठोस साम्राज्यिक लिपिकीय परम्परा के अनुसार अपने अक्षर-रूप खीचे थे , पूर्व मे विकसित होनेवाली क्षेत्रीय लिपियो के आरम्भिक अक्षर-रूप उन्ही के अनुरूप ही थे और धीरे-धीरे अपने विशिष्ट स्वरूप धारण करने लगे। उन लिपियो से थोडे अलग ढग से पहलवी मे न केवल अरामी अक्षर-रूपो का विस्तार हुआ , बल्कि मध्य-ईरानी भाषा के बहु-प्रयुक्त शब्दो को लिखने के लिए स्थायी अरामी शब्द-रूप भी अपनाये गये जिससे एक अनोखी अन्योच्चारण लेखन-पद्धति का जन्म हुआ। पश्चिम मे भी साम्राज्यिक लिपिकीय परम्परा के दूरगामी प्रभाव से क्षेत्रीय लिपियो का विकास हुआ , और उनसे थोडे अलग ढग से सीरी लिपि का विस्तार हुआ जिसने फिर दूर पूर्व की ओर कदम बढाया ।

ये सभी विकसित-विस्तारित लिपिया येन-केन-प्रकारेण अरामी लिपि की शुद्ध व्यजन-पद्धति पर आधारित है। उन लिपियो से सबधित सास्कृतिक आदान-प्रदान का एक विलक्षण प्रतिफल देखे

जिस विशुद्ध अरामी लिपि मे प्रियदर्शी अशोक ने पश्चिमोत्तर अपरन्त-वासियो के लिए धर्माचरण की धम्म-लिपि लिखवायी उसी अरामी लिपि के आधार पर सरचित दो लिपिया दक्षिण-भारत तक पहुची

1 पहलवी लिपि का एक लेख 7वी सदी सा०स० मे तथा-कथित फारसी सलीब पर अकित हुआ। वह चेन्नई के निकट भारतीय सुमुकुन्द-पन्थियो के प्राचीनतम तीर्थ सन्त थोमस-गिरि पर प्राप्त हुआ ।
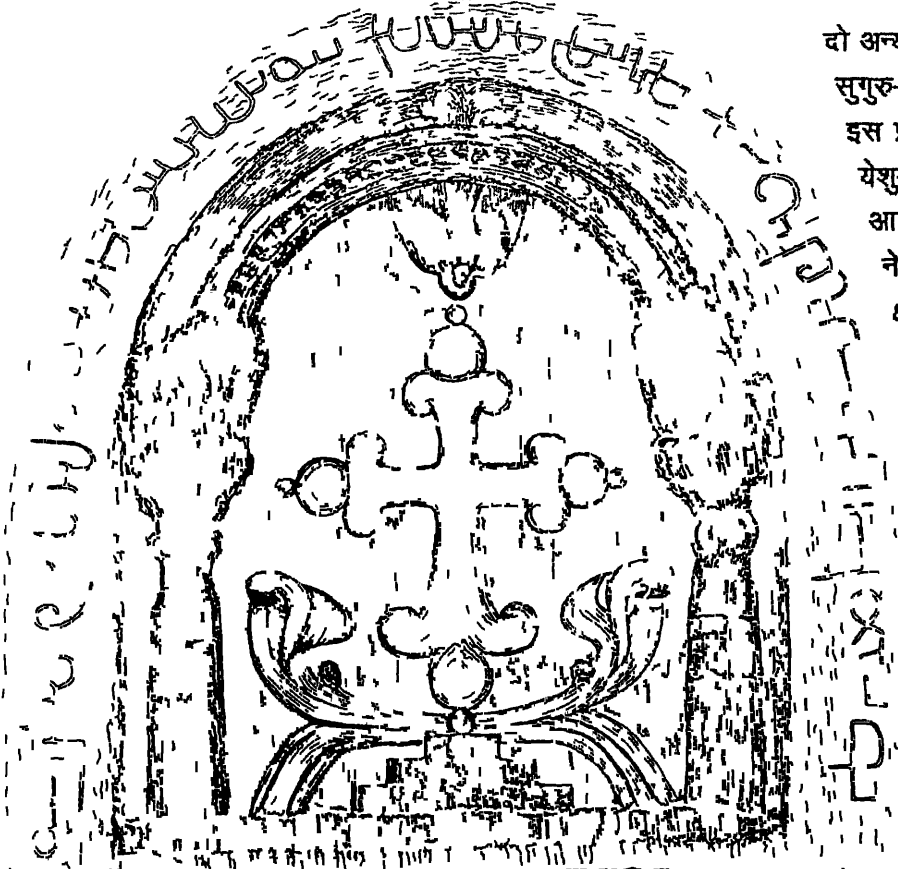
दो अन्य पहलवी लेख कोत्तायम के प्राचीन सुगुरु-मन्दिर मे शोभायमान है। एक पाठ इस प्रकार है नासरत-पुष्पनगर के येशु-सुमुकुन्द यहूदा-वासियो मे राजा आरम्भ से आज तक रहें। मार-शापूर ने यह लिखा जो उन सत्याभिषिक्त क्षमादाता पर विश्वास करे वह पाप-ऋण से मुक्ति पाए। "

चौपारे आकार का सुदलित-सुपुष्पित प्रतीक-चिह्न सूली पर क्रूसित मानव-पुत्र का प्रेमोत्सर्ग याद दिलाता है । ऊपर से कपोत-रूपी पावन-पावक प्राणात्मा उतरता है और नीचे मृत्युजय सुगुरु का पीठ-आसन् है । सम्भवत पार्थिया के गुरु-शिष्यों ने दक्षिण-भारत में शरणार्थी बनकर ऐसे लेख उत्कीर्ण किये ।

(1) दे० R GORVALA The Pahlavi inscription on the Kadamattam cross Indo Iranica 8 1955 pp 15 16 E.HAMBYE Excavations in and around St Thomas cathedral Mylapore Madras Indian Church History Review 6 1972 pp 91-99 7 1973 pp 28-40 10 1976 pp 127 153 H HOSTEN Antiquities from San Thome and Mylapore Madras 1936

2 सीरी / सिरिऐक लिपि मे भी 7वी-8वी सदी सा०स० के प्राचीन अभिलेख केरल के थोमस-मार्गियो के प्रार्थनालयों मे सुरक्षित है (दे० पृ० 103)। उसी काल का द्विभाषीय चीनी-सीरी अभिलेख पश्चिमोत्तर चीन के सी-ङ्ण-फू नगर से प्राप्त हुआ। दक्षिण-भारत के ये लेख भी फारसी सलीब को समर्पित है और सम्भवत नैस्टॉरियन् सम्प्रदाय के सीरियाई भक्तों द्वारा उत्कीर्ण हुए। केरल के आरम्भिक अरामी-भाषाभाषी सुगुरु-पन्थियो ने भी उस सलीब को अपना विशिष्ट भक्ति-चिह्न माना और अपनी आराधना-विधियो मे अराम/सीरिया से उद्भूत सीरी भाषा-लिपि को ही ग्रहण किया[1]।

331 परिचर्चा का विषय   TOPIC OF DISCUSSION

पहलवी एव सीरी लिपियो मे अभिलिखित सलीब-स्तम्भ उत्पीडित मानवता के लिए सेवाभाव के प्रेरणा-स्रोत है। इस प्रकार वे दो लिपिया न केवल सम्राट अशोक की अरामी धम्म-लिपि को प्रतिबिम्बित करती है वरन् उनके प्रीति-धर्म को भी प्रतिध्वनित करती है । पुरालिपि-सबधित वे सुन्दर सदविचार हमे अशोक के उत्तरकाल मे बहुत आगे ले गए; परन्तु अशोक-काल के सबध मे दो अन्य लिपिया है —खरोष्ठी एव ब्राह्मी—,जिनकी भारतीय-अभारतीय उत्पत्ति विद्वानो की परिचर्चा का विषय है। अरामी लिपि से पहलवी ओर सीरी का सबध तो निश्चित है। क्या हमे अशोक द्वारा प्रयुक्त खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपियो को भी किसी सामी (सैमिटिक्) पूर्वरूप से, विशेषकर प्राचीन अरामी लिपि से जोड़ना होगा ? इस प्रश्न के पक्ष-विपक्ष मे बहुत तर्क-वितर्क हो चुका है और स्पष्ट नही है कि पलड़ा किस की ओर झुक रहा है । क्या अशोक के द्विभाषीय अभिलेखो के अध्ययन से कोई नवीन भारी मत आ पड़ता है, जो अरामी उत्पत्ति के पक्ष के विरुद्ध भारतीय उत्पत्ति के पक्ष को अधिक बल दे सकता है ?

व्यापक दृष्टि से देखे और लेखन की स्वदेशी मौलिकता स्थापित करने से विश्व-मानवता की मौलिक एकता मे आच न आने दे। जैसे भुवन वाणी और विश्व-जोड़लिपि मे आपसी लिप्यन्तरण का स्वप्न देखनेवाले नन्दकुमार अवस्थी कहते थे अक्षर-रूपो पर किसी का एकाधिकार नही। मान ले कि साबुन का आविष्कार भारत मे नही हुआ, तो क्या हम स्नान करना बद करे ? यूनानी लिपि के अॅल्फ-बैॅत-गॅम्म और अरामी-इब्रानी लिपि के आॅलॅफ्-बेथ्-गीमॅल् मे अवश्य कोई सबध है। क्या इससे यूनानी साहित्य की महानता कम है ? भगवतशरण उपाध्याय के शब्दो मे[2]

> ससार की सस्कृतियो के अनेक तथ्य ऐसे है जिनका प्रसार सार्वदेशिक और सार्वकालिक रूप से हुआ है। चीनी और दक्षिण-अमरीकी लिपियो का छोड़कर ससार की अन्य प्राय सभी लिपिया एक ही आधार से विकसित हुई है। ब्राह्मी में आधार के किसी रूप का प्रत्यक्ष न हो पाना उसके मूल का अध्यवसाय पश्चिम के उस लिपि-अश्वत्थ की ओर ही सकेत करता है। कारण कि उसके और सिंधु सभ्यता की लिपि मे जो अभी तक पढी न जा सकी लगभग हजार-डेढ हजार सालो का कालान्तराल है। लिपि की यह सार्वभौम सत्ता सस्कृति के सार्वभौम साम्राज्य का अदभुत परिचायक है।

---

(1) दे०J VAZHUTHANAPALLY Archaeology of Mar Sliba [=Cross] Kottayam 1990 पहलवी और सीरी लिपियों के प्राचीन भारतीय अभिलेखो के लिए देखो E WEST Epigraphica Indica vol 4 part 4 1896 p 174 (2) बृहत्तर भारत पृ० 14

अशोक के अभिलेखो मे प्रयुक्त चार लिपियो की पृष्ठभूमि मे अन्तर है द्विभाषीय अनुवाद के अभिलेखो की यूनानी तथा अरामी लिपियो के लिए छह सदियो की दीर्घ लिपि-परम्परा उपलब्ध है जब कि मूल प्राकृत प्रारूप के अभिलेखो की ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपियो के लिए कोई लिपि-परम्परा उपलब्ध नही है चाहे उनका प्रयोग पहले हुआ हो या न हुआ हो। ऐसा लगता है, ब्राह्मी और खरोष्ठी का सचालन एक-ही समय अशोक के शासनकाल के आरम्भ मे हुआ। तुलनीय सामग्री के अभाव मे विद्वान केवल अपनी-अपनी अटकलपच्चू धारणाए प्रस्तुत कर सकते है कोई कहता है ब्राह्मी निश्चित रूप से वैदिक काल से होते हुए सैन्धव लिपि से उत्पन्न हुई , किसी दूसरे को ब्राह्मी का उद्भव-स्थल पश्चिम एशिया की सामी-अरामी लिपि-भूमि मे ढूढने मे आपत्ति नही है , अन्य व्यक्ति खरोष्ठी की विपरीत लेखन-दिशा और उसके सीमित प्रयोग के कारण उसे तुच्छ समझकर अखमेनी दफ्तरो के अरामी लिपिको की उपज मानने को तैयार है ।
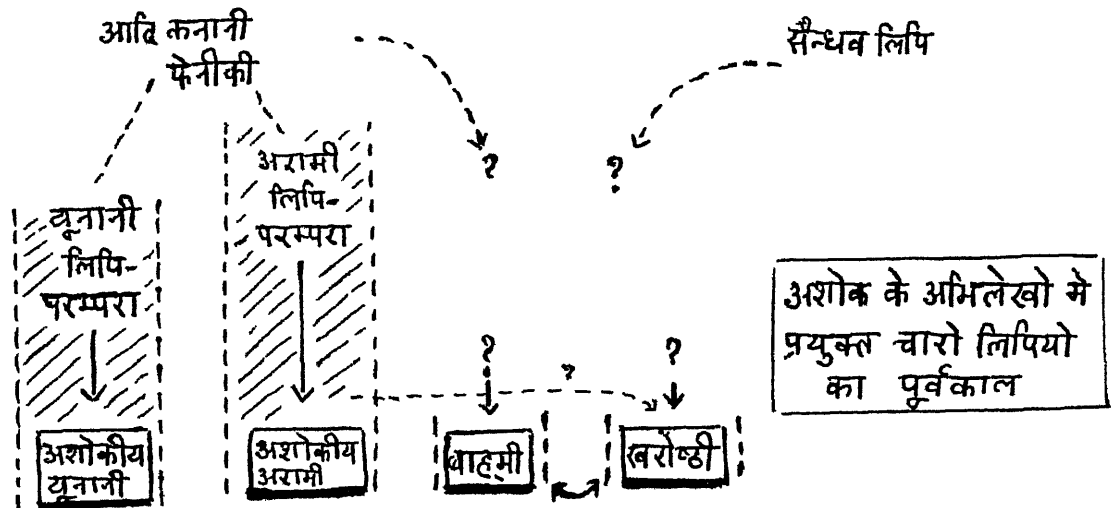
वास्तविक स्थिति यह है कि सैन्धव (अथवा सैन्धव-गागेय) लिपि का प्रादुर्भाव लगभग सा०स०पू० 2500 मे हुआ और सात सदियो तक बनी रही — जब तक अरब व मेसोपोतामिया की ओर पश्चिमोत्तर भारत-उप-महाद्वीप का विशेषकर समुद्री व्यापार पनपता रहा । प्राय 4000 छोटे-छोटे मुहर-लेख प्राप्त हुए जिनकी पक्ति-दिशा सामान्यत दाए से बाए की ओर लगती है। औसत प्रति लेख मे केवल 5 चिह्न है और कुल मिलाकर असयुक्त, भिन्न प्रकार के 386 चिह्न गिने जा सकते जो शब्दाक्षरिक (logo syllabic) हो सकते है।

(1) SIR JOHN MARSHALL Mohenjo Daro and the Indus Civilization (excavations 1922 27) vol 3 Plate 119 129 – 2200 texts MADHO SARUP VATS Excavations at Harappa(1920 34) vol 2 Plate 105 116 – 1200 texts ASKO PARPOLA Deciphering the Indus Script Cambridge 1994 H JENSEN Die Schrift in Vergangenheit und Gegenwart Berlin 1969 p 343 proto inische Schrift अर्थात आदि-भारतीय लिपि अन्य विचार उद० M G de Hevesy Easter Island script H Heras Dravidian B Hrozny Hurri Hittite + S K Ray S R Rao Indo Aryan + M V N Krishna Rao N C Rajaram & N Jha E Richter Ushanas R Meadow pre Harappan etc

कुछ अक-चिह्न भी होगे। लेकिन अब तक ऐसा प्रतीत नही हो रहा है कि भाषा के सबध मे कोई अन्तिम निर्णय-सा सम्भव हो जब तक अन्य ज्ञात भाषा से कोई निश्चित सुराग न मिले [1]।

इस परिचर्चा मे प्रो० *सिद्धेश्वरी नारायण राय* का प्रकाशन **भारतीय पुरालिपि एव अभिलेख** विशेष उल्लेखनीय है। उन्होने उत्तरी सेमिटिक वर्णमाला तथा ब्राह्मी के एक-एक अक्षर का तुलनात्मक अध्ययन किया और खरोष्ठी-लिपि के सबध मे आधुनिक खोजो का निचोड़ प्रस्तुत किया[2]। वह दिनेशचन्द्र सरकार के विचार का समर्थन करते है कि सैन्धव सभ्यता की पुरा-ऐतिहासिक लिपि ब्राह्मी की मूल मानी जा सकती है और आगे कहते है कि उपलब्ध सैन्धव लिपि एव सम्भावित वैदिक लिपि ये दोनो मूलभूत एक ही लिपि की दो शाखाओ के रूप मे प्रतिष्ठित रही होगी। शोधकर्ता विनम्रता के साथ साहस करे तो यहा अपने कुछ अपरिपक्व विचार प्रकट करेगा। पहले-पहल खरोष्ठी के विषय मे बोले क्योकि वह अरामी लिपि से सन्निकट मालूम पड़ती है ।

332 अशोकीय अरामी और खरोष्ठी ASHOKAN ARAMAIC AND KHAROSHTHI

विद्वानो की लम्बी कतार मे खड़े होकर [4] प्रो० अहमद हसन दानी वही निष्कर्ष दुहराते है कि खरोष्ठी अखमेनी दफ्तरो के अरामी लिपिको की देन है [5]। खरोष्ठी का जन्मस्थान तक्षशिला-पुरी ही है [6] और जन्मतिथि सा०स०पू० 516 के बाद (और अशोक के प्रयोग के पूर्व) की है । उस समय ब्राह्मी प्रचलित हो चुकी थी परन्तु अरामी लिपिको ने अपनी ओर से नई लिपि के रूप मे प्राकृत लिखने के लिए खरोष्ठी को सचालित किया। इस तर्क मे कुछ असगतिया है। अब तक कोई ठोस प्रमाण नही है कि अशोक के

---

(1) दे० J VELINKAR Indica 35 1998 p 66 The real test of the variant readings of the Indus script will be after the discovery of a bilingual inscription with an Indus text and its translation into a known language and script

(2) इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे तीन दशको तक पुरालिपि के अध्यापन के पश्चात सन 1994 मे प्रकाशित। अध्य०3 एव 13 ।

(3) वही पृ० 86 । (4) J Halevy 1885 G Buhler 1895 C Das Gupta 1958 (5) A H DANI Kharoshthi Primer Lahore 1979 p 1 (6) A H DANI The Historic City of Taxila Tokyo 1986 p 43 The Achaemenians themselves employed Aramaean clerks who used the Aramaic script Aramaic became the base for evolving a writing system for transcribing the local languages in the newly conquered eastern provinces originally probably by the same clerks and hence the Aramaic name Kharoshthi for that script Later it became popular in use even by the common people This is the only way to explain the origin of this new script when Brahmi was already known and used in other parts of India The Kharoshthi was evolved to suit the Gandharan Prakrit p 60 The use of Brahmi in the local Taxilan coins is a sufficient proof that it was well known there But somehow the official records used Kharoshthi probably as a result of the influence of Aramaic or possibly availability of the scribes in that script

पहले चाहे ब्राह्मी अथवा खरोष्ठी का अभिलेखीय प्रयोग किया गया हो। खरोष्ठी का सब-से पुराना लेख सा०स०पू० 254 253 मे प्रसारित और ब्राह्मी मे अभिलिखित द्वितीय लघु-शिलालेख का अन्तिम शब्द लिपिकरेण है (दे० पृ० 14) और एक-दो वर्षों के भीतर शहबाजगढ़ी एव मानसेहरा सस्करण के 14 मुख्य शिलालेख पूर्णत खरोष्ठी मे विज्ञापित हुए। अशोक के खरोष्ठी लिपिकार पश्चिमोत्तर प्रदेश के ही थे। एर्रगुडी मे लघु शिलालेख को बलीवर्द (बोस्ट्रफीडॅन्) शैली मे उकेरनेवाला ब्राह्मी लिपिकार भी जो शायद खरोष्ठी की पक्ति-दिशा मे लिखने का आदी था उसी क्षेत्र से आया था । यद्यपि प्रथम उपलब्ध खरोष्ठी लेख केवल सा०स०पू० 3री सदी के मध्य मे उत्कीर्ण हुए खरोष्ठी एक सुस्थापित क्षेत्रीय लिपि लग रही है — जो प्राकृत-लेखन हेतु सम्भवत ब्राह्मी लिपि से ही पहले प्रयुक्त होने लगी थी [1]।

समझ मे नही आ रहा है कि अरामी लिपि-परम्परा मे पले अरामी लिपिकार तक्षशिला-वासियो के लिए एक नई लिपि का सचालन क्यो करे । अशोक के अरामी अभिलेखो से स्पष्ट है कि ब्राह्मी या खरोष्ठी प्रारूप से प्राकृत शब्दो का लिप्यन्तरण करने के लिए अरामी लिपि ही सक्षम थी उद० अनुपटीपतिया = **अ्न्व्प्ट्य्प्त्य्अ्** (क०अ० 6) अभिसितस = **अ्ब्ह्य्स्य्त्स्** । ध्यान दे कि इस अरामी लिप्यन्तरण मे अरामी व्यजन-लिपि के स्वराधार-रूपी मौन व्यजन **अ्** (अ/आ के लिए) **य्** (इ/ई के लिए) और **व्** (उ के लिए) उपयुक्त ही थे जब कि प्राकृत भ के लिए अरामी के दो व्यजन **ब्ह्** एक-साथ प्रयुक्त हुए। अत यदि अरामी लिपिको ने अपनी सुविधा की बात सोची तो उन्हे अरामी के अतिरिक्त नई लिपि के भ्रामक अक्षर-रूप रचने की क्या आवश्यकता थी ? भ्रामक इसलिए,क्योकि यदि अरामी लिपिको ने सचमुच अपनी अरामी के आधार पर खरोष्ठी अक्षर-आकृतियो की रचना की तो कम-से-कम 11 अरामी आकृतियो को भिन्न उच्चारण के खरोष्ठी अक्षरो के लिए लगा दिया (दे० अगले पृष्ठ पर तुलनात्मक वर्णमाला) और शेष 11 अरामी आकृतियो मे से केवल एक-दो को समान उच्चारण-वाले खरोष्ठी अक्षर के लिए प्रयुक्त किया और बाकी को अनुपयोगी माना। यदि हम अरामी की प्राचीन अश्मोत्कीर्ण (सा०स०पू० 750) या आरम्भिक प्रवाही शैली (650) से मिलाए [2] तो उन आकृतियो और खरोष्ठी अक्षरो मे भी खास समानता नही दीखती।

---

(1) फिर भी दे० B N MUKHERJEE. Commentary in H RAYCHAUDHURI Political History of Ancient India p 587 the creation of the Kharoshti script on the basis of the Aramaic and Brāhmī script (2) दे० पृ० 296पर ।

अरामी के 22 (हलन्त-युक्त) व्यजन और खरोष्ठी मे समान उच्चारण के (स्वर अ -सहित) अक्षर

भिन्न उच्चारण की 11 अक्षर-आकृतियो मे भ्रामक समानता 1 या 2 अक्षर-आकृतियो मे रूप एव उच्चारण की समानता	स्वर-मात्राओ के प्रयोग मे पूर्ण असमानता
अ्	अ — अि उ अं ओं
ब्	ब — भ
ग्	ग — घ
द्	द — ध ड ढ
ह्	ह
व्	व
ज्	ज — झ च छ
ख्	क्ष
ट्	ट — ठ
य्	य
क्	क — ख
ल्	ल
म्	म — अ
न्	न — ण ञ
स	स
अ	अ ह
प्	प — फ
स्	ष — स
क़्	
र्	र
श्	श — ष स
त्	त — थ

खरोष्ठी लिपि के प्रत्येक (हलन्त-रहित) अक्षर मे स्वर अ भी समाहित है। शब्द के आरम्भ मे अन्य स्वर के रूप स्वर-अक्षर अ मे स्वर-भेदक चिह्न लगाने से बनते हैं अि - अु - अं - ओं । अन्य अक्षरो के साथ ऐसे ही भेदक चिह्न स्वर-मात्राओ के अर्थ मे लगाये जाते है। इसलिए अरामी से खरोष्ठी के उत्पन्न होने की सम्भावना नही है। दोनो लिपियो की लेखन-पद्धति मे मूलभूत भिन्नता है (दे० पृ० 294)। इतना ही मान सकते है कि प्राकृत-भाषाभाषियो ने (अरामी-भाषाभाषी लिपिको ने नही) अरामी लेखन-शैली से प्रभावित होकर स्वय अपनी लिपि बनायी।

पडित गौ०ही० ओझा ने जो खरोष्ठी के नवीन अक्षरो की रचना के सबध मे कहा वह सम्पूर्ण लिपि पर लागू किया जा सकता है यहा [अर्थात भारत] के विद्वानो मे से खरोष्ठ [नामक व्यक्ति] या किसी और ने नये अक्षरो तथा ह्रस्व स्वरो की मात्राओ की योजना कर मामूली पढे हुए लोगो के लिए काम चलाऊ लिपि बना दी।[1] प्रो० अँस्०अँन० राय ने भी खरोष्ठी की विशिष्ट सुव्यवस्थित स्वर-मात्रा-सहित व्यजन-पद्धति के कारण उसकी भारतीय मौलिकता को स्वीकारा [2]। फिर भी आचार्य-जी ने इसके गठन मे अरामी के प्रभाव से इन्कार नही किया,और यहा तक माना कि खरोष्ठी को अरामी की जानकारी रखने-वाले क्षत्रपो के लिए निर्मित किया गया। परन्तु अरामी भाषा-लिपि के सर्वेक्षण से हमे मालूम होता है कि केवल साम्राज्यिक अरामी के ह्रास के पश्चात् सा०स०पू० 3री सदी के अन्त मे अरामी पर आधारित कुछ स्थानीय लिपिया धीरे-धीरे अपना राष्ट्रीय स्वरूप धारण करने लगी। हमने यह भी पहचाना कि अशोक के अरामी लिपिकार ने,लिपिकीय परम्परा के अनुपालन मे,आकार-बद्ध प्रवाही शैली का प्रयोग किया। तो, क्या अशोक-काल के पहले कोई अरामी लिपिक उस प्रतिष्ठित साम्राज्यिक लिपि को खरोष्ठी के स्थानीय वेश मे भ्रष्ट कर सकता था ? अशोकीय अरामी अभिलेखो का अध्ययन डॉ० र०ब० पाण्डेय के उस पुराने मत का ही समर्थन करता है कि खरोष्ठी एक स्वदेशी भारतीय-मूल लिपि है जिसका उद्भव भारत-उप-महाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग मे हुआ[3]।उसकी तुलना मे ब्राह्मी अधिक विकसित बाद मे प्रादुर्भूत लिपि है।

केवल खरोष्ठ नामक व्यक्ति को खरोष्ठी का रचयिता मान लेना एक सहज निदान एव सरल निवारण लग रहा है [4]। दूसरी ओर लिपि के नाम की व्युत्पत्ति के लिए अत्यन्त जटिल सुझाव दिये गए[5]

---

(1) *गौरीशकर हीराचद ओझा* **भारतीय प्राचीन लिपिमाला** नई दिल्ली 1971 (1918) पृ०97 ।

(2) *सिद्धेश्वरी नारायण राय* **भारतीय पुरालिपि एवं अभिलेख** इलाहाबाद 1994 पृ०158 खरोष्ठी का मौलिक स्वरूप"।

(3) *राजबली पाण्डेय* **अशोक के अभिलेख** वाराणसी 1965 पृ० 21 ।

(4) दे० *प्रवीण चन्द्र पारीख* भारत की प्राचीन लिपिया ब्राह्मी का आधिपत्य **भारतीय संस्कृति** खण्ड 2 पृ०241 246 जैन और बौद्ध लिपि-सूचियो मे खरोट्टी का चतुर्थ अथवा द्वितीय स्थान और विशेषकर (668सा०स० मे रचित चीनी ज्ञानकोश का उल्लेख फान (=ब्रह्मा) नाम के प्रसिद्ध आचार्य ने बायीं ओर से दाहिनी ओर पढी जाती ब्राह्मी लिपि का निर्माण किया किअ-लु (=खरोष्ठ) नाम के आचार्य ने दाहिनी ओर से बायी ओर पढी जाती खरोष्ठी लिपि का और त्स-की नामक आचार्य ने ऊपर से नीचे की ओर पढी जाती चीनी लिपि का निर्माण किया ।

(5) उद० J PRZYLUSKI (1930) ने सस्कृत खर (गधा) के साथ ईरानी पोस्त- (खाल) जोड़कर लेखन-सामग्री की ओर सकेत किया । इसी तरह के भाषाई सुझाव है सस्कृत खर + ओष्ट (B M Barua the Camel s Lip Alphabet), अथवा सस्कृत खर को विशेषण (= कठोर) के अर्थ मे लेने से होठो के कर्कश उच्चारण का सम्भावित सकेत है।

और किये जा रहे है ।[1] अन्तत S Konow का पुराना सुझाव सब-से ग्राह्य है उन्होने अरामी भाषा के **खरोशॅथ्** शब्द को आधार बताया जिसका अर्थ कुरेदना खरोचना[2] ही है — इब्रानी-अरामी क्रिया-धातु **ख्रश् / ख्रत्** से = काटना उत्कीर्ण करना । राजकीय उत्कीर्णन के लिए वह पारिभाषिक अरामी शब्द है दे० हजाएज-अभिलेख (पृ० 214) अरामी-बेहिस्तून प० 70 (अकित // ईरानी पाठ मे दिपिम =अभिलेख । पृ० 250) । यदि अरामी उत्कीर्णक अपने शासक द्वारा आदेशित अभिलेख-लेखन को खरोशॅथ कहा करते थे तो स्थानीय लोग भारतीय लिपि को भी — जब से उसे शिला-अभिलेखन के लिए प्रयोग मे लाया गया — खरोष्ठ के रूप मे जानने लगे। अत वह किसी आविष्कर्ता आचार्य का नाम नही वरन सामान्य अभिलेखन-कर्ता द्वारा नवप्रयुक्त पुरानी स्वदेशी लिपि है ।

333 अशोकीय अरामी और ब्राह्मी ASHOKAN ARAMAIC AND BRAHMI

अपनी परिचर्चा मे हम अशोकीय अरामी अभिलेखो के अध्ययन से प्रेरित होकर, इस मत का समर्थन करते आ रहे है कि खरोष्ठी लिपि अरामी लिपिको द्वारा नव-गठित लिपि नही है बल्कि पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे स्थानीय प्राकृत के लेखन हेतु एक प्रचलित लिपि थी जिसने अखमेनी प्रशासनिक अभिलेखन के नमूने से प्रभावित होकर शिला-अभिलेखन मे नव-प्रयुक्त लिपि का रूप धारण किया । इस प्रकार स्वयमेव हम श्रीराम गोयल के उस मत का समर्थन करने जा रह है कि ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति भी अरामी प्रभाव के कारण नही हुई क्योकि 'ब्राह्मी लिपि का आविष्कार सम्भवत स्वय अशोक ने कराया था'[3]। लेकिन

---

(1) प्रो० बी०अन० मुखर्जी ने दो ईरानी शब्दो का नया समास बनाया खर- (क्षत्र) + ओस्त- (ओस्तात,) + ई अर्थात साम्राज्य- निविष्ट साम्राज्य की सेवा मे प्रस्तुत " The political authority of the Achaemenids had forced the creation of Kharoshtī (in c 5th or 4th century B C) in the Indian provinces of their empire with the help of an official script like Aramaic and Brāhmī which had already been in use for writing Prakrit It was empire placed or empire put ' i e put or placed in the service of the empire ' " (B.N MUKHERJEE Discovery of Kharoshtī inscriptions in West Bengal The Quarterly Review of Historical Studies 29 1989 90 Nr 2 pp 6 14) इस नई वर्तनी खारोष्टी / खारोस्ती के सुझाव मे कृत्रिमता अधिक है । तो सीधे [मध्य]-ईरानी खरोश्त (xrwst) अर्थात पुकारा गया सम्राट द्वारा आदेशित भाषा का नाम क्यो न रखे ? लेकिन जैसे ऊपर कहा गया, जब तक साम्राज्यिक अरामी का (ईरानी लिपि के साथ) प्रचलन था अरामी पर आधारित स्थानीय लिपि के उद्भव का कही कोई सकेत नही है । फिर भी अपने निबन्ध मे आचार्य-जी ने दक्षिण-बगाल से नव-प्राप्त प्रथम सदी सा०स० के कुछ खारोष्टी अथवा खारोष्टी-ब्राह्मी मिश्रित लिपि के लेख प्रकाशित किये जिनसे मालूम होता है कि पश्चिमोत्तर प्राकृत भाषा एव खारोष्टी लिपि के क्षेत्र से पूर्व भारत का अटूट सम्पर्क था । (2) जर्मन मे Gravierung engraving उद० तॅनख् के निर्गमन-ग्रथ 31 5 (cutting stones) , 32 16 (engraved upon the tablets), और अन्य-प्रामाणिक प्रवक्ता-ग्रथ 45 11 (engraved letters), और कुमरानी सघ की नियमावली 1 Q S 10 8 (engraved precept). (3) The Origin of Brahmi Script, Delhi, 1979 p 16

इस निष्कर्ष पर पहुचने के लिए यह आवश्यक नही है कि हम श्रीराम गोयल के युक्ति-क्रम के 14 तर्कों से सहमत हो [1]। मान ले कि विद्वानो के गभीर अनुसन्धान [2] का अपमान किये बिना हम ब्राह्मी की विदेशी उत्पत्ति के अनुमान का अवमान कर सके तो विकल्प के रूप मे स्वदेशी उत्पत्ति की क्या अभिकल्पना करे? निस्सदेह सम्राट अशोक मौर्य साम्राज्य के कोने-कोने मे घम्म-लिपि को अपनी ही लिपि मे प्रकाशित करना चाहते थे जैसे प्रथम मुख्य शिलालेख की प्रथम पक्ति मे लिखा है "**इय धमलिपी देवानपियेनपियदसिना राञा लेखापिता**"(यह धर्मलेख देवानाप्रिय प्रियदर्शी राजा ने उत्कीर्ण करवाया है)। क्या फारसी महासम्राट दारा-प्रथम ने भी अपने बेहिस्तून अभिलेख मे नई लिपि प्रयुक्त करने का दावा नही किया था (दे० पृ० 114) ? यहा नई लिपि का तात्पर्य है कीलाक्षर-लिपि का नूतन अभिलेखीय प्रयोग।
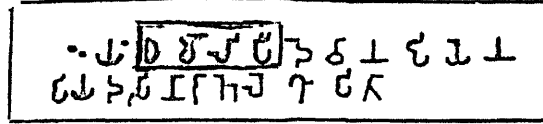
अशोक के समक्ष स्थिति इस प्रकार थी मौर्य साम्राज्य मे मध्यदेशीय (मागधी) प्राकृत को सार्वदेशिक सम्पर्क-भाषा माना जा सकता था या मनाया जा सकता था लेकिन अभिलेखन के लिए अब तक कोई एकीकृत जोड़-लिपि उपलब्ध नही थी। निश्चय ही स्थानीय लेखन हेतु भोजपत्र की छाल,पत्ते,कपड़े आदि पर छिट-पुट प्रयास हुआ करते थे। अपने तक्षशिला-निवासकाल मे अशोक को भली-भाति विदित हुआ था कि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र मे खरोष्ठी लिपि कितनी प्रचलित थी [3]। साम्राज्यिक अरामी मे उत्कीर्णन करने वाले लिपिको से भी वह परिचित हुए थे , पर यूनानी लिपिको के सुघट-सुबोध अक्षर-रूपो से वह सर्वाधिक

---

(1)*श्रीराम गोयल* **प्राचीन भारतीय अभिलेख-सग्रह** खण्ड 1 जयपुर 1982 पृ०18 27 ब्राह्मी लिपि प्रारम्भिक मौर्य युग का आविष्कार **प्रियदर्शी-अशोक** 1988 परिशिष्ट 2 अशोक और ब्राह्मी लिपि । नरेश प्रसाद रस्तोगी श्रीराम गोयल की युक्ति मे त्रुटि दिखाकर ब्राह्मी लिपि की ज्यामितिक आकृति की वैदिक उत्पत्ति के सबध मे अपनी युक्ति की प्रस्तुति मे लग गए N P RASTOGI Origin of Brahmi Script Varanasi 1980 (≠ S P GUPTA & K S RAMCHANDRAN eds ,The Origin of Brahmi Script Delhi 1979) (2) सामी / फेनीकी / अरामी उत्पत्ति के पक्ष में शायद सब-से पहले तर्की F Kopp (1821) R Lepsius (1834) A Weber (1856) W Deecke (1877) हुए यद्यपि इसे प्राय G Buhler (1895) के मत-विचार के रूप मे जानते है और विरोध भी करते है। परन्तु न भूले कि इस बीती सदी के दौरान विशेषकर अरामी अभिलेखन के तुलनात्मक अध्ययन के लिए पर्याप्त नई पुरालिपीय सामग्री प्राप्त हुई है। उस विपुल भण्डार में अब किसी अशोक-पूर्व ब्राह्मी लेख का सदिग्ध पाठ मिलना सदिग्ध ही है (उद० N P RASTOGI op cit p 35 मे उल्लिखित 'a Brahmī line in a contract tablet from Babylonia dated 23rd year of Artaxarxes = 381 B C E ?)। इस शोध में ही एक उदाहरण देखो पृ० 275 पर ब्राह्मी अक्षर जो वास्तव मे अरामी है। (3) दे० R SALOMON Brāhmī and Kharosthī The World s Writing Systems p 373 Kharosthī was probably somewhat older probably having been developed in northwestern India in the 4th or even 5th century B C E इस लेख में श्रीराम गोयल के किसी और समर्थक का उल्लेख है H FALK Schrift im alten Indien Tubingen 1993 Brāhmī script was most likely created during the Mauryan empire possibly under Aśoka himself

प्रभावित हुए। खरोष्ठी मे पूर्व-प्रयुक्त स्वर-मात्रा सहित व्यजन-पद्धति को अक्षुण्ण रखते हुए क्या यूनानी की उन सुरूप अक्षर-आकृतियो के नमूने पर प्राकृत की प्रकृति के अनुकूल अश्मोत्कीर्णन के लिए कोई नई उपयुक्त लिपि बनायी जा सकती थी ? निम्न तुलनात्मक सारिणी से स्पष्ट है कि यह स्वप्न साकार हुआ
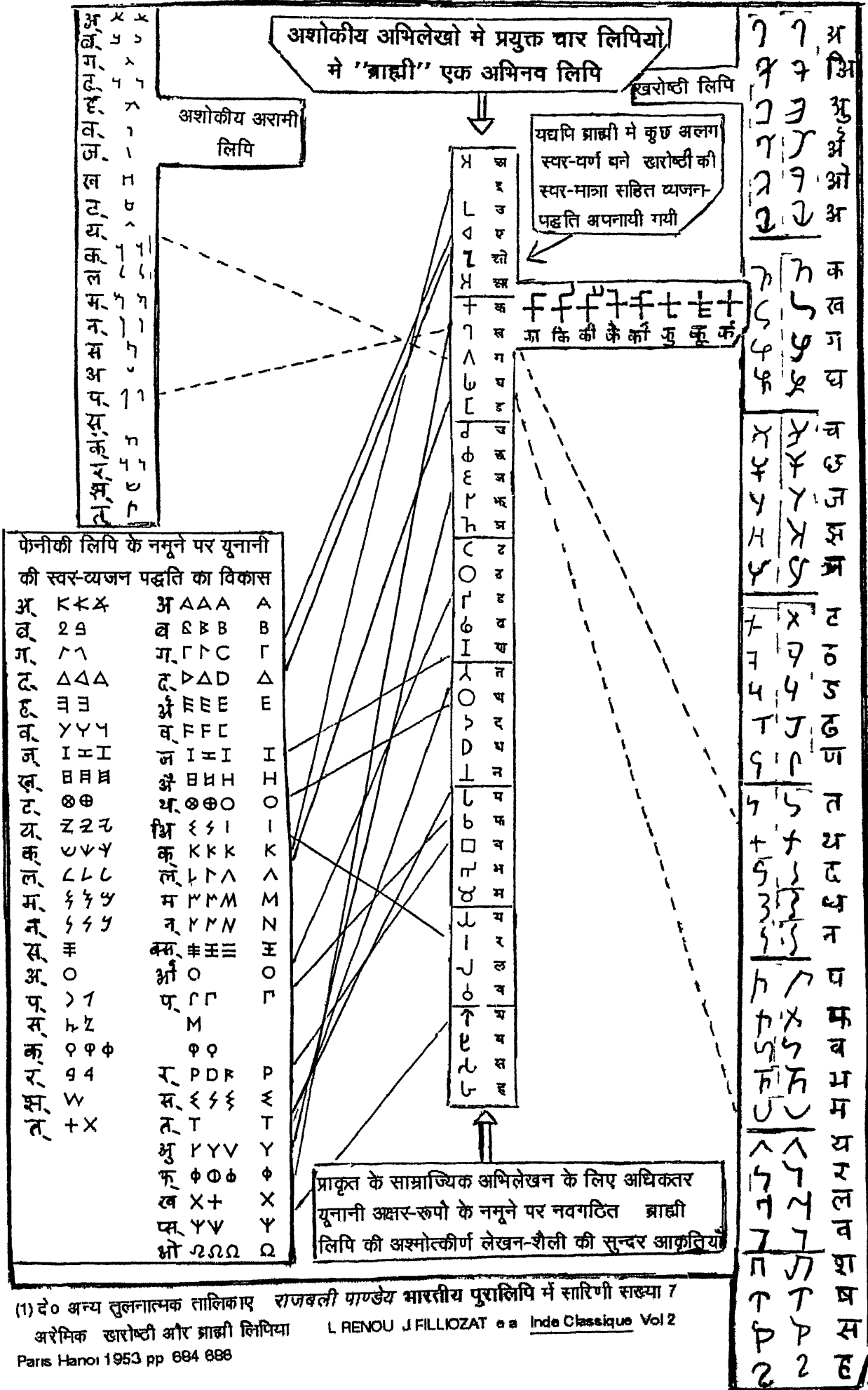
(1) दे० अन्य तुलनात्मक तालिकाए *राजबली पाण्डेय* भारतीय पुरालिपि मे सारिणी सख्या 7 अरेमिक खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपिया L RENOU J FILLIOZAT e a <u>Inde Classique</u> Vol 2 Paris Hanoi 1953 pp 684 688

परिचर्चा मे भाग लेकर शोधकर्ता केवल अशोकीय अभिलेखन के अध्ययन की दृष्टि से अपना मत व्यक्त करता है। नये तथ्य मिले तो पुनर्विचार करना ही होगा। डॉ० भोलानाथ तिवारी के शब्दो मे स्पष्ट ही ये सारे मत केवल अनुमान पर ही आधारित है। ऐसी स्थिति मे इनमे किसी को भी सनिश्चय स्वीकार नही किया जा सकता [1]। शोधकर्ता का अनुमान है कि धम्मलिपि के प्रसारण हेतु अशोक ने ज्ञानी लिपिको से एक आदर्श लिपि का नव-गठन करवाया जिसके लिए ब्राह्मण-श्रमणो का अशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस लिपि-निर्माण मे किसी निश्चित और व्यापक पूर्व-ब्राह्मी का आधार नही था। केवल स्थानीय पूर्व-रूप [2] थे और विशेषकर पाणिनीय सूत्र-सिद्धातो से अभिप्रेत तथा स्वर-मात्रा सहित व्यजन-पद्धति मे अभिव्यजित खरोष्ठी का क्षेत्रीय स्वरूप था। साम्राज्यिक अरामी की सीमित व्यजनात्मक पद्धति और उसकी आकार बद्ध प्रवाही लेखन-शैली को सम्पूर्ण मौर्य भू-खण्ड मे अपनाने का प्रश्न नही उठ सकता था , न यवनो की परिष्कृत स्वर-सहित लेखन-पद्धति पर्याप्त थी और न उसे स्वदेशी आत्मगौरव ठुकराकर राष्ट्र-लिपि के रूप मे ग्रहण किया जा सकता था। फिर भी उन लिपियो की तटस्थ तुलना करने पर यूनानी और ब्राह्मी अक्षरो की रूप-रचना मे अधिक समानता पायी जाती है । ऐसी बात नही कि यूनानी से ब्राह्मी की उत्पत्ति हुई अथवा कि कुछ-एक यूनानी अक्षर-रूपो को समान उच्चारण-वाले ब्राह्मी अक्षरो के लिए प्रयुक्त किया गया हो । केवल बाह्य समानता की बात है । इसमे सदेह नही कि इस भारतीय लिपि / दिपि मे अधिक कलात्मक-प्रतीकात्मक सौन्दर्य है। वह एक आर्य 'ब्रह्म अर्थात् उत्तम[3] लिपि है और किसी-किसी अक्षर मे सैन्धव-गागेय सकेत अथवा वैदिक ऋषि-ऋचाए अथवा तथागत के पद-चिह्न दिखाई देते है। लोकभाषा मे बभी कहलानेवाली लिपि दभी न बने , फिर भी वह ब्रह्मा के मानस-पुत्र नारद की प्रशसा-पात्री है

न-अकरिष्यद् यदि ब्रह्मा लिखितम् चक्षुर्-उत्तमम् । तत्र्-एयम् अस्य लोकस्य न-अभविष्यत् शुभा गति ।।
(यदि ब्रह्मा इस उत्तम नेत्र-तुल्य लिपि की सृष्टि न करते तो उन लोगों की यह शुभ गति न होती —[क्योंकि यह धर्मलिपि देवानाप्रिय प्रियदर्शी राजा द्वारा लिखवायी गयी जिससे लोग उसके अनुसार आचरण करे।][4])

---

(1) **भाषाविज्ञान कोश** ब्राह्मी । (2) अगर प्राक्-अशोकीय भारत के लोग किसी लिपि से परिचित थे तब भी उनकी वह लिपि ब्राह्मी नही रही होगी। वह प्राक-अशोकीय लिपि ब्राह्मी से इतर कोई लिपि रही होगी जिसका नाम प्रकृति और स्वय अस्तित्व तक अनुमानाश्रित है (*श्रीराम गोयल* तत्रैव पृ० 204) । तथा-कथित अशोक-पूर्व अभिलेखो के सबध मे दे०*शिवस्वरूप सहाय* **भारतीय पुरालेखो का अध्ययन** दिल्ली 1993 अध्या० 1 D C SIRCAR Select Inscriptions Vol 1 pp 79 83 (3) R CHILDERS A Dictionary of the Pali language adj *brahma* with the meaning "best excellent (4) नारद-स्मृति और चतुर्दश मुख्य शिलालेख ।
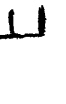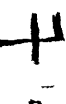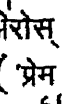
34 यूनानी पुरालिपि सबधी विवेचन REFLECTIONS ON GREEK PALAEOGRAPHY

लिपि केवल एक माध्यम है , तौभी महत्वपूर्ण माध्यम है जैसे मिस्री सिकन्दरिया की यूनानी पाठशाला के एक लड़के —अथवा लड़की क्यो नही !— ने अपने मोम-फलक पर लिखा Η ΑΡΧΗ ΜΕΓΙΣΤΗ ΤΟΥ ΒΙΟΥ ΤΑ ΓΡΑΜΜΑΤΑ ,"है अर्ख़ै मेगिस्तै तौव बिऑव् त ग्रम्मत" अर्थात जीवन का श्रेष्ठ शुभारम्भ अक्षर-ज्ञान है। अशोक द्वारा प्रयुक्त चारो लिपियो मे ब्राह्मी उत्तमोत्तम क्यो न लगे, जब तक लोग उसे पढ नही पा रहे थे वह मात्र रेखा-चित्रो की विचित्र रेखा-लिपि रही । दिल्ली मे लाये गये अशोक-स्तम्भ को वे सिकन्दर का झूठा विजय-स्तम्भ मान रहे थे (दे० पृ० 54) क्योकि जैसे ऊपर ब्राह्मी के सम्भव उदभव के सबध मे कहा गया उसमे यूनानी लिपि का थोड़ा आभास हो रहा है ।

341 स्थायी रूप धारण करने तक यूनानी लिपि का द्रुत विकास
QUICK DEVELOPMENT OF GREEK SCRIPT TILL ACQUIRING PERMANENT FORM

शर-इ-कुन के द्विलिपीय अभिलेख मे यूनानी लिपि को ऊपर अकित किया गया है, परन्तु पुरालिपि-विद्या की दृष्टि से पश्चिम मे उसका विकास और पूर्व की ओर उसका विस्तार निम्न स्थान पर हुआ । सामी भाषा-परिवार मे,अरामी सदस्य-भाषा के लेखन के लिए,व्यजनात्मक फेनीकी लिपि मानो सीधे उपलब्ध थी। भारोपीय भाषा-परिवार मे से फूटने के कारण यूनानी भाषा स्वर-प्रधान थी और फेनीकी-इब्रानी-अरामी के आदि-कनानी लिपि-क्षेत्र से लेखन-कला का वरदान प्राप्त कर वह सतुष्ट नही रह सकी। स्पष्ट नही है कि कब और कैसे उधार ली हुई लिपि को स्वर-सहित व्यजन-पद्धति मे परिवर्तित करने मे सफलता मिली। इससे अलग यूनानियो ने क्रैतै (क्रीट्) द्वीप पर ध्वन्यात्मक रेखा-लिपि (रैखिक-बी) का,और कुप्रॉस् (साइप्रस्) द्वीप पर ध्वन्यात्मक चित्रलिपि का, प्रयोगात्मक प्रयोग किया था उद० सलमिस् का यह समर्पण पट्ट-लेख

←

[handwritten Cypriot syllabary signs]

नि ल्लो पो अ तो के थै से रो ऑ

ऑरोस् ऑथैके तो अपॉल्लोनि ('प्रेम नामक व्यक्ति ने अपॉल्लोन्-देवता के लिए रखा —अर्थात् अर्पित किया)

---

(1) *गुणाकर मुले* **अक्षर कथा**, नई-दिल्ली, 1972 पृ068 *ईश्वरचन्द्र राही* **लेखन-कला का इतिहास**,1983 पृ0641

लगभग सा०स०पू० 1100 से लेकर यूनानी टापुओ के व्यापारी उन कनानी बन्दरगाहो के सम्पर्क मे थे जहा शुद्ध व्यजन लेखन-पद्धति का प्रचलन था [1]। लेकिन स्वर-सहित पद्धति के लिए परिवर्तित-अनुकूलित यूनानी लिपि के प्रथम साक्ष्य केवल सा०स०पू० 725 के है । बीच मे क्या हुआ ? जे० नावे ने चार सदियो के साक्ष्य-हीन अन्तराल को भरने की कोशिश की। उद० यूनानी लिपि का अक्षर मू (M) सा०स०पू० 900 की फेनीकी लिपि के अक्षर मेम ( ) के समान नही है वरन उसके पूर्व-रूप ( ) से अधिक मिलता है[2]। लेकिन स्वय यूनानियो ने आत्माभिमान छोड़कर स्वीकारा है कि उन्होने अपना अक्षर-ज्ञान फेनीकियो से प्राप्त किया था जैसा हैरॉदॉतॉस् अपने **इतिहास** (5 58 59) मे भी नम्रता से लिखता है कि लेखन-कला से हम पहले अनभिज्ञ थे और हमारी वर्णमाला मे फॉयनिकैय ग्रम्मत (फेनीकी वर्ण) साक्षात् उपस्थित है, कद्मॉस नामक एक फेनीकी सज्जन ने थैबय्-नगरवासियो को अपनी लिपि की शिक्षा दी थी जिसके कारण हमारे वर्ण कद्मैय ग्रम्मत भी कहला सकते है ।

दूसरी ओर दिऑदोरस् अपनी कृति बिब्लिऑथैकै (5 74 1) मे उस परम्परा का उल्लेख करता है कि वास्तव मे सुरॉय अर्थात सीरिया-निवासी अक्षरो के आविष्कारक है, उन्ही से सीखकर फेनीकियो ने यूनानियो को अक्षर-ज्ञान दिया। ऑस्० सॅगर्ट् ने इसपर ध्यान दिलाया कि सीरिया के अरामी लिपिक ही कुछ व्यजन, दीर्घ स्वर के आधार के रूप मे, लिखने लगे (जब कि फेनीकी लिपि मे ऐसी व्यवस्था नही थी)। सम्भवत यूनानी लिपिको ने उन स्वराधार-रूपी व्यजनो से स्वर बनाने की प्रेरणा ली, 1 आलॅफ से अॅल्फ (आ, और अ भी), 2 हे से ऍ-प्सिलॉन् (ऍ, और ऍ भी), 3 योध से ञिओंत (ञी, और ञि भी) और 4 वाव् से ऊ-प्सिलॉन् (ऊ, और उ भी यद्यपि पहले इससे एक कम-प्रयुक्त वाव् / दिगम्म व्यजनवर्ण *F* बना था)। तब 5 यूनानी मे अप्रयुक्त फेनीकी/अरामी खेथ् से ऍत (ऍ), 6 अयिन् से ऑ-मिक्रॉन् (ऑ), और 7 सातवे स्वरवर्ण के रूप मे नवाक्षर ऑ-मॅग Ω की रचना हुई। अत न केवल [आदि]कनानी या फेनीकी लिपि के प्रभाव से बल्कि अरामी के सम्पर्क मे आकर भी यूनानी का वास्तविक वर्णात्मक अल्फबैतॉन बनता गया ।

(1) Greeks may have experimented with the Semitic alphabet as early as c 1100 B.C (P K McCARTER "The early diffusion of the alphabet The Biblical Archaeologist Reader IV 1983 pp 197 212

(2) J NAVEH The Greek new alphabet New evidence Biblical Archaeologist 1980 pp 21 25 The characteristics of the archaic Greek script recall the late Proto Canaanite rather than the 8th century Phoenician script

हाल ही मे पश्चिम-भूमध्यसागर के इस्किया-द्वीप के उत्खनन मे प्राचीन यूनानी उपनिवेश पिथैकॉस्सय के कुछ लेख मिले जो एक-ही स्थान पर एक-ही काल मे (लगभग सा०स०पू० 750) तीन भाषा-लिपियो मे लिखे गये,आर्थात् आरम्भिक यूनानी फेनीकी तथा अरामी। सैगर्ट के अनुसार यही उस "स्वर-सहित व्यजन पद्धति" का जन्मस्थल है, जिसने यूनानी-लातीनी से उद्भूत विश्वलिपियो को जन्म दिया[1]।इसलिए सा०स० पू० 1100 से 750 तक की अवधि यूनानी लिपि के निर्माणात्मक पूर्व-काल है , नई पद्धति की अवधि 750 से आरम्भ होती है और यूनानी लिपि ने शीघ्र वह रूप धारण किया जो आज तक स्थायी बना रहा[2]।

भिन्न काल और भिन्न स्थान के अस्थायी रूपो के तीन उदाहरण देखे

1 दक्षिणी द्वीपो मे सा०स०पू० 7वी सदी का अविकसित रूप थैर से प्राप्त नाम-सूची की 2 आरम्भिक पक्तिया बैल (बॉस) के मुड़ने (स्त्रेफ़ैन्) के बॉव्-स्त्रॉफेदॉन सीता-क्रम मे (दाए से) **रेक्सनॉर** (बाए से) **अरकहगेतस** = अरखगेतस् (क+ह् ="खी")

← 9OꟻAMꓘƎꟼ9
APKBAΓETAM →

2 एशिया-माइनर के पश्चिमी तट पर सा०स०पू० 6ठी सदी का पूर्वी रूप मिलैतॉस्-नगर से आए भृतिक सेना-दल का लेख जब वे दक्षिण-मिस्र के पहाड़ी मन्दिर अबू सिम्बेल तक पहुचे — ये इसकी 3 आरम्भिक पक्तिया है

ΒΑΣΙΛΕΟΣΕΛΘΟΝΤΟΣΕΣΕΛΕΦΑΝΤΙΝΑΝΨΑΜΑΤΙΧΟ
ΤΑΥΤΑΕΓΡΑΨΑΝΤΟΙΣΥΝΨΑΜΜΑΤΙΧΟΙΤΟΙΘΕΟΚΛΟΣ
ΕΠΛΕΟΝΗΛΘΟΝΔΕΚΕΡΚΙΟΣΚΑΤΥΠΕΡΘΕ ΥΙΣΟΠΟΤΑΜΟΣ

जब राजा प्सम्मितिखॉस [-द्वितीय सा०स०पू० 594 588] ऐलेफनतिनै को आए तब थेऑक्लेऑस् के पुत्र प्सम्मितिखॉस् के साथ चलनेवाले लोगो ने ये बाते लिखवायी जल-यात्रा कर वे कैरकिस् से भी आगे पहुचे जहा तक [नील-] नदी नौ-गम्य थी । (लिपि मे अब तक ओ के लिए ऑ-मैग नही बना)

3 पूर्वी रूप अथैनय् तथा कॉरिन्थॉस नगरो मे भी प्रयुक्त होने लगा, परन्तु एक पश्चिमी रूप मध्य-यूनान देश से दक्षिण-इटली तथा सिसली-द्वीप तक फैल गया। स्पर्तै-नगर से प्राप्त सा०स०पू० 5वी सदी का यह लेख देखे

(1) KENAPIONTIAΣENIKE
(2) DAMONONOK TAKIN
(3) AYTOΣANIOXION
(4) ENΘEBOBAIΣBIΠΠOIΣ
(5) EKTANAYTOBIΠΠON

'अरिऑनतिअ की घुड़-दौड़ मे भी दमोनॉन आठ बार जीता (ऐनिके) अपनी निज अश्व-शाला के जवान अश्वों को थामकर । वही वाह-अश्व जीता जिस पर वह स्वय सवार था। (6) KEKTOAYTOBIΠΠOKAI (7) BOKEΛEXENIKE

यूनानी वर्णमाला की एकरूपता का निर्णय यूनानी जगत् के हृदय मे ही हुआ अथैनय्-महानगरी के लिपिको की मण्डली ने सा०स०पू० 403 मे 24 वर्णों को (और वर्ण-क्रम के सख्यात्मक मूल्य के कारण 3 अतिरिक्त वर्णों को भी) अनुमोदित किया। उनके अक्षर-रूपों के लिए पश्चिम-एशिया के तटीय क्षेत्र ऑिओनिअ (= यवन - क्षेत्र) की विकसित पूर्व शैली को मानक रूप मे [3] स्वीकार कर लिया गया । इस निर्णय का तुरन्त लागू किया गया और शासक ऑव्क्लैय्दैस् की अध्यक्षता मे गणतन्त्रीय नियमो को लिपिबद्ध किया गया।[4]

---

(1) S SEGERT Vowel letters in Early Aramaic Journal of Near Eastern Studies 37 1978 pp 11 114 It is possible to put forward the hypothesis that *the Greek alphabet was first introduced in Pithekoussai* the oldest Greek colony in the West *in the mid eighth century B C* (2) दे० अगले पृष्ट पर लिपि-विकास सारिणी।

(3) – The Oriental Ionian version of the Greek alphabetic script (V JEFFERY The local Scripts of Archaic Greece the origin of the Greek alphabet and its development from the 8th to the 5th centuries B.C Oxford 1961 p 325)

(4) E.ROBERTS & E GARDNER An Introduction to Greek Epigraphy 2 vols Cambridge 1887 1905

श्रेण्य (क्लासिकी) यूनानी भाषा के लिए प्रयुक्त ये मानक बृहदाक्षर रूप सा०स०पू० 300 के बाद भी कोयनै भाषा के यूनानवादी विस्तारण से नहीं बदले। पंक्ति मे वर्ण, एक-के-बाद-एक, बिना अन्तराल के, लिखे जाते थे, लेकिन शब्दो के बीच कभी विभेदक बिन्दु लगाया जाता था अथवा खाली स्थान छोड़ा जाता था। लिपि मे छोटे अक्षर-रूप विराम-चिह्न सप्राण या अप्राण श्वसन-चिह्न[1] और स्वराघात के सकेत (जिससे लघु एव दीर्घ स्वर अ-आ एँ-ऐ ओ-औ तथा अु-अू मे अन्तर दिखाया जा सकता है) वे-सब उत्तर-क्लासिकी युग मे जुड़ गए। [फिर भी युनानी को शुद्ध रूप मे उतारने के लिए और अशोक के यूनानी पाठ को निर्धारित करने के लिए वे-सब सहायक ही है — दे० पृ० 32 34]

स्थायी रूप-धारण तक यूनानी लिपि का विकास

फेनीकी व्यंजन		अरामी मे स्वर-आधार-रूपी व्यंजन	अविकसित रूप		पूर्वी रूप		पश्चिमी रूप	मानक रूप	संख्या-मूल्य[2]	मुद्रित रूप	
अ	✗	अ → आ → (आ,अ)	ΔΑ		ΔΑ		ΔΑ	Α	1	Α	1
ब	9		ΚΓΒ		Β		Β	Β	2	Β	2
ग	1		ΊΓΛ		Γ		Λ	Γ	3	Γ	3
द	Δ		Δ		Δ		ΔD	Δ	4	Δ	4
ह	∃	ह → एं → (एं,ऐ)	ΕE		ΕΕ		ΕE	Ε	5	Ε	5
व	Y	व → अु	Ϝ	[व]	Ϝ		Ϝ	[Ϛ]	6		
ज	I		I		I		I	Ι	7	Ζ	6
ख	HB		ΒH	[ख] → (ऐ)	ΒH		Β	Η	8	Η	7
त	⊕		⊕⊗Ο	→ थ	⊗⊕		⊗⊕	Θ	9	Θ	8
य	Z	य → ओ → (ओ,इ)	ϟ ϟ ϟ |		|		|	Ι	10	Ι	9
क	ϡ		ΚΚΚ		ΚΚ		Κ	Κ	20	Κ	10
ल	CL		ΛΛ		ΛΛ		Λ	Λ	30	Λ	11
म	ϻ		ΜΜ		Μ		Μ	Μ	40	Μ	12
न	Ч		ΝΝ		ΝΝ		ΝΝ	Ν	50	Ν	13
स	ǂ	(ओ)	Ξ	→ क्स	ΞΞ		Ξ	Ξ	60	Ξ	14
अ	Ο		ΟC	→ (ओ)	Ο		Ο	Ο	70	Ο	15
प	7		ΓΓ		ΓΠ		ΓΠ	Π	80	Π	16
स	ϻ		Μ	[स]	Ϻ		Ϻ	[Ϻϡ]	900		
क	φ		ϘϘ	[क]	Ϙ		Ϙ	[Ϙ]	90		
र	4		PPR		PPD		PPR	Ρ	100	Ρ	17
श	W		Σ	→ स	ΣΣ		ΣΣΣ	Σ	200	Σ	18
त	X+		ΤΥ		Τ		Τ	Τ	300	Τ	19
			+								
			VYY	→ (अू,अु)	V		YYV	Υ	400	Υ	20
					+						
					⊙	→ फ	φ	Φ	500	Φ	21
					X	→ ख	X	Χ	600	Χ	22
					ΨΥ	→ प्स	ΨΥ	Ψ	700	Ψ	23
					Ω	→ (ओ)	Ω	Ω	800	Ω	24

(1) आरम्भ मे फेनीकी व्यंजन खेथ् (= ख्) को यूनानी रूप H मे चाहे खी (= ख्) अथवा अत (= ऐ) के लिए काम मे लाया गया। बाद मे खी का अपना अलग रूप X बना। फिर भी H या उसका आधा भाग ⊢ किसी शब्द के आरम्भिक स्वर का सप्राण श्वसन (= ह्) दिखाने के लिए प्रयुक्त होने लगा। उसका प्रथम उदाहरण सा०स०पू० 4थी सदी मे अर्धावतार वीर हैरक्लैस् के नाम का यह लिखित अवतरण ही है ⊢HPAKΛHΣ

(2) आरम्भ मे यूनानी गिनती के ऐसे अक-सकेत थे । ।। ।।। ।।।। के बाद Γ (= पैंन्से अर्थात पाँच का पहला अक्षर), Δ (= दैक दस), H (= हेकतों सौ) इत्यादि। लेकिन सा०स०पू० 4थी सदी से वर्णक्रम से अक-संख्या दिखायी गयी।

यूनानी अक्षर-रूपो के स्थायित्व के कारण सा०स०पू० 4थी या 3री सदी के अभिलेखो का पाठ करने मे इतनी कठिनाई नही होनी चाहिए। अशोक के द्विलिपीय अभिलेख मे अरामी पाठ से यूनानी पाठ कई गुना सुविधाजनक है , उसकी सुस्पष्ठ स्वर-युक्त लिपि को बाए हाथ से पढना बाए हाथ का खेल है। शिला-फलक पर और पपुरॅास् (पटेरपत्र) के बिब्लॅास् (पन्ने) पर प्राय एक ही लेखन-शैली मिलती है ।

अथैनय् से प्राप्त यह सुन्दर नमूना देखे जिसे अपनी यूनानवादी विस्तार-नीति चलाने के ठीक पहले सिकन्दर महान् ने लिखवाया
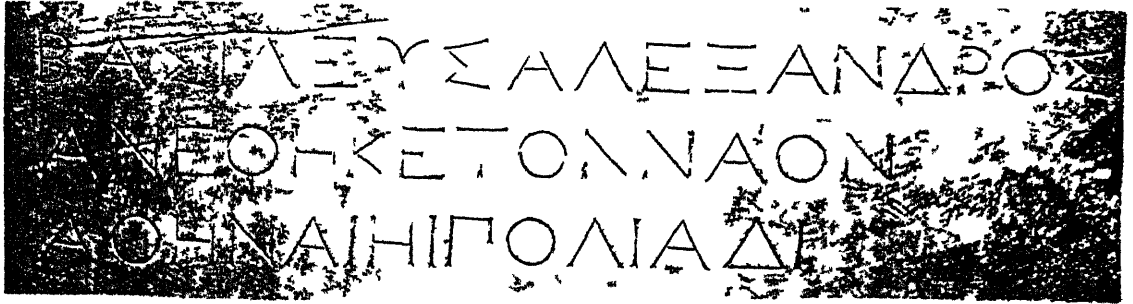
साफ-साफ पढ सकते है '[1]बसिलेव्स् अलेक्सन्द्रॅास् [2]अनेथैके तॅान् नऑान् [3]अथैनयै पॅालिअॅादि अर्थात् राजा सिकन्दर ने इस मन्दिर को नगर-रक्षिका अथैनै-देवी के लिए प्रतिष्ठित किया' ।

अब मिलैतॅास-नगर के कवि तिमॅाथेऑस् द्वारा रचित 'पॅरसय्' नामक काव्य की यह हस्तलिखित प्रति देखे जिसे सा०स०पू० 4थी सदी मे उतारा गया। साहित्यिक कृति सबधी यूनानी पटेरपत्रो मे यह अब तक उपलब्ध सब-से पुराना लेख है । इसमे किसी घसीट लेखन-शैली का सकेत नहीं है [1] । प्रवाही अक्षर-रूप केवल सा०स०पू० 2री सदी से दिखाई देनेवाले है

342 अशोकीय यूनानी लिपि के निर्धारण मे अभेद मे लघु भेद का महत्त्व

MINOR DISSIMILARITIES WITHIN SIMILARITY COUNT IN ASSESSING ASHOKAN GREEK

यदि हम मान सकते है कि कम-से-कम अशोक के शासनकाल तक सामान्य यूनानी लेखन की अक्षर-आकृतियो मे कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही उभर रहा है तो लिपि के इस व्यापक 'अभेद' मे छोटे भेद

---

(1) दे० B VAN GRONINGEN <u>Short Manual of Greek Palaeography</u> Leiden 1963 p 30 Each letter is separately written exactly after the manner of an inscription The forms of the letters are simple angular clear there is no trace of cursive influence *During the 3rd century the style remains practically the same* [यह उक्ति अशोकीय यूनानी पर लागू है ।] but the letters are often small and fine though of different size the horizontal line predominates and the letters are often broad Α Β Γ Δ Ε Ζ Η Θ Ι Κ Λ Μ Ν Ξ Ο Π Σ Τ Υ Φ Χ Ψ Ω

अधिक महत्व रखते है[1]। अश्मोत्कीर्ण एव सिक्को की ढलाई मे अक्षर-आकृतियो की मोटाई के कारण उन्हे पहचानना कभी कठिन हो जाता है उद० ल् Λ , द् Δ और अ A , ग् Γ , प् Γ और ए E । इसलिए सा०स०पू० 3री सदी के आरम्भ से वर्णों के किनारो को थोड़ा सजाकर उन्हे सुस्पष्ट लिखने का प्रयास करते है उद० H → H , Σ → Σ , I → Z , Θ → Θ, E → E । फिर भी सदियो के दौरान एकरूपता बनी रहती है । उद० मकिदूनी-यूनानी अलैक्सन्द्रौस् के सिक्का-लेख एव डेढ सौ वर्ष के बाद भारतीय-यूनानी दैमैत्रिऑस के सिक्का-लेख मे नाम-मात्र का अन्तर है।
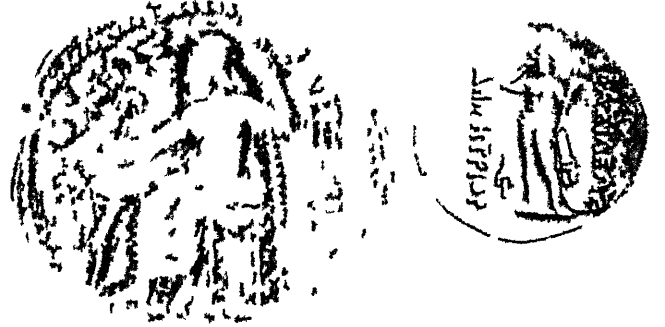
इने-गिने अक्षरो मे जटिल रूप-परिवर्तन अभिलेखन के काल-निर्धारण के लिए निर्णायक हो सकते है सा०स०पू० 3री सदी के मध्य से सिग्म को वर्तुलित आकार[2] देने लगते है Σ → C और एक सदी के पश्चात् ऐ-प्सिलौन् का भी वर्तुलन किया जा रहा है[3] E → Є । ओ-मिक्रौन् (छोटा ओ) को छोटा ही लिखा जा रहा है O → o जब कि ओ-मैग (बड़ा ओ) अपेक्षाकृत छोटा या अर्धचन्द्राकार बन रहा है Ω → Ω → ᘯ। सा०स०पू० 2री सदी मे विकसित हो रहे प्रवाही लेखन मे वह उलट भी जा सकता है ω । थैत के भीतर बिन्दु के बदले मे अनुप्रस्थ रेखा खीची जाती है O → θ और पी का दाया उठा हुआ पैर धीरे-धीरे नीचे उतरता है Γ → Π । जॉन् राइलैण्ड् द्वारा सगृहीत दो प्रसिद्ध उदाहरण देखे[4]

1 लगभग सा०स०पू० 150 मे लिखित तौरा-शास्त्र के यूनानी अनुवाद की प्राचीनतम उपलब्ध प्रति (व्या०वि० 25 1)

Є C θ Π ω
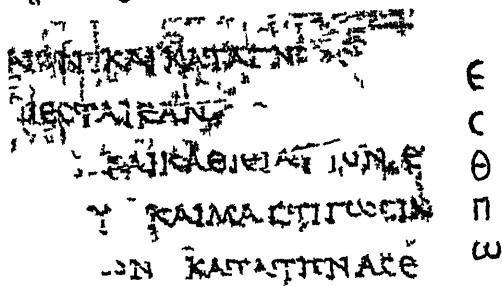
2 लगभग 150 सा०स० मे लिखित मूल यूनानी नया-विधान की प्राचीनतम उपलब्ध प्रति (यो० 18 31)

Є Π C

---
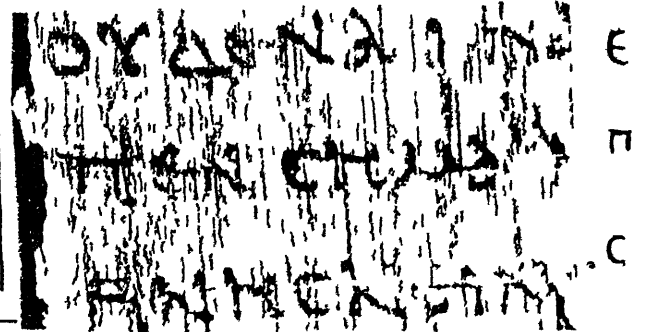
(1) दे० E.THOMSON Handbook of Greek and Latin Palaeography London 1906

(2) यूनानी मे इसे स्त्रौङ्गुलौस खरतैर् (rounded character) कहते है। इसका प्रथम उदाहरण मिस्री पटेरपत्रों में सा०स०पू० 310 का एक विवाह-सन्धि लेख है। (3) उद० अिथाकै-द्वीप से प्राप्त सा०स०पू० 175 के समर्पण-लेख का आरम्भ है ЄΥΧΗ अर्थात् ऐवखै व्रत निवेदन । (4) John Ryland s Library Manchester

अब द्विभाषीय अभिलेखो के दो उदाहरण देखे जिनमे ई० लिपिन्स्की यूनानी पाठ के लघु परिवर्तित रूपो के आधार पर अभिलेखन-काल निश्चित करने का प्रयत्न करते है[1]

1 कप्पदोकिअ के अगास-काले स्थान से प्राप्त यूनानी-अरामी समाधि-लेख का अकन लगभग सा०स०पू० 250 मे हुआ। लेकिन यह काल-निर्धारण अरामी पाठ के आधार पर किया गया (दे० पृ० 260) । यूनानी पाठ के तीन अक्षर-रूप इतने पुराने नही लग रहे है θ , C और ∩ । परन्तु E का रूप बिलकुल परम्परागत है और ᴼ को छोटे गोलाकार रूप मे थोड़ा ऊपर की ओर अकित किया गया है । निर्णय करना कठिन है । एक बाह्य साक्ष्य भी है अभिलेखन-कर्ता के दादा का नाम अरिओवैस् बताया गया है जो एक क्षत्रप था। क्या यह वही व्यक्ति था जो (अररहिअनॉस के अनुसार) सा०स०पू० 331 मे सिकन्दर को रोकने के अन्तिम प्रयास मे फारसी सेना के कप्पदोकिआई दल का नेतृत्व कर रहा था ? इस सम्भावना को देखते हुए यूनानी पाठ को एक असामान्य उदाहरण माना जाए कि सा०स०पू०3री सदी के मध्य मे प्रगतिशील अक्षर-आकृतिया मिल सकती है।

2 कप्पदोकिअ के फरासा स्थान से भी एक यूनानी-अरामी अभिलेख प्राप्त हुआ । यह एक दीक्षा-लेख है जो उस अवसर को स्मरण कराता है कि प्रशासक सगरिआस् मिथ्र के लिए मजूसा-पुरोहित बना (पृ० 269) । यूनानी पाठ मे MIΘPHI (= मिथ्रै) लिखा है जो यू० मिथ्रॅस् का सप्रदान कारक है । प्रथम सदी सा०स० से लेकर सप्रदान कारक का वह अिओते अनुच्चरित होकर प्राय छोडा जाता है। उसकी उपस्थिति एक सकेत है कि यह लेख सामान्य सवत के आरम्भ के कुछ पहले लिखा गया था । अन्य प्रगतिशील यूनानी अक्षर θ , C और Є इस अनुमान का समर्थन करते है।

यूनानी पुरालिपि सबधी इस विवेचन के अन्त मे हम दृढतापूर्वक कह सकते है कि यूनानी अभिलेखन की दूरतम पूर्व सीमा पर भी अशोकीय यूनानी लिपि समकालीन विस्तृत यूनानवादी प्रयोग से पूर्णत मेल खाती है। अशोक के अभिलेखो मे ऐसा कोई अक्षर-रूप नही है — जैसे θ, C Є Π अथवा ω — जो जो सा०स०पू० 3री सदी के बाद का हो। यदि लिपि के व्यापक अभेद मे लघु भेद पर ध्यान दे तो मान सकते है कि कन्दहार मे चाहे सा०स०पू० 254 253 मे शर-इ-कुन के शिलालेख का ऊपरी खड अथवा 251 250 मे कन्दकार-यूनानी का सम्पूर्ण खण्डित शिलाखण्डलेख अकित करते समय अशोक के यूनानी लिपिक ने (अपने साथी अरामी लिपिको के समान !) परम्परा-निष्ठ अक्षर-रूपो का प्रयोग कर कुछ रूढि-वादिता का प्रदर्शन किया।अश्मोत्कीर्णन के कारण दोनो यूनानी अभिलेखो की लेखन-शैली मे एकरूपता है,

---

(1) E.LIPINSKI Studies in Aramaic Inscriptions and Onomastics vol 1 Louvain 1975

(2) ARRIAN Anabasis of Alexander 3 8 5 (3) " The small vertical stroke after H (in line 6) can hardly be considered as a prolongation of the downstroke of the Y in line 5 In fact the stroke in line 6 is not even engraved in the exact prolongation of the downstroke in line 5 This means that it was not engraved with the same movement of the hand and that it belongs to line 6 It is therefore a *iôta adscriptum* and this has a certain importance for the dating of the inscription आधुनिक यूनानी सस्करण मे जब छोटे अक्षरो का प्रयोग होता है बृहदाक्षर की बगल मे लिखा हुआ अिओते (iôta ad scriptum) Hι अक्षर के नीचे लिखा जाता है (iota sub-scriptum पाद- अक्षात) ῃ

लेकिन लेख की अधिक लबाई के कारण (श०यू० मे 399 अक्षर है और क०यू० मे 1408) कन्दहार-यूनानी अभिलेख के अक्षर-रूप इतने स्थिर नही है कुछ आकार छोटे है कुछ बड़े , एक अक्षर बाईं ओर को दूसरा दाईं ओर को झुकता है । औसतन ये अशोकीय यूनानी अक्षरो की आकृतिया है

Α Α Α, Β Β, Γ Γ, Δ Δ Δ, Ε Ε Ε, Ι, Η Η, Θ Θ, Ι Ι /, Κ Κ Κ,
Λ Λ Λ, Μ Μ Μ, Ν Ν, Ξ, ο Ο, Π Π Π Π, Ρ Ρ, Σ Σ Σ,
Τ Τ Τ, Υ Υ Υ, Φ, Χ Χ, Ψ Ψ, Ω, Ω
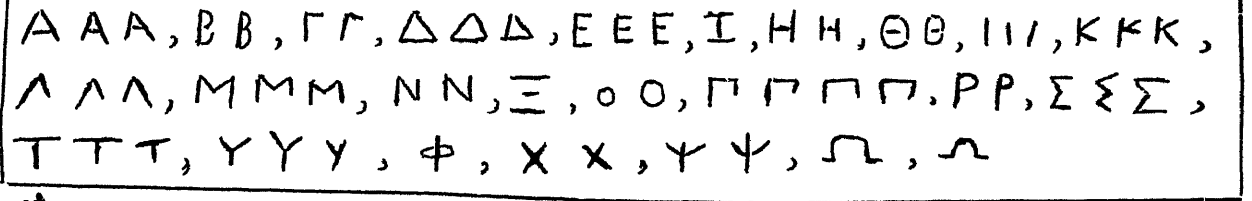
बैत B की वक्र-रेखाए अपेक्षाकृत सिकुड़ गईं B
ऍप्सिलॉन E की मध्य रेखा कुछ छोटी है E
थैत Θ की भीतरी अनुप्रस्थ रेखा किनारो तक नही पहुची Θ
मूँ M काफी चौड़ा बना M
ऑमिक्रॉन O का आकार छोटा रहता है o परन्तु एक-दो बार बढ़ा दिया गया है O
पीं Π का दाया पैर सिद्धाततः ऊपर उठा हुआ है Π लेकिन अनायास ज्यादा नीचे उतरता है Π
र्हो P का सिर थोड़ा पतला दिखाई दे रहा है P
सिग्म Σ की ऊपरी एव निचली रेखाए शर-इ-कुन मे एकदम समातर बराबर रेखाए है Σ,
कन्दहार-यूनानी मे वे ऊपर-नीचे की ओर फैल जाती है Σ । क्या यह भिन्न लिपिक/उत्कीर्णक का सकेत है ?
तँव् T की ऊपरी रेखा कुछ चौड़ी लगती है T
ऑमेंग Ω का सुन्दर गोलाकार ऊपर से दबा हुआ है, दोनो श०यू० तथा क०यू० मे यही कुरूप है Ω

इस प्रकार पाश्चात्य के प्राचीन धर्म-दर्शन एव साहित्य की गौरवमय यूनानी लिपि पाश्चात्योन्मुखी प्रचार हेतु प्राची धर्मलेख का सदेशवाहक माध्यम बनी। यूनानी लिपि मे आत्मगौरव अधिक था , उसने अपने को स्थानीय प्रयोग के लिए रूपान्तरित होने नही दिया । दूसरी ओर , भारतीय यूनानी अधिक विनम्र थे उन्होने अपने सिक्को पर भारतीय लिपियो का भी प्रयोग किया। जब 'रानी-देवी '[1] कहलानेवाली भारतीय यवनी अगथॉक्लॅय ने सा०स०पू० 140 मे फतेहपुर (रेह के शिवलिग) से प्राप्त विजय-स्तम्भ खड़ा किया, तब उसने उसपर यवनानी लिपि मे नही अपितु ब्राह्मी मे अभिलेख उत्कीर्ण कराया । उसका पति-देव मेनन्द्रॅास बौद्ध धर्मपन्थ का साधक बना था । उसी प्रकार यवन राजदूत हैलिऑदोरॅास् ने विदिशा मे अपने ध्वज-स्तम्भ पर ब्राह्मी मे ही देवदेव वासुदेव का नाम लिया (दे० पृ० 147)।

---

(1) यू० बसिलिस्स थेऑत्रॅापॅास - दे० A.K.NARAIN the Indo-Greeks 1957 p 110 ftn – god like divine "There was some oriental influence in the adoption of this title Agathocleia struck coins with her own portrait which has a very Indian look about it as regards features style of hair-dressing and even in what is visible of the dress

4 द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो का तुलनात्मक-व्याख्यात्मक पाठ-निर्णय

COMPARATIVE-INTERPRETATIVE READING OF THE BILINGUAL ASHOKAN INSCRIPTIONS

40 चतुर्थ भाग का आरम्भ — BEGINNING THE FOURTH PART

सदर्भ-क्षेत्र मे प्रवेश कर हमने अपने अध्ययन के प्रथम भाग मे अशोक की सास्कृतक-सामाजिक और भाषाई परिस्थिति मे ही उनके द्विभाषीय अभिलेखो का अवलोकन किया है , तत्पश्चात् अपने पुरालेखीय अध्ययन मे निकट आकर हमने उन अभिलेखो के अभिलेखीय स्वरूप पर ध्यान दिया । तब उन अशोकीय अभिलेखो के आमने-सामने रुककर हमने पुरालिपीय पृष्ठभूमि मे उनकी अक्षरीय विशिष्टताए पहचानने की चेष्टा की। अब हमे एकाग्रचित होकर द्विभाषीय अभिलेखो की बाह्य लिखित अभिव्यक्ति के पीछे उनके प्रगाढ सदेश को समझना होगा। इसके लिए अपने अत प्रज्ञात्मक नेत्र **समन्त चक्षु** को उन अभिलिखित पक्तियो पर गढ़ाना होगा। जहा पाठ अस्पष्ट हो वहा पाठालोचना के गभीर सिद्धातो के अनुसार अनुमानित पाठ को पुनर्स्थापित करे [1] ।जहा मूल पाठ बिलकुल सदिग्ध अथवा खण्डित हो वहा पाठ-निर्धारण एव अर्थ-निरूपण केवल तुलनात्मक अन्वेषण और भाषाई विश्लेषण की सहायता से सम्भव है । इस आनुमानिक उपागम की विशेष कठिनाई पर प्रकाश डाले ।

विषय-वस्तु के विस्तृत प्रस्तुतिकरण से विदित हुआ कि हमारी अध्येय सामग्री के द्विभाषीय शीर्ष के लिए वस्तुत एक बहुभाषीय आधार है । अशोक के अभिलेखो का मूल प्रारूप ***प्राकृत*** भाषा मे है जिसका चाहे अरामी मे अथवा यूनानी मे अनुवाद किया गया है। फिर भी यह अनुवाद शाब्दिक नही है [2] । यदि क्षेत्रीय अधिकारी स्थानीय बोली मे प्राकृत सस्करण तैयार कर कही सक्षिप्त रूप मे कहीं मध्यम रूप मे और कही विस्तृत रूप मे (चतुर्दश मु० शिला०) लिखित अथवा कभी मौखिक आदेश का अनुकूलन कर सकता था तो अनुवादक भी आवश्यकता के अनुसार कुछ हेरा-फेरी करने मे स्वतन्त्र था।

---

(1) दे०*एस०एम० कात्रे* **भारतीय पाठालोचन की भूमिका** भोपाल 1971 (1941)। प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त सहायक चिह्नो के अर्थ के लिए पृष्ठ 35 पर देखो । (2) फिर भी अखामेनी प्रशासन में भाषानुवाद करने का प्रचलन नहीं था जो ईरानी मे आदेशित था उसे लिपिक एक-एक शब्द के अरामी समरूप मे उतार देता था —दे० F RUNDGEN The renaissance of Imperial Aramaic " Orientalia Suecana 30 1981 very literal version with word for word correspondence called lišan mitxurti ' (language of correspondence) in Accadian and in Ezra 4 7 ' mᵉturgām' translated'

इतना ही नही अरामी अभिलेखो मे अनुवाद के साथ लिप्यन्तरण द्वारा मूल प्रारूप का अनुनाद भी दिया गया है। सस्वर प्राकृत अशो का उल्लेख कर लिप्यन्तरणकार ने सावधानी से अरामी व्यजन-लिपि मे उपलब्ध स्वराधार-रूपी व्यजनो का प्रयोग किया। अरामी लिपिकार इस कार्य मे निपुण थे क्योकि उन्हे पहले भी बहुत-से ईरानी नामो का [1],और कभी यूनानी नामो का [2], लिप्यन्तरण करना पड़ा। पाठ-निर्णय मे हमे विशेषकर शाहबाज़गढ़ी सस्करण के खरोष्ठी पाठ से अथवा कभी गिरनार के ब्राह्मी पाठ से तुलना करना चाहिए क्योकि प्राकृत प्रारूप को अनूदित या उद्धृत करने के लिए वे ही पाठ पश्चिमोत्तरी क्षेत्र से सन्निकट थे (दे० पृ० 51 , टिप्पणी 1)।

पुरालेखीय-पुरालिपीय अध्ययन से मालूम हुआ कि ***यूनानी*** भाषा-लिपि के अभिलेखो के अर्थ-निर्धारण मे कोई बड़ी समस्या नही आनी चाहिए —यद्यपि अन्त सास्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे यूनानी पाठ की अधिक व्याख्या की जा सकती है । इस शोध मे सब-से विषम कठिनाई अशोक के ***अरामी*** अभिलेखो से उठती है । एक ओर तो अरामी की व्यजनात्मक लिपि सुपाठ्य नही है , दूसरी ओर व्याख्याता अशोकीय अरामी भाषा को भ्रष्ट एव ईरानी से मिश्रित मानते है [3]। यदि अस्पष्ट व्यजन-लिपि के साथ भाषा भी अशुद्ध है तो ऐसे बे-सिर-पैर पाठ को पढ़ना सिर से कुआ खोदने के समान है। समस्या से जूझना ही होगा। लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है कि *कुछ* सम्माननीय विद्वान (जो न केवल पश्चिम के है —जैसे जर्मनी के एच० हुम्बख् वरन् पूर्व के भी —जैसे जापान के जी० इतो) मध्य-ईरानी / पहलवी के पूर्वापेक्षित प्रभाव को अधिक महत्व देते है [4]। कल की सम्भावना से आज की समस्या का समाधान नहीं होता। अशोक के अभिलेखो मे कुछ

---

(1) उद० अहुर-मज्द = अ्ह्व्र्म्जद् आसु-रथ = अ्स्व्र्त् होम-दात = ह्व्म्द्त् । मिस्री पटेरपत्र COW 26 मे उपचार शब्द को अरामी मे अ्वप्श्र् लिखा गया है। इसमे एकरूपता अनपेक्षित है इरानी-अरामी सनखा के एज्रा-ग्रथ मे सम्राट अर्तक्षत्र का नाम दो-तीन प्रकार से लिप्यन्तरित / रूपान्तरित किया गया । अरामी व्यजन श् / स् और स् का उच्चारण-भेद नही के बराबर है । (2) नख़्श-इ-रुस्तम मे दारा की समाधि पर बाद में लिखे हुए अरामी अश मे सम्भवत सेलेव्कोस् का नाम ˚स्ल्वक् के रूप मे अकित किया गया है । भारतीय-यूनानी सिक्कों के खरोष्ठी / ब्राह्मी लेखो मे यूनानी नामो के प्राकृत रूपातरण की अपनी विशेष पद्धति है । (3) " a highly monstrous form of Imperial Aramaic (K.LUKE. Biblebhasyam 1983 p 206) " an Aramaic peppered with Iranian words "(F SCIALPI East and West 1984 p 66) (4) HELMUT HUMBACH " Arameao-Iranian and Pahlavi Acta Iranica 1 2 Leiden 1974 pp 237 243 " The stage of transition from Aramaic to Pahlavi reached in the middle of the third century B C GIKYO ITO " Iranological contributions of Aśokan Aramaic inscriptions Acta Iranica 21 Leiden 1981 pp 308 315 Inscriptions on the ritual objects from the Persepolis Treasury already contain " Arameo Iranian mosaic formations " the Iranian vernaculars used in the Afghanistan area of Aśokan inscriptions are basically the old Avestan of eastern Iran

अधिक *ईरानी* शब्द है इसे कोई अस्वीकार नही करता । लेकिन अशोकीयअरामी को अब तक अन्त्य साम्राज्यिक अरामी भाषा के अन्तर्गत विशिष्ट स्थान देना चाहिए । यदि प्रशिक्षित परम्परावादी अरामी लिपिक अशोक की सेवा मे लिख रहे है (अर्थात् वे अब तक अर्सकीदी प्रशासन के सेवक नही है।) तो यह कैसे सम्भव है कि वे ईरानी भाषा लिखने के लिए केवल मृत अरामी भाषा के नियत,लिपिबद्ध अरामी शब्द-रूपो का प्रयोग कर रहे हो और उनमे,अरामी लिपि मे ही,ईरानी परप्रत्यय जोड़ दे ? ऐसी कृत्रिम अन्योच्चारण पद्धति (दे० पृ० 306) अपनाने की क्या आवश्यकता थी जब अशोक सीधे स्थानीय खरोष्ठी लिपि मे लिखवाकर प्राकृत सदेश को ईरानी अनुवादको द्वारा सुनवा सकते थे ? यह भी निश्चित नहीं है कि कम्बोज केवल ईरानी हो जो जाति धर्म और भाषा की दृष्टि से ही ईरानी हो (पृ० 109 111) । अत हमारी पहली कोशिश होनी चाहिए कि अशोक के अरामी अभिलेखो की व्यजन-लिपि मे हम जीवित अरामी शब्द ढूढ ले और बीच-बीच मे ईरानी से प्राप्त आगत शब्दो के बाहुल्य से विचलित न हो जाए ।

साथ-ही-साथ अपने विश्लेषणो मे न भूले कि ये बहुभाषीय अभिलेख मौर्य सम्राट की ओर से प्रसारित हुए। उनकी धम्मलिपि के सदेश पर अनावश्यक ईरानीकरण अरामीकरण अथवा यूनानीकरण न थोप दे। पूज्य आचार्य व्रत-इन्द्र-नाथ मुखर्जी द्विभाषीय अशोकीय अभिलेखो के प्रथम भारतीय व्याख्याता है [1],और उनकी सन्तुलित व्याख्याए सोने मे सुहागा लाती है। शोधकर्ता आभार मानते हुए उन्हीं के पथ पर चलते है। शोध-विषय के पेचीदे रास्ते मे ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान की जटिलताओ मे फसने का डर है। इसलिए आख खोलकर चले और —जैसे ऊपर कहा गया है— वही आख खोले जिससे शिलालेख मे अशोक की शीलता भी देखे और स्वय उनकी व्यक्तिगत अनुभूति के प्रति सवेदनशील बने। इस कारण चतुर्थ भाग का प्रस्तुति-क्रम न केवल द्विभाषीय अभिलेखो के अभिलेखन-काल के क्रम से हो वरन् देवो और मानवो के प्रिय राजा के हृदयोद्गार के उस प्रगामी क्रम से जिसके अनुसार वह आरम्भ मे अपने हृदय-परिवर्तन की स्वीकारोक्ति अभिलिखित करते है और अन्त मे प्रजा-हित की शुभचिन्ता से वसीयत-लेख ही उत्कीर्ण करते। [2]

---

(1) B.N MUKHERJEE. Studies in the Aramaic [and Greek] Edicts of Asoka Calcutta 1984 इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए जगन्नाथ अग्रवाल कहते है " It demonstrates Ancient India s concern for the moral and ethical advancement of humanity without distinction of race creed or language (2) From "Confession Edict to "Testament Edict" 13वे मुख्य शिलालेख मे एक आरम्भिक स्वीकार-लेख है और 7वे मुख्य स्तम्भलेख मे एक अन्तिम 'उत्तराधिकार-लेख ।

41 यूनानी कन्दहार-अभिलेख का द्वितीय अश (क० यू० $11_{ख}$ - 22)

SECOND PART OF THE GREEK KANDAHAR INSCRIPTION (Line 11b - 22)

यूनानी कन्दहार-अभिलेख यूनानी लिपि मे ही उत्कीर्ण एक भग्न शिलाखण्ड-लेख है (दे० पृ० 68) । लेख के ठीक मध्य मे एक रिक्त स्थान है जिससे दो अश बनते है। स्पष्ट रूप से प्रथम अश का विषय द्वादश मुख्य शिलालेख के प्रमुख भाग (प० $2_{ख}$ - 7 अर्थात् अन्त तक) का यूनानी सस्करण है जब कि द्वितीय अश त्रयोदश मुख्य शिलालेख के आरम्भिक आधे भाग (प० 1-$6_{क}$) से सबधित है। सम्भवत योन-क्षेत्र मे 14 मुख्य शिलालेखो की सम्पूर्ण शृखला का यूनानी रूपान्तरण कभी उपलब्ध था । दुर्भाग्य अथवा सौभाग्य कहे हमे दो आशिक शिलालेख ही प्राप्त है । त्रयोदश मु० शिला० लगभग सा०स०पू० 250 मे विज्ञापित हुआ लेकिन उसमे सम्राट अशोक के शासनकाल और उनके व्यक्तिगत जीवन के उस मोड़-बिन्दु का वर्णन है जब उन्होने पूर्णत हिसा का मार्ग छोड़ दिया । द्विभाषीय अभिलेखो के व्याख्यात्मक अध्ययन के लिए यही शुभारम्भ है क्योकि यही से अशोक पश्चात्तापी हृदय से बौद्ध उपासक के रूप मे अपनी आध्यात्मिक यात्रा का नवारम्भ करते है।

सा०स०पू० 257-256 की बात है । राज्याभिषेक से गिनकर अशोक के राज्यशासन के 8 वर्ष बीत गए और 9वा राज्यवर्ष चल रहा था (दे० पृ० 163) । मौर्य साम्राज्य के पूर्वी सीमान्त पर युद्ध छिड़ गया । आधुनिक भुवनेश्वर के दक्षिण मे धौली की अभिलिखित शिलाओ [1] के पास ही नवनिर्मित शान्ति-स्तूप" से वह अनुमानित स्थल दिखाई देता है जहा कलिंग-विजय के लिए भीषण नरसहार हुआ । रक्तपात के हृदयविदारक दृश्य से सम्राट अशोक दया-भाव से द्रवीभूत हो उठे । युद्ध-विजय की नीति त्यागकर वह प्रीति-धर्म की ओर मुड़े। दयाकूट बुद्धदेव के अनुमार्गी बनकर वह एक वर्ष तक,नवशिष्य के रूप मे,चलने का अभ्यास करते रहे , तब वेग से धर्म-विजय की ओर कदम बढ़ाने लगे। अब समय आया कि वह अपने अनुभव से दूसरो को धर्मानुपालन के लिए प्रेरित करे । युद्धोन्मत सिकन्दर के अनुवशी-अनुवर्ती यूनानियो के लिए भी शातिप्रिय प्रियदर्शी राजा ने प्रभावी यूनानी अनुवाद मे यह धर्मलेख भिजवाया व अकित कराया।

---

(1) ध्यान दे कि धौली सस्करण मे त्रयोदश मु०शिला० नही है वरन् दो 'पृथक् कलिंग शिलालेख' है ।

यूनानी कन्दहार-अभिलेख के द्वितीय अश का मूल पाठ सुनिश्चित है , केवल 3 यूनानी अक्षरो के सबध मे सदेह रह जाता है पक्ति 12 का प्रथम शब्द 'कत्-ऍस्त्रप्तय्'(व्याकरण की दृष्टि से सही) अथवा "कत्-ऍस्त्रेप्तय्"(दोषपूर्ण पाठ) , प० 15 का उपान्त्य शब्द "सुन्-तसिन्" अथवा "सुन्-तक्सिन्"(दोनो के अर्थ मे थोड़ा-सा अन्तर है — अक्षर सिग्म [Σ] और क्सी [Ξ] मे भी अन्तर कम है) , प० 21 के अन्त की ओर "हैगैन्तय्" अथवा "हैगॅन्तय्" पढ सकते है (क्रियारूप के काल का अन्तर है — अक्षर-रूप ऍत [H] और द्विस्वर ॲय् [EI] समान है) ।

[निम्न प्रस्तुति मे मूल यूनानी पाठ की लिप्यन्तरण-पद्धति के लिए पृष्ठ 32 34 पर देखे , उसका शाब्दिक अनुवाद सलग्न है। समानातर प्राकृत प्रारूप शहबाज़गढी-सस्करण के अनुरूप है । एक-एक यूनानी शब्द के सबध मे व्याकरणिक तुलनात्मक अन्त सास्कृतिक टिप्पणी के लिए पचम भाग की शब्दानुक्रमणिका देखे]

| क०यू० 11 ख-22 | (11) **ओगुदोओ, ऍतॅय् बसिलॅवोन्तास् पिओदॅस्सोव् (12) कत्-ऍस्त्रप्तय् तैन् कलिङ्गैन् ।**
पिओदॅस्सैस्[1] *के राजा होने के आठवे वर्ष मे*[2] *उथल-पुथल हुई उस कलिङ्गै को ।*
अठवष अभिसितस[3] देवनप्रियस प्रिअद्रशिस रञो कलिग विजित ।
अष्टवर्षाभिषिक्त-वाले देवानाप्रिय प्रियदर्शी राजा के द्वारा कलिग विजित हुआ।

ऍन् ऍजोग्रैमेन कय् ॲक्स् ऍग्मेन ऍकॅयूर्थैन् सोमतोन् (13) मुरिअॅदॅस् देक-पॅन्ते कय् अन्-अयूरेथैसन्
जीवित पकडे गए और निकाल लाये गए वहा से पद्रह दस-हजार[4] *व्यक्ति*[5] *और कत्ल कर दिये गए*
दिअढमत्रे प्रण शतसहस्रे ये ततो अपवुढे ,शतसहस्र मत्रे तत्र हते
डेढ मात्रा के शतसहस्र[6] प्राणी थे जो वहा से अपहृत हुए , शतसहस्र मात्रा के [प्राणी]

अल्लय् मुरिअॅदॅस् देक कय् स्खेदोन् अल्लोय् (14) तोसोव् तोय् ऍतेलॅव्तैसन् । अप्' ऍकॅयूनोव् तोव्
अन्य दस दस-हजार और प्राय अन्य इतने ही मर गए । उस समय
, बहु तवतके [व] मुटे । ततो पच
वहा हताहत हुए और बहुत-से उतने ही[7] मर गए । उसके पश्चात्

ख्रोनोव् [--- --- ---] ऍलेओस् कय् ओयक्तोस् अव्लान् ऍलबॅन् ,
से दयाभाव एव सहानुभूति ने उसे भर दिया[8],
अधुन लघेषु कलिगेषु तिव्रे ध्रमशिलन ध्रमकमत ध्रमनुशस्ति च देवनप्रियस । सो अस्ति अनुसोचन देवनप्रिअस
आज जब कलिग कब्जे मे है तीव्र है देवानाप्रिय का धर्माचार, धर्मकामना व धर्मानुशासन। ऐसा है देवानाप्रिय का अनुताप

---

(1) रेखाकित शब्द प्राकृत से रूपान्तरित शब्द है। जोड़-चिह्न से रेखाकित शब्द प्राकृत प्रारूप मे नही है। (2)अर्थात राज्य के 8वर्ष हो चुके वस्तुत 9वा राज्यवर्ष चल रहा है। (3) प्राकृत प्रारूप में लहरी से रेखाकित शब्द अनूदित / रूपान्तरित नही हुए। (4) अर्थात डेढ लाख। (5) शब्दश देहों के (6) अर्थात डेढलाख। (7) यूनानी अनुवाद के बल पर के० नॉरमन प्राकृत का यह अनुवाद करते है The translator into Greek took *bahu* in the sense of nearly almost rather as in Sanskrit *bahu-trivarsa* well nigh three years old The translation of the Prakrit [into ' many times more '] can therefore be corrected in the light of the Greek to almost as many "दे० K.R NORMAN Notes on the Greek version of Asoka s 12th and 13th Rock Edicts Journal of the Royal Asiatic Society p 115 (8) शब्दश 'पकड लिया ।

[--- --- ---] कय् बरेओस् ऐनेङ् केन् ।
और भारी बोझ की तरह उसने सह लिया।[1]

विजिनिति कलिगनि। अविजित हि विजिनमनो यो तत्र वध व मरण व अपवहो व जनस त वढ वेदनियमत गुरुमत च
कलिग के विजित होने से।अविजित के विजित हो जाने पर जो वहा जन का वध-मरण-अपहरण हो,वह अति वेदनीय व भारी

(15)
दि ? हॉय् ऑपॉय् ऐकेलेवन् अप्-ऐखस्थय् तौन् ऐम्-प्सुखोन् स्पाव्देन् ते कय् सुन्-तक्सिन्
जिस ढग से वह आज्ञा देते थे कि प्राणधारियो से परहेज करे[2] *उसने पराक्रम*[3] *और सयोजन भी*[4]
देवनप्रियस ।
है देवानाप्रिय के लिए ।
[← ध्रमकमत ध्रमनुशस्ति]

(16)
पेपॉयैतय् पेरि ऐव् सेबेयस् । कय् तॉव्ता ऐति दुस्-खेरेस्तेरॉन् हुप्-ऐटॉफे हॉ बसिलेव्स्
किया है धर्म-भक्ति के सबध मे[5] *। और वही अत्यधिक दुस्साध्य प्रारम्भ किया राजा ने*[6]
[← ध्रमशिलन] इद पि चु ततो गुरुमतर देवनप्रियस :
इससे भी अधिक भारी है देवानाप्रिय के लिए :

कय् हॉसॉय् ऐकेय् ओ कॉन् (17) — ब्रमेनय् ऐ स्रमेनय् ऐ कय् अल्लोय् तिनेस्
और [उन्होने] जितने वहा रहते थे[7] *— ब्रमेनय् या स्रमेनय् या और अन्य कोई*
ये तत्र वसति — ब्रमण व श्रमण व अन्ने व
जो वहा वास करते — चाहे ब्राह्मण अथवा श्रमण अथवा अन्य

हॉय् पेरि तैन् ऐव्-सेबेयन् दिअ-त्रिबॉन्तेस् ।
जो उस धर्म-भक्ति के सबध मे अध्यवसायी हो ।
प्रषड ग्रहथ व ये सु-विहित —
'पाषड'-वाले अथवा गृहस्थ जो सु-व्यवहारी हो[8] —

---

(1) यूनानी अनुवादक ने यहा नर-सहार की बात दुहराने के बदले राजा के अनुताप और वेदना पर अधिक बल दिया। दूसरी ओर प्रारूप मे जो धर्माचार-धर्मकामना-धर्मानुशासन की बात बीच मे कही गई थी उसे (विचारधारा के क्रम से अधिक सुयोग्य ढग से ।) प० 15 मे सुस्पष्ट कर किया। (2) अनुवादक ने प्राणी-मात्र के प्रति अहिंसा को धर्माचरण का अनिवार्य अग मानकर उसका विशेष उल्लेख किया — उसने पहले तो चतुर्थ मु० शिला० का अनुवाद करते समय यही पढा था राजा के धर्मानुशासन से प्राणियो के अवध, जीवधारियो के प्रति विशेष अहिसा आदि धर्मगुणो मे वृद्धि हो रही है। फिर शर-इ-कुन अभिलेख के यूनानी खण्ड मे धर्म-भक्ति की परिभाषा मे ये ही यूनानी शब्द मिलते है। (3) अथवा शीघ्रता तत्परता । (4) अथवा वैकल्पिक पाठ (सुन्-तसिस्) के अनुसार उद्योग प्रयत्न । फिर भी धर्माचरण बढाने के लिए अनुशासन प्रबध के अर्थ मे यू० सुन्-तक्सिस् उपयुक्त है - दे० K.NORMAN op cit p 115 There seems to be no doubt about the equivalence of *kamata* and σπουδή and of *anusathi and* σύνταξις (5) यू० ऐव्-सेबेय के विषय मे पचम भाग की विस्तृत व्याख्या देखो = अशोकीय धम्म , अरामी में कश्शीटा (सत्य सत्य-धर्माचरण)। (6) पिछले वाक्य के अनुसार यूनानी पाठ का विषय धर्म-भक्ति है और यही विषय जारी है । अत अनुवादक ने प्राकृत प्रारूप के एष से तेष तक के सम्पूर्ण उपवाक्य को धर्म-कर्तव्यों की सूची का एक नया प्रमुख वाक्य बनाया। विषय-परिवर्तन का ध्यान न कर व्याख्याता प्राकृत के अनुरूप यूनानी पाठ का यह अर्थ देते है और उसी को अत्यधिक कष्टमय मान लिया राजा ने — अर्थात (ये) जितने लेकिन कर्ताकारक सज्ञाओ के लिए कोई क्रिया-रूप नही है और उस अधूरे वाक्य को प० 20 के मध्य से जोड़ना है यहा के उन्ही लोगो मे से यदि कोई । (7) राजा के बाद वाक्य जारी है उसी तरह की वाक्य-रचना शा०यू० मे देखो न केवल राजा अन्य लोग भी धर्मकर्म मे सम्मिलित है। (8) - K.NORMAN "who are well-disposed" footnote *sadācāri* "

(18) तॉय्स् ऍकॅय् ऑय्कॉय् न्तस् ऍदॅय् त तॉय् बसिलॅओस् सुम्-फॅरॉन्त नॉअॅय्न्   कय् दिदस्कलॉन्
वहा वास करनेवालो के लिए अनिवार्य था   राजा की हितकारी बाते[1] सोचना   और गुरु का[2]
एष   अग्रभुटि   सुश्रुष   मत-
[उनकी] यही   अग्रणी   की सुश्रुषा   माता-

(19) कय् पतॅर कय् मैतॅर अॅप् अयस्खुनॅस्थय् कय् थव्मॅज्य्न् , फिलॉय्स् कय् हॅतॅय्रॉय्स् अगपान्
और पिता एव माता का[3] आदर करना और सम्मान करना   मित्रो एव साथियो को प्यार करना
पितुषु   सुश्रुष   गुरुन   सुश्रुष   मित्र - सस्तुत - सहय -
पिता   की सुश्रुषा   गुरुजनो की सुश्रुषा   मित्र - परिचित - सहायक -

कय् मै दिअ-प्सॅव्दॅस्थय् (20) दॉय्लॉय्स् कय् मिस्थोतॉय्स् होस् कॉय्फॉतत   ख्रॉस्थय् ।
और नही ठगना[4] सेवको[5] एव वेतन-भोगियो का यथासम्भव कोमलतम प्रयोग करना ।
ञ्नातिकेषु   दस - भटकन   सम्मप्रतिपति   द्रिढभतित ।
सबधी [के प्रति]   दास - भृतको के प्रति सम्यक् व्यवहार   [यही सब है] दृढ-भक्ति ।

तॉय्तोन् ऍकॅय्   तोन् तॉयव्त दिअ-प्रस्सॉ मॅनोन् , अॅय् तिस् तॅथ्नैकॅन् ऑ ऍय्क्स्-ऐत्काय् (21)
वहा के उन [लोगो] मे जो ऐसी बातो का आचरण करते   यदि कोई मर गया या निकाला गया
तेष तत्र भोति अपग्रथो व वधो व अभिरखन व निक्रमण , येष वपि सुविहितन   सिहो अविप्रहिनो   एतेष
उनमे वहा जब होता आघात या वध या प्रियजन का निष्कासन, अथवा जिन सु-व्यवहारियो का स्नेह क्षीण नही हुआ, उनके

– कय् तॉय्तॉ   अॅम् पर-द्रॉमैं   हॉय् लॉय्पॉय् हैगॅय्न्तय्   हॉ दॅ बसिलॅय्स् (22)
–और उस बात को ऐसा ही घटित होनेवाली बात के रूप मे[6] शेष [लोग] समझते है   परन्तु राजा ने
मित्र-सस्तुत-सहय-ञ्नातिक वसन प्रपुणति तत्र तपि तेष यो अपग्रथो भोति। प्रतिभग च एत सब्र मनुशन
मित्र-परिचित-सहायक-सबधी यदि व्यसन को प्राप्त हो तो वहा उन्हे भी होता आघात। यह तो सब मनुष्यो का प्रतिभाग्य है,

स्फॉद्र ऍपि तॉय्तॉय्स् ऍदुस् खेरॅनॅन् । कय् हॉति अॅन् तॉय्स् लॉय्पॉय्स् ॲथ्नॅसिन् ॲय्सिन्
अत्यन्त उन [लोगो] के सबध मे दुस्साध्य कष्ट उठाया[7] ।   और क्योकि शेष कौमो मे होते है   [8]
गुरुमत च देवनपियस ।   [-] नास्ति च एकतरे पि पषडस्पि न नम प्रसदो ।
और भारी है देवानाप्रिय के लिए ।   [किसी भी देश मे] ऐसा एक भी पाषड नही है जिसमे प्रसाद न हो ।

---

(1) अर्थात धर्म के अनुपालन मे प्रजा के हित मे जो लाभकारी हो — न कि राजा के स्वार्थ-लाभ में उसको सत्ता मे बनाये रखने के लिए । यूनानी अनुवादक ने अग्रणी की सुश्रुषा' का स्पष्टीकरण किया   शासन-अधिकारियो और विशेषकर राजा के प्रति जनता मे शुभ-इच्छा और सहयोग की भावना हो क्योकि ये राष्ट्र के व्यापक हित के जन-सेवक है। दे०आगे की व्याख्याए।   (2) यू० दिदॅस्कलॉस' सामान्य शिक्षक है परन्तु अशोकीय यूनानी प्रयोग में भारतीय सस्कृति के सदर्भ मे, उसका एक अतिरिक्त गहरा अर्थ गुरु बना। शब्दक्रम बदलकर उसे प्राथमिकता दी गई है।   (3) लेकिन माता-पिता' के लिए कोई यू० समरूप नही था अत शब्दक्रम मे पिता' को सामने लाया गया।   (4) अथवा यू० दिअ- पर जोर देते हुए झूठ पर झूठ न बोलते रहना ।   (5) यू० दॉय्लॉस' का एक अर्थ दास भी है परन्तु क्या प्राकृत दास' का वही अर्थ है जो यूनानी सस्कृति मे गुलाम का हो ? अत सेवक उपयुक्त है।
(6) शब्दश निकट दौड मे , passing by and by passing घटना-चक्र मे जो टाला नही जा सकता — दे० प्राकृत का प्रति-भाग्य' contrary to good fortune (K.NORMAN)   (7) अशोक ने केवल शोक नही किया वरन् सर्वहित के लिए धर्माचार का अत्यधिक दुस्साध्य कार्य प्रारम्भ किया (प० 16 का यू० शब्द फिर प्रयुक्त हुआ)।
(8) पाठ अधूरा है प्रत्येक जन-समूह के लिए, पडोसी यूनानी राज्यों के लिए भी, प्रियदर्शी सुख-प्रसाद की कामना करते।

क०यू०-अभिलेख के द्वितीय अश मे हमे यूनानी अनुवादक के परिश्रम का केवल आशिक नमूना प्राप्त है, परन्तु इतने से स्पष्ट हुआ कि वह अपना अनुवाद स्वय किसी लिखित प्रारूप पर उगली रखते हुए नही कर रहा था। सम्भवत प्राकृत प्रारूप का पाठ उसे रुक-रुक कर सुनाया जा रहा था और बीच-बीच मे वह पाठक से स्पष्टीकरण मागता था। इसके आधार पर उसने साहित्यिक स्तर[1] की कोइने यूनानी भाषा मे अपना रूपान्तरित यूनानी प्रारूप तैयार किया दुहराई गई बातो मे से कुछ छोड़ा और सुझाई हुई बातो मे से कुछ जोड़ा उद० राजा के अनुताप को उसने यूनानी साहित्य के दो शब्दो (**ऐलेऑस्** और **ऑयृक्तॉस्**) से करुणा का रग दिया । अनुवाद मे उसने नीतिवाद को बढ़ाया उद० "प्यार" करने और "न ठगने" का उपदेश दिया । यूनानी सस्कृति के अनुकूल माता-पिता के क्रम को पतैर् मैतैर् मे बदल दिया , और 'प्राणधारियो से परहेज का विषय यूनानी गुरु पुथगॉरस् की शब्दावली मे ही व्यक्त किया (दे०पृ० 187) । यूनानी लिपिक ने शैलात्मक परिवर्तन के द्वारा धर्मभक्ति की दुस्साध्य साधना को धर्मविजय सबधी इस अभिलेख का केन्द्रीय विचार बनाया । अशोक को "भारी कष्ट" न केवल प्राण-हानि के कारण हुआ (जैसे अग्रजी अनुवादो मे " more grief , personal sorrow, deeply afflicted ") , वरन् सकारात्मक सर्वहितकारी धर्मानुपालन करने और कराने के कारण।

इसलिए शायद दृढ भक्ति को व्यापक अर्थ मे समझना चाहिए न केवल राजशासन के प्रति निष्ठा के सीमित अर्थ मे —यद्यपि प्रो० मुखर्जी ने अष्टाध्यायी के सूत्र 4 3 10 के बल पर और क०यू० प० 18 के अनुवाद मे (" to mind the king's interests firm devotion to the king's [i e Asoka's] interest loyalty to the king ") इस स्वार्थ-नीति के अर्थ को दृढ़तापूर्वक स्थापित किया है[3]। लेकिन तर्क मे कुछ

---

(1) दे० G FUSSMAN Encyclopaedia Iranica 1987 p 781 "The literary quality of these texts proves that the Greeks of Kandahar had remained in constant contact with the Mediterranean world "

(2) प्रो० सरकार और मुखर्जी के अग्रेजी अनुवाद मे PITY (दोनो में गलत मुद्रण से PIETY छपा है ।) and COMPASSION D C SIRCAR Aśokan Studies 1979 p 49 B.N MUKHERJEE, op cit p 38 आदिकवि होमैरॉस् ने प्रथम शब्द का प्रयोग किया जब वीर हैक्तोर् की लाश पर देवताओ को तो दया आई परन्तु अखिलैव्स् ने सारा "दयाभाव" त्याग दिया • (इलिअस, 24 44) दूसरा शब्द प्रयुक्त हुआ जब समासदो ने ऑदुस्सैव्स् के पुत्र के प्रति "सहानुभूति" दिखाई, क्योंकि अब तक उसका पिता युद्ध से नही लौट आया (ऑदुस्सेय 2 81) -- हैरॉदॉतॉस् ने भी उस वर्णन में ऑयृक्तॉस् का प्रयोग किया जब कौरिन्थॉस्-नगर के निरकुश शासक अपग राजकुमारी लब्द के शिशु को मारने के लिए आए लेकिन शिशु की मुसकान से दस हत्यारे एक-के-बाद-एक "द्रवित" हो उठे (हिस्तॉरिअ 5 92 ।।

(3) B.N MUKHERJEE, op cit p 38 A note on the Greek version of Aśoka Yavanika 1 1991 pp 82-85 Political History of Ancient India (Com) p 627

कमजोरिया है । पाणिनि केवल एक सम्भव प्रयोग का उदाहरण देते है , इसका यह तात्पर्य नही कि जो निष्ठा राजशासन के प्रति दिखाई जाती है वह सम्पूर्ण धर्मशासन पर लागू नही हो सकती [1] । दूसरी ओर यह निश्चित नही है कि 13वे मुख्य शिलालेख के प्राकृत प्रारूप और यूनानी अनुवाद के समानान्तर पाठ मे **त् तॉव् बसिलेओस् सुम् फेरॉन्त नॉअॅग्न्** (राजा की हितकारी बाते सोचना) शब्दक्रम मे 13 शब्दो के बाद मिलनेवाले प्र० शब्द "*प्रिढभतित*" का रूपान्तरण हो । पुराना सुझाव सही ही लग रहा है कि यू० अनुवादक ने प्र० "*अग्रमुटि सुश्रुष*" को स्पष्ट करने की कोशिश की थी , जिसका अर्थ obedience to authority किया जा सकता है [2] । धर्म-अशोक धर्म की सेवा अपनी सेवा कराने का साधन नही बना रहे है [3] । यूनानी शब्दावली पर भी ध्यान दे **त् सुम् फेरॉन्त** = हितकारी बाते अर्थात् जो प्रजा के हित मे हो (दे० शब्दानुक्रमणिका "सुम्-फेरो") – उद० प्लतोन् का मानना है कि राजशासन (पॉलितॅय) का उद्देश्य है **त् सुम्-फेरॉन्त अन्थ्रोपॉख्स्** = मनुष्यो के हित की बाते [4] । यदि सिर्फ राजा के हित की बात हो तो यूनानी मे यह कहना पर्याप्त है **त् तॉव् बसिलेओस्** = राजा की बाते (the concerns of the king) [5] । ऐसी बात नही कि अशोक की धर्म-नीति मे राजनीतिक पक्ष नही था या धर्माधारित सुव्यवस्था से उन्हे लाभ नही था। हमे यहा अभिलेख मे अभिव्यक्त प्रस्तुति का प्रथम अर्थ समझना चाहिए अपने

---

(1) प्रो० मुखर्जी स्वय कहते है one of the accepted connotations of the word *bhakti* current from at least the time of Panini and so from a pre Maurya age was loyalty to the state " (2) K.NORMAN के अनुसार -- यद्यपि वह स्वय उपर्युक्त यूनानी शब्दो को प्र०पाठ के *सुविहित[i]* शब्द से जोड़ते है --जो शब्दक्रम मे 2 ही शब्दों के पहले आया।
(3) दे० F SCIALPI The ethics of Aśoka and the religious inspiration of the Achaemenids East and West 34 1984 p 71 [Dharma] is not a utilitarian instrumentum regni devised for the sole purpose of maintaining the system There are no grounds for assuming that political concern prevailed in Aśoka for his love of the Law or for questioning the sincerity of his proclamation " J S NEGI Some Indological Studies vol I Allahabad 1966 p 53 अर्थशास्त्र 1 16 का उल्लेख करते हुए That Kautilya stood for the king s sovereignty and unitary control of course goes without saying But the strength and security thus granted him are not engines of arbitrary rule for furthering his own interest in life He has indeed no real interest other than that of the people (4) PLATO Leges 875 a The Republic 1 343 No ruler in so far as he is acting as ruler will study or enjoin what is for his own interest All what he says and does will be said and done with a view to what is good and proper for the subject (5) उद० गुरु सुमुकुन्द की प्रसिद्ध उक्ति जो सम्राट का है (services due to Caesar) वह सम्राट को दो और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो मारकुस 12 17 के मूल यू० पाठ में त् कॅय्सरॉस त् तॉव् थेऑवे । इस्राएल के धर्मशास्त्र तॅनॉख् में आदर्श राजा वह है जो बुद्धि से शासन करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म से राज्य करेगा (यिर्मयाह 23 5)। धर्मचक्र-प्रवर्तक बुद्धदेव को अध्यात्म-क्षेत्र में धर्म का राजा माना गया " to teach people the principles of good conduct and to conquer the earth, not through the use of force, but through dharma and to build his spiritual kingdom which was oriented towards peace and unity (CHAI SHIN YU Early Buddhism and Christianity Delhi 1986 p 33)

हृदय-परिवर्तन की बात करनेवाले पश्चात्तापी राजा कहते है मैने शस्त्र-विजय का पथ छोड़ा है , अब धर्म-विजय को अपना आदर्श माना है। मै धर्म-भक्ति , अँव्-सेबय , के हितकार्य के लिए पूर्णत समर्पित हू और आशा करता हू कि समस्त प्रजा मे धर्माचरण की वृद्धि हो ।

और एक बात प्रो० मुखर्जी इसपर सदेह करते है कि शहबाजगढ़ी सस्करण को क० यू० का प्राकृत प्रारूप माना जाए क्योकि यूनानी पाठ का अन्तिम अधूरा वाक्य किसी और सस्करण की ओर सकेत करता है । परन्तु इस आधार पर शहबाजगढी सस्करण को क्यो हटाया जाए ? वास्तव मे,सूनानी पाठ के अन्तिम अर्धवाक्य मे कोई निषेधात्मक नास्ति-वाचक' निपात (negative particle) नही है — जब कि सभी अन्य उपलब्ध सस्करण नस्ति से आरम्भ होकर आगे बढते है । यूनानी अनुवादक ने शहबजगढी के समान ही यवनो के सबध मे अगले वाक्य को छोड़ा (जो पश्चिमोत्तर-क्षेत्र मे रहनेवाले यूनानी प्रवासियो के लिए अनर्थ-जैसा था) कि यवनो को छोडकर ऐसा कोई राज्य नहीं है जहा ब्राह्मण और श्रमण समुदाय न हों । अनुवादक ने शहबाजगढी-जैसे सस्करण के आधार पर नास्ति-वाचक को अस्ति-वाचक वाक्य मे बदलकर लिखा और क्योकि शेष कौमो मे होते है [**कोई न-कोई पाषड ' इसलिए उनमें धर्म-भकित स्वरूप ' प्रसाद ' भी है**] ।"

42 शर-इ-कुन अभिलेख का यूनानी पाठ (श० यू० 1-14)

GREEK TEXT OF THE SHAR I KUN INSCRIPTION (Line 1 14)

शर-इ-कुन अर्थात् प्राचीन कन्दहार से प्राप्त यूनानी एव अरामी लिपियो मे उत्कीर्ण शिलालेख (दे० पृ० 66 68) अशोक के आरम्भिक धर्मोत्साह के दिनो मे सम्भवत उनके 12वे राज्यवर्ष (सा०स०पू० 254-253) मे अभिलिखित हुआ। उसे मानो चतुर्थ लघु शिलालेख ' ही मान सकते है । उसमे बाद मे विज्ञापित होनेवाले मुख्य शिलालेखो का सक्षिप्त सारतत्व विद्यमान है। द्वितीय लघु शिलालेख का आधार चतुष्टय' (दे० पृ० 166) उसमे प्रतिबिम्बित होता है। परन्तु शर-इ-कुन अभिलेख को अशोकी अभिलेखो मे अद्वितीय स्थान प्राप्त है क्योकि वह एक ही अभिलेख है जो पूर्ण अर्थ मे द्विभाषिक' कहलाता है। फिर भी यूनानी तथा अरामी पाठ मे थोड़ा अन्तर है। स्वर-सहित यूनानी लिपि सुस्पष्ट है। इसलिए पहले उसी को परखे ।

शर-इ-कुन अभिलेख का यूनानी पाठ केवल पहली पंक्ति के मध्य मे क्षतिग्रस्त है जिससे आरम्भिक कालसूचक वाक्याश **देंक ऍतोँन् प्लैरै ? ओन्** प्रभावित है। अर्थ प्राय निश्चित है कि दस वर्ष पूर्ण किये जाने पर / हो जाने पर राजा विशेष धर्मोत्साह दिखाने लगे । यदि क्रियारूप **प्लैरैथॅन्तोन्** (पूर्ण किये जाने पर) पुनर्स्थापित किया जाए तो रिक्त स्थान के लिए एक या दो अक्षर अधिक हुए[1]

ΠΛΗΡΗ ΘΕΝΤ ΩΝ ; ΠΛΗΡΗ ΟΝΤ ΩΝ

दूसरी ओर व्याकरण की दृष्टि से यह क्रियारूप अशुद्ध है **प्लैरोथॅन्तोन्** होना चाहिए। इसलिए सी० गल्लवॉत्ति का सुझाव **प्लैरै ऑन्तोन्** (पूर्ण होने पर) सब-से उपयुक्त लगता है[2]। यदि दस राज्यवर्ष पूर्ण हुए तो 11वा वर्ष चालू है। प्रथम लघु शिलालेख से ज्ञात है कि उस समय उपासक-सघ मे आकर अशोक ने खूब पराक्रम किया क्योकि 12वे चालू वर्ष मे धर्मलेख लिखवाना आरम्भ कर वह उससे पहले 'एक वर्ष और कुछ अधिक' समय तक पराक्रम कर चुके थे। इसलिए गल्लवॉत्ति तथा अन्य विद्वानो का यह काल-निर्धारण असम्भव है कि शर-इ-कुन का अभिलेखन-काल 10वा वर्ष ही है और यूनानी पाठ के क्रियारूप ' **ऍदॅयॅक्सॅन्** का वह अर्थ भी नहीं हो सकता है कि इस अभिलेख द्वारा राजा ने धर्मनीति के राजादेश की औपचारिक उद्घोषणा की हो। केवल धर्मोत्साह 'दिखाने की बात है ।

लिप्यन्तरित यूनानी पाठ प्रस्तुत करने के पहले यह निर्णय भी करे कि विराम-चिह्न कहा लगाए। जैसे क०यू० 16 के सबध मे कहा गया है धर्म के कार्य करने मे राजा अकेले नही है , अन्य धर्मभक्त उनका साथ दे रहे है । उसी तरह श०यू० 6 मे केवल राजा जीव-दया को महत्व नही दे रहे है , शेष मनुष्य' भी इसके लिए परहेज करने को तैयार है। इसलिए शेष मनुष्य' के पहले विराम-चिह्न न लगाए। इस पाठ-निर्णय को समानान्तर अरामी पाठ से समर्थन मिलता है । श०यू० 11 के अन्तिम शब्द से इस लेख का अन्तिम वाक्य आरम्भ करे **'पर् त प्रॉतॅरॉन् कय तॉइ लॉय्पॉइ** ' (इस पूर्व दशा मे तथा शेष काल मे) । इसके लिए प्राकृत अभिलेखो मे बहुप्रयुक्त वाक्याश 'इहलोक और परलोक' से समर्थन मिलता है।

---

(1) पहली प० के अक्षर अपेक्षाकृत बड़े और चौड़े भी है। (2) CARLO GALLAVOTTI The Greek version of the Kandahar [=Shar i Kun] bilingual inscription of Aśoka East and West 10 1959 pp 185 191 यू० सज्ञा-विशेषण प्लैरैस् के विभक्ति-रूप कॉय्नै भाषा मे प्राय अनियमित है ।

(3) धर्म-भक्तिमय आचरण का परिणाम
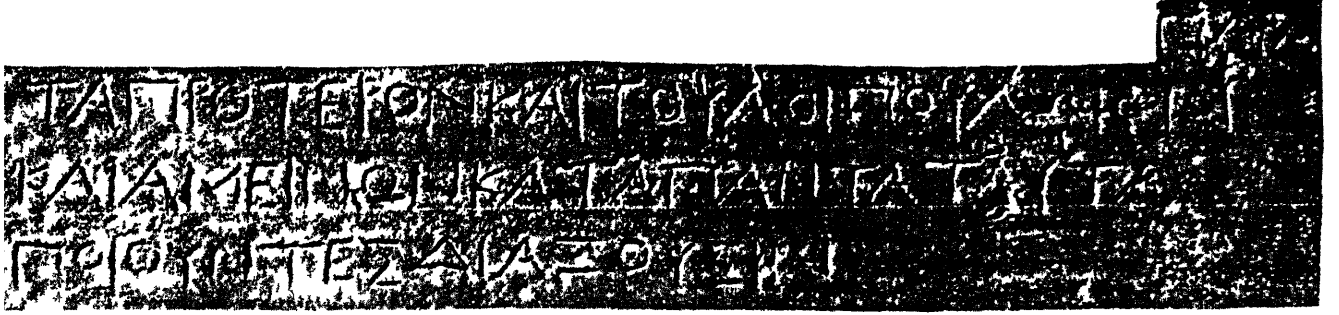
⑫ पर् त् प्रतिरोन् कय् तोव् लोय्योव् ⑬ लोअिओन् कय् अर्मर्योन् कत् पन्त ,
इस पूर्व-दशा मे[1] तथा शेष काल मे — वे हर तरह से अधिक कल्याणपूर्ण एव सुखमय[2] [जीवन] ,

⑭ तव्त पोयोव्न्तेस् , वि अक्सोवृसिन् ।
ऐसा आचरण अपनाते हुए[3], व्यतीत करेगे ।

43 शर-इ-कुन अभिलेख का अरामी पाठ (श० अ० 1-8)

ARAMAIC TEXT OF THE SHAR-I-KUN INSCRIPTION (Line 1-8)

शर-इ-कुन अभिलेख के निचले खण्ड की लिपि अरामी है। यही एकमात्र अशोकीय अरामी अभिलेख है, जिसके अर्थ-निर्धारण के लिए एक समानान्तर यूनानी पाठ उपलब्ध है । फिर भी कई-एक प्रश्नचिह्न बने रहेगे । सब-से पहले व्यजनात्मक लिपि के अक्षरो को सम्भावित शब्दो मे विभाजित कर उतार दे । इसके लिए देवनागरी लिप्यन्तरण मे केवल हलन्त-चिह्न से युक्त अक्षर प्रयुक्त कर सकते है। ध्यान दे कि आलेफ् (अ्) और अयिन् (अ्), कफ (क्) और क़ोफ् (क्) तथा सामेख् (स्) और साधे (स्) के छोटे अन्तर का बड़ा ही महत्व है। लिप्यन्तरण मे अब तक शीन् (श्) और सीन् (स्) का भेद नही किया जा सकता। अत एक कृत्रिम शीन्/सीन् अक्षर (श्स्) से ही सतुष्ट रहना होगा। बाद मे निम्न अपठनीय पाठ को यूनानी पाठानुवाद की मदद से अनुमानित अरामी / ईरानी / प्राकृत शब्दो के सार्थक स्वरसहित पाठ मे बदल दे।

---

(1) समय का बोध करने के लिए यदि पूर्वसर्ग पर के बाद कर्मकारक प्रयुक्त हो, तो वह प्राय के दौरान का अर्थ रखता है। पहले की बाते (त् प्रतिरोन) यहा अधर्म-असयम का पुराना जीवन नही है परन्तु आनेवाले जीवन (स्वर्ग ?) की तुलना मे वर्तमान पूर्व-दशा का सधर्ममय जीवन। (2) दोनों शब्द तर-भाव में क्रियाविशेषणात्मक रूप में प्रयुक्त हुए और उन्हे अन्तिम क्रियारूप दि-अक्सोव्सिन् ([जीवन] व्यतीत करेगे) जोड़ना चाहिए। ये एक-साथ प्रयुक्त होकर युग्मक शुभकामना को अभिव्यक्त करते है -- जैसे अग्रेजी मे wishing you a "happy and prosperous New Year दे०,श०यू० की उच्च कोटि की यूनानी भाषा के सबध मे L ROBERT Observations sur l inscription grecque Journal Asiatique 246 1958 pp 7 18 (3) शब्दश ये बातें करके , अर्थात धर्मभक्तिपूर्ण आचरण द्वारा इस धर्मानुशासन का पालन कर ।

1	श्नन् 10 पतयत व-अबय्य/द् जय् मरअन् परयदरश् मलकअ क्शयटअ महक्शट
2	मन् अदयन ज़अयर् मरअअ ल कलहम अनश्न् व-कलहम् अदवश्यअ ह्वबद्
3	व् ब् कल् अरक़अ् रअम् श्तय व-अप् ज़य् ज़नह् ब मअकलअ् ल-मरअन् मलकअ ज़अयर्
4	क़ट्लन् ज़नह् ल् मख्ज़ह कलहम् अनश्न् अतहख्सयनन् व ज़य् नवनयअ् अख्य/दन्
5	अलक् अनश्न् पतयज़बत् कनम ज़य् परबस्त ह्वयन् अलक् अतहख्सयनन् मन्
6	परबस्तय् व ह्व पतयस्तय् ल् अमवह्य व ल् अबवह्य व् ल-मज़यश्तयअ् अनश्न्
7	अयक् असरह्य ख्लक़्वतअ् व लअ् अयतय् दयनअ् ल् कलहम अनश्यअ ख्शयन्
8	ज़नह् ह्वतयर् ल-कलहम अनश्न व अवस्प यह्वतर

व्यजन-लिपि का उच्चारण करने के लिए अरामी लिपिको ने बहुत पहले से ही कुछ अर्ध-स्वर-रूपी वर्ण 'स्वराधार' के रूप मे प्रयुक्त किये अ्→आ ह्→ए/आ व्→ऊ/ओ और य्→ई अर्थात् प्राय सब अन्त्य और कुछ भीतरी दीर्घ स्वर दिखाये जाते है। असामान्य एव विदेशी शब्दो के कुछ लघु स्वरो के लिए भी वे ही स्वराधार-रूपी व्यजन काम मे आ सकते है । फिर भी प्रियद्रशि का अरामी लिप्यन्तरण एक अस्पष्ट **परयदरश्** ' (=प्रीद्र्श्) बना है। यही श०अ० का एकमात्र प्राकृत शब्द है। यद्यपि ए० डुपो सौमैर् ई० बन्वेनिस्ते ऑफ्० अल्त्हाइम् एव आर्० श्तील् जैसे विद्वान अरामी लिपि मे अरामी भाषा को ही पढ़ने का प्रयत्न करते हे और डबल्यू० हैन्निङ् एच० हुम्बख् और किसी हद तक जी० इतो के ईरानीकृत अर्थ-निरूपण (विशेषकर मध्य-ईरानी के लिए प्रयुक्त अरामी लिपि की अन्योच्चारण पद्धति) का विरोध करते है फिर भी योन-कम्बोज क्षेत्र की अरामी भाषा मे कुछ अधिक ईरानी/प्राचीन अवेस्ती शब्दो का प्रवेश स्वीकारने मे किसी को आपत्ति नही है।

श०अ० मे कम-से-कम 7 नये (अरामीकृत) ईरानी शब्द है (1) प० 2 मे **अदवश्यअ्** = अ-दुश / अ-दुश्त अर्थात् अ-दोषी अ-दुष्ट (दे० मिस्त्री पटेरपत्र पृ० 233 दवश्-करतअ् दुष्कृति , सम्भवत परसेपोलिस-लेखो मे न० 3 अ्-दवश्त् , मध्य-ईरानी 'दुश्-" से युक्त बहुत-से शब्द) अथवा अ-द्वैश अर्थात् अ-द्वेषी (प्राकृत अ-दोसो' के वे ही दो अर्थ है अ-दोष और अ-द्वेष !) , (2) प० 3 मे **श्तय्** = शाति अर्थात् आनन्द सुख-शान्ति (दे० नख्श-इ-रुस्तम क-1 पृ० 118 शियतिम') , (3) प० 5 मे' **पतयज़बत्**" = पति-ज्बात अर्थात् निषेध; (4/5) प० 5-6 मे **परबस्त / परबस्तय्**. = पर-बस्त /पर-बस्ति अर्थात् पर-बद्ध (प्रवधन मे)/ पर-बद्धता अथवा पर-बिस्ता / पर-बिस्ति अर्थात् (जी० ईटो के अनुसार) पर-भेदक शिकारी , और (6) प० 6 मे **ह्व पतयस्तय्** = हु-पत्यास्ति अर्थात् सु-श्रुषा तथा (7) '**मज़यश्तयअ्** = मजिश्त- अर्थात् महान्तम (महिष्ठ) पूज्यतम । कुछ अन्य सुझाव है प० 1 मे **पतयत(व)** = पैतित(ी) अर्थात् (उसका) प्रायश्चित और प० 8 मे **अ्-वस्प्** = आ-विस्पा अर्थात् शाश्वत। लेकिन उन अक्षरो के लिए सार्थक अरामी शब्द उपलब्ध हैं।

एक ही प्राकृत नाम प्रियदर्शी और सात नये ईरानी आगत शब्दो के प्रयोग के बावजूद श०अ० के कुल 92 शब्दो के 47 भिन्नार्थक शब्दो मे से 40 (= 85 %) शब्द अन्त्य साम्राज्यिक अरामी भाषा के अन्तर्गत आते है । अत शर-इ-कुन का द्विलिपीय लघु शिलालेख प्रधानत द्विभाषिक ही है और निचला अरामी पाठ उपरले यूनानी पाठ के समातर स्थान पर रखे जाने के योग्य है

श०यू० का शाब्दिक अनुवाद	श०अ० का स्वर-युक्त अरामी पाठ एव शाब्दिक अनुवाद[1]
दस वर्ष पूर्ण हो जाने पर	(1) **शनीन् 10 (= असरा) पथीथ् व-अमीथ्** *"10" वर्ष समाप्त और घटित हुए[2]*
राजा पिआदस्सैस् ने धर्म-भक्ति को	**ज़ी मारेना परीधर्रशि मल्का क़्श्शीटा** *कि हमारे स्वामी प्रियदर्शी राजा ने सद्-भक्ति को*
प्रकट किया मनुष्यो के लिए	**महक़्शेट्** *सत्यापित किया ।*
और उस समय से उसने मनुष्यो को	(2) **मिन् अँथयिन् ज़अेर् मरआ ल खोलहोम् अनाशीन्** *तब से उसने घटाया व्याधि को सभी मनुष्यो के लिए*
अधिक धर्म-भक्तिमय बनाया ।	**व-खोलहोम् अ-धोशख्या होमथ् ।** *और सभी को निर्दोष बनाया ।*
और सब-कुछ सुगतिशील है सारे देश मे	(3) **ऊ-ब खोल् अरक़ा राअेम् शाथि ।** *और सारे देश मे उठा है आनन्द ।*
और राजा परहेज करता है	**व-अफ् ज़ी ज़ना ब मेखुला ल-मरेना मल्का** *और इसके अतिरिक्त हमारे स्वामी राजा के खाने मे*
प्राणधारियो से	**जअेर्** (4) **काटलीन् ,** *उसने घटाया वध करनेवालो को ,*
और वे शेष मनुष्य भी ,	**ज़ना ल-मेखज़े कोलहोम् अनाशीन् अिथ्हख्सेनून् ।** *यह देखकर सभी मनुष्यो ने स्वय को समाला ।*
और जितने राजा के शिकारी या मछुए है	**व-ज़ी नूनव्या आखेधीन्** *और जो मछलिया पकड़नेवाले है*
वे रुके हुए है शिकार करने से ,	(5) **अिल्लेख् अनाशीन् पथिज़्बथ् ।** *उन्ही मनुष्यो को उसने मना किया ।*
और यदि कोई-कोई असयमी है	**कनेम् जी परभस्त् हावयीन्** *उसी तरह जो विषय-बद्ध[3] थे*
वे रुके हुए है उस असयम से शक्ति-भर से,	**अिल्लेख् अिथ्हख्सेनून्** (6) **मिन् परभस्ति ।** *उन्होने स्वय को समाला विषय-बद्धता से ।*

---

(1) दे० A.DUPONT SOMMER, E.BENVENISTE, G GARBINI, P NOBER, J KOOPMANS, F ALTHEIM R STIEHL, H HUMBACH J NAVEH, H DONNER W ROLLIG, B N MUKHERJEE, G ITO । (2) शब्दश 10 वर्षों को समाप्त व घटित किया गया। (3) एकवचन-रूप अनियमित है अगले बहुवचन कृदन्त हावयीन् से युक्त होकर अर्थ बहुवचन ही है।

और वे सुश्रूषु है पिता एव माता के प्रति	**वॅ-हु-फथ्यास्ति लॅ भ्रिम्मूही वॅ-ला ऽमूही** *और सु-श्रूषु (1) अपनी माता और अपने पिता*
और वद्धजनो की बातो के लिए ।	**अ-लॅ-मज़िश्तय्या ॲनाशीन् ।** *और वरिष्ठ-जनो के लिए मनुष्य [होते है] ।*
इस पूर्व-दशा मे	(7) **अेख् ॲस्साराही खलकूथा** *जैसे इसके लिए नियत(2)(है) (सौ)भाग्य*
तथा शेष काल मे	**वॅ-ला ऑथय् दीना** *और नही होगा (अन्त्य) न्याय-दण्ड*
वे हर तरह से अधिक कल्याणपूर्ण एव सुखमय	**लॅ-खॉलहोम् ॲनाशय्या खसीन् (8) फ़ना होथेर्** *सभी मनुष्यो के लिए (जो)सुशील(है)(3) यही बढता है*
जीवन ऐसा आचरण अपनाते हुए व्यतीत करेगे।	**लॅ खॉलहोम् ॲनाशीन् वॅ ओसेफ् यॅहोथेर् ।** *सभी मनुष्यो के लिए और अधिक बढता रहेगा।*

यूनानी एव अरामी पाठ को एक-साथ रखने से स्पष्ट हुआ कि दोनो एक-समान है। लगता है अरामी लिपिकार ने यूनानी का ही अनुवाद किया, परन्तु अन्तिम वाक्य मे केवल भावार्थ की समानता है। श०अ० की व्यजन-लिपि के अर्थनिर्धारण मे पूर्ण निश्चितता सम्भव भी नही है । विशेषकर **प्रॅबॅसॅत्(य्)** ' के सबध मे व्याख्याता लडते रहेगे किस बात मे आत्म-सयम की माग की गई है पर-बस्ति=विषय-आसक्ति मे अथवा पर-बिस्ति=आखेट मे ? अन्तत ज्ञानी के लिए एक ही बात है जैसे श्रीकृष्ण कहते है नाय हन्ति न हन्यते' (यह आत्मा न तो मारता है न मारा जाता है), जहि शत्रु महाबाहो कामरूप दुरासदम् (कामना-रूपी दुर्जय शत्रु को मार डाल) [श्रीमद्भगवद्गीता 2 19 3 43] । शिकारी अपने अवगुणो का शिकार करे । अस्तु श०अ० की 3री-4थी पकित मे ' वध करनेवालो को घटाने ' की बात तो कही गई थी, इस के अतिरिक्त आखेट-निषेध को अलग वाक्य मे पुन बताने की क्या आवश्यकता थी —विशेषकर जब विदेव्दात 14 5-6 के अनुसार मज्दी-पन्थियो को आदेश मिला कि हानिकर जीव-जन्तु मारे जाए ?(4)

---

(1) इस प्राचीन अवेस्ती सज्ञा (सु-आज्ञाकारिता) को यहा विधेय-सज्ञा (predicate-noun) के रूप मे प्रयुक्त किया गया जिससे यह विशेषण (आज्ञाकारी) का अर्थ धारण करती है। (2) शब्दश इसका स्थान / इसकी मान्यता ।
(3) ॲनाशय्या निश्चायक रूप मे है और खसीन समानाधिकरण (apposition) है ये मनुष्य सुशीलवाले । खसीन भक्त सन्त है जैसे एस्सेनी -धर्मपन्थी — दे० पृ० 182 140 । (4) जी०इतो प्रियदर्शी अशोक की भावना की अवहेलना करते हुए लिखते है " according to the Zoroastrian tradition King Wištāsp was converted to the teaching of Zoroaster 42 years after his accession to the throne The statement [of Asoka s conversion in the 10thyear] seems to have declared Asoka s superiority to Zoroaster communities as far as conversion to the Righteous Teaching is concerned (G ITO A new interpretation of Asokan inscriptions Taxila and Kandahar I Studia Iranica 6 1977 2 p 158

सम्राट अशोक किसी पाषड का विरोध नही करते है , वह अपने उच्चादर्श धीरे-धीरे मृदुलता से लागू करते और कराते है।[1] इस आरम्भिक प्रयास मे घटाने और स्वय को सभालने का व्यावहार्य आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इसलिए अरामी पाठ मे प्रिय राजा को हमारे स्वामी कहा गया है जिनका नमूना ' देखकर प्रजा भी प्रेरित हो जाती है। अशोक का मना करना फारसी सम्राट क्षयर्ष के कठोर निषेध (पति-ज्बात) के समान नही है 'मैने यह घोषित किया (पतियज्बयम्) अब से कोई दैवो की पूजा न करे ! (दे० पृ० 119) । सम्राट दारा द्रोहियो के साथ कभी मित्र (दौश्त-) का व्यवहार करने को तैयार नही था (बेहिस्तून 4 67 दे० पृ० 250), जब कि अशोक क्षमा करना चाहते थे।

यूनानी अनुवादक के समान अरामी अनुवादक ने भी **धम्म** को नैतिक धर्माचरण की शब्दावली मे व्यक्त किया यू० ' अॅव्-सेबॅय (धर्म-भक्तिमय आचरण) की तुलना मे अरामी कश्शीटा (सद्भक्ति सदाचरण) अशोक की अवधारणा सद्धर्म (भाब्रु शिलाफलक-लेख **सधमे**) से और निकट है (दे०पृ० 266)। सुश्रूषा उसकी विशेष पहचान है। उसके लिए अनुवादक ने एक ईरानी-अवेस्ती शब्द हु-पत्यास्ति का प्रयोग किया।[2] एच० हुम्बख् के अनुसार बौद्ध आदर्श को प्रभु ज़रथुश्त्र की शिक्षाओ की भाषा मे अभिव्यक्त किया गया।[3] अरामी अनुवादक ने अनुमानित प्राकृत प्रारूप के अनुरूप सुश्रूषा-धर्म का पहला कर्त्तव्य मातृ-देवोभव ही समझ लिया जब कि यूनानी पाठ मे पिता को प्राथमिकता दी गई।[4]

इस प्रकार प्राचीन कन्दहार मे अशोक ने प्राचीन विश्व की दो सम्पर्क-भाषाओ मे धर्माचरण के उन पहलुओ पर प्रकाश डाला जो आधुनिक युग के लिए इतने ही उन्नतिकारक है भूमण्डलीय आत्मघातक प्रदूषण रोकने के लिए भोगवादी सस्कृति को प्रकृति-प्रेम की भावना से आत्मनियन्त्रण सीखना चाहिए , और इससे अधिक महत्वपूर्ण है मानव-प्रेम जो प्रत्येक सह-मानव के जीवन-मूल्यो की रक्षा करता चाहे दीन कुटीर के छोटे कुटुम्ब मे या हमारे ससार-परिवार मे ।

---

(1) दे० B.N MUKHERJEE. op cit p 59 "The next stage of action is recorded in the Lagman edicts which indicate that Priyadarśī banished from his subjects (excessive) lovers of hunting of animals and fishes in the (expired) year 16 An order for general prohibition from killing of certain types of animals and fishes was promulgated in his 26th year

(2) उद० यश्न 53 3 सदविचारो का दृढ आधार (foundation/support - paityasti) // स० प्रतिष्ठा ।

(3) The translator of the Aramaeo Iranian version of Qandahar I made use of Zoroastrian terms to express Buddhist ideas in the same way as the translator of the Greek version did not hesitate to render Buddhist concepts in the terms of contemporary Greek philosophy (H HUMBACH German Scholars on India vol 2 p 123)

(4) दे० बेहिस्तून 1 30 का क्रम ' हमाता - हमपिता । दे० शार-इ-कुन के अरामी पाठ का प्राकृत में रूपान्तरण D C SIRCAR Aśokan Studies p 115 116 N P RASTOGI Inscriptions of Aśoka p 335 द्विभाषीय पाठ का हिन्दी अनुवाद भी देखो *राजबली पाण्डेय* **अशोक के अभिलेख** पृ० 192 तथा प्रो० रस्तोगी के उपर्युक्त ग्रथ मे पृ० 336

44 अरामी तक्षशिला - अभिलेख (त० 1-12)
THE ARAMAIC TAXILA INSCRIPTION (LINE 1-12)

सन् 1914 से विद्वद्जगत् को मालूम है कि तक्षशिला के उत्खनन मे सफेद सगमरमर के अष्टभुजाकार स्तम्भ पर एक भग्न अरामी अभिलेख प्राप्त हुआ (दे० पृ० 55 63) , लेकिन अब तक उसके अर्थ-निर्धारण की समस्याओ का निश्चित एव सतोषजनक समाधान नही हुआ। विद्वानो ने उसे अलग-अलग सदर्भ मे पढ़कर बहुत प्रकार के अर्थ लगाये है । पहला कारण है अभिलेख की खण्डित अवस्था स्तम्भलेख के अवशिष्ट भाग की प्रथम पक्ति मे केवल 5-6 अक्षर पक्ति के मध्य मे ही दिखाई देते हे मानो आधुनिक प्रयोग के अनुरूप कोई शीर्षक नया उपशीर्षक लगाया गया हो । फिर भी बहुत सम्भव है कि उस पक्ति के ऊपर भी कुछ-न-कुछ अकित किया गया था। अन्तिम 12वी प० मे वर्तमान अभिलेख के अवशिष्ट अश के लिए एक सार्थक अन्त मिलता है । उस पक्ति के अक्षरो को एक-दूसरे से सटाकर लिखा गया ताकि उसी पक्ति मे लेख को समाप्त किया जाए। फिर 7वी प० की बाईं ओर अर्थात् लिप्यन्तरित पाठ की दाहिनी ओर कुछ खाली जगह छोड़ दी गई है , और यह मतलब से छोड़ी गई क्योकि उस पक्ति के अक्षर अधिक चौड़े बनाये गये है। उसके नीचे 8वी प० के अक्षर सकरे है,और जो विद्वान अधूरी पक्तियो मे बहुत जोड़ने के पक्ष मे है वे इस पक्ति मे केवल एक ही अक्षर जोड़ते है। इसलिए यह ठोस अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रत्येक पकित मे अधिक-से-अधिक एक-दो अक्षर बाईं ओर पर लुप्त हो सकते है। केवल 10वी प० के सबध मे निश्चित रूप से कह सकते हे कि वह बाईं ओर पर क्षतिग्रस्त है।

सदिग्ध पाठ का दूसरा कारण, व्यजनात्मक अरामी लिपि ही है । व्याख्याता के सम्मुख हमेशा यह प्रलोभन बना रहता है कि वह स्वय अपनी किसी पूर्वधारणा से ग्रस्त व्यजनो के साथ ऐसे स्वर जोड़ दे या अलग शब्द बनाकर बाट दे जो उसे अपने दृष्टिकोण मे सार्थक लगते है। पुरालिपीय अध्ययन मे (दे० पृ० 304-305) हम देख चुके है कि कौन-कौन अक्षर-रूप पहचानने मे अधिक भ्रम पैदा हो सकता है। तक्षशिला की अक्षर-आकृतियो मे सब-से भ्रामक है दालेथ् (द्) और रेश् (र्) जिनमे न्यूनतम अन्तर है और कभी नून् (न्) वाव् (व्) अथवा कफ् (क्) से भी उनका भेद नही किया जा सकता। इनके अलावा गीमेल् (ग्)-योघ् (य्), बेथ् (ब्)-लामेध् (ल), यहा तक कि सामेख् (स्)-हे (ह्)-ताव् (त) के विकृत रूपो मे भी समानता है।

अर्थ-निरूपन की भिन्नता का तीसरा कारण भाषा के सबध मे है यदि अरामी लिपि मे अधिक-से-अधिक ईरानी शब्दो को घुसेड़ दे तो बहुरूपिये के अरामी मुखौटे पर कौन विश्वास कर सकता है ? शर-इ-कुन के अरामी पाठ मे अन्त्य साम्राज्यिक अरामी भाषा के 85 % शब्द प्रयुक्त हुए । क्या कन्दहार से तक्षशिला इतनी दूरी पर है कि लिपिकीय परम्परा मे इतना अन्तर आ जा सकता है कि यहा (जी० ईतो की गिनती मे) केवल 60 % अरामी शब्द रह गए है ?

चौथा कारण है अभिलेखन-काल का निर्णय। प्रियदर्शी-अशोक नामक अपनी उत्कृष्ट रचना मे श्रीराम गोयल सन् 1988 तक यह आम विचार दुहराते है कि तक्षशिला के सिरकप-क्षेत्र के मकान से जो अरामी लेख मिला उसमे एक राजपुरुष का उल्लेख हे जिसकी पद-वृद्धि प्रियदर्शी की कृपा से हुई थी । हो सकता है कि यह लेख उस समय का हो जब अशोक तक्षशिला का वायसराय था [1] । वास्तव मे यह विचार डॉ० ऑफ्०सी० अन्द्रेअस् ने सन् 1931 के मरणोपरान्त प्रकाशन मे प्रकट किया था[2] तक्षशिला का स्तम्भलेख उस समय अकित हुआ जब युवा राज्यपाल अशोक ने रामे-दाते नामक व्यक्ति को नगराध्यक्ष नियुकत किया। पहली पक्ति के अस्पष्ट व्यजनो मे अन्द्रेअस् ने **ज़िख्रूथा** अर्थात् स्मारक(-लेख) पढा[3] तथा 3री-4थी प० के अनुमानित शब्द **नग्गारूथा** को तक्ष(बढई)-शिला का अनूदित रूप माना (दे० पृ० 60) । प्रो० सी०डी० चटर्जी ने इस सम्भावना पर विचार कर कि तक्षशिला के अरामी-भाषाभाषी इस्राएली व्यापारी ही थे इस स्मृतिलेख को एक धन्यवाद-प्रदर्शन समझ लिया क्योकि रामे-दाते नामक उच्चाधिकारी ने उन यहूदी भक्तो के सभागृह (सिनगॉग्) के निर्माण हेतु उदारतापूर्वक दान दिया होगा[4]।

यह तर्क भी किया गया कि तक्षशिला-अभिलेख मे प्रियदर्शी को केवल हमारे स्वामी की उपाधि दी गई है उन्हे राजा नही कहा गया है। लेकिन अरामी लिपिकीय परम्परा मे आरम्भिक राजकीय प्रस्तर-लेखो से ही राजा को **मारन् / मारेना** (हमारे स्वामी) सबोधित किया गया।[5] और यह न भूले कि शर-

---

(1) पृ० 36 । (2) F C ANDREAS paper edited by H A.WINKLER Nachrichten von der Gesellschaft der Wissenschaften zu Gottingen 1931 pp 6 17 सर जॉन मार्शल ने इस मतविचार को व्यापक स्वीकृति दिलायी -दे० SIR JOHN MARSHALL Taxila Cambridge 1951 p 165 (3) वास्तव मे प्रचलित अरामी रूप **दिख्रोना** है ।
(4) C D CHATTERJEE." The Aramaic language and its problems in the early history of Iran and Afghanistan Acarya Vandana 1983 pp 208 दे० इस शोध के पृ० 86 98 121 268 279 (5) उद०पृ० 214 220 228

इ-कुन के अरामी पाठ मे हमारे स्वामी प्रियदर्शी को राजा की भी उपाधि दी गई है[1]। फिर प्रियदर्शी को राजतिलक के साथ दिया गया राजा का शासनिक नाम मान सकते है। अत तक्षशिला का यह विशेष स्तम्भलेख अशोक के राज्याभिषेक के पश्चात् अकित किया गया और तभी,जब राज्यलेख लिखवाने का सिलसिला आरम्भ हुआ,और सम्भवत प्रथम चार मुख्य शिलालेखो के प्रसारित हो जाने पर ही अर्थात् 13वे चालू राज्यवर्ष मे सा०स०पू० 253 252 मे (दे० पृ० 171) ।

अर्थ-निर्धारण के सबध मे मतभेद का पाचवा कारण इस प्रश्न का उत्तर है कि तक्षशिला-लेख का प्राकृत आधार क्या था। सन् 1969 मे हेल्मूथ् हुम्बख् ने दिखाया कि शहबाजगढी की चट्टान पर अकित चतुर्थ मुख्य शिलालेख के सस्करण को आधार मानने से तक्षशिला स्तम्भलेख का सार्थक विश्लेषण किया जा सकता है। उन्होने त०-लेख को उस प्राकृत प्रारूप का अरामी-ईरानी अनुवाद ही बताया और खण्डित पक्तियो को पुनर्स्थापित करने की कोशिश की। लेकिन ईरानी यहा तक कि पहलवी,पक्ष को अधिक महत्व देने से और रिक्त स्थानो मे अन-अरामी शब्दो को भरपूर भरने से उन्होने अरामी-प्रेमी विद्वानो की तीक्ष्ण आलोचना मोल ली। प्रो० बी०अेन्० मुखर्जी ने भी आलोचको का साथ दिया और स्पष्ट शब्दो मे कहा कि त०-लेख न तो चतुर्थ मुख्य शिला० का शाब्दिक अनुवाद है न उसका भावार्थ अनुवाद और न उसका सक्षिप्त रूपान्तर है[2] — अधिक-से-अधिक उसे चतुर्थ मुख्य शिला० से प्रेरित एक ' **सखित** अभिलेख (अर्थात् brief edict, जैसे चतुर्दश मुख्य शिला० मे निर्दिष्ट हुआ) मान सकते है। दूसरी ओर गिक्यो इतो ने हुम्बख् के सफलतापूर्ण पाठनिर्धारण को निर्णायक समझ लिया और उसे सुधारने और आगे बढाने का प्रयास किया[3]। हुम्बख् के समान वह त० की अरामी भाषा मे बडी मात्रा मे प्राचीन ईरानी शब्दो का समावेश स्वीकार करते है। प्राय हर पक्ति मे वह एक-दो लुप्त शब्द भी जोड देते हैं । निम्न समानान्तर प्रस्तुति मे शहबाजगढी के मूल प्राकृत पाठ की खरोष्टी लिपि का लिप्यन्तरण किया गया है और जी० इतो द्वारा प्रस्तावित ईरानी-अरामी पाठ का लिप्यन्तरित उच्चारण भी दिया गया है

---

(1) परन्तु दे० H HUMBACH The Aramaic Aśoka inscription from Taxila German Scholars on India vol 2 1976 p 130 Aramaic *mr'n* our lord proves now definitely to be an attempt to translate the Indian title *devānāmpriya-* friend of the gods शोधकर्ता का सुझाव है कि हमारे स्वामी को अनुवाद नही, परन अशोक की लोकप्रियता का सूचक माने यह देवानाप्रिय' इसलिए भी है कि देव-तुल्य प्रजा के प्रिय राजा है। (2) B.N MUKHERJEE op cit p 27
(3) GIKYO ITO A new interpretation of Aśokan inscriptions Taxila and Kandahar I Studia Iranica 6 1977 pp 151 152

चतुर्थ मुख्य शिलालेख प० 5-9	तक्षशिला स्तम्भलेख (जी० इतो के अनुसार)
तदिशे अज वढिते देवनप्रियस प्रियद्रशिस रञो	
ऐसा आजकल बढ़ा है देवानाप्रिय राजा प्रियदर्शी के	
ध्रमनुशस्तिय अनरभो	0 ? [अ-कुश्ति]
धर्मानुशासन से अवध	*न मारना*
प्रणन अविहिस	1 [लि-भृरियू्था [अ-विस्ति]
प्राणियो का अहिंसा	*प्राणियो को न पीड़ित करना*
भुतन , ञतिन	2 लॅ दामि दाति , अल् [क्रारीभय्या]
भूतो के प्रति सबधियो के प्रति	*सृष्ट भूतो को रिश्तेदारो के प्रति*
सपटिपति ब्रमण-	3 नाघृरूथा/नॅघीघूथा अल् [ब्रमन् /मगश]
सद्व्यवहार ब्राह्मण-	*समादर ब्राह्मण-*
श्रमणन सपटिपति मत-	4 अरूजूश् नाघृरूथा/नॅघीघूथा [लॅ-अिम्मूही]
श्रमणो के प्रति सद्व्यवहार माता-	*भिक्षु के प्रति समादर माता की*
पितुषु , वुढन	5 वॅ-ला ऽभूही हु-व[रद]
पिता वृद्धों की	*और पिता की वृद्ध (की भी)*
सुश्रुष एस	6 हु-पत्यास्ति जॅना [वॅ अफ्]
सुश्रुषा ऐसा	*सुश्रुषा यही और उसी तरह*
अञ्ञ च बहुविध ध्रम-	7 जख् बिह्ववरद ह[लकूथ]
अन्य भी बहुविध धर्म-	अन्य बहुविध आचरण-
चरण वढित वढिशति च यो	8 हु-निश्तावन् ञी होथे[-रॅह]
आचरण बढ़ा और बढेगा जो	*सु-व्यवस्था जिसे बढ़ाया*
देवनप्रियस प्रियद्रशिस रञो	9 मारेना प्रियदर्[शि मल्का] ।
देवानाप्रिय राजा प्रियदर्शी द्वारा	*स्वामी राजा प्रियदर्शी ने ।*
ध्रम-चरण इम ।	10 हलकूथ् हु-[निश्तावन् जॅना]
यह धर्म-आचरण।	*उस आचरण - सु-व्यवस्था को*
पुत्र पि च क नतरो च प्रनतिक च	11 वॅ-अफ् बॅनोही [यॅहोथॅरूॅन्]
तथा पुत्र भी और पौत्र और प्रपौत्र,	*और उसी तरह उसके पुत्र बढ़ाते जाएगे*
देवनप्रियस प्रियद्रशिस रञो	12 लॅ-मारेना प्रियदर्[शि मल्का] ।
देवानाप्रिय राजा प्रियदर्शी के,	*(अर्थात) स्वामी राजा प्रियदर्शी के (पुत्र)।*
वढेसति ध्रम चरण इम ।	
बढाएगे इस धर्म-आचरण को ।	

निस्सदेह हुम्बख्-इतो का यह पाठ-निर्धारण बहुत आकर्षक है । लगता है प्रारूप का क्रमबद्ध सही अनुवाद किया गया है । लेकिन तथा-कथित लुप्त शब्द कृत्रिम रूप से शहबाजगढी सस्करण के आधार पर ही जोड़े गये है । खण्डित पाठ की ऊपरी पक्तियो मे ठीक एक-एक पूर्ण शब्द कैसे लुप्त हुआ था ?

यदि प० 7 मे मतलब से कुछ खाली जगह छोड़ी गई तो वहा एक लुप्त शब्द कैसे भर सकते है ? जब अरामी शब्द उपलब्ध है तब लुप्त शब्दो के लिए अधिकतर ईरानी भाषा के तत्सम शब्दो का सहारा क्यो ले ? अनिश्चित अक्षर-रूपो से भी मनमाना प्रयोग किया जा सकता है । इसलिए हुम्बख्-इतो का सराहनीय सुझाव अब तक अन्तिम निर्धारण नही मान सकते है। इतना निश्चित है कि तक्षशिला के स्तम्भ-धर्मानुशासन का विषय चतुर्थ मुख्य शिला० मे प्रतिपादित षट्कर्म है (पृ० 171) । नये सुझाव पर विचार करने के पहले मूल अरामी पाठ के अनुमित व्यजनो का फिर अवलोकन करे

पहली पक्ति के आरम्भ मे कुछ रिक्त स्थान है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि (यदि ऊपर कुछ अकित हुआ हो तो) पिछले अनुच्छेद का अन्त हुआ। इसके बाद 3-4 व्यजनो का सीधी खड़ी पाई के रूप मे केवल निचला भाग दिखाई देता है। पक्ति के अन्तिम व्यजनो **ग्तृअ्** से मालूम है कि यहा कोई स्त्रीलिग सज्ञा होनी चाहिए। यदि इससे आगे कुछ लिखा हो तो चतुर्थ मुख्य शिला० के विषयानुसार प्राण-हानि रोकने की बात होगी। परन्तु यदि स्तम्भलेख का आरम्भ ही हुआ तो सुझाव है

1 - **जाख् सर्वथा** - (यह शब्द उद० तेमा-लेख मे प्रयुक्त हुआ
———*यह स्तम्भलेख*——— दे० पृ० 240)

दूसरी पक्ति मे दालॅथ् (द्) और रेश् (र्) का भेद करना कठिन है । पहले सदिग्ध द् / र् अक्षर को यदि द् पढे तो भाषा की भी समस्या बनी रहती है जी० इतो ने ईरानी **दामि** (सृष्टि) को चुना यद्यपि अरामी शब्द **दाम्** अर्थात् 'रक्त रक्तपात वध' उपलब्द है। दूसरे सदिग्घ अक्षर को यदि दालॅथ् निर्धारित किया जाए तो एक उपयुक्त अरामी शब्द **दाथ्** (जो मूलत ईरानी शब्द ही है।) मिल सकता है जिसका अर्थ है लिखित आदेश (दे० क्सन्थोस-लेख पृ० 244) धर्म-व्यवस्था (दे० एज्रा-ग्रथ का उल्लेख पृ० 256)। प्रो० बी०अँन० मुखर्जी ने **ल्-दस्य् दत्य्** के अनुमित वाक्याश का यह अनुवाद किया for the creations of Law , लेकिन व्याकरण की दृष्टि से **दाथ्** के साथ लगा हुआ अन्त्य योध् (य्) केवल बहुवचन का सकुचित रूप हो सकता है जो अगले शब्दो से जुड़ा हुआ है laws about ।दूसरी ओर अशोकीय लिपिको ने **धम्म** को विधि-कानून के अर्थ मे अनूदित नही किया यूनानी अनुवादक ने उसे नॉमॉस् (नियम) नही बल्कि *अॅव्-सेबॅय* (*धर्मभक्ति*) का अर्थ दिया एव अरामी अनुवादक ने कश्शीटा (सद्भक्ति)। अत उस भक्तिमय सत्याचारण की अभिव्यक्ति के लिए **दाथ्** अनुपयुक्त है।फिर भी अशोकीय ' धर्मलिपि' के अर्थ में उपयुक्त होती (दे० क्सान्थोस-लेख पृ० 244)। ध्यान से देखे तो पहले सदिग्घ अक्षर का सिर कोणात्मक है जब कि दूसरे का वर्तुलित है। इससे रेश पहचाना जाता है । अॅखीकार् के नीति-वचनो का न० 177 ' र्तृअ् गब्र् से आरम्भ होता है अर्थात् मानव पर तरस खाओ [1] । इस प्रकार 2री पक्ति मे कर्मवाच्य क्रियारूप **र्तृय्** पढ सकते है । यदि हर पक्ति मे औसतन 12 अक्षर गिने तो इस पक्ति के अन्त मे 3 अक्षर-वाला शब्द जोड़ सकते है उदाहरणार्थ **र्अह्** अर्थात् उसका बान्धव मित्र ।

2 **लॅ धामि** **रॅथी** , अल् [रेॲह्] (जी० इतो ने अनावश्यक द्वन्द्व
सृष्ट-भूतो के लिए दया दिखाई जाती है [*अपने सबधी*]*के प्रति* **दामि-दाति** का प्रयोग किया)

3 **नॅधीधूथा** , अल् [मघूश् -] (नॅधीघूथा के स्थान पर **नाघरूथा** भी सम्भव है , दे०
आदर-सम्मान [*आचार्य*]*के प्रति* सेफीरे-लेख पृ० 218 या सक्कारा-पत्र पृ० 229)

---

(1) A.COWLEY Aramaic Papyri of the 5th Century 1923 p 248 — सामरी अरामी अर्तृय् के अर्थ-अनुसार । उन नीति-वचनो के सबध मे दे० इस शोधप्रबध के पृ० 253-254 । एक अन्य सम्भावना यृस्अ् धातु से है (मूल अर्थ डरना) , जैसे इब्रानी मे यिर्ॲथ् ॲल् ईश्वर की श्रद्धायुक्त भक्ति । तब ईरानी दामि के स्थान पर अरामी धाम् ही रख सकते है लॅ-धाम यिर्तृी (?) अर्थात रक्त-पात के सबध मे (जीव के प्रति) भयभाव ।

(2)G ITO op cit p 153 "*dāmi-dāti* came from Avestan dvandva ' creation (and) creation i e creatures '

तीसरी पत्ति मे केवल 8 अक्षर है । यहा ' म्ग्व्श् जोड़े जो अगली पत्ति के अर्ज्व्श् के साथ समध्वनि का शब्द है — ठीक जैसे अनुमानित प्रारूप मे ब्रमण-श्रमण की जोड़ी । म्ग्व्श् के प्रयोग के लिए देखे अरामी बेहिस्तून (पृ० 250) और फरासा-लेख (पृ० 269) । यस्न 33 5-6, 51 13 के अनुसार अर्जूश् सत्य के पथ पर चलनेवाला सीधा व्यक्ति है । न्ग्र्व्तअ् / न्गद्व्तअ दोनो वैकल्पिक शब्द समानार्थक है शासनाधिकार ,और सदर्भ के कारण उस अधिकार को यहा प्राकृत प्रारूप के सपटिपति (आदर-सम्मान) का कृत्रिम अर्थ दिया गया[1]। यह पूर्णत सतोषजनक नही है[2]। लेकिन उसके स्थान पर और क्या खोज निकाल सकते है ? चौथी पत्ति मे भी उसका प्रयोग हुआ। इस पत्ति के अक्षर कुछ छोटे लिखे गए , अत अगली पत्ति के आरम्भ व ल् अब्व्ह्य् (और उसके पिता के लिए) के प्रतिरूप मे अधिक-से-अधिक 4 वर्ण ल्-अम्ह् (उसकी माता के लिए) जोड़ दे ।
पाचवी पत्ति के अन्तिम अर्ध-अक्षर को हैर्त्स्फेल्त् ने हे (ह्) पढा[3] लेकिन ताव् (त्) भी सम्भव है। तब अगली पत्ति के शब्द ह्वप्त्य्स्त्य् के कारण इससे स्त्रीलिंग क्रियारूप ह्वत् बन सकता है।

4 **अर्जूश्** **नॅघीथूथां** [**लॅ-अिम्मेह्**]
(और) साधु (के प्रति) आदर-सम्मान [अपनी माता के लिए]
5 **वॅ ला-ऽभूही** **हॅवार्थू**] (यहा वृद्ध/स्थविर जोड़ने हेतु सदिग्ध ईरानी शब्द
और अपने पिता के लिए दूईं] ह्व्व्य्श्त् अथवा ह्व्व्र्द्[4] पुनर्स्थापित क्यो करे ?)
6 **हु-फथ्यॉस्ति** । **जॅनां** [**वॅ अफ्**] (यहा नये वाक्य के आरम्भ मे ज्न्ह् के बाद 3 वर्ण
सुश्रुषा । यही [और फिर] व्-अप् जोड़ने का सुझाव हुम्बख्-इतो ने दिया)

छठी पत्ति के मध्य दीर्घ विराम-चिह्न लगा सकते है। तक्षशिला के सारभूत स्तम्भलेख मे लोकधर्म के अनुपालन मे व्यावहारिक धर्माचार के चार ही उदाहरण दिये गये है प्राणि-मात्र के प्रति पड़ोसी के प्रति गुरु के प्रति और माता-पिता के प्रति यदि हम अपने आधारभूत कर्त्तव्य निभाए तो किसी को ढिढोरा पिटवाकर भेरी-नाद के साथ धर्म-प्रचार करने का औचित्य नहीं रहेगा । छठी पत्ति के मध्य से नये अनुच्छेद का आरम्भ हुआ जिसमे बहु-जनीय सवृद्धि की प्रत्याशा व्यक्त की गई है

7 **जेख्** , **बॅ-हु-वरॅधेह्** , (ब्- अरामी पूर्वसर्ग मे है , ह्व्-व्र्द् ईर० सज्ञा
वही , उसकी अच्छी बढोतरी मे , सु-वृद्धि है और -ह् अर० प्रत्यय उसकी)

---

(1) G ITO the superiority (admitted) to hence the respect for (2) B N MUKHERJEE should better be taken as of Iranian (or at least non-semitic) than of semitic origin [*na + gada*] The expression *ngdwt'* with Aramaic *t'* (indicating a feminine singular ending in the determined state) can then mean the non injury "

(3) E. HERZFELD दे० D C SIRCAR Select Inscriptions p 78

(4) जी० इतो का तर्क यहा कमजोर है I read *hvāvard(a)* lit self-grown > elder Humbach has propounded *hwwlyšt]* If I am not mistaken does *hwwlyšt]* contain *hāwišt* disciple priestly novice ? *huvarda* would rather lead to well grown i e beautiful ' अर्थात इतो स्वय पहेलिया बुझा रहे है। श०अ० मे वृद्ध / गुरुजन के लिए ईरानी "मजिश्तय्यां" का प्रयोग हुआ। यदि इस अर्थ में कुछ जोड़ना होता तो छोटे अरामी शब्द उपलब्ध है अॅखीकार् की कथा प० 26 मे (दे०पृ० 252) स्ब् (old man) का प्रयोग हुआ प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए र्ब् शब्द उपयुक्त होता , अथवा अरामी बेहिस्तून के समान खूर् / खव्र् (noble man) शब्द काम आ सकता था ।

दूसरे अनुच्छेद मे अधिक कठिनाई नही है छठी पक्ति के अन्त का पुल्लिग निर्देशक-सर्वनाम यही' सातवी पक्ति के पुल्लिग निर्देशक-सर्वनाम 'वही' के साथ आठवीं पक्ति की मुख्य सज्ञा 'हु-निश्तवान' से जुड़ता है   यही [और फिर] वही सु-व्यवस्था —अर्थात् यही सु-वृद्धि मे नाना-विध सु-व्यवस्था है' निश्तवान् को ईरानी शब्द के रूप मे रेखाकित न करे क्योकि दाथ् ' के समान वह अरामी भाषा मे पहले से स्वीकृत ईरानी शब्द है दे० अरशाम के पत्राचार मे पुनरादेश (पृ० 236) और एज्रा-ग्रथ मे प्रलेख' (पृ०255) के अर्थ मे। उसके साथ सबधवाचक-उपवाक्य(जिसे') नवी पक्ति तक आगे बढ़ता है

8 **हु-निश्तवान् ज़ी होथ[र्]** (ह्वतर् के प्रयोग का अतिप्राचीन उदाहरण तेल-फखरिया-लेख मे पृ० 212 पर देखे)
सु-व्यवस्था जिसे बढ़ाया

9 **मारेना पॅरीथर[शि] ।** (स्थानाभाव से मल्का' राजा जोड़ने की शायद आवश्यकता नही है)
हमारे स्वामी प्रियदर्शी ने ।

10वी से 12वी पक्ति तक अन्तिम वाक्य है । हुम्बख-इतो के सुझाव स्वीकार्य है लेकिन पाठ को और सक्षिप्त बना सकते है । हु-निश्तवान् दुहराने के बदले हल्कूथ् मे सार्वनामिक-परप्रत्यय -ह् लगा सकते है जिससे हुम्बख-इतो द्वारा प्रस्तावित 11वी प० के यॅहोथॅरून् को 10वी प० मे ले आ सकते है। उसका आचरण धर्म की सु-व्यवस्था का आचरण समझे। ह्लक् धातु का अर्थ ही है चलना ।

10 **हल्कूथेह्** [**यॅहोथॅरून्**] (आचरण के अर्थ मे हल्कूथ् का प्रयोग अरामी बेहिस्तून मे भी हुआ दे० पृ० 250)
उसका आचरण [बढ़ाते जाएगे]

11 **यॅ अफ् बॅनोही** (यहा जी० इतो परप्रत्यय ' उसके' का अनुवाद करते है, परन्तु माता व पिता के साथ प्रत्यय उसके' को निष्प्रभाव otiose मानकर अननूदित रखते। उसी तरह स्वामी' के साथ हमारे' का अनुवाद छोड़ते)(1)
उसी तरह भी उसके पुत्र

12 **लॅ मारेना पॅरीथर[शि] ।**
(अर्थात्) हमारे स्वामी प्रियदर्शी के ।

इस प्रकार अरामी तक्षशिला-अभिलेख प्रभावी ढग से गाधार की सास्कृतिक-व्यापारिक राजनगरी के नागरिको एव यात्रियो को प्राचीन दिनो की साम्राज्यिक अरामी भाषा मे सबोधित करता है। लेकिन एक "धर्म-" सम्राट का यह अर्वाचीन सदेश ही है । वह "सर्व-देवानाप्रिय" होकर किसी देवता का नाम नही लेते वरन् मानव-मात्र के स्वधर्म के अन्तर्गत की प्रीति-नीति याद दिलाते है । यह श्वेत सगमरमर पर अभिलिखित एक श्वेत-पत्र है जिसे स्वय हमारे स्वामी और उनके सारे पुत्र-पुत्रिया भी चाहे मगूश-अर्जूश क्यो न हो कार्यान्वित करने की चेष्टा करते हैं ।

---

(1) जी० इतो इसे मध्य ईरानी/पहलवी मे प्रयुक्त अन्योच्चारण पद्धति का सकेत मानते है In Imperial Aramaic *marenā* our lord was commonly employed when subjects or people called the governor or satrap whereas in Aśokan Inscriptions the word has lost its original meaning prevalent in the meaning of lord' " इससे सहमत होना कठिन है ।

उपर्युक्त सुझावो के आधार पर अरामी तक्षशिला-अभिलेख का यह पाठ निर्धारित करे

1	- जक् ‌स्वत्‌अ् - -----	भावार्थ अनुवाद मे
2	ल् दमय् रतय् अल् [रअह्]	*"यह स्तम्भलेख इसलिए लिखा गया कि लोग*
3	नगदवतअ् अल् [मगवस्]	*सर्वभूतो पर दया दिखाए प्रत्येक अपने साथी-*
4	अरजवस् नगदवतअ् [ल-अमह]	*मानव का आदर करे आचार्य-जी एव साधु-जन*
5	व् ल् अबवहय् हवत्	*का आदर करे अपनी मा और पिता-श्री की*
6	हव् पतयस्तय् । जनह् [व् अप्]	*सेवा-सुश्रूषा करे । हमारे स्वामी प्रियदर्शी ने इन*
7	जक् व हव् वरवह्	*बातो और अन्य बातो की सुव्यवस्था को सुवृद्धि-*
8	हव् नस्तवन् जय् हवत्[र्]	*पूर्वक बढाया है । हमारे स्वामी प्रियदर्शी की*
9	मरअन् परयदर[स्] ।	*सतति भी उस सुव्यवस्था-सबधी आचरण को*
10	हलकवत[ह यहवतरन्]	*बढाती जाती रहे ।"*
11	व् अप् बनवहय्	
12	ल् मरअन् परयदरस् ।	(इस पाठ मे अब 80 % अरामी शब्द गिने जाए)

45 यूनानी कन्दहार-अभिलेख का प्रथम अश (क० यू० 1-11$_{क}$)

FIRST PART OF THE GREEK KANDAHAR INSCRIPTION (Line 1 11a)

यदि तक्षशिला अभिलेख मे त्यागी भिक्षु श्रमण के स्थान पर अरामी लिपिकार ने ईरानी-आधारित शब्द अर्जूश (और पुनर्स्थापित पाठ के अनुसार ब्रमण के स्थान पर मगूश) का प्रयोग किया तो उसने न केवल भिन्न भाषा मे एक-ही बात कही वरन् एक क्षेत्र की धर्म-सस्कृति मे विशिष्ट व्यक्तियो के प्रति जो श्रद्धा-भाव दिखाया जाता है उसे दूसरे क्षेत्र की धर्म-सस्कृति मे पाये जानेवाले व्यक्तियो पर भी लागू कर दिया । एक आस्था मे जो आस्तिक समझा जाता है वह दूसरी आस्था मे इतना ही पूजनीय है — मेरी दृष्टि मे नास्तिक क्यो न लगे । उदारचित सर्वधर्मपथ-समभाव के इस उदाहरण की स्पष्ट अभिव्यकित अशोक के द्वादश मुख्य शिलालेख मे मिलती है जिसका प्राय सम्पूर्ण यूनानी सस्करण हमे कन्दहार से प्राप्त है । यूनानी मे उत्कीर्ण उस खण्डित कन्दहार-शिलाखण्डलेख (दे० पृ० 68, 331) का प्रथम अश (प० 1-11$_{क}$) द्वादश मख्य शिलालेख (प० 2$_{ख}$ से अन्त तक) के समान ही है ।

अभिलेखन-काल लगभग सा०स०पू० 250 है। मूल यूनानी पाठ सुनिश्चित है । प्रथम शब्द **-सेबॅय** के दो आरम्भिक अक्षर **अॅव्-** (अन्य शिलाखण्ड) की लुप्त पूर्व-पक्ति से जोडना है । अन्यथा केवल

पाच-छह वर्ण मिट गए है। उन्हे आसानी से सुधार सकते है। 5वी प० के "अ-क्लेअॅस्तेरॅयि" के 3रे वर्ण लम्ब्द Λ के स्थान पर उत्कीर्णक ने गलती से एक अॅल्फ़ A लिखा जिसका भीतरी - फिर मिटाया नही जा सका। एक दूसरी गलती है कि 2वी प० के 3रे शब्द ग्लोसैस् को केवल एक भीतरी सिग्म से लिखा जब कि साधारणत द्वि-सिग्म लगाते है – शुद्ध रूप है ΓΛΩΣΣΗΣ । सभवत 10वी प० के अन्त मे भी एक अशुद्धि है दि- के बदले मे दॅयि- लिखा है । ΔΕΙ तो एक छोटा क्रियारूप है जो अनिवार्यता का बोध कराता है । विकसित कॅयनै भाषा मे स्वर-वर्णों के ई-करण की प्रवृत्ति[1] का यह आरम्भिक उदाहरण है कि EI का उच्चारण ई किया जाए , लेकिन लिपिकार को यहा अलग रूप से ΔΕΙ नही बल्कि अगली पक्ति के प्रथम स्वर-वर्ण से जोड़कर ΔΙ-Α लिखना चाहिए था।

क०यू० के प्रथम अश के अर्थ-निर्धारण हेतु अनुमानित प्राकृत प्रारूप से तुलना करनी चाहिए। यहा भी शहबाजगढी-सस्करण सब-से उपयुक्त है यद्यपि एर्रगुडी-सस्करण को कभी मूल से निकटतम प्रतिरूप माना गया है। देवनागरी मे लिप्यन्तरित समानान्तर पाठ के आरम्भ मे लुप्त वाक्य का भी उल्लेख करे

क०यू० 1-11क (देवानाप्रिय दान और पूजो को उतना नही मानते है जितना इस बात की कि)	
. ? [अॅव्]सेबॅय कय् अॅङ्-क्रॅतॅय कत पॅसस् तस् दिअ-त्रिबॅस् ।	
[हो] धर्मभक्ति और सयम सभी समाजो[3] मे /	
सलवढि सिय (।)	सव्र प्रषडन। सलवढि तु बहुविध।
सार[2]-वृद्धि हो (।)	सब सम्प्रदायो की। सार-वृद्धि तो बहुविध है।

(1) tendency to itacise ει, η, ηι, ε, αι. दे० F T GIGNAC Grammar of the Greek Papyri of the Roman and Byzantine Periods vol 1 Phonology Milan n d The controversy of the right pronunciation of Classical Greek flared up in the Renaissance period the Belgian humanist Erasmus favoured ' η ' (etacist) whereas the German humanist Reuchlin favoured the modern Greek pronunciation ι ' (itacist) (2) सार-तत्व अथवा के० नॉरमन के अनुसार साल = परस्पर सबध something like ' inter-communion or mutual knowledge would suit as a translation " (op cit p 112) शायद यूनानी अनुवादक को समझ मे नही आ रहा था - The scribes were not too certain about the meaning of their example अनुवादक ने उस अस्पष्ट सार-/साल-वृद्धि की बहुविधता को धर्मभक्ति एव सयम के उदाहरण से स्पष्ट करने की कोशिश की क्योंकि उसे सप्तम मुख्य शिला० याद था सभी सम्प्रदाय-वाले सयम और भाव-शुद्धि चाहते है यदि दान भी नही देते कम-से-कम सयम भाव-शुद्धि कृतज्ञता तथा दृढभक्ति को महत्व दिया जा रहा है ।
(3) यू० अनुवादक पाषड को धर्मभक्तिमय आचरण करनेवालो का समाज समझ रहा था (देखिए क०यू० 17)। पाषड तो पाखण्ड नही है । दे० D C SIRCAR (Asokan Studies p 24) "The word *pāṣamda* stands for Sanskrit *parṣad* or religious group " के० नॉरमन उल्लेख करते है H W BAILEY Iranian *fraš + anda-* = asker questioner ' but this view is rejected by M MAYRHOFER हिन्दी सम्प्रदाय मे साम्प्रदायिक रग आ चुका है । यू० दिअ-त्रिबैं को विचारको की मण्डली (अग्रेजी स्कूल् ऑफ् थॉट्) का सीमित अर्थ न दे। यह ऐसे लोगों का समूह है जो आचार-विचार व्यवहार-व्यवसाय मे विशेष प्रकार का (उत्तम) जीवन बिताते है (मूल अर्थ बिताना , जीवन-व्यापन ही है)।

अङ्-क्रतैस् दे मलिस्त अस्तिन् हास् अन् ग्लोसैस् अङ्-क्रतैस् अै। कय् मैते हेअव्ताव्स्
पर सयमी सब-से अधिक वह है जो जीभ (बातचीत) मे सयमी हो । अर्थात वे न अपने-आप की
तस तु इयो मुल य वच-गुति । किति ? अत-प्रषड पुज व
पर यह उसका मूल है अर्थात् जो वाक्-सयम है । कैसे ? आत्म-सम्प्रदाय की पूजा या

अप् अ[य]नोसिन् , मैते तोन् पेलस् प्सेगोसिन् पेरि मैवेनोस् , केनोङ् गर् अस्तिन्।
प्रशसा करे न अन्यो की निदा करे किसी बात के सबध मे भी नही , यह तो व्यर्थ है ।[1]
पर-प्रषड गरन व नो सिय अ-प्रकरणसि , लहुक व सिय तसि तसि प्रकरणे
पर-सम्प्रदाय से घृणा न हो बिना कारण या थोड़ी-सी हो किसी-किसी कारण से

कय् पयूरास्थय् मोल्लोन् ताव्स् पेलस् अप्-अर्जेय्न् कय् मै प्सेगेय्न् कत पन्त त्रोपोन्।
और अधिक (उचित है) प्रयत्न करना अन्यो की प्रशसा और न निदा करने के लिए सभी तरह से।[2]
पुजेतविय व चु परप्रषड तेन तेन अकरेन ।
और पूजित होना चाहिए पर-सम्प्रदाय उस उस प्रकार से ।

तव्त दे पोयोन्तेस् हेअव्ताव्स् अव्क्सोव्सि कय् ताव्स् पेलस् अन-स्कोन्तय् ,
वे बाते करते हुए वे स्वय को बढाते है और अन्यो को पुन प्राप्त करते है ,
एव करंतं अत-प्रषड वढेति पर-प्रषडस पि च उप-करोति ।
ऐसा करने से वह आत्म-सम्प्रदाय बढाता और पर-सम्प्रदाय का भी उप-कार करता है ।

पर बर्जोन्तेस् दे तव्त अ-क्लेअस्तेरोय् ते गिनोन्तय् कय् ताव्स् पेलस् अप् अेख्थोन्तय्।
लेकिन उल्लघन कर उन बातो का वे अधिक अ-मर्यादित ही बनते एव अन्यो को घृणित लगते।[3]
तद अञ्नथ करमिनो अत-प्रषड छणति पर-प्रषडस च अप-करोति ।
उसके विपरीत करते हुए वह आत्म-सम्प्रदाय को क्षति पहुचाता एव पर-सम्प्रदाय का अप-कार करता।

हाय् द' अन् हेअव्ताव्स् अप् अयूनोसिन् ताव्स् दे पेलस् प्सेगोसिन् , फिलो-तिमोतेरोन् दिअ-
परन्तु जो अपने-आप की प्रशसा करे पर अन्यो की निदा करे वे अधिक गर्वीले ढग से व्यवहार
यो हि कचि अत-प्रषड पुजेति पर-प्रषड गरहति , सव्रे अत-प्रषड-भतिय व
जो कोई कुछ आत्म-सम्प्रदाय की पूजा करता पर-सम्प्रदाय से घृणा करता सब-कुछ आत्म-सम्प्रदाय की भक्ति से

प्रतोन्तय् , बोव्लोमेनोय् पर ताव्स् लोय्पोव्स् अेग्-लम्प्सय्, पोलु दे मोल्लोन् ब्लप्तोव्सि हेअव्ताव्स्।
करते है , चाहते हुए शेष लोगो के ऊपर चमकना वे बहुत अधिक हानि करते है स्वय की ।
किति अत-प्रषड दिपयमि ति सो च पुन तथ करत बढतर उपहति अत-प्रषड ।
कि कैसे आत्म-सम्प्रदाय को प्रकाशित करू वह तो फिर ऐसा कर अधिक हानि करता आत्म-सम्प्रदाय की।

---

(1) यूनानी अनुवादक ने किसी प्रकरण की बात के लिए भी निन्दा को अनुचित ठहराया । और जहा थोड़ी-सी आलोचना मान्य बतायी गयी थी उसे भी व्यर्थ माना । (2) प्रशसा तो बहुत प्रकार से किया जा सकता है लेकिन यू० अनुवादक की दृष्टि मे किसी भी रूप मे निदा करना ही निदनीय है। (3) प्राकृत में जो सामूहिक रूप से पाषड के विषय मे कहा गया था, उसे यूनानी मे व्यक्तिगत रूप से व्यक्त किया गया।

(- - -) प्रेपॅय् दे अल्लैलॉव्स् थव्मॅर्जय्न् कय् त अल्लैलोन् दिदॅग्मत पर-देखॅस्थ[य्]।
उचित है एक-दूसरे को श्रद्धापूर्वक देखना[2] एव एक-दूसरे की शिक्षाए स्वीकारना।
सो सयमो[1] वो साधु। किति ? अञमञस ध्रमो श्रुणेयु च सुश्रुषेयु च ति ।
अत समवाय वह साधु है। कैसे ? एक-दूसरे से धर्म को सुनना चाहिए और उसकी सुश्रुषा करनी चाहिए

(9) (- -) तव्त दे पॉयॉयॅन्तॅस् पॉलु-मर्थस्तेरॉय् ऍसॅान्तय् पर विदॉन्तॅस् अल्लैलॉव्स् हॉस[3]
उन बातो को करते हुए वे अधिक बहु-शिक्षित होगे सौपते हुए एक-दूसरे को जितनी बात
एव हि देवनप्रियस इछ । किति ? सव्र प्रषड बहुश्रुत च कलणगम च सियसु[4]।
ऐसी ही देवानाप्रिय की इच्छा है। कैसे ? सभी सम्प्रदाय बहुश्रुत और कल्याण-आगम के ज्ञानी हो।

(10) हेकस्तॉस् अव्तॉन् ऍपि-स्ततय्। कय् तॉय्स् तव्त ऍप् अस्कॉव्सि तव्त मै ऑकनॅय्न् लेगॅय्न ,
उनमे से प्रत्येक जानता है। और उन बातो का अभ्यास करनेवालो को वे बाते कहने मे न[5] हिचकना,
ये च तत्र तत्र प्रसन तेष वतवो
और जो यहा-वहा (के सम्प्रदाय मे) अनुरक्त हो उन्हे बताना चाहिए

(11) (- - - - -) हिन दॅय् अ-मॅय्नोसिन् दिअ पॅन्तॉस् ऍव् सेबॉन्तॅस्।
ताकि वे बने रहे सब समय धर्मभक्ति-करनेवाले।[6]
इम च एतिस फल य अत-पषड-वढि भोति ध्रमस च दिपन ।
इसका फल यह है कि आत्म-सम्प्रदाय की वृद्धि होति और धर्म का प्रदीपन ।

अत आर्यपुत्र अशोक की ओर से यूनानी जगत् को उत्तम भाषा मे सर्वोत्तम नैतिक आदर्श सुनाया गया।

3री सहस्राब्दि सा०स० के बहुधर्मीय-बहुजातीय-बहुभाषीय जगत् मे भी समन्वयन का यह सदेश सुनाई दे !

---

(1) यहा पाठ-सुधार करे समयो / समवायो । सर्वधर्मपंथ-समभाव में विभिन्न धर्मपंथियो के समागम से समन्वय ही बढता है। यूनानी पाठ मे इसकी भावना तो है , परन्तु इसका सीधा अनुवाद नही हुआ । (2) क०यू० 19 मे भी प्राकृत सुश्रुषा के अनुवाद के लिए यू० क्रिया थव्मॅर्जय्न् का प्रयोग हुआ – to admire to respect (3) = ὅσα
(4) दे० N P RASTOGI possessed of extensive learning and noble doctrines राजबलि पाण्डेय शुभ सिद्धात-वाले
(5) अन्त की ओर यू० लिपिकार-अनुवादक स्वतन्त्र रूप से और अपनी उच्च साहित्यिक शैली में प्रारूप की सामग्री प्रस्तुत करता है। ये बाते कहना अर्थात धर्मभक्तिमय आचरण करनेवालो के बीच आपसी सद्भाव बढाने की बात , लेकिन प्रारूप के अनुसार जो बाते कहनी थी वह अगले दो पूरे वाक्यो मे विस्तार से बतायी गयी है । इसमे दान तथा पूजा की तुलना मे सार / साल - वृद्धि का महत्व दुहराया जाता है और प्रान्तीय धर्ममहामात्र आदि की नियुक्ति का उल्लेख है। यह प्रशासनिक प्रबंध शायद कन्दहार-क्षेत्र पर सीधे लागू नही था । (6) के० नॉर्मन् के अनुसार अनुवादक ने धर्मलेख के अन्त मे प्राकृत सव्र पषड को स्पष्ट करने का (गलत) प्रयास किया may they be <u>wholly</u> sectarians taking *sava-* as *savam* लेकिन ए० क्रिस्तॉल् मानते है कि ये अन्तिम शब्द यूनानी अनुवादक का अपना शुभान्त है " sothat they may <u>always</u> persist in Piety The Greek text is a free adaptation of the Indian text The language used is still close to the language of Plato and Aristotle (A. CHRISTOL Les édits d Asoka étude linguistique <u>Journal Asiatique</u> 271 1983 pp 25-42) निस्सदेह, यू० अनुवादक यूनानी धर्म-दर्शन की भाषा से सुपरिचित था। एच० हुम्बख् के अनुसार उसने विशेषकर अरिस्तॉतॅलैस् की नैतिक-शिक्षा सबधी कृतियो की शब्दावली की नकल की उद० जहा क०यू० 7 मे कहा गया " **पॉलु दे मॉल्लॉन् <u>ब्लॅप्तॉव्सि हेअव्तॉव्स्</u>** (= बढतर उपहंति अत-प्रषड) वहा अनायास अरिस्तॉतॅलैस् की इस उक्ति की भाषा प्रयुक्त हुई **हॉ द' अक्रतैस हेकोन् <u>ब्लॅप्तॅय्</u> <u>अव्तॉस्</u> <u>हेअव्तॉन्</u>** - दे० R McKEON <u>Introduction to Aristotle</u> New York, 1992 p 444 the incontinent man voluntary harms himself (Nicomachean Ethics, 1138 a , 32)

46 प्रथम अरामी लघमान - अभिलेख (ल० प्र० 1 – 6)

THE FIRST ARAMAIC LAGHMAN INSCRIPTION (Line 1 – 6)

द्विभाषीय अभिलेखो की क्रमबद्ध प्रस्तुति मे यदि केवल विषय को देखे तो यूनानी कन्दहार-अभिलेख के प्रथम अश (अर्थात् द्वादश मुख्य शिलालेख) मे सम्राट अशोक ने अपनी समन्वयात्मक दृष्टि की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति की है अपनी सुन्दर आस्थाओ एव गहरी अनुभूतियो मे मग्न हम कूप का मेढक न बने , दूसरो की अच्छाइया पहचाने और सराहे , जितना अधिक हम सर्वधर्म के सत्य-प्रेम के लिए हृदय के द्वार खोलेगे उतना अधिक स्वधर्म का आधारभूत सत्य-प्रेम समझने लगेगे । उस सार-ग्राहिता से सार-वद्धि होती है, जिससे समाज मे समवाय के द्वारा समन्वय का सवर्धन होता है । लेकिन जीवन-यात्रा मे कभी ऐसा भी होता कि गुरु अपने गुरुत्व मे दब जाता है और आत्म-गौरव से दूसरो को दबाने लगता है जब कि उसे स्वय गुरु बनकर अधिक गौण और मौन प्रभाव डालना चाहए। धर्माशोक की यह आलोचना की जाती है कि वह अपनी उदार धर्मनीति मे ही कठोर बनते गए । लघमान से प्राप्त दो अरामी चट्टान-लेखो मे उस लकीर-के-फकीरपन का कुछ सकेत मिलता है जब एक पाठ-अनुमान के अनुसार यह अप्रिय बात कही गई कि अपने उच्च सिद्धातो के कारण प्रियदर्शी राजा सद्धर्मियो के समाज से भोले-भाले आखेटको और मत्स्योपजीवियो को भगा रहे है[1] । लघमान-अभिलेखो का अभिलेखन 17वे राज्यवर्ष (सास०पू० 249 248) मे ही हुआ या उसके बाद मुख्य स्तम्भलेखो के विज्ञापन से कुछ पहले (दे० पृ० 175) — क्योकि पचम मुख्य स्मम्भ० मे राजा ने सख्ती से आमिष-भोजियो के लिए निषिद्ध पशु-पक्षियो की लबी सूची तैयार की। लघमान-अभिलेखो के प्राप्ति-काल एव प्राप्ति-स्थान के सबध मे पृ० 72 76 पर देखे ।

लघमान-अभिलेखो का स्वरूप और विषय अशोक के सभी अन्य अभिलेखो से अलग है। इसलिए पाठ-निर्धारण मे विशेष कठिनाई है । किसी प्राकृत पूर्व-प्रारूप से तुलना नही की जा सकती है न तो यूनानी अनुवाद उपलब्ध है । कुछ रहस्यपूर्ण भौगोलिक-व्यापारिक शब्दो का भी प्रयोग हुआ (दे० पृ० 78-84) ।

---

(1) दे० ALOKA PARASHER SEN Of tribes hunters and barbarians forest-dwellers in the Mauryan period Studies in History 14 2 1998 p 187 Hunters and fishermen were strictly prohibited from taking to their traditional occupations These passages have generally been lauded for the piety contained in them because they enunciated the principle of non-violence Scholars have ignored the fact that such policies profoundly affected the livelihood of the hunting and fishing populations The ideological policies of the king the concept of *ahimsa* distanced hunting and tribal communities from mainstream society

सौभाग्यवश दोनो लघमान-लेख एक-समान है और एक-दूसरे की कमियो की पूर्ति कर सकते है। इसलिए पहले G ITO (Asokan inscriptions Laghman I and II Studia Iranica 8 1979 2 pp 175 183)[1] के परिश्रम का लाभ उठाए और उनके निरूपित-अनूदित पाठ के आधार पर समानान्तर प्रस्तुति का अवलोकन करे

लं०प्र० 1-6	लं०द्वि० 1-10
(1) **बि शंनथ् 10 खंजी !** *वर्ष 10 मे — देखो !—*	(1) **बे अंलूल् माह् (2) शंनथ् 16** *एलूल महीने मे वर्ष 16*
प्रियदर्शि मल्का जंरक् , दंखा *राजा प्रियदर्शी ने त्यागा (एव) निकाला*	**प्रियदर्शि मल्का (3) जंरक् , दंखा** *राजा प्रियदर्शी ने त्यागा (एव) निकाला*
(2) **[शंखक्]** *मार-काट को*	**मिन् शारीरीन् शं[ख]क्** *धार्मिको मे से मार-काट को*
मा मंसर् बंरियूथ् , कंवारे , *जो सताती जीवो (एव) मछलियो को*	(4) **मा मंसर् कंवारे बंरियू[थ्]** *जो सताती मछलियो (एव) जीवो को*
(3) **/ दूथें / मिन् शारीरीन् ‸ -** (यद्यपि वे है) *दया-पात्र धार्मिको मे से —*	**[दूथें] —** (यद्यपि वे है) *दया-पात्र —*
मा अंमंध् रेक्रा (4) क्रश्तान् 300 ! (ऐसा कार्य) *जिसने व्यर्थ किये 300 धनुष !*	(5) **मा अंमंध् रेक्रा क्रश्तान् 3[00] !** (ऐसा कार्य) *जिसने व्यर्थ किये 300 धनुष !*
जंना तोखा तदमर शंमंह् । *यह केन्द्र " तदमर " उसका नाम ।*	(6) **जंना तोखा आहवती शंमंह् ।** *यह केन्द्र ' आहवती ' उसका नाम ।*
जंना आरंखा कारपति ·सह्[य]ति (5) गिंश्नथा। *यह मार्गदर्शन-आलय कहलाता है "उद्यान"।*	(7) **जंना आरंखा कारपति ·स[ह]यति (8) गिंश्नथा।** *यह मार्गदर्शन-आलय कहलाता है "उद्यान"।*
अथ्रेह् 120 तारंखा तम्रा 100 अेल्ला 80, *120 पहरेदार(ो) के बदले यहा 100 + 80*	**अंखर् 300 तारंखा अथ्रेह् [?] अेल्ला [?], (9) -?** *बाद मे 300 पहरेदार बदले मे ? + ?*
(6) **अिम् वाशु दाइना [बर]** (वे) *वाशु "धर्मधारक" के साथ*	**अिम् वाशु शंमंह् दाइना [बर]** (वे) *"धर्मधारक" नामक वाशु के साथ !*
(शेष लं०द्वि० के समान पुनर्स्थापित)	(10) **व-खशावक्रातबग शाखेन् जंखा पतीति।** *एव खशावक्रातबग के साथ रहते भिक्षादान हेतु।*

---

(1) जी० इतो का विश्लेषण प्रो० बी०अेन्० मुखर्जी को उपलब्ध नहीं था फिर भी उनके अत्यधिक परिश्रम से भी लाभ उठाए।

मान ले कि कई विद्वानो के प्रयास के आधार पर जी० इतो ने लघमान-अभिलेखो के बहुत-से अरामी अक्षरो का सही रूप पहचान लिया (शोधकर्ता प्राप्ति-स्थल पर जाकर व्यक्तिगत रूप से मूल आकृतियो को जाचने के लिए असमर्थ है) तोभी समानान्तर पाठ मे कुछ असमानताए एव असगतिया है जिनके कारण प्रस्तावित पाठ-निर्धारण पूर्णत सतोषजनक नही लग रहा है। कुछ पुराने और नये सुझावो की सहायता से उपर्युक्त अनुमानित अर्थ-निरूपण मे सुधार लाने की कोशिश करे। प्रथम लघमान-अभिलेख से आरम्भ करे।

1 वर्ष-सख्या प० 1 मे सख्या 10 ल०द्वि० की सख्या 16 से मेल नही खाता है और उस 10 के पश्चात् विस्मय-बोधक देखो! अटपटा भी लग रहा है। वास्तव मे 10 के सकेत के बाद सख्या '1 के **सात** सकेत है । । । । /। । — प्रो० मुखर्जी ने 5वे-6वे सकेत को एक-साथ जुड़ा हुआ विकृत सकेत माना (a mishappened figure for the numeral 1) जब कि उसे पाच की इकाई पूर्ण होने पर झुका हुआ अतिरिक्त । मानना चाहिए। इस प्रकार वर्ष-सख्या 17 बन जाता है अरामी मे सत्रह को **शिमूआ-असूरा** याने सात-दस बोलते है। सम्भवत इस ल०प्र०-अभिलेख को ल०द्वि० के एलूल महीने वर्ष 16 के कुछ महीनो के बाद लिखा गया जब 17वा राज्यवर्ष शुरू हो चुका था। इतने मे धनुषो की सख्या भी घट गई (नीचे देखें)।

2 शब्द-क्रम निश्चित रूव से ल०प्र० के क्रम जीव-मछली तथा ल०द्वि० के क्रम मछली-जीव मे अन्तर है। इसलिए शेष शब्दो के क्रम मे भी कुछ अन्तर हो सकता है और ल०द्वि० के कारण ल०प्र० मे शब्द जोड़ना अथवा स्थानान्तरित करना उचित नही लगता है। डॉ० इतो ने दो क्रिया-रूपो (**ज़रक्** और **द्खअ्**) के बाद एक तीसरा क्रिया-रूप (**म्खक**) क्यो जोड़ा है और किस आधार पर **म्न् श्रय्रय्न्** के बाद आने- वाले **द्वद्य्** ' को उसके सामने रखा ? अथवा डॉ० मुखर्जी ने यह कहकर वाक्य क्यो तोड़ा कि " line 1 is to be followed by line 3 and not by line 2" ? हमारी पहली कोशिश होनी चाहिए कि जैसा है वैसा ही पाठ बनाए रखे । इसलिए ' **ज़रक् द्खअ्**' को यह अर्थ दे (राजा ने) मारना बद किया —**ज़रक्** का सामान्य अर्थ तो है " to penetrate (arrow) , to strike down with the spear" [1] फिर प० 2 मे डॉ० इतो के पाठ **म्सर्** के बदले मे दुिपो-सॉमर् के साथ **म्सद्** ही पढे (डॉ० मुखर्जी भी उसका समर्थन करते है) जिसका भावार्थक सज्ञा के रूप मे अर्थ है " hunting / fishing" ।

3 द्वद्य् का अर्थ ल०द्वि० मे **द्वद्य्** को **म्न् श्रय्रय्न्** से नही जोड़ा जा सकता , अत ल० प्र० मे भी उसे अलग रखा जाए। जी० इतो ने उसे पिछले वाक्य से जोड़कर बहुत ही विचित्र अर्थ दिया " (living beings and fishes , these species being) related to (human beings) " । - अर्थात् वे सब प्राणी दया-पात्र है क्योकि वे मानव-जैसे प्राणी है।' **द्वद्** (बहुवचन मे **द्वद्य्न्**[2] का अर्थ अवश्य है ' प्रिय' , परन्तु वे है राजा को प्रिय लगनेवाले लोग। वे ही प्रिय लोग है जब-जब धनुष का प्रयोग ही कम होता गया। डॉ० इतो का यह अच्छा सुझाव था कि धनुष को पिछले वाक्य से जोड़े, फिर भी अगले सख्या-सूचक सकेत 300 किस के साथ जोड़े ? दोनो 'धनुष' और 300 के अर्थ विवादास्पद है।

---

(1) KOEHLER BAUMGARTNER The Hebrew and Aramaic Lexicon of the Old Testament vol 1 p 283

(2) द्वद्य् का अर्थ होना चाहिए मेरे प्रिय लोग , अन्यता इसे अनियमित बहुवचन मानना होगा ?

4 धनुष का तात्पर्य क्श्त् का सामान्य अर्थ धनुष है या उसके सदृश कोई भी अस्त्र और क्श्तन् उसका बहुवचन रूप। इस शब्द के बाद सख्याओ और स्थानो के नाम है। इसलिए दुिपो-सॉमेर् तथा कुछ अन्य विद्वान क्श्तन् को यहा किसी दूरी की माप का अर्थ देते है ठीक जैसे इब्रानी तॅनख के उत्पत्ति-ग्रथ 21 16 मे लिखा है तीर के निशाने की दूरी पर अर्थात् लगभग 100 मीटर की दूरी पर। यदि स्थान-नाम तद्मर्/ तर्मद् को व्यापार-केन्द्र तघ्मोर् (Palmyra दे० पृ० 79) माना जाए तो एक ' धनुष' -माप मे कम-से-कम 15 किलोमीटर की दूरी होनी चाहिए , यदि उसका मतलब ऑक्सस् नदी का तिरमिद (Termez) है तो दूरी कुछ कम है [1], यदि लघमान मे ही और कोई स्थान हो तो दूरी और कम होगी [2]। प्रो० मुखर्जी के तर्क मे एक धनुष-माप केवल 11 1 मीटर ही है [3]। लेकिन धनुष के इस अर्थ-निर्धारण से लघमान अभिलेख एकाएक दूरी सूचित करने-वाले दिशा-पट्ट मे बदल गया। तब वह केवल स्थानीय प्रशासनिक सूचना-पट्ट रह जाता है। ई० इतो के साथ अभिलेख मे एकरूपता रखने का प्रयत्न किया जाए। इस प्रकार धनुष का तात्पर्य वह शस्त्र है, जो हिसात्मक प्रवृत्ति का प्रतीक है । यदि उसे व्यर्थ किया जा सके तो क्या शान्ति के राज्य का वातावरण नही आएगा ? केवल सुरक्षा की दृष्टि से थोड़े ही बाण-पाणि रक्षा-पाल तैनात रहेगे।

5 सख्याओ का तात्पर्य यदि केवल दूरी बताने की बात हो तो सख्या 300 के बाद क्यो ठीक उसका जोड़ दिया जाए अर्थात् 120 + 100 + 80 = 300 ? फिर एक सख्या (120) के साथ तारॅखा अर्थात् पहरेदार शब्द क्यो लिखा गया ? इसलिए जी० इतो का यह अनुमान सब-से तर्कसगत लगता है कि यहा व्यकितयो की सख्याए (numerals indicating the number of persons) दी गई है। राजा की ओर से प्रबध किया गया है कि धनुर्धारी प्रहरियो (guards armed with bows) की सख्या कहा तक सीमित रखी जाए।

6 स्थान-नाम अब प्राय स्पष्ट हुआ कि अभिलेख उस स्थान के सबध मे रक्षा-दलबल को निश्चित कर रहा था जहा अभिलेखन किया गया। कुल सख्या 300 है मुख्य केन्द्र का नाम तदमर/तरमद है। यह उस (राज-)मार्ग पर स्थित है जिसे कारपथि/करपथ कहते है (दे०पृ०78,119, 231 प्रो०मुखर्जी की व्याख्या यहा स्वीकार्य है))। इसके सबध मे जी० इतो का अनुवाद अत्यन्त बोझिल है यह स्थान, जहा यात्रियो के मार्गदर्शक मिलते है," उद्यान " ही कहलाता है । "सह्यतय् " (दे० पृ० 106) सकेत देने के लिए प्रयुक्त हुआ कि यहाँ एक विदेशी (प्राकृत ?) शब्द का उल्लेख किया गया है। यह आवश्यक नही है कि उसके बाद आनेवाला शब्द उस उल्लेख का अनुवाद हो । इसलिए आगे यह वर्णन है 'उद्यान (एक अराम-वन ? दे० पृ० 81-82) उसका स्थान [4] 120 पहरेदार , यहा 100 , उसके ऊपर 80 -- न्यायपति (प्रशासक ?) वाशु के साथ। यदि ल०प्र० वास्तव मे ल०द्वि० के बाद कुछ सक्षिप्त रूप मे अकित हुआ तो आगे विस्तार से पाठ पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है ।

---

(1) J DE MENASCE A propos d une inscription araméenne d Aśoka Israel Oriental Studies 2 1972 pp 290 292
(2) P GIGNOUX in Studia Iranica 4 1975 pp 135 137 (3) B.N MUKHERJEE op cit p 16 Interestingly enough certain Indian texts including the *Manusamhitā* take the term *dhanus* meaning bow' as a measure of length and as equal to 4 *hastas* The idea of using the term bow' as a unit of measurement might have reached India from the north west (in about the Maurya period ?) (4) अथवा तुवरुअ् पढ़ें जो उद्यान का नाम हो सकता है -- दे० पृ० 79 पर ।

47 द्वितीय अरामी लघमान - अभिलेख (ल० प्र० 1 - 10)

THE SECOND ARAMAIC LAGHMAN INSCRIPTION (Line 1 - 10)

प्राप्ति-काल की दृष्टि से द्वितीय कहलानेवाले इस लघमान-अभिलेख का अभिलेखन-काल शायद प्रथम लघमान-अभिलेख से कुछ महीने पहले ठहराया जाए । लघमान-नदी के किनारे उसका प्राप्ति-स्थान प्रथम अभिलेख के प्राप्ति-स्थान से उजान के केवल 2 कि०मी० दूर पर है और प्रहरियो की सख्या की दृष्टि से वह प्रमुख केन्द्र था। जी० इतो के अर्थनिर्धारण के अनुसार यह कल्याण-केन्द्र ही था जहा स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण मे यात्रियो का उपचार-उपकार किया जाता था। मूल पाठ के अनेक अक्षर-रूप सदिग्ध है और किसी कारण से एक अतिरिक्त पक्ति (जो स्थानीय अधिकारी द्वारा राजलेख मे जोड दी गई ?) बगल मे ऊपर से नीचे अकित हुई। ल०प्र० के सबध मे जो सुधार के सुझाव ऊपर दिये गये है वे ल०द्वि० के पाठ पर भी लागू है। शोधकर्ता की ओर से कुछ और सशोधन प्रस्तुत है

1 सदिग्ध शब्द श्‌ ?क्‌ पहले यहा दुहराना चाहिए कि अशोक का अरामी लिपिकार श्रेण्य साम्राज्यिक अरामी भाषा की लिपिकीय परम्परा से अलग कटा हुआ नही है । यद्यपि मआह्‌ ' (महीना) एक ईरानी शब्द है उसने अगस्त-सितबर महीने के लिए एलूल का प्रयोग किया जैसे बहुत दूर के मिस्त्री लिपिक भी करते आ रहे थे (दे० पृ० 231) । उसने साम्राज्य की प्रजा के अन्तर्गत स्थानीय लोगो को श्‌रीरीन्‌ कहा अर्थात्‌ हृष्ट-पुष्ट समृद्ध (जी० इतो के अनुवाद मे righteous) — उसी शब्द से किसी मिस्त्री लिपिक ने राज्यपाल को शुभकामना भेजी थी कि आप स्वस्थ एव सुखी रहे (दे० पृ० 233, COW 30 मे, अन्य सम्भावना पृ० 84)। उस शब्द के बाद सदिग्ध पाठ है श्‌ ?क्‌ जी० इतो एक क्रियार्थक सज्ञा श्‌ख्‌क्‌ अर्थात्‌ मारकाट पुनर्स्थापित करते है, जी० दावरी का सुझाव है श्‌क्‌क्‌ अर्थात्‌ दौडना जोशीला होना [1]। लेकिन यदि यह शब्द ल०प्र० मे छोड दिया गया है तो इस कारण कि उसमे पूर्व-प्रयुक्त वाक्याश ज्‌र्‌क्‌ द्‌ख्‌अ्‌ ' (मारना बद किया) का भाव दुहराया जाता है। अत श्‌त्‌क्‌ पढ सकते है जिसका अर्थ है ' शान्त होना शान्त करना (उद० ॲखीकार्‌ के कथन न० 121 इब्रानी मे नबी-ग्रथ योना 1 12 "the sea will quiet down", नीति-वचन 26 20 "quarrel ceases")। प्राणहानि बद करने से अशोक ने शिकार एव मछली-मार को 'कम कर दिया रोक दिया ।

2 दूसरी सख्याए ल०द्वि० मे धनुषो (धनुर्धारियो) की कुल सख्या 500 है जैसे प्रो० मुखर्जी ने ठीक पहचाना " five vertical strokes and perhaps traces of the figure for 100 " । इसके बाद की सख्या ' 300 ' निश्चित है। बाकी दो सख्याए एकदम मिट गईं जैसे डॉ० इतो लिखते है " *'wlā*, ' plus, in addition to ' is legible, but the sections preceding it and following it have worn off " । यदि 300 के अतिरिक्त शेष धनुषो की बात है तो अनुमानत दोनो का जोड 110?+ 90? = 200 है।

---

(1) G DAVARY Epigraphische Forschungen in Afghanistan Studia Iranica 10 1981 pp 55-56 दे० B.N MUKHERJEE those who rush after what is hunting of fishes and creatures .

इस प्रकार धनुर्धारियो की सख्या 300 + 110? + 90? = 500, ल०प्र० (120 + 100 + 80 = 300) से अधिक है। प० 8 के अन्त मे प्रो० मुखर्जी ने ईरानी दिपिर अर्थात् लिपिक (दे० नीसा-लेख पृ०264) पढा , लेकिन खड़ी पाई-रूपी वे अनुमित व्यजन द्प्र् अनुमित अक (9? = \।। \।। \।।) के ही अग हो सकते है। समानान्तर पाठ ल०प्र० 5 के अन्त मे भी ऐसा कोई शब्द नही है।

3 नया स्थान-नाम प्रमुख केन्द्र ' **अ्ह्व्त्य्** कहलाता है। यह कोई स्थानीय नाम हो सकता है (दे० पृ० 80) । तुलना करने के लिए अरामी बेहिस्तून मे अरखोसिअ-क्षेत्र को **ह्र्व्ख्त्य्** लिखा गया और परसेपोलिस के आनुष्ठानिक लेखो मे **ह्र्ख्व्त्य्** ।

4 अतिरिक्त व्यक्ति-नाम प० 9 से स्पष्ट हो जाता है कि ल०प्र० 6 का यह सीधा अर्थ नही हो सकता कि न्यायी वाशु के साथ कितने सिपाही हो। एक ही व्यक्ति दो स्थानो पर कैसे हो सकता है ? **अम्** ' को सज्ञा के रूप मे समूह (सेना-)दल समझना चाहिए। फिर **द्य्न्अ्** के साथ **ब्र्** भी जोडना चाहिए वाशु नामक व्यक्ति **द्य्न्अ्-ब्र्** है अर्थात् जी० इतो के अनुवाद मे " Religion-bearer " धर्म-धारक एक प्रकार का धर्म-महामात्र । अरामी मे अवधारक पर-उपपद -अ् के साथ **द्य्न्अ्** (= दीना) का अर्थ न केवल 'न्याय है बलिक औचित्य धर्म भी (उद० अरामी दानिएल मे सत्य' के समानान्तर अर्थ मे पृ० 257) । **बर्** (=अर० मे पुत्र) को यहा ईरानी अर्थ मे ले। बगल-वाली 10वी पक्ति के लिए जी० इतो के पाठ-निर्धारण पर ही निर्भर रहना पडता है

← (10)

जी० इतो के अनुसार उस दूसरे व्यक्ति का नाम " Xšāva frāta bag " का अर्थ है भगवान् के प्रेमियो का शासक (he who rules over those who love god) । अन्तिम शब्दो के सबध मे कोई अन्तिम निर्णय करना सम्भव नही है । जी० इतो **श्कन्** को कृदन्त विशेषण रहते हुए का अर्थ देते है जब कि प्रो० मुखर्जी इसे " the governor " का अर्थ देते है (परन्तु नियमित अरामी मे इसका निश्चायक रूप ***सग्न्ह्** होना चाहिए था[1] दे० पृ० 222)। सम्भवत एक अन्य अरामी धातु **श्द्र्** को भी पढ सकते है जिसका प्रयोग उद० ॲखीकार् के कथन न० 165 मे हुआ भेजना दिलाना ', क्योकि अगला शब्द **ज़्क्अ्** अर्थात् (भिक्षा-)दान के सबध मे ही है। यदि अन्तिम अक्षरो प्त्य्त्य् ? से कुछ बन सकता है तो उसे भी धर्म-कर्म का अर्थ दिया जाए जैसे अन्य विद्वानो के साथ प्रो० मुखर्जी ने भी किया ईरानी " patet " का अर्थ 'प्रायश्चित क्षमा-याचना' है। इस प्रकार लघमान के कल्याण-केन्द्र मे लोक-अदालत का भी प्रबध है।

ल० हि०	//	ल० प्र०
"एलूल महीने वर्ष 16 मे राजा प्रियदर्शी ने प्राण-हत्या बद कर दी । भले लोगो मे से उसने रोक दिया जो भी मछलियो-जीवो को पकड़ने का कार्य हो। मेरे प्रिय है जो भी अस्त्र-धनुषो को व्यर्थ कर दे 500 - यह 'आहवती' नामक केन्द्र है , यह मार्ग है जिसे ' कारपति' कहते है , उद्यान है — पीछे 300 प्रहरी तत्र 110? आगे 90? - वाशु नामक धर्म-अधिकारी का दल। और ख्शाव-फ्रातबग" है दान(और) सुधार का प्रबधक । "		"वर्ष 17 मे राजा प्रियदर्शी ने प्राण-हत्या बद कर दी जो भी जीवो-मछलियो को पकड़ने का कार्य हो भले लोगो मे से । मेरे प्रिय है जो भी अस्त्र-धनुषो को व्यर्थ कर दे 300 -- यह तदमर नामक केन्द्र है , यह मार्ग है जिसे "कारपति कहते है , उद्यान है — तत्र 120 प्रहरी यही 100 आगे 80 -- धर्म-अधिकारी "वाशु का दल ।"

48 अरामी पुल - इ - दरुन्त अभिलेख (पु० 1 - 8)

THE ARAMAIC PUL I DARUNTA INSCRIPTION (Line 1 8)

लघमान-क्षेत्र के दक्षिण मे लघमान अभिलेखो की प्राप्ति के प्राय 40 वर्ष पहले पुल-इ-दरुन्त का यह शिलाफलक-लेख प्राप्त हुआ (दे० पृ० 64 65) । लेकिन उसका अभिलेखन-काल लघमान अभिलेखो की विज्ञप्ति के प्राय 10 वर्ष बाद 27वा राज्यवर्ष अर्थात् सा०स०पू० 239 238 माना जाए । उस समय प्रथम छह मुख्य स्तम्भलेख भी प्रसारित हो चुके थे (दे० पृ० 176) ।

पुल-इ-दरुन्त का शिलाफलक-लेख बुरी तरह से खण्डित अवस्था मे है न केवल ऊपरी हिस्सा और आरम्भिक पक्तिया पूर्णत क्षतिग्रस्त है वरन बाए पर (8वी पक्ति को छोड) और दाए पर भी अभिलेख नही बच सका । मात्र 107 अरामी व्यजन-वर्ण शेष रह गए । अवशिष्ट पाठ पर थोडा ध्यान लगाने से विश्लेषक उन 5 अक्षरो " **स्हृयतय्** ' से आकर्षित हो जाता है जो 5 बार एक ही क्रम मे 5 पक्तियो मे मिलते है । लघमान-अभिलेखो से मालूम है कि मार्ग के लिए सामान्य अरामी शब्द लिखने के पश्चात् लिपिक ने उसका विशिष्ट ईरानी / प्राकृत नाम **कारपथि** उल्लेख कर उस पचाक्षर **स्हृयतय्** को जोडा ताकि पाठक को ज्ञात हो कि मूल मे 'ऐसा ही कहा जाता है या कहा गया है । डबल्यू० हेन्निङ्[1] की खोज से स्पष्ट हुआ कि पुल-इ-दरुन्त लेख मे भी उसी पचाक्षर-सकेत के ठीक सामने कोई मूल प्राकृत शब्द अथवा वाक्याश (अरामी लिप्यन्तरण मे ही) उल्लिखित हुआ। सपूर्ण पाठ मे देखे[2]

(1) W HENNING The Aramaic inscription of Aśoka found in Lampāka Bulletin of the School of Oriental and African Studies 13 1949 pp 80 88 (2)खण्डित अरामी पाठ मे 25 अक्षर स्हृयतय् के अक्षर ही है , 36 अक्षर लिप्यन्तरित प्राकृत के है , शेष 46 अक्षरो के लिए यथासम्भव अरामी भाषा मे अर्थ ढूढ निकालना है।

पुल-इ-दरुन्त की समस्याओ के समाधान के लिए पहले-जैसे कोई सहारा उपलब्ध नही है न यूनानी अनुवाद का समानान्तर पाठ न प्राकृत प्रारूप न अन्य अरामी प्रति । फिर भी निराश न हो । रोगी मे ही रोग का उपचार है। परन्तु हमारी अध्ययन-पद्धति का अनुक्रम सही होना चाहिए। स्पष्ट से अस्पष्ट की ओर बढे । प० 5 मे ऊपर दिये उपक्रम का सुस्पष्ट नमूना है अरामी + प्राकृत + सहयतय — अर्थात्

पहले अरामी शब्द [लॅ]-मुंखंज़े (=देखने के लिए) आया ,
तत्पश्चात् लिप्यन्तरित प्राकृत ' द्य्ख्ह्य्त्व्य् ' (=देखितविये याने द्रष्टव्य to be seen) ,
अन्त मे पद्याक्षर उल्लेख-सूत्र •सह्य्तय् ।

अब प्रश्न उठता है क्यो और कहा से ऐसे साधारण प्राकृत शब्द का उल्लेख हुआ ? लेकिन पहले उस उल्लेख-सूत्र का तात्पर्य निश्चित कर दे। विदुषी कॉर्लेत कया [1] ने इसे प्राकृत से ही जोड़ने की कोशिश की से (स० स) हि ति अर्थात् यह ही ऐसा । उनके मतानुसार इस वाक्याश से प्राकृत उल्लेख का अन्त सूचित किया जाता है और तदुपरान्त उसका अक्षरश अरामी अनुवाद भी दिया जा रहा है। पर इस मतविचार की कमजोरी यह है कि ल०प्र०/द्वि० के अरामी पाठ मे ईरानी उल्लेख इगित करने के लिए प्राकृत शब्द क्यो घुसाया जाए ? दूसरी बात है कि यदि कोई आरम्भिक से- हो तो अरामी लिपि मे •स्य् (•स्य्ह्य्त्य् !) लिखना पड़ेगा । तीसरी बात अरामी अनुवाद उल्लेख के पहले ही दिया जा रहा है बाद मे नही । सब-से सरल है कि पद्याक्षर •सह्य्तय् को ईरानी भाषा का एक अरामीकृत सूत्र माने (यद्यपि अरामी अभिलेखो के सर्वेक्षण मे ढूढने पर भी उसका कहीं और कोई उदाहरण नहीं मिला)। ईरानी धातु सह्- (स० शस्) का अर्थ है कहना — sahyatai = ऐसा (मूल मे) कहा जाता/गया है लेकिन डबल्यू० हॅनिङ् ने अपनी व्याख्या से विद्वानो को भ्रम मे डाला । उन्होने एक अनुमित प्राकृत रूप 'सहितें' पढकर उसे स० सहितम्' का अर्थ दिया इस शब्द से इसके पूर्व-उल्लिखित मूल प्राकृत की ओर सकेत किया जाता है मानो वह किसी अभिलेख की पहचान अथवा सार-रूप मे उसका कोई विशिष्ट शब्द या नामकरण हो [2]। तब से हॅनिङ् की तरह विद्वान अरामी पाठ मे उल्लिखित अभिलेख

---

(1) COLETTE CAILLAT La séquence SHYTY dans les inscriptions araméennes d Aśoka Journal Asiatique 254 1966 pp 467 470 (2) W HENNING op cit p 88 The preceding Aramaic sentence is extracted from or an abridgment of the Edict known by the name of so and so

खोजने लगे। हैंम्रिड ने प्रथम पक्ति से ही इस खोज को भ्रामक दिशा मे मोड दिया क्योकि उन्होने इसके 4 अवशिष्ट अरामी अक्षरो मे पचम मुख्य स्तम्भलेख के उन शब्दो का उल्लेख पाया जीवेन जीवे नो पुसितवियें , क्योकि पृट् से आरम्भ होनेवाले अरामी शब्द कम मिलते है इसलिए (!) पुनर्स्थापित पंटीमथा सही होना चाहिए अर्थात् मोटाया हुआ और एक पूरा पुनर्स्थापित वाक्य बन गया कोई जीव दूसरे जीव से न मोटाया जाए जो बिलकुल पचम मुख्य स्तम्भ० 11 के वाक्य का अनुवाद है। प्रो० मुखर्जी ने भी यह अनुमान स्वीकारा और एक-के-बाद-एक अन्य उल्लेखो की माला पिरोने लगे

प० 2 नवम मु० शिला० 1 अस्ति जनो — वर्तमान लोग विविध मगलकार्य करते है
प० 3 तृतीय मु० स्तम्भ० 19 एस देखिये — देखना चाहिए कि ये पापगामी (अ-शील) है
प० 4 चतुर्थ मु० शिला० 17 इमस अथ्रस — इस अर्थ (धर्माचरण) की वृद्धि
प० 5 तृतीय मु० स्तम्भ० 21 एस बाड देखिये (=देखितवियें) — इसको दृढता से देखना चाहिए
प० 6 त्रयोदश मु० शिला० 1 अभिसितस देवनप्रिअद्रशिस (उलटे क्रम मे !)
प० 7 8 पचम मु० शिला० 13 " बहिरेषु च नगरेषु " — बाहर के नगरो मे ,
(?) सप्तम मु० स्तम्भ० 31 इय धमलिबि लिखापापिता ' — स्तम्भो पर लिखवाए

इस प्रकार स्तम्भ-लेखो के सम्भावित उल्लेखो के कारण अरामी पु०-लेख का अभिलेखन-काल अशोक के अन्तिम राज्यवर्षों मे ठहराया गया जब साम्राज्य-तन्त्र की नौकरशाही मे प्रगतिशील योजनाए ठप हुई और केवल पुरानी सत्तावादी राजाज्ञाए दुहराकर लकीर पीटी जा रही है । प्रो० मुखर्जी इतनी कठोर आलोचना नही कर रहे है , किन्तु सुझाव देते है कि जैसे भाब्रु के शिलाफलक-लेख मे बुद्ध-वचनो के कुछ विशेष सकलनो पर मन लगाने की सलाह दी गई थी वैसे ही प्रजा के हितार्थ अशोक के उल्लेखनीय धर्म-लेखो मे से मन्त्रवत् पठन-पाठन करने का निर्देश दिया गया।

यह एक सम्भावना है यद्यपि हैंम्रिड् स्वय मानते है कि यह उल्लेख-पद्धति थोड़ा विचित्र है[1]। लेकिन क्या इसकी जरूरत है ? उल्लेख-सूत्र स्ह्यृत्य् का पहला अर्थ है कि अनुवादक किसी अपरिचित अथवा अप्रचलित मूल शब्द की ओर सकेत करता है । क्या यह नहीं हो सकता है कि पु०-अभिलेख अरामी अनुवाद का एक आरम्भिक प्रयास हो जब ब्राह्मी नव-लिपि मे प्रायौगिक उत्कीर्णन भी चल रहा था ? अब फिर ध्यान से प० 5 का द्रष्टव्य प्राकृत उल्लेख देखितवियें देखे । हैंम्रिड् ने ठीक ही देखा था

(1) That one should have identified the various Edicts by a couple of words chosen at random from the middle of a sentence may strike us as a little strange "(p 85)

कि केवल मास्की सस्करण के प्रथम लघु शिलालेख 5 मे सब-से निकट रूप दखितविये मिलता है, परन्तु उन्होने उल्लेख के लिए वह निकटतम समानता टाल दी और तृतीय मु० स्तम्भलेख के देखिये को (जो उस छोटे लेख मे 4 बार मिलता है) विशिष्ट प्रतिनिधिक शब्द मान लिया । दूसरी ओर प्रो० मुखर्जी ने भी देखा था कि पु० की दो अन्तिम पक्तियो मे प्रथम लघु शिलालेख के समान ही राज्य मे उपलब्ध उपयुक्त चट्टानो या स्तम्भो पर अभिलेख-अकन का निर्देशन मिलता है, परन्तु उन्होने वह समानता टाल दी क्योकि अरामी अभिलेख मे एक लेख का नही वरन् अनेको उल्लेखो का उत्कीर्णन आदेशित था । शोधकर्ता का सुझाव है कि सम्पूर्ण अरामी पु०-लेख को प्रथम लघु शिलालेख का एक आरम्भिक रूपान्तर माना जाए । यदि प्रत्येक अरामी पक्ति मे श०अ० के सदृश औसतन 40 अरामी अक्षर गिने जाए तो पु० का पुनर्स्थापित पाठ कुछ इस प्रकार होगा

(प० 1) व्यजन-मात्र से क्या नही बन सकता है ? यदि पृद् से पृद्यु (मोटाया) पद सकते है तो ट्बृखुयअ् (रसोइया पृ० 215) क्यो नही ? गभीरता से चुने तो प्रथम लघु शिलालेख के आरम्भिक वाक्यो मे से उपयुक्त स्थल निकाले। इसे एकीकृत सस्कृत रूप मे पढे 'यत् मया सघम उपेत जिसका अरामी रूपातर है [अ्द्]त/[य्ख्द्]त् अ्प्द्[र्] अर्थात् मै सघ मे चला गया । अरामी क्रिया-धातु प्टर् = अलग होना निकलना (उद० जन्म लेते समय!), और अेघा / यखंदा सघ के लिए कुमरान के एस्सेनी पथियो के प्रिय शब्द है।

(प० 2) प्र०लघु शिला० मे थोड़ा आगे पढे मनुष्यै मिश्रा देवा कृता जिसका अरामी रूपातर हुआ ह्वह् ल्अन्श्[य्न्] अर्थात् (देवो का मिश्रण) हुआ मनुष्यो के लिए/के साथ ।

(प० 3) आगे कहा गया है कि न च एतत् महात्मना एव प्राप्तव्यम् क्षुद्रकेण अपि प्रक्रमणेन शक्य । प्राकृत मे प्राप्तव्यम् के लिए पापोतवे लिखा है जिसके अन्तिम अक्षर अरामी लिप्यन्तरण मे सूत्र ऱ्सह्यत्य् के पहले दिखाई देते है [प्अ्प्व्]तव्य् [ऱ्सह्यत्य्] ल्अ् द्[ब्] अर्थात् (ऐसा नही है कि धर्माचरण केवल पुण्यात्मा द्वारा प्राप्य हो) — पापोतवे जैसा मूल मे कहा गया है — जो गुणी नही है (वह भी स्वर्ग पहुच सकता है) '। शायद अरामी अनुवादक को उल्लिखित प्राकृत क्रियारूप का अनुवाद करने मे कठिनाई हुई।

(प०4) यहा भिन्न सस्करणो मे प्राकृत इमस अर्थस' के अनेक प्रसगो मे भिन्न रूप मिलते है (यद्यपि सब-से निकट समरूप इमस अथ्रस' मानसेहरा के चतुर्थ मु० शिला० मे है) उद० (स० मे) एतस्मै अर्थाय श्रावणम् कृतम्' (इस उद्देश्य हेतु धर्मोपदेश किया गया)।

लेकिन प्र० लघु शिला० के मास्की सस्करण के क्रमानुसार पहले कुछ इस प्रकार का वाक्य जोडे अस्य अर्थस्य (=धर्मस्य) वृद्धि क्षुद्रकेण अपि शक्या अधिगन्तुम् अथवा अस्य अर्थस्य (=धर्मयुक्तेन) क्षुद्रकेण अपि शक्य अधिगन्तुम् । अत अरामी पाठ मे अनुवादक ने उस विशेष धर्मार्थ प्रयोजन को स्पष्ट करने के लिए मूल का लिप्यन्तरण भी उल्लेख किया [ग्]म्स् अ्रत्ह्स् सह्यत्य ह्वत् अर्थात् (वृद्धि उस धर्माचरण की) — इमस अरथस जैसे मूल मे कहा गया है — हुई ।

पृ.5
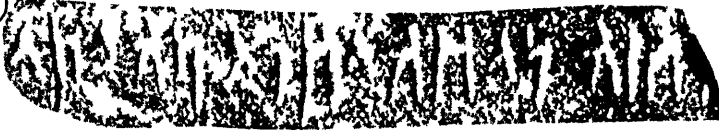
मास्की सस्करण के शब्दो न हेव दखितविये मे ही इस क्षतिग्रस्त पक्ति का सतोषजनक समाधान मिलता है । स० मे उल्लेख करे तो न एव द्रष्टव्यम् के देखने का विशेष अर्थ है जैसे राजबलि पाण्डेय के हिन्दी अनुवाद से स्पष्ट है यह कभी नही सोचना चाहिए कि उदार (व्यक्ति) द्वारा ही यह अधिगम्य है । इसलिए अरामी अनुवादक ने भी सावधानी से देखने के विशेष अर्थ पर ध्यान दिलाया [ल्-]म्ख्ज्ह् द्य्ख्ह्यत्व्य् सह्यत्य ब् [ट् ब्] अर्थात (ऐसा नही) देखने के लिए (=देखना/सोचना चाहिए) — दैकखितवे ' जैसे मूल मे कहा गया है — (केवल) सुशील के द्वारा (यह प्राप्य हो) ।

पृ.6

प्र० लघु शिलालेख के कुछ सस्करणो मे यहा अतिरिक्त सामग्री मिलती है (= द्वितीय लघु शिलालेख) जिसके आरम्भ मे लिखा है (उद० एर्रगुडि सस्करण मे) देवानपिये । प्र० लघु शिलालेख का आरम्भिक वाक्य भी था (उद० गुजर्रा सस्करण मे) ' देवानपियस असोक राजस । इसलिए स्वाभाविक है कि अरामी रूपान्तर के अन्त की ओर राजा की उपाधि दी जाए [द्य्]व्न्प्र्य्स् अब्ह्य्स्य्त्स् सह्यत्य अ[श्व्क] अर्थात् (ईश-प्रिय अभिषिक्त/'मशीखा) — देवनप्रिअस अभिसितस', जैसे मूल मे कहा गया है — अशोक (की यह अभिज्ञप्ति है) ।

पृ.7

प्र० लघु शिला० के रूपनाथ / सहसराम / पानगुरारिया सस्करण मे

अन्त-वासियो की जानकारी के लिए इस विषय को पर्वत-शिलाओ शिलास्तम्भो पर लिखने का आदेश है। उल्लेख-सूत्र सह्यतय् के पहले किसी प्राकृत शब्द के अवशिष्ट अक्षर -रेशु (देसु/केषु ?) है । प्रो० मुखर्जी ने पचम मु०शिला० से नगरेषु को चुना जो अरामी अनुवादक के लिए अप्रचलित-अपरिचित शब्द तो नही है , सीमावर्ती लोगो के अर्थ मे बहिरेषु शब्द उल्लिखित होने के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए पढे [ब्ह्]रय्श्व् सह्यतय् श्य्म्व् ल् म्क्त्व् ब् अ्म्[व्द्अ] अर्थात् (ये वचन सीमावर्ती लोगो/क्षेत्रो मे) — बहिरेषु ' जैसे मूल मे लिखा गया है — लगाए लिखने के लिए स्तम्भो पर ।

पृ.8

अन्तिम वाक्य नि सदेह भावी पीढी के अनुपालन के लिए है ताकि धर्म-वृद्धि चिरस्थायी हो म् अ्खरय्न् ह्व्द्अव् अर्थात् ' (ताकि ये वचन) हमारे बाद आनेवाले लोगो से ज्ञात हो । **इस तरह पु०-लेख में असगत उल्लेखों की कृत्रिम श्रृखला के बदले मे एक ही क्रमबद्ध अभिलेख से उल्लेख सहित अरामी अनुवाद प्रस्तुत हुआ।**

49 अरामी कन्दहार - अभिलेख (क० अ० 1 - 7)

THE ARAMAIC KANDAHAR INSCRIPTION (Line 1 7)

अर्थ-निर्धारण हेतु एक ही द्विभाषीय' अशोकीय अभिलेख शेष रह गया है अरामी लिपि मे उत्कीर्ण एक भग्न शिलाखण्ड-लेख जो प्राचीन कन्दहार से प्राप्त हुआ (दे० पृ० 70 72) । इसमे सप्तम मुख्य शिलालेख का अरामी अनुवाद ही नही उसका लिप्यन्तरित प्राकृत प्रारूप भी बीच-बीच मे उल्लिखित मिलता रहता है। अत उस अद्‌भुत अरामी-प्राकृत अभिलेख का अभिलेखन-काल 28वा राज्यवर्ष (सा०स० पू० 238 237) माना जाए । पुल-इ-दरुन्त लेख के पिछले विश्लेषण से मालूम हुआ कि वह भी प्राकृत उल्लेखो से मिश्रित द्विभाषीय' अभिलेख है लेकिन प्रथम लघु शिलालेख के उल्लेखो के कारण उसे अरामी अनुवाद का आरम्भिक प्रयास-जैसा ठहराया गया। यदि क०अ० लेख मे भी उसी प्रकार के उल्लेख मिलते है तो उसे भी आरम्भिक क्यो न माना जाए ? नही दोनो मे अन्तर है ध्यान दे के पु०-लेख मे किसी ईरानी शब्द का सीधा प्रयोग नही हुआ जब कि क०अ० के खण्डित पाठ मे दो बार ईरानी-अवेस्ती शब्द पतिअस्ति" (आज्ञाकारिता) प्रयुक्त हुआ । पु०-लेख के 107 अक्षरो मे 5 बार उल्लेख-सूत्र स्हृ्यत्य् मिलता है , क०अ० के 145 अक्षरो मे स्हृ्यत्य् केवल 3 बार (+ एक बार पुनर्स्थापित) दिखाई देता है और उल्लिखित प्राकृत शब्द अधिक कठिन हैं [1]

(1) दे० विशेषकर É. BENVENISTE & A. DUPONT SOMMER Une inscription indo araméenne d Aśoka provenant de Kandahar (Afghanistan) Journal Asiatique 254 1966 pp 437-465 S SHAKED Notes on the new Aśoka inscription from Kandahar " Journal of the Royal Asiatic Society 1969 pp 118 122 और प्रो० बी०अन्० मुखर्जी ।
(2) अथवा [स्हृ]यतय् ? लेकिन यहा किसी लिप्यन्तरित शब्द के लिए कोई तात्पर्य नहीं है । (3) अथवा कन्अ/कल्अ् ? न दुपो-सॉर्मर न शकेद पाठ का निर्णय कर पा रहे है । (4) अथवा दुपो-सॉर्मर के अनुसार गम्यरन् (गॅमीरीन्) = सिद्ध व्यक्ति शकेद यक्यरन् (यक्कीरीन्)= ज्ञानी(गुरु) (5) अथवा शकेद ज्झूरम्यां = छोटे धन ।

सप्तम मुख्य स्तम्भलेख , 28 29	//	कन्दहार अरामी , 1-7
एस हि धमापदने वह ही है धर्म का अपदान (उत्तम कार्यान्वयन)	//	?
धमपटीपति च , और धर्म की प्रतिपत्ति (सही अनुपालन) ,	// (1)	- '[दह्म्प्ट्य्प्]ट्य्-श' ऱ्सह्यतय् - , (सद्धर्म-कर्म भी) —'धमपटीपति च' जैसे मूल मे कहा गया—,
या इय — दया-दाने सचे-सोचवे च मदवे-साधवे च — जो यह —अर्थात् दया दान व सत्य शुचिता व मृदुता साधुता—	//	ल ? ? के लिए
लोकस हेव वढिसति ति । ( ) लोगो की उस प्रकार बढेगी ।	// (2)	। अफ् ज़ी टाभूथा ।(मेरे/हमारे द्वारा की गई) जो भी अच्छाई
यानि-हि-कानिचि ममिया साधवानि कटानि चाहे-जो-कोई मेरे द्वारा साधु कार्य हुए	//	—' यअनय् हय् कअनयशय् (3) ' [स]ह्यतय् - , —' यानि-हि-कानिचि ' जैसे मूल मे कहा गया—,
त लोके अनुपटीपने उनका लोग अनुसरण करते है	//	अरक् लखघना ' लवकअय् (1) अनवपट्यप्तमनह् (2) ' ऱ्सह्यत[य्]— देश हमारे पीछे चला — लोके अनुपटीपने जैसे मूल मे कहा गया—
त च अनुविधियति । और उनका अनुकरण करते है ।	//	? (4) ।
तेन वढिता च वढिसति च और इसके द्वारा वे बढे है और बढते रहेगे	//	ल-खेन् अफ् होथिरून् वि-यहोथिरून् और इसलिए वे बढे है और बढते रहेगे
माता-पितिसु सुसुसाया माता-पिता की सुश्रुषा से	//	ब-पतिअस्ति दना [ल-अम्मेह् व-ला-ऽभ] (5) ही आज्ञाकारिता मे जो अपने माता-पिता के लिए
गुलुसु सुसुसाया गुरुओ की सुश्रुषा से	//	ब-पतिअस्ति दना ल-यक्कीरीन् आज्ञाकारिता मे जो गुरुजनो के लिए
वयोमहालकान अनुपटीपतिया वयोवृद्धो के अनुसरण से	// (6)	--'वयवमहलकअन् अनवपट्यपतयअ' [सह्यतय्] — (वृद्धो के सत्कार मे) --'वयोमहालकान अनुपटीपतिया (जैसे मूल मे कहा गया)—
बाभन-समनेसु कपन-वलाकेसु ब्राह्मण-श्रमणो के साथ कृपण-वराको (दीन-दु खियो) के साथ	// (7)	ल-मसीरीन् निर्बलो के लिए
आव दास-भटकेसु सपटीपतिया । यहा तककि दास-भृतको के साथ उचित व्यवहार से ।	//	ल-ऊभयया । सेवको के लिए ।

---

(1) लवकय् के बदले लवकअय् — दे० S SHAKED unexpected spelling an early use of 'ayin as a *mater lectionis* (स्वराधार के रूप मे अयिन) which stands for a front vowel (2) गलत लिप्यन्तरण ! =अनवपट्यपनह

क०अ० मे उल्लिखित सप्तम मुख्य स्तम्भलेख अशोक महान् का वसीयतनामा-अभिलेख (Testament Edict) कहलाता । वह उनके जीवनपथ का अन्तिम चरण है और इस लेख मे उनके उच्च नैतिक आदर्श की झलक मिलती है। कुछ आत्मप्रशसात्मक उक्तियो को छोड़ प्रजा-हित इसकी लक्ष्य-बीथी है । मूल पाठ का उल्लेख करने की पद्धति अवश्य प्रभावपूर्ण एव अधिकारपूर्ण धर्मानुशिष्टि है परन्तु इसे बुद्धि पर बाध्यकर मतारोपण (indoctrination) न माना जाए। क्या धर्मगुरु उसी प्रकार अपने गीतोपदेश मे श्लोक उल्लिखित नही करते ? सम्राट अशोक ने हमे उत्तराधिकार मे लोक-धर्माचरण सबधित विशिष्ट नीति-शिक्षात्मक व धार्मिक शब्दावली की धरोहर सौप दी है । शोध के पचम भाग मे उस शब्दावली मे अन्त - सास्कृतिक आदान-प्रदान का शब्दकोशीय मणि-कोष ढूढ निकालेगे ।